॥ ६० ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ अथ [illegible] दसम लीला लिख्यते ॥ संतदास सतगुर के चरणं ॥ तिन कौं गहौं सुदृढ करि सरणं ॥ जातें उपजे ग्यान बिचारा ॥ छूटै भ्रम मोह माया ॥ १ ॥ बंदूं स्यौं जगतज नाम नहीं आऊं ॥ तिन कौं निजानंद पद पाऊं ॥ तिनकी आज्ञा हृदे धरौं ॥ लोकहितारथ भाषा करौं ॥ २ ॥ श्रीभगवान बिरंचि कूं भाख्यो ॥ सो बिरंचि नारद सौं भाख्यो ॥ सो नारद ब्यास सौं कहि समुझायो ॥ ब्यास ब्यास करि सुक कूं पढायो ॥ ३ ॥ सो सुक कह्यौ परीछत आगें ॥ छूटे द्वैत सुपन ज्यौं जागें ॥ सोई सूत अजदंन आगें ॥ छूटे

अव्यासौ रिषि मन हरे॥४॥श्री भगवंत आपुय
भाष्यो॥तातें नाम भागवत राष्यो॥आप मिलन के
पंथ बतायो॥या मारग बहुतनि हरि पायो॥५॥दो
हा॥व्यासदेव सो भागवत॥भाष्यो द्वादस स्कंध
॥तिनमें एकादस कह्यौं॥जैन लहें ज्यों अंध॥६॥
चौपई॥एकादस इकतीस अध्याय॥तिनको मे
रो कहौं सुनाय॥यदुकुल नास प्रथम में गायौ
॥बहुत भांति बैराग उपायो॥७॥हरिपुर पंथ क
ह्यो पुनि चारि॥ज्ञान कह्यो गेसुरनि बिचारि
॥सो नारद बसुदेव हि कह्यो॥पायो ज्ञान परमप

दल है॥ ७॥ कछु है कल्प उद्धव प्रस्ताव॥ तेई सब वरि
निज ज्ञान सुनाव॥ ८॥ यादव बिना सा विस्तार॥ एक
कतीस ज्ञान निज सार॥ ९॥ श्री सुकदेव करत
रंभ॥ श्रोतान् पति आडिगत ज्ञिनभ॥ तब सुक
जी यदा कियो बिचार॥ ज्ञान बिनां नां हो उद्धार॥
१०॥ तातें ब्रह्म ज्ञान समझाऊं॥ प्रथम हि दे बैराग
उपाऊं॥ पंषी उडे पंष द्वे जैसें॥ ज्ञान बिराग मिलें
रि जैसे॥ ११॥ राजा सुनौं जगत सुष जैसें॥ जिन सें
ना गिभ्रमत नर जैसें॥ अष्ट कोटि छप्पन कुं जादव
॥ जोघन घमडि चहुंदा सि माद्व॥ १२॥ तिनको

बहुत भांति बिस्तार॥ गनतीकरत नलहै को पार॥
व नजआप मों कों लाकियो॥ न वानि धिजहां बसे
लियो॥ १३॥ बहुरि सु धर्म सनाम गाई॥ बेवेज
न आपे काई॥ तिनकी समताकों नबतां ऊं। ती
लोकमें कहूं नपांऊं॥ १४॥ तिनकी बात क हत
ब ऐसी॥ पलकमाहि सुपनैं की जैसी॥ चारि घ
में सब संहारे ज्युंबुद बुदा पवन के मारे॥ १५॥
म कृष्ण तहां को तिकहार॥ आपुहि आपु सक
संहार॥ बिप्रश्राप कोकीन्हौं ब्याज॥ ए सब कृष्ण
देव के काज॥ १६॥ लोगनि कों बे रागजनायो॥ उ

ह्वां दिषांसमुझायो॥ब्यथिभीमअरजुनद्वै
अनी॥दुष्टनृपतिअरुसेनांहनी॥१७॥इहिबि
धिभूकौभारउतार्‍यौ॥नावरुपजसकौंबिस्ता
र्‍यौ॥जाकौंगहिपऊंचेभवपारआगेजनहैं
हिअपार॥१८॥बहुतभांतिकरिअदभुतकर्म
॥थाप्योजगतभागवतधर्म॥इहिबिधिसबके
काजसंवारे॥तबहरिजीबैकूंठपधारे॥१९॥
दोहा॥ऐसीसुनिअदभुतकथा॥यदुकुलकौंदि
जस्राप॥ब्रह्मकरीराजातहां॥लषिबेंतिनकौ
पाप॥२०॥राजोवाचचौपई॥तेतौविक्रमततेसार

॥परमदांनि अरु सेवक भारे॥ विप्रकोप कीन्हों के
पूरण॥ जातेनास भए सब तूरण॥२१॥ कौननिमित
आपसी कौन॥ कहो कृपा करि करुणा भौन॥ एक
मनां यादव ते सारे॥ आपुहि आपु कोंना बिधि म
॥२२॥ श्री सुक ऊवाच॥ भुको भार हरन के काजा
॥ भू अवतार लीयो बृज राजा॥ बहु बिधि भू को भ
र उतार्यो॥ तब मन मे गोपाल बिचार्यो॥२३॥
लगिहे जादव कुल सारे॥ तो लगि नहि भू भार उत
रे॥ मम आधीन रहैं ए सारे॥ ताते निज करबने न
मारे॥२४॥ दूजो कोई सकेन मारि॥ तातें कीजे ज

नविचारि॥ज्यौंबहुबांसखदैंबनमांही॥पवननिमि
त्तपाइघरषांही॥२५॥आपुआपुमेंआगिउपावै
तासौंलागिसकलजरिजावैं॥त्यौंहीइहांपवनदिज
श्राप॥क्रोधआगितहांआपहिआप॥२६॥करि
बिस्तारहौंहिसंहार॥एहवहरायोकृष्णविचार॥
आयेसकलरषीश्वरजौंन॥निकटद्वैत्रकरवायौ
गौंन॥२७॥कन्वअंगिराबिस्वामित्त॥दुर्बासाभृ
गुआत्रिअसित्तकश्यपबांमदेवअरुनारद॥औ
रबहुतरिषिबहुतबिसारद॥२८॥तहांनवेमुनि
सुषसौबैठे॥यदुकुमारतहांकुलकरिपैठे॥सांब

दिबानिताभेषबनायो॥बस्त्रादिकनिउदरआधिव
यो॥२८॥अतिबिनीतसेचरणनिलागे॥पूछेप्रस्त
धरेतिनआगे॥यहबनितापूछेदिजराजा॥सनमुष
होतलगेअतिलाजा॥२०॥निवारघसवआयोहै
को॥करोबिचारआपमेताको॥तुमत्रिकालदरस
सबजांनो॥कहाजनैंसोहमहिबषांनों॥२१॥त
बकरिक्रोधबचनतेजनैं॥कुलनासनमूसलइक
जनैं॥जातेतुमबहुमदसेमांते॥दुष्टबुधिहोवो
सबहांते॥२२॥बेनसुनतअतिभेमनाआयो॥
बहिंताउदराछिटकायो॥देषोतहांलोहकोमूस

ल॥ तब तिनि जांन्यौं नांही कुसल॥ ३४॥ ते सब ब
हुत अंति पाछिताये॥ ले मूसल राजा पें आये॥ ३
सेनसों बोले बैन॥ अति मलीन नही जोरें नैंन॥ ३
॥ सुन्यौ आप अरु मूसल देख्यौ॥ जीवन सब निगयो
करि लेख्यौ॥ मूसल रेत चूरण करवायो॥ [illegible]
ह्वै समंद बहायो॥ ३५॥ रेत तर ह्यौ दुतौ अति तुछ
ताकों निगलि गयौ एक मछ॥ ते चूरण लहरि नि
मार॥ आरा तीर भए तृण भारे॥ ३६॥ धीवर एक
जाल बिस्तरयो॥ और निसंग मछ सो परयो॥ ता
उदर तें लोह सो पायो॥ व्याध एक सो बान बनायो॥

२७॥ हरि जी बात सकल सो जांनी॥ बहुत भली हृदै
मैं मांनी॥ जद्यपि जोग अन्यथा करणो॥ परि मन मं
हिं सकल सहरणो॥ २८॥ दोहा॥ यदुबेरागनिरूपि
यो॥ ग्यांन काज सुकदेव॥ ग्यांन कहैं अब जो लख्यो॥
नारद सो बसदेव॥ २९॥ इति श्री भागवते महापु
राणे॥ अष्टादशशास्त्रे संहितायां॥ एकादशस्कं
यदुकुलश्रापनिरूपणो नाम प्रथमो ध्याय:॥ १॥
द्वारावती आपु जे हां पालक॥ महां नदत्त आपवे
तालक॥ नारद तहां निरंतर आवै॥ कृस्नदेव के
रस नयां वै॥ १॥ जीवन मुत्ताम जें नितता कों बं
श्री सुक उवाच॥

जीवतजैकौंताकौं ॥ जाकौसकललोकमैंकाल ॥ ज
हांतहां निसदिन बेहाल ॥ २ ॥ मांनवतनदूजिनसौं
जा ॥ इतनीहरिसेवाकीसाजां ॥ बंछैजादिन्नलमु
राजा ॥ कृष्णदेवसेवाकेकाजा ॥ ३ ॥ ऐसीदेहजागते
पावै ॥ हरिकीर्तिगावैहरिकोदास ॥ पलमैंकटैंकालकै
पास ॥ हरिकौंपावैहरिकौदास ॥ ४ ॥ एकबारवस
थौंकैभौंन ॥ नारदकीयौकृपाकरिगौंन ॥ तिनब
हुबिधिपूजाविस्तरी ॥ तापीछैंबानीउच्चरी ॥ ५ ॥ न
सदेवउवाच ॥ हेवसुजीतुम्हारेआगमनां ॥ स
बदेहिनकौंसुषकौभावनां ॥ उपमातुम्हैंकौंनकै

दीजे॥ जिनके दरस कलमय छीजे॥ ६॥ और देव
वै सुषदुषकों॥ तुमसे साधप्रगट परसुषकों॥ जिन
हृदै विराजे रांम॥ तिन तें होहिकौंनन हिंकाम॥ ७॥
से फल लाइ कसब देवा॥ त तौल दैं जिती करे सेव
ज्युं कर लेदरपनकों कोई॥ आपुकरे आभासे से
॥ ८॥ तुमसे साध सदा सुषदाई॥ जिनकी महिमां
ही न जाई॥ जदपि दरस मैनयो कृतारथ॥ पूछौं
तथा पिहितारथ॥ ९॥ जे भागवतधर्म सुनिजीव
जनमरण तजि पावै पीव॥ जिनि आचरणनितु
कौं देव॥ हरि अक्षसा भावो भेव॥ १०॥ पुरबजबैं

सेव मैंकरी॥ मायामोह्यौ सम भ्भिनपरी॥ तब मैंदरि
पुत्र कारि बस्यो॥ ताहीदुर्ते नहीं ठ घस्यौ॥ ११॥ तातैं त्र
व मैं तुम्हरी सरनं॥ सो कुकुकरौ मिटै ज्यूं मरनं॥ कहि
लौं कहुं जगतके दुष॥ जा मैं सुपिनैं हूं नहीं सुष॥ १२
ज हां जहं जाइ तहां कालु॥ हरि बिन जीव सदा बेहालु
॥ श्री सेव बचन सुनें जब नारद तब बोले ते परमविस
रदा॥ १३ श्री नारद उवाच॥ धनि बसुदेव धंनि तुव बांनी
॥ जाकरि पूछे सारंगपानी॥ कोई होइ सकल जग घा
तक॥ बिस्न चर्म तेर हैं न पातक॥ १४॥ श्रवनकीरत
नैं आदर ध्यांन॥ अनुमोदन जु करै सयांन॥ सोपुनि

तहो वै ततकाल॥ वहुरि परेन ही जंम के जाल॥ १५
॥ तुमयह किये बडो उपकार॥ मोहि सुमिश्ययो मि
रजन हार॥ जाको श्रवन कीरतन ऐसो॥ अंधक
र को सूरिज जैसो॥ १६॥ तुमसों कहों कथा इति हा
॥ जातें छूटै भव के पास॥ रिषभदेव सुतन व्रयो गेय
॥ तिन्ह ते सुनियों जनक नरेस॥ १७॥ सुनिकें ब्रह्म
राय नभयो॥ जनम मरन संसा सब गयो अब उ
पत्ति कहत हौं तिनकी॥ पूरन प्रीति राम सों जिन
॥ १८॥ स्वायंभू मनु नृप सिरताजा॥ ताको तनय
वव्रत राजा॥ ताके आग्नीध्र सुत भयो॥ नाभि-

ताहीतेंलयो॥१९॥ताके रिषभदेव अवतार॥जि
निप्रगटायौ ब्रह्मबिचार॥ताके पुत्रएकसतभये॥
सकलबेद केपारहिंगये॥२०॥तिनमैं बडोभरथसे
नांम॥जाकै हैं देव सेंनितरांम॥जातैं भरतषंडयह
कह्यौ॥तब अजनाभनांमतोलह्यौ॥२१॥प्रथमहिं
बहुतभोगउभोग॥समकित्यागि पुनिलीन्हौंयोग
मनक्रमबचनकरीहरिभक्ति॥तीजेजनमिलहीति
निमुक्ति॥२२॥तिनिमैंनवनवषंडनरेस॥एकरुजै
सीकर्मउपदेस॥नवतेमहाभागअधिकारी॥सबत
जिसेवैसदामुरारी॥२३॥तजैंअनर्थअर्थबिचारै॥

यांहि बिधि बहुत जीवनि स्तारें॥ देह अतीत दि
बर वेष॥ सदा हदे मैं एक अलेष॥२४॥ काबि हो
अंतरिक्ष परबुद्ध॥ पिपलयु ने आबिरहोत्र सुअ
॥ द्रुमिल चमस करभाजन नाम इनन व कीय
लब्रमैं धाम॥२५॥ आपु आदि संसार पसारा
सब कौं जानैं सिरजनहारा॥ द्वैतभाव कौ कीं
षंडं॥ या बिधि बिचरै सब ब्रह्मंड॥२६॥ सुर अ
रु सिध साध गंधर्ब॥ किंनर यक्ष नाग नर सर्ब
सकल लोक भेद आचारी॥ आउ राहित सब मैं
धिकारी॥२७॥ निमि से नाम जनक के सत्रा॥

कवा राति निकीन्ही जत्रा॥ राबिंसी सोमिता जिनकी
ऱ्हा॥ आवत देषे नृपति बदेह्ना॥२८॥ राजा बिप्र
म्निउठि धाये॥ आगे ह्वै लैबे कों आये॥ क्रम क्रम
निघरे सिंहासन॥ क्रम महीं क्रम ते बैठे आसन॥२९॥
तब ताक्षी क्रम पूजा कीन्ही॥ करि दंडौत प्रदछिना
दीन्ही॥ भूषन आमरण बस्त्र बहुरंगा। तेसब सों
तिन कैं संगा॥३०॥ ज्ञान बिचार ब्रह्ममय ऐसे॥ ब्रह्म
पुत्र संनकादिक जैसे॥ तब कर जोरि नयौ नृप ग
दौ॥ बोलौ बचन प्रेम अति बाढौ॥३१॥ तब नृप के
आनंद बढ्यौ॥ कछू न हिरदै संभाल॥ प्रेम मगन कै

बोलियो॥बानीपरमरसाल॥२२॥बिदेहऊबाच
।चोपई॥ तुमपारषदपरमहरिजीके॥मैंजांनि
सबहिनमैंनीके॥जीवनिकेउद्धरबेकारन॥सव
ललोकमेंबिचरोआरन॥२३॥धनिमैंधनिमेरो
अवतारा॥जातैंपायोदरसतुम्हारा॥नांनाजोनि
जीवयहपावे॥मनषतनकबहूंएकआवै॥२४
याबिधिनरदेहीबहुगहे॥दुर्लभसाधसंगनही
लहै॥जिनकेसंगमिटैभवबंधा॥नेनअनंतल
हैनरअंधा॥२५॥ग्यांननाथहरिहदैबिराजें॥
टैकर्मभर्मभयभाजें॥आधोछिनहोवैसतसंग
॥सोऊकरैजगतभयभंगा॥२६॥तातेममसंदेह

बा राति नि कीन्हौ जत्रा ॥ रावँसौ सो निता जिन की
हा ॥ आवत देवन पति बदेहा ॥ २८ ॥ राजा विप्र
तु उठि धाये ॥ आगे है लैवे कौं आये ॥ क्रम क्रम आं
थ्यरे सिंहासन ॥ क्रम महौ क्रम ते बैठे आसन ॥ २९ ॥
बता ही क्रम पूजा कीन्ही ॥ करि दंडौत प्रदछिना
न्ही ॥ छिर्क आभरन बस्तर बहुरंगा ॥ ते सब सौंपे
तिन के संगा ॥ ३० ॥ ज्ञान विचार ब्रह्म मय ऐसे ॥ ब्रह्म
तु त्रसंनता दिक जैसे ॥ लव कर जोरि नृप पग
र्यौ ॥ बोल्यौ बचन प्रेम अति बाढौ ॥ ३१ ॥ तव नृप के
आनंद बढौ ॥ कछु न दिरह्यौ संभाल ॥ प्रेम मगन कै

बोलियो॥बानीपरमरसाल॥२२॥बिदेहउवाच
।चौपई ॥ तुमपारषदपरमहरिजीके॥मिजांनि
सबहिनमेंनीके॥जीवनिकेउद्धरबेकारन॥सक
ललोकमेंबिचरोआरन॥२३॥घनिमेंघनिमेरो
अवतार॥जातेंपायोदरसतुम्हारा॥नांनांजोनि
जीवयहपावे॥मनषतनकबहूंएकआवे॥२४
याबिधिनरदेहीबहुगहे॥दुर्लभसाधसंगनहि
लहै॥जिनकेसंगमिटैभवबंधा॥नेनअनंतल
हैनरअंधा॥२५॥प्रांननाथहरिहृदैबिराजें॥
टैकर्मभर्मभयभाजे॥आयोछिनहोवेसत
॥सोउकरैजगतभयभंगा॥२६॥तातेममसं

मटावौ॥परमहंसमसों मोहिसुनावौ॥भगवंतधर्म
कहौंबिस्तारी॥जामेंहौसुनिबेअधिकारी॥३७॥
जिनितैमिटैजगतभवभारी॥बहुरिआपुकों
हतमुरारी॥३८सुनिबचनसबनसुषपाये तबमान
हिदेवेनसुनाये॥स्वरोकबिउवाच॥राजाधर्मक
रीतुमऐसी॥बुझनामीपूछतहैंतैसी॥निरअपद
करकैहेदेवा॥हरिकेचरणकंवलकीसेवा॥३९
॥ताकोंछोडिकरैंनरजोई॥दुषकोमूलहोतहैसो
ई॥जहँजहँजाइतहाँदुषभारी॥कालपासिकहुँट
रैनटारी॥४०॥तातैकहुंभागवतधरमां॥मिलैप
मछूटैभवभरमां॥श्रीसुषश्रीभागवतसुनाये॥

॥ ॥ श्रीपुलिनवतौ [illegible]
जेहैवैकोई इन्यथेथ [illegible]
होइबिलंबनलागे [illegible]
४२॥ श्रांषिमूंदिऊधौ [illegible]
नयहोइ॥ हरिकीभति [illegible]
घुनतैटरैनटारी॥ ४३॥ [illegible]
॥ हरिभजिमुक्तहोइ [illegible]
घिअरुचित्त॥ होइमु [illegible]
बहरिहिंसमरपनत्रे॥ [illegible]
॥ जबइहजीवहरि [illegible]
श्रावस्यौ॥ ४४॥ नव [illegible]

प मांनितनमैं मनलायो ॥ दैतभाव तब तैं ऊपनौं
॥ ताहीतैं यह मारिजै मौं ॥ ४६ ॥ तातें बुध सेवै ह
रिचरणं ॥ जातैं मिटै जनम अरु मरणं ॥ सोधि
इउत्तमगुरदेवा ॥ हरिकौं जांनि करैं ता सेवा ॥ ४७
॥ सोउं ऊं अ आचरण बतावै ॥ त्यौं ही त्यौं हरिसौं हि
त लावै ॥ कपट न भजै तजै सब कांम ॥ छूटै जगत
मिलै तब रांम ॥ ४८ ॥ दैत कछू है ये नहीं राजा ॥ जै
भासै सो मनकौ काजा ॥ जैसे मृषा मनोरथ सुपि
नां ॥ मनही कारि तै दैत्यु ऊपनां ॥ ४९ ॥ है कछु नहीं
परि है सो मोहै ॥ ताके संगि सब मोहै ॥ तौ सैं क
ल्पाबिकल्प न कीजै ॥ मन दृढ राषि रांम रस पीजै

५०॥ हरिकेजनम करम गुन नांमां॥ सुनैंकहैंसुमि
रेसबजांमा॥ तजैलाजह्वैनिहसंगा॥ मगनरहैनि
तहरिकैरंगा॥५१॥ औसेंभजत प्रेम अधिकावे॥ स
बतनरोमांचितह्वैआवे॥ गदगद सबद अटपटै
नां॥ द्रवेचित्तजलबरिषैनैंनां॥५२॥ रोवेहसेउच्च
रगावे॥ कबहूंमौंनगहेरहिजावे॥ लोकबेदकुल
लाजनजांनें॥ ज्योंउनमत्त विवसयौंवांनै॥५३
दसदिसिसरितासिंधुनगनागा॥ रबिससिता
हंसअरुकागा॥ सतिजलपावकपवनआका
॥ जोकछुदेखैसोहरि दासा॥५४॥ हरिकोरूप
सकलकौंजांनै॥ जहांतहांपरनांमहिंमांनैं॥

मुलि नमासैं आं नां॥ भयो अनन्य भजे भगवांनां
॥ ५५॥ ज्यौं ज्यौं बढै प्रेम अनुरागा॥ त्यौं त्यौं अनुभव
यौं प्रतिभासा॥ तोष पोष अरु भूष बिनासा॥ ५६
॥ या बिधि करते साधन भक्ति॥ हरिजी सौं बाढै
अनुरक्ति॥ तब कछु और न मूलि न हि भासैं॥ तब
हि है ब्रह्म प्रकासै॥ ५७॥ ब्रह्म एक दस हूं दिसि
देखे॥ द्वैत भाव करि कदे न लेषे॥ ऐसे अंग भागव
त मांही॥ सो हरि मे है जग मैं नांही॥ ५८॥ दोहा॥ ए
मुनि कबि जी के बचन॥ कीन्हा प्रस्न बिदेह॥ अ
ब भाषौ भागौत के॥ लछन करौ गेह॥ ५९॥
बिदेह उवाच॥ चौपई॥ प्रभुजी कहौ भागवतल

रण॥ जिन ब्रह्मदोऽवै शंम बिचक्षण॥ कोण धर्म
द्दे दिढ राषै॥ कैंा आचरैं कौ न बिधि भाषैं॥ ६
कौं नृ सुभावनिरंतर तिनकें॥ द्वैतभाव नांही उ
जिनकें॥ बोले हरि योगेश्वर दूजे॥ नृपके बचन
दुताति निपूजे॥ ६१॥ हरि ऊवाच॥ थावर जंगम सु
सम थूला॥ एकै प्रकृति सकल को मूला॥ सो ए
आतम कैं आधारा॥ सो आतमां असा निरकारा॥
र॥ हरिजी तैं उपजे एहोइ॥ अंति लीन हरि ही
होई॥ ताते अबहूं हरि कों जांनें॥ द्वैतभाव क
हूं नहीं आंनैं॥ ६२॥ ज्यौं सागर बुदबुदा तरंग
यों सब जगत जगतपति संगा॥ या बिधि जां

भयौ जो थीरा॥ सो हरिजन उत्तम है बीरा॥ ६४
॥ जाको हरि सौं निह चल प्रेमां॥ अरु हरिजन सं
गति नित नेमां॥ सब जीवन पर करुनां आंने॥ स
ब उधरै हरि यौं जांनैं॥ ६५॥ जौ कोई ता पर दोष
दिखांनैं॥ तहां तजै कैं ज्यौं त्यौं बांनैं॥ निस दिन र
है सम रंग राता॥ सो हरिजन मध्यम है ताता॥ ६६
॥ जो मूरति में हरि कों जांनैं॥ मन क्रम बचन आं
न नहीं आंनैं॥ ताकों पूजै हित चित लाई॥ कछु
मांगै सहज सुभाई॥ ६७॥ पै हरिजन नमजै हरि
जांनी॥ सत गुर बिनां नहीं पहिचांनी॥ सब आत
मा न हरि के जांनैं॥ सो प्राकृत जन साध बखांनैं

॥ दे०॥ बढुरिकहूं उत्तमहरिजन्न॥ जाहिपरषिहूं
जै आसक्त॥ दरसपरसतैंकारजसारैं॥ ते हरिज
नभवदुषनिवारैं॥ दे०॥ कृष्नबसैंजाकैंमनमां
ही॥ औरसातिकछूजानैंनांही॥ जो कछूकहैसुन
अरुदेषै॥ इंद्रियकृतमायासबलेषै॥ ७०॥ सोह
रिजनउत्तमनरदेवा॥ तातैमिलैनिरंजनदेवा
तौजनब्रह्मविचारहिपायो॥ आपुसमुझिसुषमा
हिसमायो॥ ७१॥ जनमरुमरनदेहकोजांनैं
याक्रियाकौंप्रागहिमांनैं॥ तृस्नाबुद्धिरुभैसो
नको॥ इहलक्षनउत्तमहरिजनको॥ ७२॥
नांअरुसबकांमा॥ तिनकौंभूलिनजांनैंनां

।बासदेवुमैंकीन्हांबास॥सोकहियेउत्तमहरिदा
स॥७३॥जिनकैंजातिबरनकुलकेमां॥लोकेबेदनं
हीआसमां॥मलिहैअभिमांननआवै॥सोउत्तम
हरिदासकहावै॥७४॥किसीबस्तुपरममतानांही
॥अरुतनकौअभिमानमांही सबभूतनिपरस
मताआवै॥सोउत्तमहरिदासबषांनैं॥७५॥अ
ष्ट्रसिधिनिधिसुषआवैं॥पारिजेकबहुंमनन
डोलावै॥लवनिमिषहारधतजैनचरणां॥गुनातीत
निरभैपदसरनां॥७६॥जांकौंसिवब्रिंचिअरु
देवा॥तनमनलाइकरैनितसेवा॥तउजाकेचरण
नपांवे॥ताकौंजनकंूकारिछुटकावै॥७७॥हरि

ौचरनचंदचितजाकें॥ईहांतापउवेक्योंताके॥
ोसोहरिजनउत्तमकहिये॥ताकेंसंगिपरमपद
हिये॥७८॥जाकोंहरिजीनिमषनत्यागें॥प्रेमउो
रिबंधेकूंमागें॥सोकहियउत्तमहरिदासा॥कहे
ततजियेताकोपासा॥७९॥दोहा॥त्रिबिधिमक्त
हनकहे॥नपसोंहरियोगेस॥तबमायाकेजांनि
वे॥कीन्हीप्रश्ननरेस॥८०॥इतिश्रीभागवतेमहा
पुराणेएकादसस्कंधेबसुदेवनारदसंबादेद्वि
तीयोध्यायः॥२॥श्लोक ५५ चौपई॥११९॥
जनकउवाच॥ चौपई॥ ॥ ॥
॥ ॥ अबकरिकृपाकहोहरिमाया

नेये सकल लोक भरमाया ॥ तुम्ह रे मुषसरोज की
बानी ॥ हरि की कथा अंमृत मैं जांनी ॥ १ ॥ ता कौं पीव
त नृपति नहिं मांनौं ॥ सदा पियो अैसो मन मांनौं ॥ भ
व के ताप तन जो दही ॥ ताकौं परम औषधी एही
॥ २ ॥ अैसे सुनि नरपति के बैनं ॥ बकता कौं उपजे
अनचैनं ॥ तब बोले बानी अभिरांमं ॥ तीजे अंतरि
हरे नांमां ॥ ३ ॥ आपुहि आपु बिराजें रांमां ॥ दया सि
धु मनमांहि बिचारा ॥ तब यह कस्यौ सकल संसा
रा ॥ ४ ॥ पंचभूत करि रचियो देहा ॥ बध्यो तदां अ
त माया नेहा ॥ जातें पहल भोग वै भोगा ॥ बहुस्यौं डवि
त होइ भवरोगा ॥ ५ ॥ तातें मो तैं चित लगावे ॥ मरो

निज्ञानंदपद पावै॥ मगन रहै भरैं आनंदा॥ बहु
रि नहीं व्यापै दुषदंदा॥ ६॥ याही तैं यह मंत्र बिस्ता
स्यौ॥ भीतरि अंस आपनौं डास्यौ॥ इंद्रियदस अ
रु मन बिस्तार॥ बहुत भांति के बिषय पसार॥ ७
॥ सोइह अंस इंद्रियन्य मनसूं॥ भोग भोगवै सब
ही तनसूं॥ आप भूलि भोगनि मन दीन्हौं॥ तब अ
भि मांन देह कौ कीन्हौं॥ ८॥ भोगनि मांनि कर मबि
स्तारे॥ तिनि के फल सुष दुष अनुसारे॥ तिनि क
र मनि तें जोनि अनंता॥ जनम मरन कौ लहै न अं
ता॥ ९॥ प्रलय अवधि लौं भ्रमैं निरंतर॥ लीन
हु पुनि माया अंतर॥ सृष्टि समैं ब

॥१४॥पवनकरेजबगंधदिहीन॥भूमि होइतव
जलमेंलीन॥सोंहीरसकोंहरैसमीर॥तातेंमिलै
जमेंनीर॥१५॥अंधकारजबरूपहिहरै॥तेजतबै
पवनहिसंचरै॥बहुरिसपरसाहिहरैअकास॥
पवनकरेतबनभमेंबास॥१६॥कालकीयोजब
ब्दहिहीण॥तामसअंधकारनमलीन॥तामस
अंहकारमनामिलै॥राजसअहंकारदोऊमिलै
॥१७॥इंद्रियअरुराजसअहंकारहि॥सतअहं
कीन्होंआहारहि॥बुद्धिदेवसातिकअहंका
॥महातत्त्वकीन्होंसंहारा॥१८॥महातत्त्वसोप्र
कृतिहिमिलै॥याबिधिकालसकल

ऐसी ही सिंघनार्इ बाबा उतपति पहले ऐ
ऐपाय १९ ... सबकुरि की माया करे उपजै
ज्ञानिपाले ... ... कौ संदेपसु नाई बुद्धै
को संग ... २०
बोल ... ऐसी सुनि माया
... ... तब पूछै आधी बैं
... २१ ... ऐसी पबल
... सकल लोक मर माया
... हैम से देखी कूं जिस तरैं
... सो कार्ई कपाव नाकी
... चनन्क पति के सुद्धा तब बोले
... २२
सकल सत

दुषनि कै काजा॥ करै करम आरंभ हि राजा॥ तिन
केवल दुष अधिकारा॥ अब हूं अरु आगे बिस
ारा॥२४॥ पायै हूं घन दुष अपारा॥ नि
ा को अधिकारा॥ सोऊ अति दुर्लभ नाहि
जो आयौ तौ थिर न रहावै॥२५॥ ज्यों दीरह कु
बसु तदारा॥ पल कमांहि दहि जाई पसारा॥ ज्यों
य मांहि मिलांना होई घरिक मांहि बिछुरै स
ई॥२६॥ जे कछू ईहां कर्म कमावै॥ तिन तैं जोनि
नि दुष पावै॥ इ नेमै कोई नां हि छुडावै
दुकों सब कोई जावै॥२७॥ या ही बिधि न
लोका॥ थिर न रहै बिधि हूं को लोका

चवदुआंनी। हि[illegible]नैमनकामिहैनकांनी॥२५॥
मधुरअलच्या[illegible]नांनां कांमक्रोधअरुलोभम[illegible]
नां [illegible]स्मा[illegible]सीआंनां आपुआपुमें[illegible]
हिवांनां [illegible]ाईऊडांतेपड़ै। बहुरिअ[illegible]
[illegible] [illegible]च्यारऐरागउपावै। तबा[illegible]
[illegible] [illegible]वै ३० सवदब्रह्मसकलअ[illegible]
[illegible] [illegible]दैरामै। ऐसेगुरबिनजा[illegible]
[illegible] [illegible]रूपैआवै। ब्रह्मजांनिनासे[illegible]
[illegible] [illegible]दकामनांमांनै॥ तातेंस्त्रि[illegible]
[illegible] [illegible]नैदरिजीतजैनखगा॥३१॥
[illegible] [illegible]कौनैनाभिदावै उलटिमाधमेमा[illegible]

सौं लावै ॥ अरु दानंनि पारिकरु नां आंनें ॥ समाधि
ताउ तमबहु मांनें ॥ २३ ॥ सौचपावतपमौनति
ता ॥ बहुबिधि लेवै गुरसौं सिक्षा ॥ ब्रह्मचर्य अरु कौ
लरहनां ॥ हिंसा त्यागउंद सबसहनां ॥ २४ ॥ ए
ता की आश्रमन बांधे ॥ बस्त्र टूकके बलकलसा
धे ॥ जहां तहां चेतनि आतमदेषे ॥ परमात्मां निर्यं
ालेषे ॥ २५ ॥ ग्रंथभगति के श्रद्धा करै ॥ निंदा राग
ाषपरिहरै ॥ देहबचन अरु मनकौं डे ॥ समद
ासतसंतोषनछूं डे ॥ २६ ॥ जनमकरम अरु गु
हरिजी के ॥ सदा सुनें उद्धारनजी के ॥ सौं ही क
ानिरंतरि ध्यावै ॥ सोई करे हरिही जो भावै ॥

३९ जपतप जोग जागि व्रत दानं तनमनुध

दासासुत धानं जोकछु सासनु कहि लिखि बे दै

साखाधिसनकोकेन सकौ छुदै ॥ ३८ ॥ थावरजंग

मद्दरिसयुजा बे पारिसे वा साधन कीजे ॥ सि

परमपरद्विरंजमावे तिसादिनकेहितसुनत

सुखपावे ॥ ३९ ॥ पलपल प्रीति बढै हियफूलै ॥ मु

नासैबोलिननन कौंनले दू औभावनकेबहु

उरमें सुमसुगन जागत औरुसुपनै ॥ ४० ॥ ऐसे

रैननसमालिकौ पावे पलपलतनुपुलकत है आ

सौ कबहूँ हरि चितननु तेरे वे कबहूँ हँसे औनांहि १

नदौ ४१ कबहूँ नाचै कबहूँ गावै ॥ लाज र

हितज्यों ज्यौं मनिभावै ॥ कबहूं गुनसुमिरता
लिजावै ॥ स्वाससबदबाहरनैदीआवै ॥ ४२
बिधिलेवै गुरसौं सिद्दो ॥ गुरसिष्यनिकीइहै
रह्या ॥ ब्रह्मपरायंनताजेमनकेरे ॥ मायाभूलिन
आवैनेरे ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ एसुनिबचनाबिदेहके
॥ हृदयबढ्यौआनंद प्रश्नकरातबब्रह्मकी ॥ जे
छूटैंभवफंद ॥ ४४ ॥ विदेहउवाच ॥ ब्रह्मबेत्ता
मैंआधिकारी ॥ तुमहौइहैमैहदैबिचारी ॥ ता
कहौब्रह्मकोरूपा ॥ जानैजाहिमिटैगृहकूपा
४५ ॥ परमातमांब्रह्मभगवांनां ॥ एसबएक
यौहैनांनां ॥ सब[illegible]जीवनकौंआति

॥३७॥ जपतपजोगजागित्रतदानं॥ तनमनधनदारासुतसुमानं॥ जोकछुसोसबहुदरिदिलिबेदै या विधि सकल करम कौं छेदै॥ ३८॥ थावरजंगम हरिमय जानैं॥ यों सेवा साधन कौ मानैं॥ मिलें परसपर हरिगुन गावे॥ तिसा दिनके हतसुनत सुषपावे॥ ३९॥ पलपलप्रीतिबढै हिय फूलैं॥ गुनगिसंभालत तनकौं भूलै॥ दूजौ भावन केबहुं उपनैं॥ प्रेमसमगनजागत अरु सुपनैं॥ ४०॥ ऐसे प्रेमसमगतिकौं पावे॥ पलपलतनुपुलकतकैजावे॥ कबहूंहरिचिंतनतेरोवे॥ कबहूंहंसे अनंदित होवे॥ ४१॥ कबहूंनाचे कबहूंगावै॥ लाजर

हित ज्यों ज्यों मनि भावै ॥ कबहूं गुन सुमिरत मि
लि जावै ॥ स्वास सबद बाहर नहीं आवै ॥ ४२ ॥
बिधि लेवै गुर सौं सिद्धा ॥ गुर सिष्यनि की दूहैं
रद्धा ॥ ब्रह्म परायन ताजन केरे ॥ माया भूलि न
आवै नेरे ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ एसुनि बचना बिदेह
॥ हृदय बढ्यो आनंद प्रनाम करी तन ब्रह्म की ॥ ज
छूटैं भव फंद ॥ ४४ ॥ विदेह उवाच ॥ ब्रह्म बेंता
मैं अधिकारी ॥ तुम हो दूहैं मैं हदै बिचारी ॥ ता
कहो ब्रह्म को रूपा ॥ जा नें जाहि मिटै गृह कूप
॥ ४५ ॥ परमातमा ब्रह्म भगवांनां ॥ एसब एक
विभौ है नां नां ॥ सब जीवन को आति करुनां

यन॥तबबोलेपंकमपिपलादन॥४६॥पिपलादू
रुउवाच॥ सूक्षमथूलसकलसंसार॥जाकीसक
तिसकांतिबिस्तार॥उतपतिप्रलैकरैवदयाकैं
॥कादूदूतेंजनमनहिनाकौ॥४७॥जागरतसु
पनसुषोपतितुरिया॥चहुमेंसदाएकारसपुरिया
॥इंद्रियदेहहदयंअरुप्रांणां॥जातेचेतनिहैं
वरतांमां॥४८॥जैसेदूहैजउलोहावरते॥तुंब
कसंगवहुतविधिफिरते॥सोजगवांनअरुपु
निसोई॥सोपरमात्मजानेकोई॥४९॥मनअ
रुबुधिचितअरुप्रांणां॥इंद्रीदेहसबदअग्नि
मांनां॥कोईताहिपहुचिनाहिसकै॥जातजात

रैहौतेथकें॥५०॥जैसेपावकलोहतपायौ॥पा
वकसमातेजातिनिया यौ॥सबपरकासेसबकै
जाले॥परिपावकपरिजोरनचाले॥५१॥यौंस
इंद्रियहृदयअचेतन॥ताकेसंगहुतेहैचेतन
॥औरसकलअरथनिकोंजानें॥कौनसकलि
जोतादिपिछांनै॥५२॥लेलेअरथबुधांनेजैस
॥परिपरतछनजांनेभेदा॥यहनहियहनाहिय
हनहिहोई॥यातेंपरेसत्यहैसोई॥५३॥स्तुहन
थूलनजावैबरनि॥गगनपवनपावकजलधर
नि॥नहिमनबुद्धिचित्तअहंकारा॥चिदानंद
यसबकेपारा॥५४॥नांसोबालवृ हैय

यन ॥ तबबोलेपंक्ष मपिपलादन ॥ ४६ ॥ पिपलाद
नऊवाच ॥ सूक्षमथूलसकलसंसार ॥ जाकीसं
तिसकांतिविस्तार ॥ उतपातिप्रलैकरैबदयाके
॥ काहूहूतैंजनमनहिताको ॥ ४७ ॥ जागरतसु
पनसुषोपतिहुरिया ॥ चहुंमैसदाएकारसपुरि
॥ इंद्रियदेहहदयमंत्र्यरूपांणं ॥ जातैचेतानिहु
बरतांनां ॥ ४८ ॥ जैसेहूदेहजडलोदावरतै ॥ चुंब
कसंगबहुतविधिफिरतै ॥ सोभगवांनब्रह्मपु
निसोई ॥ सोपरमातमजानैकोई ॥ ४९ ॥ मनत्र
रूबुधिचितत्र्यरूपांणं ॥ इंद्रीदेहसबदत्रभि
मांनां ॥ कोईलाहिपहुचिनाहिसकें ॥ जातजात

रैहीतेथकें॥५०॥जैसेपावकलोहतपायौ॥पा
वकसमातेजातिनिपायौ॥सबपरकासेसबकै
जाले॥परिपावकपरिजोरनचाले॥५१॥यौंसब
इंद्रियहृदयअचेतन॥ताकेसंगहुतेहैचेतन
॥औरसकलअरथनिकौंजानैं॥कौनसकाति
जोताहिपिछानै॥५२॥लेलैअरथबषांनैबेद
॥परिपरतत्तनजांनैभेदा॥यहनहियहनहिय
हनहिहोई॥यातेंपरंसत्यहैसोई॥५३॥सूक्षम
थूलनजावेबरनि॥गगनपवनपावकजलधर
नि॥नहिमनबुद्धिचित्तअहंकारा॥चिदानंदम
सबकेपारा॥५४॥नांसोबालवृद्धिनहियूवा

॥ नासो बिनसै नां सो हुवा ॥ तिरिया पुरिष कलेव
न होई ॥ सुरनर नांग असुर नहीं कोई ॥५५॥ रक
त पीत सित नहीं रिता ॥ जाति बरन आश्रम नधरि
ता ॥ सीत उसन दुंद नाहि सुरा ॥ दिवस न राति नि
कट नहिं दूरा ॥५६॥ सुष दुष रहित बसे सब मां
ही ॥ आपु हि आपु लिपै कछुं नांही ॥ बंधे मावसो
आतम अंसा ॥ सुनि सरोवरा बिलसे हंसा ॥५७
गगन पवन पावक अरु नीरा ॥ चरनि बंध सब
किये सरीरा ॥ पंच तत्व ले पंचूं बंधा ॥ सब दस प
रस रूप रस गंधा ॥५८॥ इंद्रिय दस अरु तिन २
के देवा ॥ सातिक राजस तामस भेवा ॥ मन बुधि

चित्त महत तत्त्व अहंकारा॥ प्रकृति को सकल प
सारा॥५९॥ एकै ब्रह्म है ता को कारन॥ बिन इछ
सब कौ बिस्तारन॥ ज्यौं सुवर में बहु घट उपजावे
सुवर माहि रहि सुवर मांहि समावै॥६०॥ ते सब घट
दीसैं बिधि नांनां॥ परि सुवर्न छोडि नही कछु आनं
॥ त्यौं सब जगत आदि माधि अंता॥ और न कछु
के भगवंता॥६१॥ सो नहि उपज्यो बिनसे नांही
॥ बाल जुवादि परै नही छांही॥ बैठै न धरै चलै न॥
हिडोलै॥ रोष न तोष मौन नहि बोलै॥६२॥ जहं
तहं पूरन परम अनूपा॥ चिदानंद निज ज्ञान सरूप
॥ देह भेद बहुधा सो सोहै॥ ज्ञान बिना।

मो है ॥ ६३ ॥ जे संपवन एकई प्रांनां ॥ ६४ ॥ इंद्रि
संगदी सेनांनां ॥ उद्भिज स्वेद जरायुज अंडा प
रिषा निपूरन ब्रह्मंडा ॥ ६५ ॥ लिंग देह जो देह द्वि
वे ॥ प्राण वायु तहं आनि समावे ॥ सबद सपर
रूप रस गंध ॥ मन अहंकार बुद्धि चित बंध ॥
॥ लिंग देह ईनहीं नर को है ॥ या कै मिटै तिरं
न सो है ॥ निद्रा बसु सुषपति जब आवे ॥ तब
ह लिंग देह छिटकावे ॥ ६६ ॥ अहंकार ममता
कछु नांही ॥ मन अरु बुद्धि चित्त अहंकार नर
॥ जागे प्रथम बात को कहै ॥ जो करनो तो
तो कियो ॥ आगे पीछे लीन्हों दियो ॥ ६८ ॥ ताते

री॥दारसाजाननिहारा॥या बिधि कीजै ब्रह्म बिचा
रा॥यारे बासनां सहित हीर है॥तातें है हू फेरि बु
रिल है॥६९॥लिंगसरीर सहित बासनां॥ताहि
टेन हि भव सासनां॥तातें हरि चरनन चितला
वै॥और सकल बंधन छिटकावै॥७०॥या बि
धि सकलचित्त मल नासै॥रवि समांन तत ब
ल प्रकासै॥जो न प्रथम भक्ति नहि जांनैं॥ तौ व
हु करम योग कौं ठांनैं॥७१॥करम जोग तैं उपजै
भक्ति॥तब हरि चरनन बढै आसक्ति॥तातें हो ई
ब्रह्म प्रकासा॥छूटै कालजाल भव पासा॥७२॥
दोहा॥ पिप्पलायन बैंन सुनि॥करी प्र

मो है ॥ ६३ ॥ जे सं पवन एकई षांनां ॥ ६४ ॥ इंद्रिनि
संग दीसे नांनां ॥ उद्भिज स्वेद जरायुज अंडा चा
रि षांनि पूरन ब्रह्मंडा ॥ ६५ ॥ लिंग देह जा देह द्रिढ
वे ॥ प्रांण वायु तहं आनि समावे ॥ सबद सपरस
रूप रस गंध्यु ॥ मन अहंकार बुद्धि चित बंध ॥ ६
॥ लिंग देह ईसदीन व कौ है ॥ याकै मिटै निरंज
न सो है ॥ निद्रा व सुसुष पाति जब आवे ॥ तब य
ह लिंग देह छिटकावे ॥ ६६ ॥ अहंकार ममता
कहुं नांही ॥ मन अरु बुद्धि चित्त अहंकार न रहै
॥ जो में प्रथम बात कौ कहै ॥ जो करनी तो ज्ञी
नी कियो ॥ आगे पीछे लीन्हो दियो ॥ ६८ ॥ ताते

दरिसा जाननि द्वारा ॥ या बिधि कीजै ब्रह्म बिचा
रा ॥ पारे बासनां सहित ही रहै ॥ तातें द्वै फेरि क
रिल है ॥ ६९ ॥ लिंगसरी सहित बासनां ॥ ताहि मि
टेन हि मन बासनां ॥ तातें हरिचरनानि चित ला
वे ॥ औरसकल बंधन छुटकावे ॥ ७० ॥ या बि
धि सकल चित्त मल नासे ॥ रबि समान तब ब्र
ह्म प्रकासे ॥ जो न प्रथम भक्ति नाहि जांनैं ॥ तौ व
ह करम योग कों ठांनैं ॥ ७१ ॥ करम जोग तें उपजे
भक्ति ॥ तब हरिचरन बढै आसक्ति ॥ तातें होई
ब्रह्म प्रकासा ॥ छूटे कालजाल मन पासा ॥ ७२ ॥
दोहा ॥ पिप्पलायन बैंन सुनि ॥ करि प्रसन्न मिथि

॥करमजोग अबकरिकृपा॥कहौपरम
॥७ अधिदेव कौ वाचा॥कर्मयोग अब कहौ
मैं आयो तुम्ह सरनाई॥जाके कीये क
कर्मा॥ उपजै ग्यांन होइ निहकर्मा॥७४॥
स्म कहौ तुम वेदा॥याकौ मेरे अति संदे
म पुत्र संनकादिक चारी॥ब्रह्म परंदुन
विचारी॥७५॥ एक बार किरपा करी आ
ता सामिपद र स मैं पाये॥ इहै ब्रह्म मैं
कीन्हा॥उत्तर नादियौ ह्वै चरि लीन्हौ॥७
हिबोले सो कौ मैं कारन॥यह भाषो भव स
तारन॥ अैसे बचन नृपति जब भाषै॥अ

ताते करै बेद के कर्मा। हरि के हेत बडो यह धर्मा॥
८६॥ और कछू फल भूलि न जानैं॥ हरि के हेत कर्म
सब गनैं॥ कैं कर्ता इह कदे न भाषै॥ जो कछु सो ह
रि को करि राषै॥ ८७॥ या बिधि प्रेम भगति उपजा
वै॥ तब सब कर्म आपु ही जावै॥ तब ही अगदै ज्ञा
न प्रकासा॥ मिलै रांम छूटै भव पासा॥ ८८॥ बेद क
ंथ कह्यो मे तो सों॥ अबैं सुनि तंत्र पंथ पुनि मो सों
हदैगां वि काटी जो चा है॥ सो बिधि सों पूजा अ
बगा है॥ ८९॥ बेद मिलित भाष तहौं पूजा॥ ताते
मिटै सकल भ्रम दूजा॥ श्री गुर तें प्रसाद हि

सोज्यों ज्यों सबबिधि दिखतावें ॥ ८० ॥ जामूरतिप
रिदृष्टा होई ॥ दारिद्रि जो निकार पूजै सोई ॥ अति
पवित्र कै करै सनानां ॥ मन कीत जैवा सनांन तं
॥ ८१ ॥ बायु अपांन छीक जमुहाई ॥ और पवन
गुन उ ये न काई ॥ सनमुष बेठि कर तन रक्षा ॥ अं
गन्यास मंत्र पढि अक्षा ॥ ८२ ॥ आसन सोधि सोज
सेवा की ॥ सब लैबैठै तजैन बाकी ॥ बिस्वरूप आति
मा मे आनै ॥ अर्घ पाद अरु बिष्टर गंनै ॥ ८३ ॥
मूलमंत्र करि पूजा करै ॥ और न कछु बचन उचारै
॥ सकल अंग हरि जी के ध्यावै ॥ संषचक्र गदा पदम नि

ल्यावै॥ ए४॥ न्हृषन बसन पारषद सहिता॥ हसि
तबदन देषत दुषदहिता॥ विविधि भांति आसनां
नकरावै॥ करितिलकादिक वस्त्रपहिरावै॥ ए५
॥ बहु सुगंध माला पहिरावै॥ बहुत भांति करिमं
गल गावै॥ गंध धूप आरती संवारै॥ घंटा आदि
ब्रदाविस्तारै॥ ए६॥ याविधि मंत्रनि सों सब करै
। तापाछे स्तुति बिस्तरै बहु रिकरै दंडौ तस्रनांमां
। पढै मंत्र लेवै हरि नांमां॥ ए७॥ बाहिर बस्तु
आंनै॥ औरनि मन सुपूजा ठानै॥ तन मय मन
नेरंतरि सेवै॥ वृहस्रसाद माथे करि लेवै॥ ए
बहुरि देव कों हृदे धरै॥ सुरतिसुं नाथि टारै क

सोज्यों ज्यों सबबिधि द्विवतावें ॥ ८० ॥ जामूरतिप
रिद्ध होई ॥ हरिदि जो निकार पूजै सोई ॥ अति
पवित्रकै करै सनानां ॥ मनकीत जैबासनांनांतां
॥ ८१ ॥ बायुअपान छीकज मुदाई ॥ औरपवन
गुनउवे नघाई ॥ सनमुषबैठिकरै तनरक्षा ॥ अ
ग न्यासमंत्र पढि अक्षा ॥ ८२ ॥ आसनसोधि सोज
सेवाकी ॥ सबलेबैठै तजैन बाकी बिश्वरूपप्रति
मामे आनै ॥ अर्घपाद अरु बिष्टर गंनै ॥ ८३ ॥
मूलमंत्र करि पूजा करै ॥ औरनकछूवचन उचारै
॥ सकल अंगहरिजीके ध्यावै ॥ संषचक्रगदापदमनि

त्यारे॥ ए४॥न्हूपन वसन पारषद सहिता॥ दरसि
त वदन देषत दुषदहिता॥ विविधि भांति आसनां
नकरावै॥ कारितिलकादिक नस्त्र पहिरावे॥ ए५
॥वहु सुगंध माला पहिरावै॥ वहुत भांति करिभे
ग लगावै॥ गंध धूप आरती संवारे॥ घंटा आदि
व दाविस्तारे॥ ए६॥ याविधि मंत्रनिसों
॥तापाछे स्तुति विस्तरे वहु रिकरै दंडोत
॥पटै मंत्र लेवे हरि नामां॥ ए७॥ वाहिर वस्तु
ते आंनै॥ औरनि मन सुपूजा ठानै॥ तन मय प्र
निरंतर सेवै॥ वहप्रसाद मा रि
॥वहुरिदेव कौं हृदे धरै॥ मु

॥या बिधि हरि के आत्म जांनें॥ तथा सकाति सब पूजा
गंनें॥९९॥ ऐसे से व्रत उपजे ज्ञानां॥ बेगे आनि मि
लैं भगवांनां उभै ज्ञाति माह रि की सेवै॥ सा चू व्रत
इ सो हरि देवै॥१००॥ दोहा॥ ए सुनि बचन बिदेह
जा ढ्यौ मन मे प्यार॥ तब गुंन अरु कर्मनि सहित
॥पूछे हरि अवतार॥१०१॥ श्लोक॥ इति श्री भगवत
महा पुराणे एकादस स्कंधे वसुदेव नारद संवादे तृ
यो ध्याय:॥३॥ चौपई॥२२०॥ राजोवाच॥ अब अ
वतार कथा बिस्तारो॥ गुन अरु कर्म सहित उचारो
॥जिजे लीला लेहि जे आगें॥ अब देंस बभाषो अनु
रागें॥१॥ ए सुनि नृपति जनक के बेनां॥ कृपासिंधु

करुनां के ऐना॥ तब सातयें डुमिलसेनां मां॥ बोले ब
चन परम अभिरांमां॥ धाडुमिल उवाच॥ जे अनंत
के गुन अवतारा॥ तिन कौं न्रपति लहै कोपारा॥ न्हू
रे नु करि कोई गनै॥ सो अकहा सकल गुन भनै॥ ३
हरि के गुन अवतार अनंता॥ बालबुद्धि जो चाहै अं
ता॥ ताते कछु एक मैं भाषौं॥ तेरे हदै न संसा राषौं॥ ४
॥ पंचभूत निर्मित ब्रह्मंडा॥ राष्यौ नीर मांहि ज्यौं अंडा
ता मैं अंस आपनौं धारा॥ सो है आदिपुरिष अवता
रा॥ ५॥ जिन के अंगनि तें सब देहा॥ देह मांहि बरतै
सब येहा॥ तिन के अंगनि तें सब अंगा॥ इंद्रिय आदं
बुद्धि बहु रंगा॥ ६॥ सतरजतम तें सकल पसारा॥ उत

पति अरु पालन संहारा॥ त्रय महि रज ते ब्रह्म कियो॥ सातिक जन म विस्नु कौं दियो॥७॥ तामस कारि सकर उपजायो॥ तिन सौं सकल लोक निपजाए॥ ब्रह्मा रचै विस्नु प्रति पालै॥ हरै रुद्र यौं मन्वन्तर चालैं॥८॥ बहुरि सुनौं हरि के अवतारा॥ भव सागर के तारन हारा॥ धर्म पिता अरु मूरति माता॥ तहं नर नारायन विष्याता॥९॥ आत्मज्ञान भक्ति विस्तरैं॥ जो सौं लागि जीवनि स्तरैं॥ अबहू प्रगट करैं आचरन नाना रहा दिनि तस वे चरनां॥१०॥ एक बार सुरपति मनि आन्यो॥ मम लोकहि लेहै यौं जान्यौ॥ तब ताहि आज्ञा कौं महि दीन्ही कांम संग से

सबलीन्हीं॥११॥रंभा दिक अपसरा अपारा॥ त्रिविधि पवन बसंत पसारा॥ बदरीषंड सबै चलि आये॥ नरनारायन बैठे पाये॥१२॥भरि भरि बांन निहने सरीर॥ निर्फल भये अग्नि ज्यों नीरा॥ तब ते सेम रोमपद हरि॥ श्राप अग्नि जीवन गत मांने॥१३॥हरि अपरांध इं इन्द्र तजांन्यों हासि बोले तिनकों भय भांन्यों॥ मति भय करो पंच सरबीरा॥ देवनारि भव प्रांन समीरा॥१४॥ बैठो इहां आतिथ्य करावो॥ हंम आश्रम सुफल करि जावो॥ ए सुनि अभय दान के बैनां॥ ते सब जो रिस के नहि नैनां॥१५॥

न वाये सीसा॥ बोलें बचन जो निजगदीसा॥ हे प्रभुवे
द कहुं नहीं अचेमा॥ तुम हो प्रकृति पुरुष के थंमा
॥१६॥ निर्बिकारा निरगुन निरबेदा॥ जिनकों जा
नि सकै न हि बेदा॥ निजानंद पूरन मुनि सारा॥ ते से
वत हैं चरन तुम्हारे॥१७॥ तुम्हरे चरन सरन जे आ
वे॥ तिनकों सुख दुबिघन पगावे॥ तिनकों लोक
दा बिपग नाचे॥ गए चहैं तुम्हरे पद ऊंचें॥१८॥ तातें
बिघन न सवद्दवा॥ मिटते जो निआपनी सेवा॥ औ
राकिसी कों बिघन न करही॥ जातें तिन्हें दंड सब मर
ही॥१९॥ परि तु वज नहिं न बिघन संतावे॥ बिबन नि
सी [illegible] चरन दे जावे॥ जो त्रिभुवन पति तुम रव

वारै। कदा करै तौ वि घन विचारै॥२०॥ तातें तुम्ह को
हा अचंभो॥ जातें मोहि सकी नहीं रंभा॥ क्रोध्याग्नि
अरु आलस निद्रा॥ सीत उष्न वर पा अरु तंद्रा॥ २
॥ जिह्वा सिस्नादिक विस्तारा॥ इन के गुन ते ज्ञान भि
अपारा॥ ताकौं वहुत कष्ट कारि तैं॥ सो पद कौ पत्र
डि तेन रै॥ २२॥ तिन कौ तुप सबु मिथ्या होई॥ त्रु
लोक मैं एक न कोई॥ तातैं सब साधन ऊं कै॥ तुम्ह
भक्ति विना न हीं तैं॥ २३॥ ग्रावि ग्रि हे वु वचन द
रै॥ तव हरि एक औ चैं नाकरैं॥ अति अरु रहुन
नाहि अनेका॥ सन मोहनीं एक अनेक हारी॥
वसे वा कर नहिं ध्राई॥ सोंनों — यमि है आ

ई॥ तिन के रूप गंध सब मोहे। चंद्र उदै उडुगन जै सोहे॥२५॥ तिन सों हरि जी बोले बैनां। इन मै एक लेहु तुम मैनां॥ स्वरग लोक कौं भूषन रूपा। जातें ए सब परम अनूपा॥२६॥ तिन सब हरि कौं कीये प्रनांमां। लीन्ही एक उरबसी नांमां॥ करि प्रनांम पुनि बारंबारा। पहुंचे सकल इंद्र दरबारा॥२७॥ तिन इंद्रहि परसंग सुनायो। बिसमय त्रास इंद्र मन आयो॥ बहुरि लीयो हंसा अवतारा। चारि भए सनकादि कुमारा॥२८॥ दत्त कपिल ब्यास अरु रूपि ता हंमारा। अरु हुं ब्रह्मरूप बिस्तारा॥ हे ग्रीवां मधु अपांन निवारे। ता करि हरे बेद उधारे॥२९॥ सत

ग्रलराजाहरिभक्तै॥ताकौंहरिजीकीयोबिरक्त॥
नहीप्रलयप्रलयद्धिषरायौ॥मछ्रूपजांनाहिस
माय्यौ॥२०॥बहुरिबराहरूपहरिधास्यो॥हर
दैत्र्प्रातिदुष्टहिमास्यो॥बोरीहुतीमहीजलमां
ही॥सोऊपरिथापीपलमांही॥२१॥कूरमकैमंद
गिरिधस्यो॥त्र्प्रंमृतकाढिसुरकारजकस्यो॥ग्रा
हग्रह्योगजराजपुकास्यो॥तबहरिजीततकाल
उबास्यो॥२२॥बालषिल्यादिकजेरिषिराजा॥त्र्प्रं
गुष्टसमत्र्प्राकारबिराजा॥कश्यपकेंकाजेंएकबा
रा॥सामिंधानिकौंतेबनहिपधारा॥२३॥तहांगाई
पग जलभरिया॥तिनमैंत्र्प्रापुत्र्प्रा.

॥ हासी करै ई उतहां षरो ॥ तबातिनिहदे हरिस
रो ॥ २४ ॥ जब आतम कौ कोई नांही ॥ तब तुम ना
थ उधारन मांही ॥ तातें अब हम भए अनाथा ॥ क
रुनां सिंधु गहौ कर हाथा ॥ २५ ॥ इतनी सुनि आ
रति की बांनी ॥ तहां उदि धाए सारंगपांनी ॥ तब ह
रि कर गहि सब नि उधांरा बालाषिल उधरन अ
वतारा ॥ २६ ॥ अस हत्या भय इंद्र सहास्यो ॥ तब
ही हरिजी प्रगट उधास्यो ॥ सुरबनिता जब असु
रनि हरी ॥ तब ते हरि सर नहि अनुसरी ॥ २७ तब
हरिजी ते सकल उधारी ॥ असुर मारि सब बिपति
निवारी ॥ पुनि नरसिंघ रूप हरि धास्यो ॥ असुर

दर [illegible] निकपुजि [illegible]

लीन्हौं राखी॥ [illegible]

असुरखवल आति [illegible]

॥२४॥ तबतब [illegible]

तारघ राँही॥ [illegible]

तसुरनरसुप [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रांमां॥ साइर ऊपरि से लाजि निता रे॥ रा वन आदि
दुष्ट संहारे॥४३॥ आगें रांम कृस्न अवतारा॥ मुनी
बलदेव दिगें भारा॥ जदुकुल जनमि कर्म ते क
रि है॥ जिन सौं लागि जीवा निस्तरि हैं॥४४॥ असुर
दोषि यज्ञन के करता॥ जीव न मारि उदर के भर
ता॥ बुध रूप हरि जीव घारि हैं॥ अज्ञानि मेटि पा प
डावि सतरि हैं॥४५॥ बहुरि धरा दिग कालि के रूपा
॥ अति अपराध करा हिं जब भूपा॥ कालि के अं त
सकल संहरि हैं॥ बहुरि प्रकल सत्य जुग कारि हैं
॥४६॥ औसे बि[redacted] कर्म अवतारा॥ कोई कहत न
पावै पारा॥ कछू एक मैं तुम सौं कहै॥ औरै कौ टि

अनत निरहै ॥४७॥ इनकौं कहै सुनैं जो गावै प्रेमस
हित निसबासुरि ध्यावै ॥ सो भवसागर मैं नहि रहै
पावै ज्ञानं परम पद लहै ॥४८॥ दोहा ॥ एबें नां खाने कुशि
लकै ॥ कीन्हौ प्रश्न नरेंद ॥ प्रभु जी निकी कोंन ग
ति ॥ जे न भजे गोबिंद ॥४९॥ इति श्री भागवत म
हापुराणे एकादश स्कंधे बसुदेव नारद संबाद
यां पंतेजो पारव्याने चतुरथो ध्यायः ॥४॥ चौपई ॥
६९ ॥ श्री कौबिदेरु उवाच ॥ जे न करैं हरिजीकी
सेवा ॥ तिनकी कहौ कोंन गति देवा ॥ तिनकै
पति न सुपिनै आवै ॥ निसदिन

रांमां॥ साडूर ऊपरि से लाजि निता रे॥ रा वन आदि
दुष्ट संहारे॥४३॥ आगें रांम कृष्ण अवतारा॥ गुनी
प्रबल द्विज हि गे मारा॥ जदुकुल जनमि कर्म ते क
रि है॥ जिन सों लागि जीवनि सत्त रि है॥४४॥ असुर
दोषियज्ञन के करता॥ जीव न मारि उदर के भर
ता॥ बुध रूप हरि जीव प्यारि है॥ जज्ञ नि मेटि पाप
डाव सत रि है॥४५॥ बहुरि धरा द्विग कालि के रूपा
॥ आति अपराध कराहिं ज बरूपा॥ कालि के अं
स काल संहरि है॥ बहुरि प्रहल सत्यजुग कारि है
॥४६॥ औ से बिष्णु कर्म अवतारा॥ कोई कहत न
पावे पारा॥ कछुएक मै तुम सों कहूं॥ औरै कौ टि

अनत निरदै॥४७॥इनकौं कहै सुनैं जो गावै प्रेम स
हित निसबासुरि ध्यावै॥सो भव सागर मैं नहि रहै
पावै ज्ञान परम पद लहै॥४८॥दोहा॥ए बैंनां सुनि कुसि
लकै॥कीन्ही प्रस्न नरयंद॥प्रभु जी निकौं नम
ति॥जे न भजे गोबिंद॥४९॥इतिश्री भागवतेम
हा पुराणे एकादश स्कंधे बसुदेव नारद संबादे
पायं ते जो पारम्याने चतुरथो ध्याय:॥४॥चौपई॥
६९॥श्रीकौं बिदेह उवाच॥जे न करै हरिजी की
सेवा॥तिनकी कहौ कौन गति देवा॥तिनके त्र
पति न सुपिनै आवै॥निसदिन तृस्ना आगनि ज

रा वै ॥ १ ॥ परिजौ वृद्द विधि धर्म उपावै ॥ तौ मा हि
धु वै न न न व न जा न र है ॥ अ ॥ के हो कछू सुष पा
वे ॥ यक दिवस नज न कज बरद ॥ अष्टम च मस
नो म वक हे ॥ २ ॥ च म स ऊवाच ॥ हरिजी विप्र बद
न ते क रे ॥ बादु न ते स त्री बिसत रे ॥ जे घनि हुतै वे
स उप जा ए ॥ सु द्रति मैं च रनानि तें आए ॥ ३ ॥ या
दी भांति किये आ सर मां ॥ ता ते न ज न स बनि
कौ धर मां ॥ ते आप ही करै प्रति पाला ॥ आपु ह
लो पे दीन दयाला ॥ ४ ॥ एस त्र नु कौ जे बा सरै ते
ऊ पार अपा रा भनि करै ॥ तें ई गुर ज्ञो दो पित जो

ही॥स्वांमीजो हरिरतघन ओही॥५॥तिनि
पराधनि अधग तिजावें॥कबहुं भुलिसुपन
पावे॥सुउजो पिता अंसजआदि॥तिन कों हरि
कथाश्रवनादि॥६॥तेमनमे अभिमान नधरै
॥तातेतुमसे किरपाकरे॥यातें इनकों
भारा॥परिऊंचेनकोंनारनपारा॥७॥विप्र
छत्री बैस्पत्रिवर्नां उपनयनादिवेदमपक
॥इनसब हिनके ते अधिकारी॥तातें हीन
हुतअहकारी॥८॥तातपरजकोंजाने
पुरपति वांनी मेनर मांही॥विप्रसज
मअधिकारा॥यातैनादि नलपाई

॥ ९ ॥ कर्मअकर्मविकर्मनजानै॥ अतिकेगे
रआपुदिबहुमांनौं॥ हमपंडितजज्ञनिकेका
रक॥ औरबहुतकर्मनिविसतारक॥ १०॥ आ
पभरमैंऔरनिभरमावै॥ प्रियबानीबहुभां
तिसुनावै॥ कांमरूअर्थअर्थकारमानै॥ पढि
पढिबेदसाषिबहुआनैं॥ ११॥ बहुसंकलपक
रैमनमांहीं॥ बहुतबहुआरंभकरांही॥ सौं
ही सौंराजसआधिकारा॥ कांमक्रोधलोभअ
हंकारा॥ १२॥ हंसकपरस्वतुराईआंनैं॥ हरिभ
गतनकीसेवनगनैं॥ आपुआपुबेगेमिति
जबही॥ गृहकेसुपनिसराहैतबही॥ १३॥ जि

नमेंत्रंनदह्नानांही॥दंभमानसौंजहकर
ही॥बहुतपसुनिमारैत्रज्ञानी॥तिनत्रपर
धनिमकैनजानी॥१४॥इतनौधनत्रायो
इहत्रेहे॥इतनौंमिलिएतौतवकैहे॥कुल
संपतिबिद्यावकुराई॥सागरूपबलकर्मब
डाई॥१५॥इनकोमदवाढ्योंत्रधिकाई॥तातें
हृदैसमुझिनाहिकाई हरिभगतिनिसोंगनै
हासी॥भगहरेभरैछौड़िषलकासी॥१६
॥थावरजंगममेंसबघटमांही॥हरिपुर
षालीकहुंनांही॥ज्योंत्राकासलिपतिन
हिहोई॥सोंहरिबेदकहत हैसोई॥१७॥

सारिवैमदनकबहूंजानैं॥जातैंहरिभगत
तिनाहिमानैं॥बहुतमनोरथनिसदिनक
रे॥तृस्नातापअनलनिनाहिटरैं॥१८॥मद्यपा
नअरुमासअहारा॥नारीनेहसहितजग
सारा॥तासकलहित्यागिवैनिमित्ता॥वि
धिमेवेदलगायोचित्ता॥१९॥संगकरैतौ
नारिविवाही॥ताहूंमेबहुतैंतिथिनाही
बहुरिकहे देवैरतिदानां॥परजातिमित
नाहिंआंनां॥२०॥याविधिकमकमबहुत
छुडावै॥बहुरिवेदसबत्यागकरावै॥औ
सैहिआंमिषअरुमदपांनां॥यज्ञमांहिनां

दीकहुँआंनं॥२१॥बहुस्यौंउदाहुतेछोडावै
॥ऐसोतातपरजकोपावै॥हरिकीसरनदि
आवैकोई॥सारीबिधिसमुझैएकसोई॥य
॥केजोतिनकीसरनादिआवै॥अभिप्रायत
रासोपावै॥वैहरिजनअरुहरिहिंनजानै
॥आपुहिकोंपंडितकरिमानै॥२३॥तातेत
तपरजनहिजानैं॥पढिपढिबेदअनरथ
गंनैं॥धनऐसोजोकरैउधारा॥सोधनथो
वैवृथागवारा॥२४॥जोधनहरिकेकाजल
गावै॥सोतबप्रेमभगतिकौंपावै॥तातैंहो
ईग्यानप्रकासा॥तबहरिमिलैमिटैभवपा

सा॥२५॥ऐसो धनतै सुदक्षयां[redacted]॥दृढकाजपो
ष्वैं भरमां नां॥कालनिरंतरदहरतनदेषे॥वहुम
दमत्तदूरिकरितेषे॥२६॥मद्यमांसमरवमै
श्रांनीजै॥श्रौरसूलिकहूं नांवनलीजै॥तरहं
ऊंश्रापुलेहूं श्रापांनां॥षानपानतैंश्राधिग
तिजांनां॥२७॥सोंवनितारितिदांनदिदैं
श्रौरसूलिकहूं नांवनलेवै॥सोऊजवलगि
एकसुतहोई॥सुतकेभयेंत्यागियेसोई॥२८
॥ऐसासकलवनिकोधर्मा॥ताकौभूलिनपा
वैभरमां॥भरमहीनश्रुतिसुमृतसवषांनै॥भूलि
पश्रापुदिपंडितमांनै॥२९॥तातेंवहुतकर्म

आरंभै ॥इंद्रियमनहिकरैनहिं थंभै ॥द्रो
हकरैवहुजीवनिमारै ॥तेवहुजनमतिन
संहारै ॥३० ॥थावरजंगमसबघटमांही
एकैहरिदूजोकोनांही ॥तिनकोद्रोहकरै
नपोषै ॥दारासुतनिआंनिसंतोषै ॥३१ ॥न
सुखिपनहीतत्वज्ञांनी ॥पढिपढिग्रंथहो
अभिमांनी ॥तेअसाधिरोगीसबजांनी ॥ति
सौंज्ञांननमाउंझांनी ॥३२ ॥तेसबकरैंआपु
घाता ॥सुपिनैहुंनलहैंकुसलाता ॥कर्मपंथ
सुषकोंचाहैं ॥अमृतदेकरिविषदहिसा
॥३३ ॥नांनांतापतपतेरहैं ॥करैंम

फल दिनलहै॥ बहुतजांतिजमकरिउपजावै॥ सुतवितदारासकलमनजाए॥ ३४॥ तिनिम विदिनकौं छोडिदुहांदी॥ वेधेआपुजमद्वारै मांही॥ जमकेदूतनरकभोगावैं॥ तहाकेउपक रैंनाहिजावैं॥ ३५॥ तिनकौकोनाहिराषनहार॥ हरिरक्षकसोनाहिनसंभार॥ कहाकहौंकछु कहैनजांही॥ हरिबिनकहूंपलकसुषनांही॥ ३६॥ दोहा॥ चमसबचनसुनिभूपके॥ बढ्यौव मअरूप्यार॥ तबजुगजुगकौपूछियौ॥ हरिकौभजनप्रकार॥ ३७॥ राजाउवाच॥ कौन समैंकैसौअवतार॥ कैसौनामबरनआका

रा॥ किंहि विधि भजैं बरन आस्रमी॥ कहौ जं
न के साधन धर्मी॥ ४८॥ जिन ते ज्ञान न लहैं सब
त्यागे॥ तिन हीं हरि चरनं अनुरागे॥ सुनि नृप
बैन भगति के भाजन॥ तब बोले नव मे करभाज
॥४९॥ करभाजन उवाच॥ सत त्रेता द्वापर कलि
काला॥ बहुत भांति भजिए गोपाला॥ बहु बिधि
बरन बहुत आकारा॥ बहुत नाम बहु भजन प्र
कारा॥ ५०॥ सतजुग सुकल बरन भुजचारी॥ स
स जटा तन बलकल धारी॥ कंठ जनेऊ कर ज
प माला॥ दंड कमंडलु अरु मृग छाला॥ ५१॥
तब मनुष्य होवे सब सुद्धा॥ समनि रवैर

दपरवुष्या॥ अस्थिरकारिइंद्रियमनज्ञांनां॥के
रे सबैतिनिहरिकौध्याना॥४१॥ देसद्युपरम
धरमजोगेश्वर॥ निरमलपरमातमअरुई
श्वर॥ पुरुषोतमवैकुंठअव्यक्ता॥ तिनकेनाम
हैंहिरण्यगर्भा॥४२॥ रक्तवरनत्रेताजुगमांही
त्रिभुवनमेफलागलिपहरांही॥ पातकेसुरवा
दिकेहाथा॥ रिगजुगसामअरुईमयनाथा॥४३
॥ तवतिनिद्रितजज्ञादिककरै॥ बेदविदितक
रमनिविस्तरै॥ सर्वदेवमयहरिकौंजांनै
॥ तवसवसुंदरिपूजाठानैं॥४४॥ द्वापिरस्य
अरुगाईकहीजै॥ विस्नुरूपाकपियजुमनीजै

॥सबबेदउरुक्रमबिजयत॥श्रैसनांमकहैंस
बसेत॥४६॥द्वापरपीतबसनघनस्यांमं॥सं
षांद्विकआयुधअभिरामा॥चारिबाहुमृगल
ताधरनां॥लछमीचिंन्हबहुतआभरनां॥४७
॥चांमरछत्रआदिबहुसेनां॥महाराजलछ
नसुषदैना बेदतत्रपथसेवाकरै॥सर्बअ
र्चनपूजाबिस्तरै॥४८॥बासुदेवसंकरषन
देवा॥प्रद्युमनरुअनिरुद्धअभेवा॥नारायनभ
गवांनअनंत॥जिनकोकोईलहैनअंत॥४६
॥विस्वरूपबिस्वपूरणस्वांमी॥सर्बातमसब
अंतरजांमी॥बहुतभांतिअस्तुतिबिस्तरै॥बि

धिसौंह्वापरहूजाकरै॥५०॥कलिजुगपीतपि
तंबरधारी॥कृस्नदेवघनस्यामसुरारी॥सदि
तपारषदवहुश्रामरनां॥श्रवनकीरतनपू
जाकरनां॥५१॥इंद्रियमनवहुमरेबिकारा
तिनतेराषेचरनतुम्हारा॥सवविधिसवती
र्थकौवासा॥सुमिरतहीपुरवैंसवआसा॥
५२॥सिवविरंचसुरनरमुनिध्यावैं॥जाकौभे
दवेदनहींपावैं॥रविलेतसरनाहिजोआवैं॥ज
नमभरनसवडुषमिटावैं॥५३॥केवलदीन
तउधारै॥भवसागरकेपारउतारैं॥ऐसाच
रनतुम्हारेगायौ॥ताकीसरनदीनमेंआयौ॥

५४॥ अलप दुलभ जु सुख है जाकौं॥ ऐसो
ज छांडि कौंरि ताकौं॥ दसरथ मत्त वचें सति
रांनां॥ बन को गवन कीयो जिनि च रनां॥५५॥
द्र मामिर गद यंतामन भायो॥ जो ताके पीछे
विधायो॥ जो भगतनि के पाऐं आयो नां॥
रन सरन में लीनां॥५६॥ ऐसी विधि कलि अ
स्तुति करैं॥ बहु विधि हरि नां मानि उचरैं॥
नै कहैं सुमिरै अरु ध्यावै॥ ते तत काल त
पावै॥५७॥ या बिधि जजु गैं हरि सेवैं
कों हरि ज्ञान दिदेवैं ज्ञान पाइ निज तत्त
वे॥ जहां जाइ बहु स्यौं नहि आवै॥

लिजुगके गुन कौं जानत ॥ ते बहु विधि अस्तुति
कौं गंनत जै सो परम सार कलि मांही ॥ अैसो
और जुगनि मै मांही ॥ ५९ सतिजुग ध्यांन जज्ञ
त्रेता माहि ॥ द्वापर आति मां पूजै रं माहि ॥ कलि के
वल नाम मा दि के मां है ॥ सो सो फल तत्त काल हि
पावै ॥ ६० ॥ भ्रम वृ सागर मांहि निरंतरि ॥ डुबि
तजी वृ परे नर्क अंतरि ॥ ता मैं हरि गुन नाम म
चारन ॥ एक हि दाज सर्ब को तारन ॥ ६१ ॥ पा
प अपार भो र कलि मांही ॥ जा मैं पुन्य लेस क
छु नाही ॥ ता मैं हरि गुन जे उचारैं ॥ ते तरि औ
प औ र कौं तारैं ॥ ६२ ॥ ते कृत्य कृत्य ते ई बडभा

गी॥जे कलि हरि की रति अनुरागी॥आपुसुमरि
ओरनि सुमिरावै॥ते जगि जनमि बहुरि नहीं
आवै॥६३॥सत त्रेता द्वापर अवतरहीं॥ते कलि
जुग की बंछा करहीं॥कलि कछु साधन अरु
श्रम नाहीं॥हरिगुन गावत हरि हिस मांहीं॥
६४॥अरु कहुं कहुं कोई देस बिसुद्धा॥द्राविड़ आ
दि मानव लहं बुद्धा॥जे उपजे ते भक्ति हि करै॥त
तें तहां बहुत उधरैं॥६५॥अरु जहां ता[illegible]
णी कृतमाला॥कावेरी पैसुनी बिसाला॥अरु
सुरसुती पच्छिम बाहनी॥गंगा आदि उरतह

दनी ॥ ६६ ॥ जेमांनव जलपीवे इनको ॥ दूरिदी
इ हदै मलातिनको ॥ तेसर्वथा दोदिदारिभ्रत
॥ साधुसंग होवे आसक्ता ॥ ६७ ॥ भूत कुटुंवपि
तरिषिदेवा ॥ इनकेरिनीकरैंसबसेवा ॥ सो
न रैनीनहीसेवाकरई ॥ सो सवुताजिहरिको
अनुसरइ ॥ ६८ ॥ जोविधिताजिहरिचरनानि
आवै ॥ तिनिकेमलहरिदूरिबहावै ॥ वदु
मर्मरुपजेनहीकोई ॥ उपजेकदेहरैंहरिसो
ई ॥ ६९ ॥ तातेसबविधिकोफलएकागदि
हरिपदछाडिअनेका ॥ सबकेप्रभुसवही

सिधुब्रह्मेगयो॥७॥याहीबिधितुमहौं... भाग
बदाता॥सरनागतपालकबिष्याता॥जबज
जोजोसरनहिंआयो॥तबहीतौंतिनिदरिपा
॥तातेंऔरसकलपरदरिये॥श्रीभगवानचर
तधरिये॥७१॥ऐसेसुनिनबंदूकेबेना॥जन
देआतिउपजोचेना॥संसापियोसकल
ब्रह्मजानिसूतोसोजाग्यो॥७२॥
दुपूजाकीन्ही॥बिप्रनिसहितप्रद... दीन्ही॥
बिधिदरसनपावैसबही॥अंतरध्यानभयेतेत
बही॥७३॥जनकबिदेहऔरसबत्याग्यो
केचरनकेवलअनुराग्यो॥याबिधिब्रह्म
... ॥हेकारिहरिचरनानि

रागी॥ और सकल कौं तजि दौ संगा॥ नवपाइ
दौ अलसं संगा॥७५॥ अरु तुम तौ देवाकिवसुदेव
॥भ एकतार यकरि हरि सेव॥ तुम्हरे ज सपूस्यो
जगसारौं जिनकें हरि लीन्हौं अवतारा॥७६॥ दर
स आलिंगन आलापा॥ आसन भोजन सैं ना मिला
पा॥ हरिसों पुत्रजांनि चित दीन्हौं॥ ताते सकल अ
जन तुम कीन्हौं॥७७॥ कपटवासुदेव सिसुपाल
॥ दंतवक्र सल्वादिकुराला॥ बैरभाव रूक्माहिहि
त धास्यौ॥ तिनहूं कौं हरि देव उधास्यौ॥७८॥ तौ
जे प्रेम भक्ति सु सेवैं॥ तिनकौं कृंन परम पद दे
वें॥ अवतुम पुत्र बुद्धि मति आनौ॥ कृष्ण सदे

व कौ ब्रसहिजानों॥७९॥माया करि धारी नरद
कौ ब्रसहिजानों॥बहोदे षि मुत्र मैं
दी॥पारब्रह्म तुम जानों ये दी॥बढ़ोदे षि मुव में त्र
यभारा॥मेटनकाज धर्यो अवतारा॥८०॥प
रमपुनीतजस हि बिसतरही॥जासोंला गि जी
निसतरही॥जेजे हूनसू हेतलगावें॥ते ते सक
लपरमपद पावे॥८१॥ऐसी सुनि नारद की बानि
॥बसुदेव देवकी अद्भुत मानी॥आपु हि हू म
कौ करि जान्यो॥हरि मैं ज्ञा व ब्रह्म की आन्यो॥८
॥इहइतिहास कथा जो भाषै॥सावधान सुनि ह
दै राषै॥सो सब भव बंधन छूटका वे॥उपजै ज्ञा
परमपद पावे॥८२॥दोहा॥इहमा

॥हरिमिलनेकौद्वार॥हरिउधवसंबादअबव
रनुकरिबिस्तार॥८४॥इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेएकादसस्कंधेबसुदेवनारदसंबादेभाषायांश्री
पास्यामेपंचमोध्याय:॥५॥नारदबसुदेवसंबा
समाप्त॥चौपई॥३५३॥अथकृस्नउद्धवसंबाद
प्रस्तुयतेतत्र॥श्रीसुकउवाच॥बहुरिसुनौंनृप
आतमबिद्या॥जाकेजांनेमिटैअबिद्या॥मिटंअ
बिद्याब्रह्महिपावै॥बहुरिहिपाइफेरिनहिंआवै
॥१॥तबब्रह्मासनकादिकसंगा॥नारदादिरं
हरिरंगा॥सकलप्रजापतिभ्रगुमरीचादिक
महादेवलीन्हेभूतादिक॥२॥सुरसमूहसंगलेस

रपती॥पवनअग्नीसुतयादपती॥बसुआग
रासुरुद्रादिसुदेवा॥साध्यादिकअरुबिस्वेदेवा
॥३॥रिषिगंधर्बपितरअरुनागा॥चारनसिद्धप्रे
रअनुरागा॥अपसरुअरुगुह्यकाबिद्याधर
किंनरयक्षादिकमायाधर॥४॥कृष्णदेषिबेका
रनसार॥आंनदितदारिकापधार॥केईनाचै
केईगांवै॥केईबाजेबहुतबजांवै॥५॥केईजय
जयसबदउचारै॥केईकृष्णजसाहिबिस्तारै॥यौ
बिधिकरैबहुतउछाहा॥मगनभ
वाहा॥६॥श्री

सबमनहरनमुरारी॥लोकानिमांद्विजसादाबि
स्तारैं॥अवनादिकानिसकलत्रबुजारैं॥७॥नि
धिरिधिपूरनद्वारावती॥जाकेसमिनद्विअम
रावती॥तामेंब्रह्मादिकचालिआये॥कृष्णदेव
केदरसनपाये॥८॥सुरगवृंदफूलनिकीमाला
॥छादितकीन्हेदीनदयाला॥पावतदरसतप
तिनाद्विदोवैं॥चित्रलिषेससनमुषजोवैं॥९॥
॥चित्रपदानिबद्धअस्तुतिकरैं॥उत्तमअरथ
निजसाबिस्तरै॥साद्वितबीनतीअरुप्रनाम
दरसनयेसबपूरनकामा॥१०॥देवाऊअवाधदे

अनुचरनसरोजतुम्हारा॥मनक्रमवचनाचित्त
दंकारा॥इंद्रियबुद्धिध्यानअरुदेहा॥वंदतदेह
मप्रगटदेहा॥१२॥जाकोध्यानवचनमनसाधें॥स
वधानविसदिनआराधे॥आवसहितआनिअं
तरध्यावे॥तेऊसोविधिप्रगटपावे॥[illegible]
ध्यानिध्यानिहमध्यानिआगहमारे॥परगटदेप
रनतुम्हारे॥जिनकेध्यानकीरतनश्रवनां॥बहु
रिनहोवेआवागवनां॥१३॥तुम्हअद्वैतद्वैतअ
दकरो॥अपनीमायासबविस्तरो॥तुमहीमेंउ
पजेसंसारा॥सदारहेतुम्हरीआधारा॥१

मदीमाहिलीनसबहोई॥तुमकौंपरसिसकैनहीं
कोई॥रागरहितआनंदस्वरूपा॥अजितअमि
ताचिद्रूपअनुपा॥१५॥वहुअध्ययनश्रवनअ
रु दानौं॥क्रियाउपासनतपअभ्यानौं॥त्यागजो
ग [illegible]जोगादिकजेते॥आतमसुद्धकरैंनहिएते॥
१६॥तुवगुनश्रवनपरतअघनासैं॥ज्यूंतममांहि
सुरप्रकासैं॥तातैंजनमकरमतुमधारौ॥हीनबं
धहीननिकद्धारौ॥१७॥जोतुवचरनकंवलसुनि
ध्यावै॥भवभयभीतनपलछिटकावै॥अरुनि
जमकानिरंतरसेवै॥भयनाहिंसमुझैनाहिकछु

लेवै॥ १९॥ अरुये कै बै कुवनि मता॥ ह्दै घरें तौ
चरना दिचिता॥ बहुरि एक सेवैं सद कांमां॥ एक
नये चाहै निहिकांमां॥ १९॥ जीवन मुक्ति भये रकु
सेवै॥ प्रेमभाव सूं अति सुषलेवै॥ एकौ जत्रादि
क सो भजें॥ सर्व देव मय तुम कौं जजें॥ २०॥ एकै
वरनआदि आसरमां॥ तुम्हरे हेत करें सब ध
रमां॥ एकै एक रूप करि ध्यावें॥ द्वैत भाव कव
हूं नहि ल्यावें॥ २१॥ एकै तुव प्रतिमां कों सेवै॥ ए
कै नांव निरंतर लेवै॥ एकै श्रवन कीरतन ध्या
नां॥ कहां लगै काहि ए विधि नांनां॥ २२॥ ग्रौजे

तैतैसवर्वंछितफलले
मपायौं।तातैंअबदा
वछापूरनकरीअ
ममकरेंहूंजीवा
सवसासनं।२४
हितकारी।
रनकरै
।२५जो
हेततौआगे
ताकौंआप
२क

पातितुमऐसे दीन दयाला॥जगति अधीन करत
प्रतिपाला॥तबइंद्रादिकनिरादरकरो॥बनम
लाताऊपरधरो॥२७॥जोतुवचरनभगतसुरका
रन॥दुष्टअसुरसेनासंहारन॥असुरानिकोअ
घगतिकोदाता॥सुरानिसुरगदीसेबिष्याता॥२८
॥अभयदानअघनासनबानें॥लोकवेदइहज
गटबषांनें॥बाघीधुआगंगतिहूंलोका॥जाके
दरसिमिटैंभयसोका॥२९॥ब्रह्मादिकसुरनर
अधिकारी॥तुमरेचरनकंवलबसचारी॥
अतिबलीवेलमदभीनी॥नापेनाकपनी–

जे तुव चरनादिअसेवै ॥ ते ते सब वंछित फल ले
वैं ॥ सो तुव चरन जुगट्टंम पायौं ॥ तातें अब दी
जै मन भायौं ॥ २३ ॥ इद्दम वंछा पूरन करौ अ
पनें चरन कंवल चित धरौ ॥ मम मकरे दूजी बा
सनां ॥ जिनतें उपजै भव सासनां ॥ २४ ॥ परम
दयाल जगत हित कारी ॥ इछा पूरक देव मुरा
री ॥ इछा पूरन करौ हमारी ॥ निहचल उपजै
भगति तुम्हारी ॥ २५ ॥ जो तुव जन वनमाला क
रै ॥ प्रेम सहित तो आगे धरै ॥ कवला दे विसप
रधा आंनें ॥ ताकों आपू सप्पाति ना जांनें ॥ २६

तुम अैसे दीन दयाला॥ जगति अधीन करत प्रतिपाला॥ तब इंद्रादिक निरादर करो॥ बन लाता ऊपर धरो॥ २७ जो तुव चरन भगत सुर न॥ दुष्ट असुर से ना संहार न॥ असुरनि को गति को दाता॥ सुरनि सुरगदी से बिष्याता॥ अभय दान अघ नासन बाने॥ लोक बेद इह द टबषांनो॥ बाची धुआ अगं गति हूं लो का॥ जाके दरासि मिटे भय सो का॥ २६॥ ब्रह्मादिक सुरन अधिकारी॥ तुम्ह है चरन कंवल बस चारी॥ नाचे ना कध नजी बेलम दभीनी॥

धीनं ॥२०॥ जबजबअसुरानितैदुषपावैं ॥ तबत
वसरनचरनकीआवै ॥ तबसु[illegible]षउपजैसब
दुषभाजै ॥ अपनेअपनेगौराविराजैं ॥ २१ ॥ ब्रह्
तिपुरुषमदतजानियंता ॥ तुमइनकेकारनम
गवंता ॥ तुमतैंपुरुषसकतिजबपावे ॥ अहंका
हिभोतिमदतसउपावे ॥ २२ ॥ तातैंउपजैइंद्र
व्रह्मंडा ॥ जलअधरातिरैऔंअंडा ॥ पावरजं
गमाबिबिधिप्रकारा ॥ तातैंहोइसकलबिस्त
रा ॥ २३ ॥ तातैंतुमयासबकेकरता ॥ उपजाव
नप्रतिपालनहरता ॥ तुमआधारसकलके

स्वामी॥ तुमफलदाताअंतरजामी॥ २४॥ जो
कछुहोइसकलजैमांही॥ तुमकरताकुजाकीना
हीं॥ परिकहुंलिपतिहोहुनहिदेवा॥ कोईलिपि
नसकैतोभेवा॥ २५॥ सोलहसहंसएकसतआग
॥ जिनिकैहृदैप्रेमअतिकाग॥ हावभावसंग्री
तिवढावै॥ मदनबानवांनबहुभांतिचलावै॥
२६॥ तुमतोहूंवसहोवैनांही॥ निहचलनि
जानंदपदमांही॥ औरछोडिहूंवेकोई॥ कार
नवासनांवंधेसोई॥ २७॥ एहुनदीप्रगरतुम
कीन्ही॥ जिनकीमहिमांपरनचीन्ही॥ एकगं

गचरननिकौनासा॥ परसतनिरमलकरैसरीर
॥२५॥ दूजीतुवकीरतिकीसरिता॥ त्रिभुवनज
हांतहांविसतारिता॥ श्रवनकरतअंतरमलना
से॥ निरमलहृदयब्रह्मपरकासे॥२६॥ ब्रह्मप्र
कासमयेभयनाही॥ षेलेएकमेकमनमांही
॥ इनद्वैनाहिंमजैंजेपंडित॥ तिनकौकालकरै
नहीषंडित॥ ६०॥ तातैंनाथकृपाअबकीजे॥ मो
घसंगहमकोंनितदीजै॥ जिनकेकथानहीदं
मपावे॥ जातेतुवचरननिचितलावे॥ ६१॥
सु०कुं०व्यास॥ योलोसिवसनकादिकसंग॥ अ

स्तुति करी बहु स्नु संगा ॥ [illegible]
सुना है ॥ जा के नाडा रह [illegible]
बाद ॥ [illegible] मत [illegible]
मरीज बची [illegible] ॥ [illegible]
लउता स्यो [illegible]
रमाबि सता [illegible]
॥ अरु वा [illegible]
[illegible]
[illegible]
कर्म [illegible]

॥ अरु जदुकुलद्विज श्रापद्विनास्यो ॥ नहिं रहिहै दिनद्वैकै नास्यो ॥ तातें देवकाज सबकस्यो ॥ करिबे कछु नाही ऊबस्यो ॥ ४६ ॥ गई बरष सत अधिक पचीसा तातें हम बिनवैं जगदीसा ॥ अबकारिइ पाचलो निजलोका ॥ करत पुनीत हमारे वोका ४७ ॥ हम हैं दास तुम्हारे देवा ॥ निसादिन करें तुम्हारी सेवा ॥ ऐसी सुनि ब्रह्मा की बांनी ॥ तब हसि बोले सारंगपांनी ॥ ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मैं सबु सुनि तुम्हारी बानी ॥ तुम्हारो काज भयो इह जांनी ॥ प रिजदुकुल योद्धा परिहरौं ॥ तौ नास सकल तुवको

मैं करो॥४९॥ ऐसबजादवबहुमदमांता॥नएर
हैंसोमेरासंता॥मोहितजेसबपरलयठानें॥ज्योंसा
यरमरजादाभानें॥५०॥तातेंनासहेतउपजायो॥श्री
वसवनिविप्रनितेंपायो॥अबहूंनसवहिनकोंवि
नसांऊं॥पीछेंतुवलोकनिमेंश्राऊं॥५१॥ऐसेसुनि
हरिजीकेवैनां॥हदेवदोसवहिनकेचैनां॥कोरि
प्रनपतिवीनतीसारे॥आपनेंआपनेंलोकपधारे॥
५२॥तववतरपतिकीसभामंझारी॥वैठेजदुकुल
सहितमुरारी॥द्वारावतीउवैउतपाता॥तिनकों
देषिकहीहरिवाता॥५३॥श्रीभगवानुवाच॥

उतपात उठै चहुं ओर ॥ अतिम पदायक दीसै घोर
॥ असुर द्विज आप भयो कुल मांही ॥ तातै भला देषिये
नांही ॥ ५४ ॥ तातैं अब इहां न हीं रहिए ॥ तजि एवै
जिवै जो चहिए अति पुनंत देतरआसा ॥ तहां ब
गि चालि कीजै वासा ॥ ५५ ॥ एक बार दक्ष आप दिद
यो ॥ सासिके इहां ईरोगत बभयो ॥ जब सौं सासिप
भास अन्हायौं ॥ छूटौ आप परम सुष पावौं ॥ ५
॥ तातैं अब परभास चलीजै ॥ तहां जाई अस्नांन
हि कीजै ॥ तपति देव पितरनि कों कारिए ॥ बि
प्र भोजन बहु बिधि बितरिए ॥ ५७ ॥ तिन कों दांन ब

ह्रबिधि बिदा कीजै॥ आज्ञा सहित उनौं मदि कीजै॥
तिन परसाद दुष पारिं ए॥ ज्यों नां जानि सो साईं रति
रिए॥५८॥ ऐसी सुनी हरिजी की बांनी॥ सब जा दु
वानि भली करि जांनी॥ तब चालिबे को सकल बि
चारें॥ आपने आपने रथानि संवारिं॥५९॥ तब उद्ध
व हरि कौं निज दासा॥ देषि सकल बिधि भयो उ
दासा॥ चलि एकांत हरिजी पैं आयो॥ चरननि
परि के बचन सुनायो॥ दो॰॥ उद्धव वाच॥ देव दे
व ईश्वर जोगेस॥ अवनकी रतन हरन कलेस॥
जदुकुल को संह

कपारिदारिद्रो ॥ ६१ ॥ बिनुआपमोटिन संभरथा
॥ नहीमेटोसोइदैअरथा ॥ मरजीवानिवरनतु
म्हारा जैसेमीनउदकआधारा ॥ ६२ ॥ प्रानना
थ अवऐसीकीजै ॥ संगआपनेमोकौलीजै ॥ तुम्ह
रे सबआचरनअनुपा सबकोंअतिकल्यान
सरूपा ॥ ६३ ॥ जिनकोंपाइऔरसबत्यागें ॥ त्रि
भुवनकेसुखदुखसेलागें ॥ आसनगवनअसन
असनांनां ॥ जागतअरुसोवतबिधिनांनां ॥ ६
॥ सदानिरंतरिकोंमेदासा ॥ कंचुपलतजोतुम्हा
रेपासा ॥ इदमायाभयतेनहिकहूं ॥ तुमबिन

अरचांनिमेषनरहूं॥६५॥गंधबसनमालाआ
भरना॥तुवउत्तारनकोमेचरनां॥महाप्रसाद
निरंतरपायो॥दरसपरसबहुबिधिसंतोष्यै
॥६६॥ऐसोमेनिजदासतुम्हारो॥मायाकारि
कहाहंमारो॥मायानयअरुतुम्हरेहेता॥दोंहि
दिगंबरऊरधरेता॥६७॥इंद्रियदेहप्रानमनसा
धे॥सावधानतुमकोंआराधै ऊसबिचारस
दामनलावै॥तौनिजरूपतुम्हारोपावै॥६८॥हंम
कछूकर्मअकर्मनजानें॥हृदैज्ञानबैरागनआ
नें॥तुम्हरेभगतनिकेमिलिसंगा॥जबतरिहे

नितुरपरसंगा॥६९॥तुम्हरेकरमबचनपरिहास ॥आसनगवनरूपपरकासा॥कहतसुनतसुमि रतसुषमादी॥जड़मागरहंमरादिहैनादी॥७०॥ तातेमायाजपमादिआमें।आपुहिसदासुकतक रिमानें॥पारितुम्हबिनुज्ञानताजिजांही॥तातैम दिछोछिरनाही॥७१॥दोहा॥एउद्धवनिजजगत क॥सुनेबचनगोपाल॥तबकरुनामयकारेक्र पा॥बोलेबचनरसाल ७२॥इतिश्रीभागवतेम हापुराणेएकादसस्कंधेश्रीभगवानउद्धवसंवादेभ षाभाषा..चौपाई॥४२५॥श्रीभगवानउवाच॥

महाभाग उद्धव इह यौं ही ॥ ज्यूं तैं कही बात है त्यौं
ही ॥ सिव बिरंचि सक्रादि दिवेसा । वंछै मम वैकुं
ठ प्रवेसा ॥ १ ॥ मुमैं भार बढ्यौ जब भारी ॥ तब भू ब्रह्म
पास पुकारी ॥ ब्रह्मादिकनि बीनती करी ॥ तातैं मनु
ज देह मैं धरी ॥ २ ॥ अब भू को सब भार उतार्यो ॥ स
कल सुरनि को कारज सार्यो ॥ अरु कीन्हो जस के
ते बिसारा । जातैं जीव जो हि भवपारा ॥ ३ ॥ जदुकुल
श्राप लह्यौ द्विज पासा ॥ आपु आपु मैं ह्वै है नासा
आजु हुतें सप्तम दिन माहीं ॥ सिंधु द्वारिका राखै ना
ही ॥ ४ ॥ जब ही मैं तजिहौं इह लोका ॥ त

दुषभयसोका॥ कलिजुगआनिआधिछिनहोई
॥ तातैंअघकरिहैंसबकोई॥ ५॥ तातैंसुनिउद्धव
बडभागा॥ अबतुकरिसबहीकौंत्यागा॥ मोमैंस
दाचित्तथिरकरौ॥ समदरसीह्वैजुबविचरौ॥ दी
जोकछुकहनसुननमैआवै॥ अरुमनबुद्धिज
हांलगजावै॥ सोइहसबमनकौकृतजांनौं॥ द
नभ्रंगुरूमायाकरिमानौं॥ ७॥ जिनइहसकलस
त्यकरिजांनां॥ तिनकौंभेदभयौहैनांनां॥ ताभेद
हिभ्रमकरिनाहिजांनैं॥ बिधिनिषेधतादीमैं
मांनैं॥ ८॥ बिधिनिषेधजोभाषेबेदा॥ सोताकौं

जाकैं है भेदा॥भेदमिटैबिनकरैनत्यागा॥तातें
एद्वैकीयेबिभागा॥९॥ज्यौंज्यौंतजेसुषासुंहोई॥
तातेंबेदबतावैदोई॥आगेंजाइछुडावैसारे॥जे
आपुहीदुतेबिस्तारे॥१०॥तातेंइहसबमिथ्याजा
नौं॥ऊचनीचगुनदोषनमांनौं॥इंद्रियअरुमन
निहचलकरौ॥अहंकारममतापरिहरौ॥११॥ए
तमपूलसकलबिस्तारा॥एकहीआतमकेआ
धारा॥सोआधारब्रह्मकैजांनौं॥ऐसीबिधिभ
वकैनयमांनौं॥१२॥याबिधिबेदअर्थकौंजांनौं
॥बहुरिहदैंनिहचलकरिआनौं॥उहुलोककी

आसा छांडो॥ या बिधि अंतराइ सब षंडो॥ १३॥
जेतनी याकें आसा होई॥ तेत नौं बिघन करै सब को
ई॥ जौं ज्यौं तजें तेजा वें आसा॥ त्यौं त्यौं मिटैं बिघन
के पासा॥ १४॥ जब दृढ़ होइ आवमां रामां॥ तब तदे
नहि आसा को धामा॥ तब बिघन निकें करता दे
वा॥ ते ई उलाटि करैं तासेवा॥ १५॥ तातैं बिधि निषे
ध सब नाषो॥ आसा छोडि हृदै हरि राषो॥ एक ब्र
ह्म कारि सब कौं देषो॥ दूजो कबहूं मूलि न लेषो॥
१६॥ अरु जो निपायो ब्रह्म सागियां नां॥ तिनि कौ बि
धि निषेध न ..... दि नां नां॥ पारति

कोनितहा बिधिहोई॥ कदेनिषेधनपरसेकोई
॥१७॥ विसुषदुषगुनदोषनजानै॥ बालकसमित्र
चरननिवानै॥ परिबिधिसारीसेवाकरैं॥ अरुनि
षेधआपुहिपरिहरैं॥१८॥ सबपरिसुहृदसदा
अतिसांत॥ ज्ञानविज्ञानसहितनितदांत॥ सब
जगब्रह्मजानिथिरहोई बहुरयोंजनमनपा
वैसोई॥१९॥ ऐसेसुनिहरिजीकेबैनां॥ अतिदु
करअरुअतिसुषदैनां॥ तत्वसुननकीबाढी
प्यासा॥ तबबोलेउद्धवनिजदासा
॥उद्धउवाच॥ जोगरूपजोगउपजावना

आसा छांडो॥ या बिधि अंतराइ सब षंडो॥१३॥
जेतनी याकें आसा होई॥ तित नौं बिघन करै सब कोई॥ जौं जौं तजि तेजा वैं आसा॥ त्यों त्यों मिटैं बिघन के पासा॥१४ जब दृढ़ होइ आव मांरमां॥ तब तदे नाहि आसा को धामा॥ तब बिघन नि के करता दे वा॥ ते ई उलटि करैं तासेवा॥१५॥ तातैं बिधि निषेध सब नाषो॥ आसा छोड़ि हृदै हरि राषो॥ एक ब्रह्म कारि सब कौं देषो॥ दूजौ कबहूं भूलि न लेषौ॥
१६॥ अरु जिनि पायौ ब्रह्म लागियां नां॥ तिनि के बि धि निषेधन [illegible] नांनां॥ पारित

कौनि तहां बिधि होई ॥ कहं निषेधन परसै कोई
॥१७॥ सुष दुष गुन दोष न जानैं ॥ बालक सम क्रीड़ा
चरनन नित मानैं ॥ परि बिधि सारी सेवा करैं ॥ अरु नि
षेध आपुहि परिहरैं ॥१८॥ सब परि सुहृद सदा
अति सांत ॥ ज्ञान बिज्ञान सहित नित दांत ॥ सब
जग बस्य जांनि थिर होई बहु स्यों जन मनपा
वै सोई ॥१९॥ ऐसे सुनि हरिजी के बैनां ॥ अति दुः
कर अरु अति सुषदैनां ॥ तब सुनन की बाढी
प्यासा ॥ तब बोले उद्धव निजदासा ॥२०॥
॥ उद्धव वाच ॥ जोग रूप जोग उपजावना ॥ जो

गदां नीं औ जोगे सुर आं वन ॥ तुम दूदत्याग कहौं मेरे हित सोउ: कर आवैना दो चित ॥ र कूं दो वै विषयनि कौ त्यागा ॥ पुत्र कालित्रादि के अनुरागा ॥ दूदतन दूद धन ए सुत मेरे ॥ एवानि ना एग्न दूए च रै ॥ २२ ॥ वा विधि मम अहंकार समुद्रो ॥ बूडि रह्यो मे मैति को हु अ तुम्ह रीमा या आति नैरमायो ॥ ताते ज्ञांन हु दै न ही आयो ॥ २३ ॥ अब तुम मे सिष्य हि उप देस्यो ॥ मेरे उर कछु ज्ञान प्रवेस्यो ॥ ताते अब बहु विधि समुझावो ॥ मम उर पूरन ज्ञांन बढा

वै॥२४॥जातेंसबतजितुमकोंपांऊं॥बहुस्यों
जगतजनमिनहिआऊं॥अरुजोअैसोन
हीकोई॥जातेंलाभज्ञानकोहोई॥२५॥ब्रह्म
दिकतनधारीजेते॥तुवमायावसकीन्हेते
ते॥तातेंमायाहीकोदेषे॥करमरूमोगमलेके
रिलेषें॥२६॥तातेंमेजनतुम्हारीसरनां॥सोकी
जेपांऊंतुवचरनां॥तुम्हरोआदिनअंतनपा
रा॥ज्ञानरूपसबहीतेंन्यारा॥२७॥सोईतरेग
होकरजाको॥मायाकछुनसवैकारिताको
॥नमटीतउपज्योयहजीवा॥जैसेंअग्नि

बहुदीवा ॥ २८ ॥ सदा रहै तुम्हरी आधारा ॥ नि
तउठि पोषो सिरजनहारा ॥ ऐसे अनुकों सेवै ना
ही ॥ तातें परें परम दुष मांही ॥ २९ ॥ पानव केदुष
केदैनजांही ॥ पस्यो निरंतार मोतिन मांही
अव मोकों सरना गत जानों ॥ दे कारि ज्ञान सक
लभयभांनों ॥ ३० ॥ मेरे तन मन धन तुव चर
नां ॥ मनवच क्रम आया में सरनां ॥ ऐसे सु
नि उद्धव के बैनां ॥ हसि कारि बोलि अंबुज
नैनं ॥ ३१ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ उद्धव मैं क
हदेवों सूनां ॥ सातिक हतद्दनांहा आनंा ॥ या

॥ साधन नर देह जेतें ॥ आपुही आपु उद्धरे ते ते ॥ ३२ ॥ आपुहि भलो बुरो पहिचानें ॥ छोडे रो भले कों आनें ॥ गुरु आपुनो आपुही होई ॥ पसु पंछी मावे जो कोई ॥ ३३ ॥ पारि न रत न मोहिनी कौ ॥ ब्रह्मादिक सबनि को टीको ॥ ब्रह्मविचार हि पावे ॥ बहु स्यों जगत जन मिनाहि आवें ॥ ३४ ॥ एक पद द्वै पद त्रिय एक चौपदादि बहु पाद अनेका ॥ मे बहु भांति सृष्टि बिस्तरी ॥ तिन में प्रिय नरदेह हमारी ॥ ३५ ॥ मो पावै सो या कारि पावै ॥

बहुदीना ॥२८॥ सदा रहैं तुम्हरी आधारा ॥ नि
तउ विपोषो सिरजन हारा ॥ ऐसे प्रभु कों सेवै ना
ही ॥ ताते परैं परम दुष मांही ॥२९॥ पानव के दुष
कहै न जांही ॥ पस्यौ निरंतर मोतिन मांही
अब मो कों सरनागत जानौं ॥ दे करि ज्ञान सक
ल भय भांनौं ॥३०॥ मेरे तन मन धन तुव चर
नां ॥ मन बच क्रम आया में सरनां ॥ ऐसे सु
नि उद्धव के बैंनां ॥ हसि करि बोलि अंबुज
नैंनं ॥३१॥ श्रीभगवानउवाच ॥ उद्धव मै क
हदेवैं ज्ञानं ॥ सातिक हत हूं नांही आंनां ॥ या

जग साधन न दें जे ते ॥ आपु दी आपु उद्धरै
ते ते ॥ २२ ॥ आपु हि मलो बुरो पहिचानें ॥ होई
बरो मले को [illegible] नें ॥ गुरु आपुनों आपुही होई
॥ परम पंथी जावे जो कोई ॥ २३ ॥ पारिन रतन त्रै
मोहनी को ॥ ब्रह्मादिक सबनि को टीको ॥ ता
ब्रह्मविचार हिपावे ॥ बहुस्यों जग तजन
मिना हि आवें ॥ २४ ॥ एक पद द्वै पद त्रिय
एका चौ पदादि बहु पाद आने का ॥ भेद
भांति सृष्टि बिस्तारी ॥ तिन मों त्रियनर
दमारी ॥ २५ ॥ मो पावे सो या कारि

रखानिसुखदुखभोगा है। यामेमेरोकरैवि
चारा। सावधानहै बहुतप्रकारा॥२६॥ साहिब
कौजउहैदेहा। इंद्रियादिकअरुसकलसने
हा। अपनेअपनेअरथनिगहै॥ सोएसकोति
कौंमकीलहै॥२७॥ अरुसोवतजबसुपिनापा
वै। तबतौइंद्रियतनाहिटकावै॥ सुपिनमाहिसु
खकौलहै। जागेवातसकलकोकहै॥२८॥ तातै
मेइहतननांही। मैंतौवासकौयोयामांही॥ तौ
वनितासुतवितपरिवारा। मेरोतौनहिसकल प
पसारा॥२९॥ ऐतौसकलदेहसंगजांही॥ सोइ

देहदेहकदेहमैंनांही ॥ जातैंसुपिनमांहिनहींकोई
॥ देहसकलऔरईहोई ॥ ४० अरुजोमैंतो
देहनांही जोतनहीसैसुपिनैमांही ॥ जातैंवह
ऊपरिनरहावै ॥ वाकौंतजियामैंफिरिआवै
॥ ४१ ॥ वातैंइहयातैंवहहूवी ॥ यहदेहज्ञानगं
हतौमैमूढी ॥ जोइहदेहहूंदेहकौंलहै ॥ इंद्रिय
नकैसबअर्थनिगहै ॥ ४२ याइंद्रियबुध्यादिकं
अरुबानी ॥ जाकौंकोईसकैनजानी ॥ सोमैं
नितनिरंतरएका ॥ उपजैविनसैदेहअनेका
॥ ४३ ॥ जाईसोमैंकहातैंआयौ ॥ किनसनदी

ह्वौं किन उपजायौ ॥ अब तौ मै ह्वै है है अधार
पल कौ रहि न सकौं निरधार ॥ ४४ ॥ रहौं उत
जिका मैं रहौं ॥ सो है सत्यता हिं दिढ गहौं ॥ ऐसे
बहु बिधि करै बिचारा ॥ त्यागै देहादि क परिवा
रा ॥ ४५ ॥ सोई जहं तहं लेवैं ज्ञाना ॥ कबहूं कछू
न जांनै आंनां ॥ या बिधि आपु आपु कौं तारै ॥ त
है ब्रह्म भव दुष निवारै ॥ ४६ ॥ यह बिचार मान
व तन होई ॥ दूजा मूं तिन पावै कोई ॥ ताते तूं मा
न पायौ ॥ अरु कछू इक मै तौ दिल पायौ ॥ ४७ ॥
तातैं तजौ सकल कौ संगा ॥ मन क्रम बचन तो

हुनिंहूं संग॥सबतेंपरैं आपुकौंजांनौं॥सो आ
धारब्रह्मकैमांनौं॥४८॥जदांतदांदध्यो ग्यान॥
उपदेसा॥या बिधिकरौब्रह्मपरवेसा॥श्रीसेज
दांतदालेज्ञांनं॥बहुतकमएब्रह्मपरवांनं॥४
॥तिनमैं वाहूं एककीबाता औदूतदासकथा
विष्याता॥दत्तादिगंबरअरुजडुभूपा॥तिनकौं
हूं संबादअनूपा॥५०॥दोहा॥सुनिउद्धवइत
दासअब॥भाषौंपरमअनूपबवाता द्रत्तात्रे
यजदांअरुपछुकजडुभूप॥५१॥एकसमैंश्री
तिजडुनांमां॥गमेसिकारछौडिनिज

तब ताननगरनिकटहैसुता॥ दसौएकपरम
अब्रपूता ५२॥ निरखैनिहचलब्रह्मचारी॥ तेज
निधानतरूनतनधारी॥ करिपरनामबहुतप
रकारा॥ जहुभूपतिजबबचनउचारा॥ ५३॥ उ
द्धवाच॥ हेब्रह्मपूरनपरमदयाला॥ कहोह
पाकरिहोहुकृपाला॥ ऐसीबुद्धिकहातुमपा
ई॥ जातेबिचरोसहजसुभाई॥ ५४॥ मएअ
रताब्रह्मचारी॥ बालकसमसिसबबितायारी
सबुजगुनिसदिनइहेबिचारे॥ धर्मअरुअ
र्थकामबिस्तारे॥ ५५॥ सोऊनहिउपजैडुपपा

वे ॥ तिनसौंलागिसबग्रापुगव्रा कुवे ॥ तुमसम
र्थसबैई बिधिजांनौं ॥ क्रियानिपुनप्रियबैनब
षानैं ॥ ५६ ॥ सबबिधिसरसतरूनतनसुंदर ॥ तु
ष्टपुष्टकौलियैंदुंदर नाकछुबंछौनाकछुकरौ
॥ जांहुउनमत्ताजिमैवीचरौ ॥ ५७ ॥ तस्यांकौमलो
मदैंलागी ॥ सकललोकदामैतिनग्रागी ॥ तुम
ग्रानंदमयदामौनांही ॥ ज्यौंगयंदगंगौदिक
माही ॥ ५८ ॥ दृग्रर्थसबदीकेत्यागे ॥ रहौग्रानं
दतसोकादिलागे ॥ संगनकोईराषोदेव्रा ॥ कौ
ईलहिनसकैतवभेव्रा ॥ ५९ ॥ तातें

रिनाथा॥ अरुजलवूडतपकरौदापा॥पुंजदु
रूपबीनतीकरी तबअवधूतगिराउचरी॥६०
॥अवधूतउवाच॥सुनिजदुरूपपरमबडभा
गी॥जाकीमतिहरिसुंअनुरागा॥बहुतेहैमेरे
गुरदेवा॥जिनतेमैंसबजांन्योंभेवा॥६१॥पा
मैंमतीआपतेलीन्हों॥तिनमैसोकिनहूंनादि
न्हौं॥तेगुरुसकलसुनौतुममोसों॥हरि
जनजांनिकहतहुंतोसों॥६२॥धरनीगगन
पवनअरुपांनी॥अनलचंद्रराविकपोतदि
जांनी॥अजगरसिंधुपतंगरुभृंगा॥कुंजर

मधुहरताकूं रंगा ॥ ६३ ॥ मीनाहि गुलाकूं स
कूवालो कुंन्यासरकरताऋकेन्या न्या गऊ
रीप्रेंगी ए चौवीसा इनतें सीख्या मुनदुमदी
मा ॥ ६४ ॥ प्रथमैं घरणी में गुनदेख्या भया भंप
रमतलक्षोरित्तेख्या ॥ सदैरहै धर्मगम ज्ञा या
तितितम भंगा तिनकौ न्रेवंवदुनलिखियवेग
॥ ताकेपरवतहृस्त्रअलंता ॥ परउपकारमयें
वरतंता ॥ ६५ ॥ नोंकोंन ज्ञा
इत दिज्ञापउपकारादि ॥ नें औमामालि ॥ गुरुहि

कीलेवै ॥ जोजनहरिचरननिकोसेवै ॥ ६७ ॥
औनवायुजूलेइ आहारा ॥ स्वादकुस्वादनकौ
ईप्यारा यौहरिजनआहारहिलेवै ॥ स्वाद
कुस्वादनहिचितदेवै ॥ ६८ ॥ बिनआहारबि
चारनआवै ॥ स्वादकुस्वादनमनुवहरावै ॥
तातिंपतौलेइ आहारा ॥ जेतौदावैप्रानआ
धारा ॥ ६९ ॥ अरुज्यौपवनाफिरैजगमांही ॥
शुद्धअशुद्धतिपैकछुनांही ॥ नांनांभेदनि
मैसंचरै ॥ विषआविषगुनदोषनधरै ॥ ७० ॥
यौविषयानिमहतैंहंजो ॥ [illegible] ॥ मनक्रमबच

ननहोवैजोगी॥भेदअनेकानिमेंअनुसरै॥प
रिकछुभेदहहैनदिषरै॥७१॥अरुजोपवन
गंधसंजोगा॥लिपतनयोजानेसबलोगा॥प
रिसोपवनसदाइकरूपा॥लिपनकवहूंइमो
अनूपा॥७२॥पंचभूतनभांतिल्यांदेहा॥सक
लविकारनिहीकोगेहा॥तामेंजोगीलिपतन
होई॥औरालिपतजानेसबुकोई॥७३॥ज्यूंस
बदिनमेंएकअकासा॥अरुसबा
मेंबासा॥सबउपजेबिनसेबरतांही॥गग
नालिपेकाल्यातिहुंमांही॥७४॥ल्यांब

सबजगतपसारा॥ मुनि देषै आतम आचारा॥ जो कछु दीसै जड है सोई॥ जाकै संगतै चेतन होई॥७५॥ ज्यौं आतम देह नि मैं देषै॥ सोपरमा तम जह तह लेषै॥ एक अनंत कहु आवरनां॥ लि पै नाहि पैजनम नाहि मरनां॥७६॥ सोपरमा तम आतम एका॥ कहै न देषैं मूरति अनेका॥ ज्यौं जो गगन घट नि मै होई॥ बाहरि हू पुनि जह तह सोई॥७७॥ काहि बकौं है नातरु एका॥ यौं आतम अरु ब्रह्म बिबेका॥ ज्यौं बहु भेद पव न टां मिनी॥ वरषै बहु बासु रिजांमिनी॥

।।परि नभ लिप्त कदे नहि होई।।औरनि स
जानें सब कोई।।ज्यों आतम भेद दह अनंता
।।उपजै बिरतैं पावैं अंता।।७९।।परि आ
त्मा लिप्त कहूं नांही।।साच बिचारै यों मन
मांही।।इह अंबर गुन तोहि सुनायो।।अंब
र भाषों जो जल तें पायो।।८०।।नित निरमल
औरनि मल दहै।।ताप मेटि सीतलता कै
।।सब सुषदायक हित रस वंत।।ए गुन जल
तें सीषे संत।।८१।।तेजवंत अति दीपति जु
ता ओ अरहित जंहं तहं निरमुक्ता।।स्वाद

सब जगत प्रसारा ॥ मुनि देषै आतम आचारा
॥ जौ कछु दीसै जड है सोई ॥ जाकै संग ते चेतन
होई ॥ ७५ ॥ ज्यौं आतम देह नि मै देषै ॥ सो परमा
तम जहं तहं लेषै ॥ एक अनंत कहुं आवरनां ॥ वि
पै नाछिपै जनम मनाहि मरनां ॥ ७६ ॥ सो परमा
तम आतम एका ॥ कहै न देषै मूरति अनेका ॥ जै
जो गगन घट निमै होई ॥ बाहरि हूं पुनि जहं
तहं सोई ॥ ७७ ॥ काहि बकौं है नातरु एका ॥ यौं
आतम आरु ब्रह्म बिबेका ॥ ज्यौं बहु भेद पव
न दांमिनी ॥ बरषै बहु बासुरि जांमिनी ॥ ७

॥परिनभालित्तुकहैनहिंहोई॥औरालिस
जांनैंसबकोई॥ज्यौंआत्मभेदहैअनंता
॥उपजैबिरतैंपावैंअंता॥७९॥परिआ
त्मांलिप्तकहूंनांही॥सोचबिचारैयोंमन
मांही॥इहअबरगुनतोहिसुनायौ॥अब
भाषौंजोजलतेंपायौ॥८०॥नितनिरमल
औरनिमलहै॥तापमेटिसीतलताकरै
॥सबसुषदायकहितरसवंत॥एगुनजल
तेंसीषेसंत॥८१॥तेजवंतअतिदीपतिगु
णआगरहितंजंदंतदंनिरमुक्ता॥स्वाद

रहितसवमर्द्दनकरैं॥ आगानिनलिपैसंचि
नहिंधरैं॥ ८३॥ त्यौंहीज्ञानतेजमयहोई॥ उं
द्रियादिकसदीपातिसोई॥ जद्यपिबहुविधि
भोजनकरैं॥ स्वादरहितगुनदोषनधरैं
८४॥ काहूंहूतैंलोभनहिहोई॥ काहूकेउ
नामिलैनसोई॥ उदरप्रमोनलेइअहारा
कछुनजानैंसंचयसारा॥ ८४॥ गुप्तरहेन
हिंमूलिजनावें॥ कीन्हेप्रगटप्रगटह्वैआ
वें॥ परइच्छाआहुतिकौलेई॥ तिनकेपाप द
रहैंनहिंदेई॥ ८५॥ त्यौंमुनिगुप्तआपतै

रहै॥षोजिलेइताकौंभ्रमदहै॥उत्तमभौंन
दिनअहोई॥परइछातेलेवैसोई॥८६॥बहु
स्यौंअगनिएकरसएका॥बहुबिधिदीसे
कावअनेका॥त्यौंआतमाएकरसमांही॥भे
ददेहकृतसंचेनांही॥८७॥हीनामसालअग
टजूंहोई॥ज्वालाजातलषेसबकोई॥परि
तेहीसेत्यौंकेत्यौंही॥प्रतिदिनदेहजातहेयौं
॥८८॥जेसेंस[illegible]सिकेबाढैकला॥त्यौंत्यौंदिन
दिनहीसेमला॥पूरनह्वैकरीदिनादिननासे
॥सकलामिटैंनैनहींपरकासे॥८९॥त्यौंबाला

दिअवस्था आवै॥ कैकरितरुनकमदिन
मजावै तबआतमा देषियेनांही॥ पारिदैस
दा कालतिहुमांही॥ ८०॥ ज्यौंरविकिरननि
सौंजलले वै॥ समयपायबहुस्यौंजलदेवै
॥ परिकबहुँ अभिमाननआनैं॥ लियौदि
यौआपुहिनाहिमानै॥ ८१॥ यौमुनिकदेस
नेआरुदेषै॥ सकलअर्थइंद्रियकृतलेषै
॥ नितआतमांअकर्त्ताजानैं॥ सबताजिअ
सविचारहिंवानैं॥ ८२॥ ज्यौंघटजलप्रति
बिंबितसूर॥ लिषदेषियपारिदै दूरा॥ सौं

आतो देहसबंधा॥थूलदृष्टिजांनतदेबंधा॥
९१॥अबकपोतकीकथासुनांउ॥तिरगन
कोभ्रमदिमिटांउ॥एककपोतकपोतीसंगा
॥वनमेंकीन्होगृहप्रसंगा॥९१४॥आपुत्रा
पुमेंआसक्ता॥आवपढरमेंपलुनविरक्ता
॥मनसोमनअंगनिसोअंगा॥नेंनतिमेंनक
योबहुरंगा॥९१५॥आसनगवनआसनअ
सयांनां॥सयनबेंयनसारीविधिनांनां॥॥म
तिसकलकमानिकोंकरै॥त्रियग
कवहुटरै॥९१६॥साकपोतवा

कीयौ॥ तातमारुतनहरिलीयो॥ वानि
ताकौवंधुसोत्यारे॥ केष्टसहितजोदीवि
धिपारे॥ ८७॥ सोअस्त्रीजितजौतुमराजा
॥ अपनौलषैनकाजअकाजा॥ ततमयम
यौनिरंतवरहै॥ प्रानानिदुतेतादिप्रियकु
है॥ ८८॥ ताकीत्रियाअउउपजाये॥ तिनमें
मनदोन्यूमिलिलाये॥ तवहरिमायासिमुनि
रमये॥ कोमलअंगरोमतेभये॥ ८९॥ तव
दोऊमातितिनकींपोषे॥ वहुतभांतिवहुवि
धिसंतोषे॥ कोममलवचनसुनेमुषदरसे

॥ अपने अंग सो परस ॥१००॥ हरि की माया ब
हुत सुलाये ॥ आपु आपु में सकल बंधाये ॥ पु
त्र सनेह रहे अनुरागे ॥ सिर पर काल न लषे
अभागे ॥१०१॥ एक बार बालकनि के कारन
॥ चारौ लेन गये ते आरन ॥ ता ही समै ब्याधि ए
क आयो ॥ बालक देषि जाल बिषरायो ॥१०२
॥ देष्यो कनन दृष्यो जाला ॥ बंधे आनि सकल ष
ग बाला ॥ तब ही ऊम्या रा कौं ल्याये ॥ तिनि गू
ह मां हिन बालक पाये ॥१०३॥ तब देषे माता
ते बाला ॥ बंधे जाल मही बेहाला ॥ तब सोत ही

पुकारत धाई ॥ जाल मांहि सुत हत बंधाई ॥
१०४ ॥ तब कपोत देषे सब बंधे ॥ हरि माया की
न्हे अति अंधे ॥ तब सो बहु बिधि करै बिला
पा ॥ लेषे बहुत आपने पापा ॥ १०५ ॥ हा हा पाप
कौन मैं कीन्हे ॥ ऐसे दु:ष दई मोहि दीन्हे ॥ जा
की हुइ पतिब्रता नारी ॥ पुत्रनि लै सुरलोक
सिधारी ॥ १०६ ॥ मो हि छोडि कूर्ने ग्रह मांही
॥ सब मिलि आपु इंद्रपुर जांही ॥ मां में सुष
भोग इहि लोका ॥ नाहिं साधन पायौ परलोका ॥ १०७ ॥ धर्म अरु अर्थ काम सब जा

में ॥ कछु वैगरह रसौनहि तामें ॥ अब ग्रांननि
राष कछु नांही ॥ घरी घरी में दुष आधिकांही
॥१०८॥ याविधि भयो बहुत बेहाल ॥ बंधे है
पिबनिता अरु बाला ॥ मकुलबुद्धि बिचा
रनकस्यो ॥ आपुहि जाइ जाल में पस्यो ॥१०
॥ सहित कुटंब कपोतहि पायो ॥ तबही भयं
म्राच मन भायो ॥ ऐसी में कपोत की देषी ॥
तव अपने नेह देइ हलेषी ॥११०॥ यों कुटंब हो
त वे नाही के ॥ तस्मा राग बढे ताही के ॥ जीवत
आतिआरंभनि करे ॥ सहित कुटंब काल मु

षपरै ॥ १११ ॥ या बांधे जो मानव तनपाव
॥ सोतो द्वार ब्रह्म के आवै ॥ तादूपर जो गृह
हितकरे ॥ सो नर ब्रह्म द्वार च ढि परे ॥ ११२
॥ तातें मो गकुटंब रु गेहा ॥ तिनकों जीवल
देष तिदेहा ॥ ऐसो मानव तन नगवे ए ॥ ज
कोरि देषा निरंजन पैए ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ इद
माधोगुरु आब की ॥ सिद्दा मैं तुव पास ॥ अ
व औरनि को कहत हों ॥ ज्यों छूटै भव पास
॥ ११४ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे एका
श स्कंधे भगवदुद्धव संवादे अवधूत इतिहा

पारब्धानेसङ्गमोष्याय॥७॥ चौपई॥ पङ्६॥
अवधूतोवाच॥जेइंद्रियसुषकछुकहावे
॥तेतोसुरगनरकदेंआवे॥ज्यूंसूकरकूक
रसुषमांही॥त्योंहीदवओरकछूनांही॥१॥
अरुसोसुषआपुहितेआवे॥करमालिष्यो
सोकीईनामिटावे॥कोईदुषकोंनांहिचहे
॥परिदुषआरुआपुहीरहे॥२॥त्योंहीसुष
आपुतेआवे॥बिनजांनेंनरबहुदुषपावे
॥तातेवुरुसुषनांमनलेवे॥होईकरता
हरिपदसेवे॥३॥स्वादकुस्वादनदुतकेपो

र॥ जो हरिजी पद प्रीति सश्रो र॥ ताकौं म
हा रहै उदास॥ अजगर वृत्ति गहै दृढ दास
धु॥ जो कछु दैव अद्दार न आवै॥ तौ थिर रहै न
कछु मन ल्यावै॥ कर्म अधीन देह कौं जांनै
॥ मन क्रम वचनन उदिम ठांनै॥ प॥ अतिस
मर्थ इंद्रिय मन देहा॥ पारि कछु उदिम क
रै न एहा॥ निहचल असति रंतर सैवै॥ द
रसि हा अजगर तेले वै॥ द॥ दरस परस प
रम गंभीर॥ अधिक अगाध ज्ञान सो नीर
॥ वार पार को इयाद न लहै॥ ऐ गुन मुनि

सायरकेगढ ॥७॥ ज्यौंबारिधा वहुनीरत्रवे
सा ॥ सायरकेवढ्हंबधेतलेसा ॥ ग्रीषमसैक
छुदीननहोई ॥ सदासमद्र ज्यापुरेसोई ॥८
॥ त्यौंकोईवहुविधिआरचावे भोजनव
स्त्रादिकपहरावे ॥ अस्तुतिमानवडाईदे ॥
वे ॥ वहुतिभांतिवहुसेभेसालिसेवे ॥९॥ अ
रुएकेलेजांदिउतारी ॥ निंदादिकवानै
एकमारी ॥ पारिनांसंयनमयस्मानिमांही
रागदोषदोऊउपजेनांही १०॥ ना

त्रकनकआभरनां॥ बहुविधिमायाकेउ
पकरनां॥ इनमैंआइपरैजेकोई॥ अग्निपत
गसमांसोहोई॥११॥जौलगिमुनिसमभै
जहेहा॥जाविअहारलेइबहुगेहा॥जाते
कहुंअनुरागनबढै॥इहसिखामधुकरते
पढै॥१२॥छोटेबडेबहुतबिधिग्रंथा॥ति
नतेंसारगहैंहरिपंथा॥ज्यूंमधुकरबहु
फूलिनमांही॥बासगहैफूलानिकौंनांही
॥१३॥सोमधुकरहैबिधिकोकाहियेउ

दुःखसतेसिवाआदिए॥ बहुतगहनितेंल
ह अदार॥ उदरप्रमानएकदीना र॥१४॥द
जे कोंकछुसंचिनधरे॥ त्रिभेजलाविचारहि
करैं॥ संग्रहमूलिकरेजोकाव हा॥ मधुमांषी
ज्यूंबिनसेतवहो॥१५॥पुतलीकाठदुकी जो
होई॥ पगदुंछुघपरसेमातिकोई॥ परसक
रतहा वेंदिढवंधा॥ज्यूंकलंदकारेनीसंबंधा
॥१६॥मनुजानि वनिताकौंतजें॥ पंडितक
बहुंमूलिनभजै॥ भजतेंहोवेकरीसमानां
एकारिमिलिमारेंहिगजनांनां॥१७॥जोको

ई धन संग्रह करै ॥ सो कोई और ही पारि है ॥ ज्यूं मधुमांषी मधु संग्रहे ॥ मधुहा सो उदि माविन लहै ॥ १८ ॥ हरि बिन गीत सुनैं नहीं और ॥ गयै बहै सो हरि की गैरा ॥ और सुनत गति ही वै औ सी ॥ व्याध गीत हरणा की जैसी ॥ १९ ॥ सुनो हरि न गीत [illegible] सुनि बहुरंगा ॥ अंग गोरि बि ज्यौं गनिका संगा ॥ अबलाधीन मुक्त ऊ होई ॥ तिन के सबद सुनै जौ कोई ॥ २० ॥ मुनि जिह्वा आसक्त न करै ॥ स्वाद कुस्वाद सकल परिहरै ॥ जिह्वा रस ते होवै काला ॥ जैसैं मीन मरै तत

काला॥२१॥जेमुनिसबत्र्यथैनिपरिहरै॥जाइएकांतबासकौकरै॥सहजदोइिंद्रियसबझीनां॥परिरसनांनहिंहोइअधीनां॥२२॥रसनांसबकोफेरिजीवावै॥जबहीरसैंसंजोगहिपावै॥जोसबइंद्रियजीतैकोई॥परिसनांकरमैंनहिंहोई॥२३॥तौलगिसकलव्रथाकरिजांनी॥रसनांजीतिजीतिकरिमांनी॥तातैंमुनिरसनांबसकरै॥औरसकलसाधनपरिहरै॥२४॥योजेएकएकबसभए॥तेसबजमकेंद्वारैगए

॥ परिजोएकपंचवासिहोई ॥ ताकेंउपजानैं
गासोई ॥ २५ बहुरिएकगनिकाप्पंगला ॥ ता
तें मैंसीष्योगुनमेला ॥ सोतुमसौंभाषतहूं स
जा ॥ जातैंसरैंतुम्हारेकाजा ॥ २६ जनकव
देहपुरीमैंवासा ॥ नांवप्पंगुलारूपनिवास ॥
॥ एकवारसृंगारवनावौ ॥ धनीपुरूषमन
मैं वहरायौ ॥ २७ ॥ वेगनिकासिभवनकेघ
रा ॥ आगेंचलेलोकबारजारा ॥ कोईमलौ
आवतोदेषे ॥ उहआवैगौयोंकरिलेषे
२८ ॥ जबवहआगेकौंचालिजावै ॥ तब

प्यंगुला ओरकौं ध्यावै ॥ औरैं आइ आइ च
लि जांही ॥ सो सोय़ यह दुष पावै मांही ॥ २९ ॥ कु
बहुं उग्गिनी तरकौं जावै ॥ कबहूं व्याकुल बा
हरि आवै ॥ अर्ध राति औसी बिधि भयो ॥ लो
गवजार चलत रहि गयो ॥ ३० ॥ तब वह भगन
मनोरथ भई ॥ चिंता दुष अनल अनुभई ॥ आ
पनौं तिरसकार करि मांन्यों ॥ सब तैं हीन आ
पु कौं जांन्यो ॥ ३१ ॥ तब ताकौ कोई बड भाग
॥ जा तैं उपज्यो दिढ बैरागा ॥ जौ लागि नहिउ
[illegible] ॥ सौ लागि नहिन मिटैं नव षप

॥२२॥ग्रामवनषासिवदुषअनेका॥तामैंप
रमरतनसुषएका॥बंधनबंध्योजीवअपा
रा॥तिनकौंहरिजोरचौकुवारा॥२३॥ताकी
माहिंमांकहांनजावै॥जाकेमागबडेसोसोपा
वै॥जाकौंनांमकहैबैरागा॥सोतौहरिकौं
दीयौसुहागा॥२४॥आदिदादसाईपेपावै
॥भवनयक्षोडिब्रह्ममैंजावै॥तातेंमांनव
सबक्छिरकावै॥ज्यूंत्यूंकारिबैरागउपावै
॥२५॥तवषपंगुलाबचनउचारे॥बदुतमां
तिअपुहिधिकारे॥गहदिनानिकौंआति

पछिलावे॥सबलेंदिढवैरगउपावै॥२६॥पि
गलाबाच॥अहोरकमेरीअज्ञानं॥जाकेंह
दैंबढ्योभ्रमनांमां॥जलबुदबुदसमजोनरदे
हा॥तासोंसुषहितकियोसनेहा॥२७॥सर
रजलपूरनेतजिपासा॥म्रगजलधाइकरि
जलआसा॥वारिपदारथदायकदेवा॥स
दानिकटकोलहोनसेवा॥२८॥सत्यसद
सुषदायकस्वामी॥सोछोड्यौनिजपतिध
ननांमी॥ह्वैगैसदाकालमुषमांही॥जातेंदु
षसोंकअधिकाही॥२९॥ऐसेपुरिषुताहि

मैंमज्यो॥ आपुहिदुःषआपकोंसज्यो॥ देह
चिमैंदेह हिपोष्यो॥ याहीमांतिमनदिसंतो
ष्यो॥ ३८॥ अस्त्रीलपटतस्मांदाह्यो॥ दुष्पत
नरसोमैसुषचाह्यो॥ हाउमेदमेजाअरुऔता
॥ मांसरुधिरत्वचरोमअनंता॥ ४०॥ विष्टास
तस्वेदहाडमिगेहा॥ करैहारनवुअैसीदेहा॥
तामैंकहारमितक्यौंहोई॥ मोसोमूढऔरन
हिकोई॥ ४१॥ यापुरमांहिजनककनृपअैसे
॥ सुषआधिकारसुरेसुरजैसें॥ ताहूपरसव
सुषकौंतजैं॥ केवदेहहरिचरननिभजैं॥ ४

अरु सब ब्रजजन जैं हरि चरनां ॥ जातें मिटें
जनम अरु मरनां ॥ जाकौं नजैं ब्रह्मा सिव सेषा
॥ परि सो तिन नहीं कहें न देषा ॥ ४३ ॥ ऐसे प्रभु
कौं जे नर सेवें ॥ तिनकौं रीझि आपु कौं देवें ॥
ऐसे प्रभु मैं नहि आराध्यौ ॥ कियो अनर्थ
अर्थ नहि साध्यौ ॥ ४४ ॥ अब मैं आपु दिखैहैं
न कौरौं ॥ और सकल उर तें पाइहौं ॥ अ
पनें पति हरिजी के संगा ॥ सदा [illegible]
रधंगा ॥ ४५ ॥ कादा और सु [illegible]
॥ जे बापुरे आपुही मरिहैं ॥ [illegible]

ई थिर नांही ॥ देषत सकल पलकमैं जांही ॥
४६ अरी॥ ह्रिदुषी सब आवै ॥ कालचीन
कहा सुषपावैं ॥ तातैं मैं इहनिह्वै जांनी ॥ कृ
पाकरी है सारंगपांनी ॥ ४८ ॥ जिन मेरे वैराग
उपायो ॥ अपने चरन कंवल चित लायो ॥ इ
हहरि कृपा बिना नहि होई ॥ जो वैराग लहैन
र कोई ॥ ४९ ॥ जांतैं सब भव बंधन नासै ॥ हृदै
रमापति आपप्रकासै ॥ मैतौ मंदभागनी ऐ
सी ॥ त्रिभुवन मांहि न हीको जैसी ॥ ५० ॥ ताकौं
के सौ हरिकौ भजनौं ॥ केसौं कालजालकौन

जनैं॥परिसैदीनबंधुगोपाला॥पतति
धारनपरमदयाला॥५१॥तिनहीस्रापद
पादेकरी॥जिनिमरैजरिश्रैसाधरी
बलेयाथरमादहिसीसा॥निसदिन
चरनजगदीसा॥५२॥जेतनैयादे
रबाहैं॥सोउनहिंत्र्यारंनसबा
मांहिजोहरिजीत्यावै॥ताकरि
रतावै॥५३॥याभवकूपपर्‌यो
॥बिषयत्र्यावरणडिहि
अजगरकालग्रास्यो॥

स्योंपास्यो॥५६॥ताकौंहरिबिनकोंनछु
डावै॥आपुहिकोनाहिकूरनपावै॥आहु
पुही आपुकौराषै॥जबसेववस्तुहदैतेनां
षै॥५५॥जबहीहरिकीसरणहिआवै॥त
बहीआपुहिआपछोडावै॥वैप्रभुनिजान
दमयदेवा॥कहाकरैकोतिनकीसेवा॥५
॥पारसबजगकालाछिटकावै॥हरिकी
सरनआपसुषपावै॥तातैऔरसकुलकौं
तजौं॥प्रेमभावहरिचरननिभजौं॥५७
॥याबिधिआपुहिआपुउधारौ॥अबनि

भावसागरमैंडारैं॥ऐसींप्यंगुलापरममति
पाई॥दुहूंलोककीआसामिटाई॥५८॥सीत
लह्कैसज्यामैंगई॥परमआनंदहिआपति
भई॥यासिद्धांतमैंमैंनूं॥मतीजोनिठुर
अस्थिरकीन्हौं॥५९॥जौलगिआसकुरै
नरकोई॥तौलगिसुषीकहैनहिहोई॥
जबहीसकलआसछिटकावै॥तबतत
कालपरमपदपावै॥६०॥दोहा॥इहगुरस
त्रहकीकहा॥सिद्धामैंसमुझाइ॥अबऔ
रनिकीकहतहूं॥सुनियौंहितचि-

इ॥६१॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एका
दशस्कंधे भगवदुद्धवसंवादे अवधूतेइ
तिहासे आरव्याने पिंगुलागीतानामाअष्ट
मोध्याय:॥८॥६०॥ अवधूतोवाच॥ औ
रौ हितकरि संग्रह करै॥ सोई सो अतिदु
षविस्तरै॥ जबही हित संग्रह छिटकावै
॥ तब अपारसुषसागरपावै॥ १॥ कुररपं
षिकहुं आमिषपायौ॥ सो लेउडौ बहुत
हितलायौ॥ तब बहुतेकुररनि दुषदयौ॥
॥ आमिषतज्यौं सुषीतबभयौ॥ २॥ इदमै

सीषकुररतेपाई॥जातेसंग्रहकरेनवारे
॥बहुरिसीषबालकतेलई॥अरुंउरजाते
मतिभई॥३॥तनमेंमानअपमाननंदिना
नों॥चिंताकछुचित्तनहिंआनों॥निसदिन
रहैंआतमांरामां॥कबहूंकछुनउपजैकामां
मां॥४॥यानबुधिकैहीकौसुषदेह॥औरसकल
लजीवनिकौंदुषदेह॥ऐसेंदिनबाल
मतिदीनां॥अरुजोगुनातीतपदलीनां॥५
॥एकाबिप्रकेंदूतीकुमारी॥ताविवाहकौंकि
चारी॥ताकेमातापितादिकचारि॥

मक्तिहुंकामसिधारा॥६॥ समाचारइकवि
प्रनिपाये॥ब्याहकाजद्विजकेगृहआये॥क
न्यांवचनकिसीसोंभाषे॥ तिनतेंद्विजश्राद
रकरिराषे॥७॥ तबतिनकेभोजनकीधार
॥चावरषोटनलगीकुमारि॥तबताकेकर
ज्योंज्योंडोलें॥त्यौंत्यौंकरकंकनबोलें॥
॥ तिनलज्जितह्वैसकलउतारे द्वैद्वैदुहुंह
थमेंधारि॥ वहुरिलगीजबचावरछरनें॥तो
हूलगीसबदतेकरनें॥८॥ तबतिनिएकए
कहीराष्यो॥ चुपकारिरहेवहुरिनहिंभाष्यौ

॥मेंविचरतुदोइछाचारि॥तातेदेषिहृदैमे
धारी॥१०॥बहुतनसंगवदैबकबाद॥दूजेदु
तदोइअनुरागा॥तातैरहैअकेलाजोगी॥
सदाविचारब्रह्मरसभोगी॥११॥आसणप्रा
णदेदमनबंधे॥दिढवैरागहृदैमेसंधे॥नि
दचलह्वैनितब्रह्मविचारै॥योक्रमकरजत
मकोंजारै॥१२॥त्योंत्योंनिदचलवदैसमाधि
॥तजतेंजावैसकलउपाधि॥तबज्योंपाव
कईधनहीन॥त्योंहोवैनिजपदमेंलीन॥१३
॥तबकहूंकछूहैनरपतिगयो॥सुनासबद
व१ जातें

दुत विधि भयौ ॥ १४ ॥ परिसर कर भेद न दीपा
यो ॥ या बिधि सर मैं चित्त लगयो ॥ ऐसी सी
लई मैं ताते ॥ निहचल बुद्धि भई मम जातें ॥ १५
॥ ज्यौं लोगनि तें उर मैं भुवंगा ॥ बसै गुहा मैं रहै
अं संगा ॥ सावधान अति थोरो बोलै ॥ गला
दिक अंतर न ही पोलै ॥ १६ ॥ दृढ़ आरंभ दुष
कौ मूला ॥ तै आरंभै जे नर भूला ॥ सर पुपर
ये दृढ़ मैं रहै ॥ या बिधि मुनि आहि सिद्धांग
है ॥ १७ ॥ आपु हीं तें माया बिस्तारै ॥ सत
रज तम बहु भेद पसारै ॥ १८ ॥ बहुरि आदि

सबसंग्रहैं ॥ निजानंदअयएकैरहैं ॥ तातेंय
सबमिथ्याजांनैं ॥ याकौकरतासोसातिमा
नैं ॥ १९ ॥ यहासिक्षामकरातेलेहै ॥ सबतेंप
रेब्रह्मकौसेवै ॥ जहांजहांइहमनकौधा
रैं ॥ तिसवासुंरिकबहूंनाहिटारै ॥ २० ॥ राग
दोषजयकैंयहांहोई ॥ होतस्वपताहीकोसो
ई ॥ भृंगीकीटदुतेंइहलीन्हौ ॥ तौमनहारि
चरनानिथिरकीन्हौं ॥ २१ ॥ इहचौबीसगु
रनिकीसिक्षा ॥ तोंसोमेभाषीदटदिक्षा ॥
अबतनतेंसीख्योसोकहूं ॥ तेरेसबअज्ञा

नहिंदुंखं ॥ २३ ॥ मेरा देह मोहि समभावै ॥ यह देही न बैराग उपावै ॥ ज्यों बालापन गयौ बिलाई ॥ त्यौंही यह अब जोवन जाई ॥ २३ ॥ आवै जरा मरन ता आगें ॥ बहु बिधि दुष देह सौ लागें ॥ स्वान श्रृगालनि कौ यह भष्या ॥ ता सौं प्रीति न जो रे दष्या ॥ २४ ॥ पुत्र अर्थ पसु गेहा ॥ कुल कुटंब बहु सब कहे हां ॥ तिन सौं मिलि जा दिं इहिं सवै ॥ सो इंअत महा दुष देवै ॥ २५ ॥ आगें कौं बहु कर मउपावै ॥ अब जंम के दरबार पवावै ॥ रम

श्री निमित्तषैचैनितरसनां॥ ब्रांणसदाग्र
देजलग्रसनां॥२६॥नयनरूपग्ररूसबद
दिश्रवनां॥इंद्रियचद्दैनारिकोरवनां॥त्व
चासपरसनासावहुंगंधा॥त्वरनगवनकु
रिकारिदैंयंधां॥२७॥याबिधिसबमिल
लूटैताकौं॥बंध्योदेहसोदैषैंजाकौं॥ताते
नेहदेहकौताजियै॥सदानिरंतरिहरि
कौनाजियै॥२८॥चाहरिजबमायागुननबि
स्तारे॥तबनांनांविधिदेहसंवारे॥तिन
तिनमनसंतुष्टनभयोबहुस्यौमांनवत

नानिरमयो॥२९॥ताकौंदेषिबहुतसुषपा
यो॥तामैंअपनौंधांमबनायो॥तबहरिजी
बोलेइहबांनी॥जोइहप्रगटबेदबषांनी॥
३०॥मोहिलहैसोयाकारिलहै॥याकारिस
बमइबंधनहै॥जबमेराहितकरैउमा
या॥तबमैयाकौंकरौंसहाया॥३१॥तातैंमै
तिइहदुरलमदेहा॥औनगवांनरऔति
जगहा॥अतिदुर्लभकेइजतननपावै
जौपायोतौथिरनरहावै॥३२॥अतिदि
नम्हत्तुनिरंतरग्रासे॥एकादिनांततका

लबिनासे॥जरारोगभयसोकनिधांनां॥ज
मैपलकसुषीनहीं प्रांनां॥३३॥तातैंतादि
पाइकरिराजा॥करिलीजेआपनोंकाज
॥जातेंइहछूटैसंसारा॥जाकेदुषकोवा
रनपारा॥३४॥निसदिनुदेवनिरंजनभजि
ये॥किंमयजीतबिषैसबतजिए॥बिषिया
षांनपानसुतदारा॥एसबदेहनिबारंबा
रा॥३५॥तातैंत्यागसकलकोकीजै हरि
केचरनकंवलचितदीजै॥याबिधिइनतें
सिक्षापाई॥तबमैंऔरसकला

॥ रुदी मनु मैं बिचरै कै निद संगा ॥ यातन दुके
छोडौ संगा ॥ सदा रहौं हरि चरननि पासा ॥
बहु बिधि दषौं सकल तमासा ॥ २७ ॥ बहु त
गुरनि तैं पूरण ग्यांनां ॥ जहं तहं ले बै साध सु
जांना ॥ छूटै अहंकार अरु ममता ॥ हृदै श्री ।
बिराजै समता ॥ २८ ॥ निर्गुन अगुन भेद पहि
चांनै ॥ सार असार आचि रा थिर जांनै ॥ जहां
तहां लै लै हूं छंत ॥ संसय दैत मिटावै संत ॥
२९ ॥ पाइयै परमारथ गुरनां दी ॥ एसब बा
रहै सत गुर मांही ॥ सत गुर ते जब ग्यांन दिपा

वै॥तबसारौजगज्ञानसिषावै॥४०॥तातें मै
रैंसदाआनंदा॥हृदैबिराजैपरमांनंदा॥या
बिधिजेईदरिकौंसेवै॥तिनकौंनिजदरि
चरणानिदैवै॥४१॥ऐसेजडकौंबचनसु
नाए॥मनकेभ्रमसंदेहगंवाए॥राजाबहुबि
धिपूजाकीन्ही॥करिप्रणापातिपरदछि
णांदीन्ही॥४२॥तबराजाकौकरिसनमानां
॥दत्तात्रैमुनिकियौपयानां॥राजाबचनध
रेउरमांही॥सबकौसंगतज्यौदेनतांही॥
४३॥ब्रह्मदृष्टिसबहिनमैआनी॥ऐसौ

मयौपरमंविस्त्रांनी॥सोराजाऊदुबऔदम
रो॥जिनिअपनौंमवसंकटटारौ॥४५॥ता
तेउद्धवऔरनकोई॥गुरआपुनौआपुहि
होई॥आपुहीबूडैआपुहितिरै॥आपुहि
जावैआपुहीमरै॥४६॥दुदमाध्योविस्त्रा
नमैं॥सबअद्वैतउपाई॥अबताकोसा
चनकहूं॥बहुतभांतिसमझाई॥४७॥इति
श्रीभागवतेमहापुराणेएकादसस्कंधेश्री
भगवउद्धवसंवादे॥चतुर्विंसतिमुरव्या
ख्यानेभाभनऊमोध्याये २४॥चौपई॥६४६

॥ अवधूतेइतदासोव्याख्यानसंपूर्ण ॥ श्री
भगवानउवाच ॥ सुनिउद्धव अबसाधन
कहौं ॥ तेइसबसंदेहहिदहौं ॥ जातेंउप
जेअनुरागियानां ॥ छूटेंऔरसकलअभ
नां ॥ १ ॥ ममनकनिजेमारगआवै ॥ तिस
हदैबैठिमेंआवै ॥ तेकाहिएआलमके
मौ ॥ औरसबैबंधनकेकामी ॥ २ ॥ तिन
सावधांनह्वैजानें ॥ वर्णाश्रमकुलमि
मानै ॥ जेजेबदुआरंभनिकरैं ॥ सुख
देनिसदिनदुषभरैं ॥ ३ ॥ आगेकोबंध

नयोपरमविज्ञानी॥ सोराजाऊदुबऔदम
रो॥ जिनिअपनोंमवसंकटटारे॥४८॥ता
तेउद्धवअोरनकोई॥ गुरआपुनोआपुही
होई॥ आपुहीवूडेआपुहितिरै॥ आपुही
जीवेआपुहीमरे॥४९॥ पूंछेदमाप्योविज्ञा
नमें॥ सबअद्वैतठपाइ॥ अवताकोसा
धनकहूं॥ उद्धवतमातिसमझाइ॥५०॥ ॥
श्रीभागवतेमहापुराणेएकादसस्कंधेश्री
भगवदुद्धवसंवादे॥ चतुरविंसतिगुरव्या
ख्यानेनामनवमोध्याये ९॥ चोपई॥ ६४६

॥अवधूते इतहासोया [illegible]

भगवान उवाच ॥ सुनि ऊधव [illegible]

कहीं ॥ तेरे सब संदेह [illegible]

जे ब्रह्म ज्ञानियां नां ॥ कहूं [illegible]

नां ॥ १ ॥ मन मग्न [illegible]

ह्दै बैठि मैं आप ॥ [illegible]

मां ॥ और सबै बंधन [illegible]

सावधान है जाओ ॥ [illegible]

मानै ॥ जे जे [illegible]

[illegible]

उपजावै॥ जिनकैसंगजन्म हारैजावै॥ यौ
बिचारिऔरंजनितजै॥ कैनिंदकांमचवर
नममजै॥ ६॥ जहांलगेहैनांनांबुधि॥ सो
सबउद्धवजांनिकुबुधि॥ द्वैतभावसोंभ्र
मकारिजांनौ॥ सुपनमनोरथसमिकरिमां
नौं॥ ५॥ तातैंऔरंकर्मसबतजै॥ नितनेमि
तिककछुइकभजै॥ तेऊकछूसत्यनादि
जांनो॥ करैतोकरैनहींतोनानैं॥ ६॥ भक्ति
मांहिजोअंतरपरै॥ तौतम्हलिनकबहूंवि
रै॥ जौजासमैंनअंतरजांनैं॥ तौतासमैमैस

जमैंवानैं॥७॥जमनिमोहिनिहचल
धरै॥नियमनकोंमावेत्योंकरे॥लोविज्ञ
रसरनहिजावे॥जातैमेदसकलकोंपा
॥८॥जमअरुनियमकछूनहीसेवे॥सत
रकहेसीषसालेवे॥मानरहितमछरन
जानैं॥तनमनआपप्रीतिकोंवानैं॥९॥
हांतहांममितापरिहेरै॥सावधानआ
नहिकरे॥तजेअसूयाबषानबोलै॥तन
नानिहचलकहेनडोलै॥१०॥श्रद्धासहित
सकितिहोई॥गुरुचरनानिसेवेसिषसो

ई॥ दारासुताबितगेहकुटंबा॥ सकलभूत
आतमपितुअबा॥११॥ तिनसबदिनकोंस
मकरिदेषे॥ मेमेरोकरिकदेनलेषे॥ रदेउदा
सआसपासिद्दरै॥ निसदिनब्रह्ममांहिमन
धरै॥१२॥ सूक्षमथूलदेहद्वैजेहैं॥ नरमस
पमायाकेतहैं॥ इनदूनौतंआतमदूरि॥ स्व
प्रकासचेतानिभरपूरि॥१३॥ थूलसरीर
प्रगटजडएहा॥ चेतानिकरैताहिवहदेह
॥ सोवहकूतनजडऊहा॥ चेतानि
होइआतमांसंगा॥१४॥ सोआतमांकुहूंते

न्यारी ॥ दुहूं प्रकासक दुहूं आधारी ॥
एक कौ अनल परिजरै ॥ सो दूजौ दिप
कासित करै ॥१५॥ परि सो अनल दुहूं
न्यारा ॥ स्वप्रकास आतम आधारा ॥
सो बहु काननि संगा ॥ पावै उत
अरु भंगा ॥१६॥ त्यौं द्वैत न हरि माया की
॥ ते आत्मा अपकारि लाये ॥ तिन संग ज
म मरन दुष पावै ॥ लहै आनंद जब ही
ट कौ ह्वै ॥१७॥ तातैं बहु बिधि करै बिचारा
॥ आतम जानैं सब तैं न्यारा ॥ एक अजनमा

।रिएकापलरहनयाह॥२५॥ओरज्यौरह
हिआकार॥ तिनसंगतिमननवढुतप्रकार
कबहूंनहिंहैनहींआवै॥जनमिजन
मिमरैमरिदुषपावै॥२६॥कर्मरुजोकर्म
निआचरै॥ सुषअरुजोसुषभोगनिक
रै॥रच्यौक्यौंहीसेप्रतंत्रा॥ तातेंसबताजि
येहहमंत्रा॥२७॥जेपंडितश्रुतिसुमतजा
नैं॥तत्वलहैबिनुकरमानिगंमैं॥तेमूरिष
देहअभिमानी॥ आपुहिआपुकहावैंज्ञा
नी॥२८॥हरिजनसंगनकबहुंकरैं॥तत्व

नसुनैंकर्मविस्तरै ॥ तिनतेंमलेजेकछूनं
दिजानें ॥ तत्ववचनसुनिहृदैंआंनें रै
॥ जद्यपिअतसुषानिकोंजांनें ॥ अरुदेहकें
मंगुरदेहानिमांनैं ॥ परिसोतत्वनसम
झैतेऊ ॥ ज्ञातेलहैंमगतिकोभेऊ ॥ ५ ॥ का
लमतिज्ञाकोंनितग्रसे ॥ ताकोंकहोंक
हासुषवसे ॥ ज्योंकोईमारनकोंलीजे ॥ सु
लीनिकटषरीलेकीजे ॥ ६ ॥ अरुकत्ताकों
जोभोगभोगावे ॥ सोचोंकहोकिसोसुषपा

रनिंदा भयसो का॥ ३२॥ तिनकेहेतजत
नबहुकरे॥ सिंचनहादि विधन आतिप
र॥ औषेतीमै विघन अनेका॥ त्यो सुरग
दिलदेकोरका॥ ३३॥ अरुजोलहोत
उष्टिरनाही॥ देषताविनासिजाइ ॥ पलमा
ही॥ ३दीजइकरै बहुकोई॥ अरुजो अंत
राइपैलैनहि होई॥ ३४॥ तबसोसुरगलो
कोजावै॥ कारदेवदेव सुषपावै॥ अ
पनेसुतनिकोउपजायो॥ उत्तमजाइ
माननहिपायो॥ ३५॥ बहुगंध्रवंगानको

करैं॥ बहु सुंदरी नारि मन हरै॥ इहा दे

इ तहां चलि जावै॥ सहित बिमान बि...

लवन लावै॥ ८६॥ अमृतपांन तहां नित करै

॥ वस्त्राभरण देह बहु धरै॥ यौं नित मगन

बहुत सुष पावै॥ परिषे की कछु चिंतन आ

वै॥ ८७॥ जेतो पुण्य इहां कीं होई॥ तेतो

रहै सुरग मैं सोई॥ पुण्यक्षीण होवै पुनि

जबही॥ काल तहां तें गहै तबही॥ ८८॥ सो

सुषक होत भ्रौ क्यौं जावै॥ ताडुष की कछु

कहत न आवै॥ रह्यौ चहै पर क्यौं का

ह॥कालग्रधीनमहादुषलहै॥९०॥कोई
सुषपावैकदुजेतौ॥ह्नीनिलियेदोवैदुषते
तो॥सोतजिसुरगतुमेंग्रावै॥पीछेजोनि
ग्रनंतानिपावै॥५०॥रुद्रभाषीविधिकोग
तितोंसो॥ग्रबानिबचकोसुनियेमोसो
॥जोकुसंगमेग्रानीपरै॥तौबहुभातिग्रघ
रमानिकरैं॥५१॥बंधु॥कांमरुइंद्रियाधीन
ग्रस्त्रीलंपटलोभादीन॥बहुजीवनिकीहि
साकरै॥प्रेतभूतगरु॥एकोंग्रनुसरे॥५२
॥मैंहीएकबसोंसबमांही॥तिनकैंद्रोहन

रकमैंजो है॥ बृदरिआइ थाव रतनुं लहै॥ जनमजनम बहु संकट सहै॥ ४३॥ ताते वि
धिनिषेध जे करै॥ ते सब जनम मरन मे परैं
करम करे तिन तें तन धरैं॥ तन धरि ध
रि बहु दुख सों मरैं॥ ४४॥ ताते प्रवृति मैं सु
ष नांही॥ भावै ब्रह्मलोका किन जांही॥ लो
कपाल सब लोक समेता॥ इतनौं रहै ब्रह्म
दिन जेता॥ ४५॥ सो ब्रह्मा ऊं अंत न रहै
तातर बाज काल सों गहै॥ आगि रहै
रम ये मांही॥ पवन वहै तिह चलपल

है ॥ ६६ ॥ सूरिज चंद एकार सचलैं ॥ मरजा
दातेसि चुनटलैं म्रत्यु निरंतर सबकौं ग्रा
से ॥ मेरे काल रूप तैं त्रासे ॥ ६७ ॥ तातें कुटुंन
सुषश्च हूति ॥ सुषचाहै सो गहै निहूति ॥
अरु एइंद्रिय कर मउपावै ॥ तिनकौं सत
रजतम वरतावै ॥ ६८ ॥ सो आत्मा इंद्रि
य वस होई ॥ तातें सुषदुषपावै सोई ॥ प
रि आत्मा अकरता जानौ भोग रहित त
ही तें मानौ ॥ ६९ ॥ कर्म रु भोगादिक है
जेते ॥ इंद्रिय अरु गुनकृत सब तेते ॥

जौलगियइइंद्रियगुनबंधा॥जौलगि
मिटैनतनसंबधा॥५०॥तनसंबंधमि
टैनहिजौलौं॥नांनांभावबहुतबिधि
तौलौं॥नांनांभावरहैंउवलगें॥परांधी
नआतमतबलगें॥५१॥पराधीनजौल
गियइरहै तौलगिकालनिरंतरगहै
॥तातैंजेपवररतिरतहोवै॥जुगजुगज
नमजनमवरोवै॥५२॥प्रथमइतौभेद
कानिरंजन॥ ताहीतैंउपज्योइहैअंजन
कालआतमालोकरुवेद॥धर्मस्वभाव
बहुतबिधिभेद॥५३॥

न कोई ॥ तातैं बुध अनुरक्त न होई ॥ एक
निरंजन आतम जांनै ॥ तब सब संकल्प
व कैं भांनैं ॥ ५४ ॥ लोक रु बेद बासना त
जै ॥ इंद्रिय देह बिषै नहि मजै ॥ मन पहुं
चै सो मिथ्या लेषै ॥ मन अतीत सो अद्दै
देषै ॥ ५५ ॥ ब्रह्म रु आतम एक बिचा
रै ॥ या बिधि सकल उपाधि जारै ॥ त
ब होए क ब्रह्म कौं पावै ॥ छूटै द्वैत बहु
रि नहि आवै ॥ ५६ ॥ द्रढ आत्म अरु देह बि
वेका ॥ या कौं जांनि एक कौं एका ॥ ए सेव
चन कहे जब कृष्ण ॥ उद्धव दास करी तब

ब्रह्म॥ उद्धवुअम्बाद्दरिब्र मुजोइह सारो मर्मा
॥ इंद्रियदेहबिषेगुनकर्मा॥ अरुआत्मा
अनीहअबंधा॥ ताकोंभयोकोंनाबिधि
बंधा॥ ५८॥ अरुजोबहुरिज्ञानकोंलहै
छोडिउपाधिदेहमेंरहै॥ सोबहुस्योवधी
लक्षनहोई॥ अरुक्यूंकरिजांनीजैसोई॥
५९॥ कैसोबिचरेंकसेरहै॥ कैसेजीवेकै
कहै॥ कैसेपढिरैकैसेसोवै॥ कैसेसुनैकों
नाबिधिजोवै॥ ६०॥ अरुआत्माएकैहैनां
ही॥ एकमुक्तक्युंएकबंधाही॥ एकबं

कैकूं मुक्ता ॥ एतौ बहुत एककौं उक्ता ॥
१० ६१ ॥ गुन अनादि आतमां अनादि ॥ तातें
यह तौ बंधन आदि ॥ नित्यमुक्त क्यौं कहि
यदेवा ॥ याकौ मो दिबतावौ मेवा ॥ ६२ ॥
दोहा ॥ यउद्धव निजभक्तके ॥ सुनिकरि
निरमल बैंन ॥ ताकौं वस्तुतर कह्यौ हरि
जी करुनाऐंन ॥ ६३ ॥ इति श्रीभागवतमहा
पुरांनेएकादशस्कंधेश्रीमद्भुद्धवसंवादेभाषा
टीकायांदसमोध्याय: ॥ १० ॥
चौपाई ७० श्लो ॥ श्रीभ ॥ सुनि उद्धव अबवम
गवानउवाच ॥ १

गियांनं॥जातेंभेदमिटैतुवनांनं॥बंध
रमुक्तोहिसमझाऊ॥तेरोसबअज्ञानमि
टाऊं॥१॥बंधमुक्तजेकहिएकोई॥सोतें
सकलगुननितेंहोई॥तेसबगुनमाया
केजांनैं॥इनतेंदूरिआतमांमांनैं॥२॥
सोकरुमोहजनम[illegible]आरुसुष॥भयअ
रुमरनादिकबहुदुष॥एसारेमायाकृ
तकेवल॥सदाएकआतमनिहकेवल
॥३॥ज्योंसुपिनेंसुषदुषअनेका॥तिनमें
आतमकोंनहिएका॥तेसबबुद्धिरुमन

कौं हो है॥ इंद्रियदेह प्रगट ते सो है॥ ४॥
पुनि क्षुध्या दिक कछू नहिं रहै॥ जा कौं प्रग
ट सुषपाति कहै॥ तब आत्मा निरंतर रहो
ई॥ परि ता कौं सुषदुष नहिं कोई॥ ५॥ जौं सु
षपति मैं आत्म रहै॥ तौ बिवहार क्यों छुटे
ना है॥ परि ता कौं न ही बिकारो॥ एसब
माया कौ बिवहारा॥ ६॥ परि आत्मा आ
प ते मानै॥ ता तें सुषदुष बहु बिधि जानै॥
परि आत्मा एक रस नित्य॥ बंध मोक्ष
सकल अनित्य॥ ७॥ उद्धव जानों एक आ

विद्या॥अरु दूजी जो कहि येबिद्या॥७॥दोऊ हैं मेरी
सक्ति॥इन मैं सब हिन की आसक्ति॥८॥बंध
न कस्यौ चहौं मैं जा कौं॥औरि आविद्या पठऊं
ता कौं॥अरु जा के बंधनानि मिटाऊं ता कौं बि
द्या सक्ति पठाऊं॥९॥ए औ दोइ मुक्ति अरु बंधां
॥ते मम सक्ति तु है संबंधा॥आत्म है सो मेरौ
रूप॥सब तें न्यारौ परम अनूप॥१०॥ज्यौं ससि
के प्रतिबिंब अनेका॥परि ते बहु न न हौ सब
एका॥अरु जा जा कौ घट बिनसाई॥सो ई सो
सासि माहि समाई॥११॥त्यौं सब आत्म
सा॥पारि घट संगत्त है दुष सं

कौजांहिंघोजबही॥ घटकौनासकरैसोतब
ही॥१२॥ सोईसोतबमोकौंलहै॥ औरसक
लनवहीमैरहै॥ अरुघातिबिंबघटनिहूंमां
हीं॥ सदाअलिप्तलिप्तकहूंनांही॥१३॥ परि
घटसंगालिप्तसेहोवै॥ अरुत्यौंलिप्तऔरकू
जोवै॥ त्यौंआत्मांसकलतैंन्यारा॥ सदाअलि
प्तनालिपैंविकारा॥१४॥ परियातनमैंआ
पुबंधांनां॥ ताकैसंगिलहैदुषनांनां॥ अ
बमैंबंधमुक्तकीकहूं॥ तेरेसबसंदेहदहि
दहूं॥१५॥ एकदेहमैंद्वैकौबासा॥ परमा
त्मआत्मकेपासा॥ ज्यौंद्वैपंष्यरहैतरुमां

हीं॥तरुतेजिन लिप्तकहूं नांही॥१६॥दोऊ
चेतनिएक समांनां॥सषो रूपएक हिअस्था
नां॥आपुहुतेतिनबासाकीयो॥तिनमेंएक
तरुहिचितदीयों॥१७॥देहवृक्षके सुषफल
षावे॥तातेंदुषआपुहीपावे॥तबताकाज
कर्मबहुकरै॥तिनतेंजुगजुगजनमेंमरैं॥१८
॥देहमेरे मरनों करिजांने॥देहजनमतेज
नमहिमांने॥ऐसेसदाबहुतदुषपावे॥
देहमें सो आतांकहावे॥१९॥परमात्मा
हतरुमांही॥एसुषफलकबहूंषावेनांही
तातैंकछूकर्मनहीगहे॥निजानंद

हु चलर है ॥ २० ॥ यों परमात्म आत्म जांनै
देह अतीत दुहूं कों मौ नैं ॥ सुष फल अरु अ
रस निंत जै ॥ मुक्त होइ परमात्म नजै ॥ २१ ॥
ज्यों तन मांहि मुक्त परमात्म ॥ विद्या पाइ बसे
त्यों आत्म ॥ तन मे है परि तन मे नांही ॥ आपुहि
जानि न यों थिर मांही ॥ २२ ॥ सुपिन देषि ज्यों
जागै कोई ॥ सो सो सुपिन विचारै सोई ॥ पर
सो सुपिन रहै अरु सुपनां ॥ मिथ्या जांनैं च र
म ते उपनां ॥ २३ ॥ अरु ज्यों सदत अविद्या
होइ ॥ सो तन मे नाहि परि है सोई ॥ ज्यों सो वद
सुपिना तन पावे ॥ ताकौं आपु जांनि मन ल

वे॥२४॥तन मैंबंध मुक्त जे जीवा॥बंध जीव मु
क्त सो सीवा॥बहुस्यों कहूं मुक्त केलक्ष न॥जि
न कौं जांने होइ विचक्षन॥२५॥देहे सुमें कोई
कछु करै॥सो कछु कदे नाहि रदै धरै॥सक
ल अर्थ इंद्रिय कृत जांनें॥आपु हि रक अव
र्ता मांनें॥२६॥पूरब कर्म अधी सरीरा॥व
र्म करै इंद्रिय मन सीरा॥तिन मैं वास कीये
नाहि जांनें॥मूरख आपुहि करता मांनें॥२७
॥बहुरि मुक्त असी बिधि रहै॥अहं कार त्या
तन कों दहै॥आस अस्त अरु न अरुस
नां॥दरस परस अघ्रानरुव

नमैंइंद्रिनकौंबरतावै॥आपुनकबहूंपी
तिलगावै॥२दैमांहिपरिलिप्तनहोई॥ज्यौं
आकासपवनरवितोई॥२९॥विद्यानांम
सैंह्रपीपाई॥दिढवैरागसांनधरबाई॥ता
तेंकाटेसंसयसारे॥जागिसकलभ्रमभेद
निवारे॥३०॥इंद्रियप्रांणबुद्धिमनमांही
॥कबहूंकछुबासनांनांही॥सोजद्यपितन
हूंमैदरसै॥पैरिसोमुक्तनहिंनहिपरसै
॥३१॥एकदुष्टतनपीडाकरै॥एकबहुतप
जाविस्तरै॥परिबुधरोषतोषनहिआंनैं
सकलदेहकृतमिथ्याजांनैं॥३२॥विद्या

षेधजो कोईकरे॥ किबाकोरे ग्रैंथबिस्तरै॥मु
निकछु भलोबुरो न दिदेषै॥गुन अरुदोषर
तसबलेषै॥२३॥बिधिनिषेध नांहीकछुक
रे॥नांकछुकहै नहदेधरे॥निसदिनरहै ब्र
ह्मरसमत्त इंछ्यामें ज्यों जडउनमत्त॥२४॥जे
स चिदनमुक्तकेमां नों॥अरुमुमुक्ष कोंसा
धनजानों॥मुक्तनयोजे चाहै कोई॥ग्रैसब
साधनसाधै सोई॥२५॥जिन सबसबद
लहेजांनों॥परिनिजतत्व नहीपहिचांन्यो
३ नसाधननिमां हिरत नांही॥ताकेअ
बमिथ्याजांही॥२६॥सबद

गा॥ हरिजी अरु हरिभक्तनि साजा॥ तातें व
सो बिना श्रम अैसें॥ बंध्या गाइ सेइये जैसें
॥ बंध्या गाइ: दुध बिन होई पराधीन तनु राखै
कोई॥ असती नारि पुत्र अन्याई॥ घर मांबि ह
नौंय न आधिकाई॥ २८॥ ज्यौं इन तें दिनादिन
दुष होई॥ कबहुं सुष पावै नहीं कोई॥ मोहि
बिना यौं बहुबिधि बांनी॥ केवल बंधन हीं
जांनी॥ २९॥ मोतें जगउतपति संहारा॥ सब
त्पति पालिक बिबिधि प्रकारा॥ किं बाजन
म करम बहु तेरेज बांनी मैं नांही मेरे॥ ४०
॥ मेरे नांम बिधि संबंधा जा बांनी मैं नांही

वंधा ॥ वंध्याबानी माहि बिचारै ॥ निहफल
जांनिन पंडित धारै ॥ ४१ ॥ या बिधि जांनि ब
हुत प्रकारा ॥ बहुत भांति करि बहुत बिचा
रा ॥ जहां तहां ते मैं मूढ़ि निवारै ॥ पूरण एक
ब्रह्म मैं धारै ॥ ४२ ॥ जो तजि दूजे नांनो अर्थ ॥ म
न धारणा कौं नहि समर्थ ॥ सो मम हेत कर्म
सब करै ॥ प्रेम मगन फल जे स परिहरै ॥ ४३
॥ और कर्म अकर्म विकर्मा ॥ बंधन जांनि त
जे सब धर्मा ॥ जाही तें उपजै मम भक्ति ॥ ता
ही मैं राखै अनुरक्ति ॥ ४४ ॥ श्रद्धा सहित सु
नै गुंन मेरे ॥ जानि ते कर्म न आवै नेरे ॥ गा

वै सुमिरै अस्तुति करै॥ प्रेमसहितानिस
न बिसरै॥४५॥जे कछु धर्मकाम अरु अ
करै सकल ते मेरे अर्थ ममआधीननिरं
हि रहै॥मनक्रमवचनआसनहि गहै॥४
सा बिधि हो वै निहचलभक्ति॥और सब
लतें सहज बिरक्ति॥ तब मेरे निजरूप
जांनै॥तातें नांनां भेद हि भांनै॥४७॥तब
ताही पदमांहि समावै॥जातेजनमफेरि
नहीपावै॥पौं इहसतसंगतितेहोई॥स
तसंगतिबिनुलहैनकोई॥४८॥भक्ति
बिनांमुक्तिनहिपावै॥भगतिबिनांनहीं

आवै॥तातें संतसंगति कौं करै॥दूजौ ज
न सकल परिहरै॥४९॥दोहा॥ये सुनि
रिजी के बचन॥मन में बाढी प्यास॥तबम
निजरूभक्ति के॥लछन पूछे दास॥५०॥उद्ध
।हे प्रभु पूरण परम अनंत
वाच॥
जग बहुत भांति के संत॥जाकों संत कहो
मदेवा॥ताको मोहि बतावौ भेवा॥५१॥अ
औ भक्ति केव नजो गनै॥जातें तुव निज रू
हि जानै॥तब उद्धव कों देख दुमानां॥कृ
सिंधु बोले भगवांनां॥५२॥श्रीभगवानु
॥परम कृपाल द्रोहन हि जानै॥समावंत

रुसत्यबषांनै॥ निद्यारहतडुंदसबसमना
परउपकारीहदैनममता॥५३॥आयेकामब
धिथिररहै॥इंद्रियेजितकोमलतागहै॥स
चारसंयहनहिजांनै॥लघुअहारनइहाअं
नैं॥५४॥सीतलहदैबिचारहिवारै॥धर्मआ
पुनैदृढताधरै॥सावधांनअरुरहितबिका
॥धीरजवंतदयाआधिकार॥५५॥सोकमो
हअरुक्षुधापिपासा॥जरामृत्युजीतेषटपा
सा आपुमांनअपुमांननजांनैं॥औरनिकै
बहुमांनहिगानैं॥५६॥जोकोईसरनागत
आवै॥ताकेंजोंत्योंज्ञांनउपावै॥सबको

त्रसुभासुभजानैं॥दृढविस्वाससकलभ्रमभो
नैं॥५७॥ममआधीनदीनहै रहै॥साधनको
बलकाहेनगहै॥मोहीकोंकरताकरिजानैं
॥कबहूंभुलिनआपाआनैं॥५८॥जद्यपि
वेदरूपमैंगाये॥वर्णाश्रमकुलधर्मवताए
॥तौहुंबिधिनिषेधसबतजै॥दृढनिश्चयम
मचरणनिभजै॥५९॥सोभक्तानिजभक्तकहावै
॥ताकेसंगभक्तिकोंपावै॥हैसरबकालरहित
सर्वात्म॥चिदानंदमयप्रभुपरमात्म॥६०
॥अैसोजांनिजानिमोहिभजै॥औरसकल
कल्पनांतजै॥सोमेरोकेहिएनिजभक्तासौं॥

नितहूं जैअनुरक्त॥६१॥ अरुजेअैसौमो
नजांनें॥ परिअसंतप्रीतिकौंवांनैं॥ तेकौ
मोहिसकलपरिहरै॥तैजनिमोहिआपु
सिकरै॥६२॥ भक्तनिकेलच्छनकाहिए॥ मै
कृपाढुतेतेलाहिए॥तिनकौंपाइभक्तिकौंप
वे॥भक्तिपाइममचरणनिआवे॥६३॥ता
मोहिचहैजोकोई॥ममसंतनिकौंसेवैसा
॥अबमैंकहौंभक्तिकेअंग॥जातेपावैमेरो
संग॥६४॥ममप्रतिमांमैंमोकौंभजै॥मनअ
मवचनफलादिकतजै॥हितसौंदरसपर
परिचर्जा॥अस्तुतिअरुदंडवतसपर्जा॥६

तन अरुजिनकेपीछेंजेते। मोकोसकलसमरपेत॥

॥मेरीकथाबिषेअतिश्रधा॥मोबिनुकछून करेपलअधी॥मेरुजनमकर्मगुनगावे॥से निरंतरिमोकोंध्यावे॥६६॥जनमाष्टमी दिजेपर्बी॥बहुतउछाहकरेतेसबी॥६७ मंदिरसून संगीतअरुबहुबिधिबाजा॥ कथाकीरतनबहु बहुतबिधिसाजो॥ जागरणादिबहुतबिधिअरचा॥ बहुतबिधिअरचा ६८॥ औसेंबहुतभांतिउछाहा॥सबपरब सबबिधिनिरबाहा॥मथुरादिकहरिधां निजावे॥बहुतभांतिकरिउत्सवबढावे॥५ ॥औरनिकोंअरचादिसिषावे॥गोरगोर

रावै॥बहुबिधिकरैबागफुलवा
नमहितचतुराई॥७०॥पुरमंदिर
रावै॥औहरिअरुहरिभक्तनिभावै
है॥ओसकतिनहोई॥तोहूंउद्यमक
१॥बहुबिधिमारमांकदैकहोवै
सौमिलिकैकरवावै॥मंदिरादिव
रावै॥बहुबिधिसींचैधूलिनिवारै
बिचित्रचौकबिस्तरै॥कैकारिह
करै॥मांनरहितकछूदंमनजानै
रैमोनहीबखानै॥७२॥मोकौंक
आसौं॥औरकछूनहीदेवैतासौ

तन अरु जिन के पीछें जेते। मो कों सकल समरपे ते८

॥मेरी कथा बिषै अति श्रधा॥ मो बिनु कछू न
करै पल अर्धा॥ मेरे जनम करम गुन गावै॥ से
निरंतरि मो कों ध्यावै॥६६॥ जनमा ष्टमी
द्विजै पर्वी॥ बहुत उछाह करै ते श्रवी॥६७
न्रत्य गीत अरु बहु बिधि बाजा॥ मंदिर रू
बहुत बिधि साजौ॥ कथा कीरतन बहु
चरचा॥ जागरणादि बहुत बिधि अरचा
६८॥ ऐसे बहुत भांति उछाहा॥ सब परब
सब बिधि निरबाहा॥ मथुरादिक हरि धां
नि जावै॥ बहुत भांति करि श्रे वै॥५
॥औरनि कौं अरचा दिसि

तिमांपचराहै॥बहुबिधिकरैबागफुलवाई
॥क्रीडाथांनसहितचतुराई॥७०॥पुरमंदिर
हुभांतिकराहै॥औहरिअरुहरिभक्तनिभावे
अपुमांहिजोसकतिनहोई॥तोहूंउद्यमकं
नैंसोई॥७१॥बहुबिधिमारिमांकहेकहांवे
॥औरनिसोंमिलिकैकरवावे॥मंदिरहिब
हुभांतिबुहारै॥बहुबिधिसीचैधूलिनिवा
॥७२॥चित्रबिचित्रचौकबिस्तरै॥कैकारिद
सआपुहीकरै॥मांनरहितकछुदंभनजानै
॥औकछुकरैसोनहीबखानैं॥७३॥मोकोंवे
रैआरतीजासों॥औरकछुनहीदेखैतासों

॥ममत्वसाद प्रीति सौं लहै ॥ प्रीति हीन जो बुनि न दिढ़ है ॥ ७४ ॥ ज्यौं ही ज्यौं ज्यौं उपजै प्रेम ॥ त्यौं त्यौं अधिक बढ़ावै नेम ॥ मम भक्त नि कैं रहै आधीन ॥ तन मन धन सौं नित लैलीन ॥ ७५ ॥ अरु एवाद स गौरनि मझा ॥ मम पूजा करि हरै अमझा ॥ सूरिज अग्नि विप्र अरु गाइ ॥ भक्त वैष्णव आकास रवाइ ॥ ७६ ॥ जल अरु धरणि आप मै सौं ही सब निमांहि मम पूजा यौं ही ॥ त्रिधा त्रयी सुर की पूजा ॥ सौं कौं छौ उनजाने दूजा ॥ ७७ ॥ र था राजस कारि उपजावै ॥ सात्विकसी तस नि वरतावै ॥ तांमस ग्रीषम सकल विनासे

कलजगतकौं आपप्रकासैं॥७८॥ तातैं मेरी
रमाविभूतिअरु सैं जांनि करै अस्तूति॥ पावै
मांहि होम करि जजै॥ विप्रनि अतिथि भाव
मजै॥७९॥ तृणजलादिगाइकी पूजा॥ भक्तभे
में औरन दूजा॥ भक्त बेष निज बंधव जांनें॥
ति घरम्ह कै पूजा ठांनें॥८०॥ ज्यौं अपनें बंध स
धी॥ तिनसौं प्रीति सबनि है वंधी॥ तिनकौं व
तभांति करि सेवै॥ तनमनधननिद्वलकरि
वै॥८१॥ त्यौं हीं भक्त आपनें भाई॥ ऐसें जांनि
रै अधिकाई॥ तनमनधनसौं प्रीति बढावै
जिनतें मेरे भेद हि पावै॥८२॥ हृदयाकास

नसौं सेवै॥सबआधारपवनाचितदेवै॥जल
कौंजलअरुफूलफुलादि॥भूधरणीपूजैमंत्र
दि॥८३॥भोगनिसौंनिजदेहहिभजै॥मो बिनु
अंतरायसबतजै॥सबभूतनिमैं मो कौंजांनै
॥समदरसनदृढ पूजाठांनै॥८४॥इनिसब
औरनिपूजा करै॥मेरौरूपहृदैमैंधरै॥रूपच
तुभुजआयुधचारी॥स्यांमसरीरपितंबरधा
री॥८५॥सीसमुकुटसुभकुंडलकरणां॥कौ
स्तुभआदिबहुबिधिआभरणां॥ऐसौरूपस
बनिमैंधावौ॥सावधांनह्वैप्रीतबढावौ॥८६
॥याबिधिबाहरूपसरबाग॥जपतपसंनद

याव्रतजागरमेरहैतकरैजोकरै॥ सोबिनऔ
हृदैनहियरै॥ ८७॥ इनसाधननिकरैनरजु
ई॥ प्रेमभक्तिममपावैसोई॥ एसाधनकरै
बहुभांति॥ साधुमिलापहोइदिनराति॥ ८८
तिनतैऔसीजुक्तिहिपावै॥ जातैज्ञानभा
उरआवै॥ जातैज्ञानभक्तिकोकारण॥ ए
भक्तभवसागरतारण॥ ८९॥ तातैभक्तनि
चितलावै॥ जिनतैमेरीभक्तिहिपावै॥ ति
कै बिनजाभक्तिकौनित्त॥ कबहूंऔरनऔ
वैचित्त॥ ९०॥ मैंउनकोमेरहैंतैई॥ जेथ
मैंऔसोभेदनजानैकोई॥ जोकछुकहैको

में सोई॥जद्यपि मेरे मन नहि होई॥ ९१॥म
हि मिलन कों एक उपाया॥ बहु बिधि खोजत
और न पाया॥ साधुसंग मिलि भक्ति हि कर
ई॥सोई एक जगत जल तरई॥ ९२॥भक्ति
बिनां मुक्ति नहि पावै॥ भक्ति बिनां नहि मो
में आवै॥मो में आये बिन जहां तहां जाई॥
तहां तहां काल निरंतर षाई॥ ९३॥इह अति
गोप मतो है मेरो अरु मेरे आधीन चित तेरो
॥तातें इह में तोसों कह्यो॥ आगें कछु कहिबे
नहि रह्यो॥ ९४॥दोहा॥बहुरि गोप अपनो
मतो॥कहों तोहि समझाई॥ जातें छूटै ज

मय॥ सोमैं रदेंसमाइ॥ ६५॥ इतिश्री भाग
महापुराणे एकादशस्कंधेश्रीभगवत् उद्धव
बादेभाषायां एकादसोध्याय:॥ ११॥ श्लोक
॥ ५१३॥ चौपई॥ ८०॥ श्रीभगवानुवा
च॥ उद्धव मतोगो पिसुनिमेरे॥ पावैमाहि
हैमनतेरे॥ आपमिलन कौ पथ दिषाऊं॥
मैं सकलकुपंथ पिषाऊं॥ १॥ जोगकहीजे आ
प्रकारा॥ सांष्य ग्यानि अरु पुरिषा बिचार
॥ बहु बिधि वर्णाश्रम धर्मा॥ सकलत्यागे
बानिहकर्मा॥ २॥ वेदादिक बहु बिद्या पा
॥ जहांलगें हैं तप आति कावा॥ होमज

प्रवापीरूपा॥इच्छादंनसमयअनुरूपा ॥२॥एकादशीआदिव्रतजेते॥गुरुमंत्र मेरेदैंकेते॥ममचाति मांपूजाआचरणं ॥तीर्थअटनानियमजमकरणं॥४॥ श्रीशैसमदमआदिकजेते॥साधनसकलमुक्तिकेतेते॥इनसबदिनतेमोहिनपावे॥साधुजनपलमांहिमिलावे॥५ ॥उनतेमनकोंसगनछूटै॥ममचरणनिमेंचितनाचिछूटै॥तातेंमोहिनपावेउनते॥पावैबच्चनसाधकेसुनतें॥६॥सा श्रेसेवचनसुनावें॥सत्रा

जनांवै॥सार असार कालनि:काला॥स
कादि षांवै सब तत काला॥७॥सब ते म
कौ संग मिटावै॥मेरे चरण कंवला लिपि
वै॥ऐसी बिधि भव सागर तारैं॥मेरे ज
तत काल उद्धारैं॥८॥जेते तरे तरैंगे जेते
अरु अब हूं तर ते है केते सब साधु संग
जांनौं॥दूजौ औरउ पाइ न मांनौं॥९॥ब
मृग जातुधांन असुरादिक॥चारण सिध
नाग गुह्यादिक॥अप्सर विद्याधर गंधर्व
॥जिनि जिनि पायौ तेते सर्बा॥१०॥बैस्य सु
ड अंत्यंज अरु नारी॥बहु राजस तामस

अधिकारी॥जुगजुगजेसतसंगतिआ
॥तिनहीतिनमेरेपदपाए॥११॥वृत्रासु
वृषपर्वाबांनं॥बलिप्रहिलादवभीषन
जांनं॥मयसुग्रीवरीच्छदनबना॥गज
रुगीधव्याधिअघवंना॥१२॥तुलाधा
कुबिजाव्रजगोपी॥यग्यनिकीसीमांज्ञि
निलोपी॥जज्ञवंतबिप्रनिकीबनिता
पुरुषनिकीकीन्हीअवमनिता॥१३॥
औरअनेककहांलोंकहिये॥कहत
हतकहूंअंतनलहिये॥तिनक बि
बिदनजांने॥सांष्यरुजोगन

॥१४॥ जपतपजज्ञब्रतादिनकीन्हे॥ औ
रौंधर्मनकोईचीन्हे॥ परिजोसाधसंग
निपाये॥ तोसबमेरेचरणनिआये॥१५॥
अरुतुंउद्धवयोंमतिज्ञांनै॥ तिनकोंसं
तिमेरीमांनै॥ उद्धवसंतरूमेंहैनांही॥ मै
हींहौंसंतनिउरमांही॥१६॥ किनहूंमि
लोंधारिकैतनकौं॥ मिलिकारिसाधौं
नकेमनकौं॥ ऐसीबिधिएकनिकौंतौ
॥एकनिसाधुरूपउधारौं॥१७॥साधुनि
कैमनकेमलहरौं॥ सोमनअपनेचरण
नियरौं॥ ऐसीबिधितिनकौंउधारौं॥ज

हंतारैं तहां मैं ही तारों ॥ १८ ॥ साधु संग सो मेरौं संग ॥ साधु संग है मेरो अंग ॥ तातें दोऊ साधु संग जांनों ॥ केतो दोऊ मेरे ई मांनों ॥ १९ ॥ जो पीगा द्वदह्वनग नागा ॥ औरे मूढ बुद्धि बडभागा ॥ ममसत संग डे मति बिंबांधौं ॥ भावनगति मो कों आराध्यौं ॥ २० ॥ और कछू साधन म हि जांनों ॥ अरु नहिं ब्रह्म रूप करि मांनों ॥ परि तिन कौ हित मो सों भयौ ॥ तातें सब मन कों मल गयो ॥ २१ ॥ अ मदहि बिनां तिन मो कौ पायो अति अपार भव दुख मि

॥जाकौंजोगसांष्यव्रतदांनां॥जज्ञवेदवि
धाबिधिनांनां॥२२॥करिसंन्यासबहु
दुषसहैं॥तेऊमोकौंकदेनलहैं॥ताकौं
निसुषहीमेपायौ॥जौकेवलमनमोसौंल
यौ॥२३॥रांमसहितमोहिपायौजबही
॥चलेअक्रूरमथुपुरीतबही॥नवते
धामेरेहेत॥पाइमूरछाभईअचेत॥२
॥बहुस्यौंसमुझिमहादुषपावै॥निसब
सुरममचरणनिध्यावैं॥मोहिछोडिस
बदुषसयहैहैं॥लोकवेदकुलकछूनले
वैं॥२५॥जोनिसिमोसंगपलसीबीतै

तेईतिनकौकलपवतीमैं ॥मेरेगुणनिसु
नैंअरुगावै ॥लीलारूपहृदमेंआवै॥२६
॥कबहूंबिरहमहादुषपावै ॥कबहूंत
पैंदसौंदिसिजोवै ।कबहूंप्राणतजनकी
नाबैं ॥ममदरसनआसातेराबैं॥२७॥
नीरसूषतिससकलगंवाई ॥औरदेह
गुणरह्यौनकाई ॥तिनकेदुषतेईपै
जांनैं ॥कैमैंतीजीकहाबषांनैं ॥२८
॥बिरहप्रचंडअनलअधिकारा ।
कोलौबिकारभयेजारिछारा ॥प्रेम
हसकलमलछाले ॥योंमौंबि

तरटाले॥२८॥ तवद्दउपजीपरमअनु
पा॥भूलीआपभईममरूपाज्यौंजोगेसुर
लहिध्यावे॥कैकरिब्रमआपाविसरावे॥
३०॥अरुज्यौंसरितासिंधुसमावे॥नांमरू
पगुराभेदगंवावे॥त्यौंवेभईरूपसबमेरो
॥कैतभावकबहूंहोनमेरो॥३१॥पापजो
निअबलातेसारी॥अरुस्रुतिकीमरजा
दाधारी॥निजपतिछोडिकोयोबिभचार
॥अरुजिनिमोकौंजान्यौंजार॥३२॥
ब्रमभावकबहूंनहिजांन्यौं॥नितपर
पुषमोहितिनिमांन्यौं॥परितोहूंभव

सिधु मिटायो ॥ सतनि सहस्त्रणि मम प
द पायो ॥ ३३ ॥ तातैं सुनि उद्धव बड भा
गा ॥ लोक बेद सब कौं करि त्यागा ॥ जो
है सुन्यौं सुनन कौं जोई ॥ प्रवृति न्रवृति
जो कछू होई ॥ ३४ ॥ सब तजि एक सर
ण मम आवौ ॥ द्वैत भाव मन तें बिसरावौ
॥ जहां तहां मम रूप हि देखौ ॥ आपा पर
कछु और न लेखौ ॥ ३५ ॥ ऐसें ह्वै करि
मोकौं पैहौ ॥ जातें जगत जनम फिरि नाहि ह्वै
हौ ॥ यौं हरि जी बांणी बिस्तरी ॥ तब उद्ध
व त्रास संका करी ॥ ३६ ॥ उद्धव

॥ प्रनुतुमत्यागबेदकोकह्यो॥सोमेरेउर
संसयरह्यो॥ तुम्हरीआज्ञाबेदकदावे॥
ताहिछोडिकैसेसुषपावै॥२७॥तुमही
श्रुतिमेंकरणेमाषे॥तुमहीइहांदूरिक
रिनाषे॥तातेंमनभरमतुहेमेरो॥थिर
कीजैआपनेजनकेरो॥२८॥किधौंरवैसाम
किधौंएदेवा॥ताकोमोहिबतावोभेवा॥
तबगोपालबचनउचारे॥ज्योंरविउदय
मधिआंधियारे॥२९॥श्रीभगवानउवा
च॥उद्धवअबसुनिउतिमज्ञांनां॥जाते
उरव्हैभ्रमनांनां॥ प्रथमहिआपनिरं ९

जनरका ॥ [illegible]
७० ॥ बहुरि [illegible] माया [illegible] को ॥
दबहुआ ॥ आधार ॥ [illegible] चोहे
यो ॥ श्रांग [illegible] साकि
॥ सो तास [illegible] लीयो ॥ ७१
आगार ॥ मणि [illegible] कौ
विशुद्ध मध्य मां धोमां ॥ ७२ [illegible] मां । चत्रु
ट वैखरी बांनी ॥ [illegible] लोक [illegible]
॥ स्वरलघु मात [illegible] जेते ॥ नो [illegible]
बिस्तारे तेते ॥ ७३ ॥ लोक मांहि [illegible]
तारे ॥ बेद मा [illegible] हैं सारे ।

तिनकौबहुबिधिबिस्तारा॥जाकोकोईल
हैनपारा॥४४॥जैसेंअनलकाष्टमध्यका
ढ्यो॥ईधनपवनसंगबहुबाढ्यो॥योंममबा
नीकौबिस्तारा॥जातैंप्रगट्योसकलबिका
रा॥४५॥यहबिस्तारसहुकोसारो॥जामेंचे
तनिरूपहमारो॥इंद्रियउपजीदशप्रकार
॥सुत्रकमनबुद्धिचितअहंकारा॥४६॥स
तरजतममायागुनजांनैं॥सबबिस्तारति
न्हेंकोमांनैं॥जोअद्वैतएकानिरधारा ति
न्हकीन्होंमायाबिस्तारा॥४७॥तिनमेंबहु
तभांतिआभास्यो॥उत्तममध्यमनीचवका

स्यो॥विधानि बेधनां तेव ... षद
षकै तिनके फलअय ... के
औसें॥एकबीजतें वह ... वते
वएकऔधारा॥ ... प
रा॥४९॥जैसें ... ता
तद्दूजौनाद्दिको ... श्री
॥द्वैफलफूलन ... को
ममचेतनऔ ... ह
रा॥सोचेतन ... आ
नौंसंसा॥५१ ... आ
तदौंसुनियों ... उपयुग बीजहैजो

॥ मूल अपार वास नंताके ॥ ५२ ॥ आदिद्वै
त्रियगुण त्रिसाषा ॥ तिनद्वापंचमूलपरसास
॥ उपसाषा मन अरु इंद्रियदस ॥ सद्दादिकस
रद्वै पंचौंरस ॥ ५३ ॥ कफ अरु बात पित्तत्रिय
बलकल ॥ सुष अरु दुषघगट ए द्वैफल ॥ तामै
द्वै पंषीकौ बासा ॥ परमात्म अरु आत्मपास
॥ ५४ ॥ जे मुरिषइ द्रभेद न जांनैं ॥ ते बहु भांति
वेदविधि गांनैं तिन ते द्वै वै बहु बिधि बंध्य
॥ जुगजुग दुष पावै ते अंधा ॥ ५५ ॥ जे इह द्रदे
ह द्रढ़ करि जांनैं ॥ आपु दिपंच्छीन्यारो मानै
॥ वेद सु मृतसब माया देषै ॥ सकल अतीत

आपुकों लेषे॥५६॥तबइ दाबिधितिषेध
छिटकावें॥सुषअरुडुष कोनिकाटिनआ
॥सकलमांहिआपुकों मांनें॥भेददृदृहा
मायाजो नैंम ५७॥चेतनिसकतिब्रह्म
लेषे॥और सकलमायाकरिदेषे॥यरिइ
सकलभेद तबपावे॥जबसतगुरकीसर
हिआवे॥५८॥सतगुरबिनांनपावेको
॥ब्रह्मादिकभावेसोहोई॥तातेंगुर की
रणहिआवे॥दृढउपासनांभक्तिबढा
॥५९॥गुरसेवाकोईसोपभाव॥जातेउं
जेमेरैभाव॥गुरसेवातैपावैभक्ति॥

रसेवातेंसकलबिरक्ति॥६०॥गुरसेवातेंज्ञांन
हैलहै॥गुरसेवातेंकर्मदिरदैंगुरसेवातेंप्र
भप्रकासा॥गुरसेवाममचरणनिवासा॥६१
॥मोहिमिलनकोइहैउपाई॥गुरसेवाबिन
औरनकोई॥तातेंगुरकीसरणहिंआवै
॥तनमनधनसौंहितलगावै॥६२॥तातेंउ
पजैज्ञानकुठार॥सबपासनिकौकाटनहा
रा॥त्रिगुणलिंगसरीरउपाधि॥जोआत्म
कौंलागीब्याधि॥६३॥ज्ञानकुठारसकल
तेंहरै॥याबिधिआत्मनिरमकरै॥पीछेज्ञा
नाध्यांनसबत्यागै॥निसादिनएकब्रह्मअ

नुरागो॥६४॥तबसोब्रह्मह्रिआंह्रिसमावै
बहुरयोजगतजन्मनाहिंआवै॥तातेंतुम
सबसाधनत्यागो॥निसदिनुइकब्रह्मअ
नुरागो॥६५॥दोहा॥यहउद्धवतोसोंकहो
॥भवमोचनममज्ञान॥अबबहुस्योंसाध
नसहित॥जावोधरमनिधांन॥६६॥इति
श्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्री
भगवउद्धवसंवादेभाषायांद्वादशमोध्या
यः॥१२॥चौपई॥६ ७०॥श्रीभगवानउ
वाच॥सुनिउद्धवअबपरमगिआंना॥जा
पावैपरमनिधांना॥जातेंज्ञानहोइ

॥ या बिधि तुव अज्ञानहि दहौं ॥ १ ॥ साति
क राजस तामस जे है ॥ उद्धव ते गुण माया
के हैं ॥ सुष दुष सब तिनहि के जानौं ॥ तिन
ते परै आतमा मानौं ॥ २ ॥ ता तें नर सातिक
कौं गहै ॥ सातिक रि रज तम कौं दहै ॥ पी
छै त्रसमाहि थिर होई ॥ सातिक उतव
त्यागै सोई ॥ ३ ॥ औ साबिधि तातौं गुण दहै
॥ तब है ब्रह्म ब्रह्म मैं रहै ॥ ज्यौं ज्यौं होइ स
त्व अधिकार ॥ त्यौं त्यौं प्रेम भक्ति बिस्तार
॥ ४ ॥ सकल बस्तु सातिक जब भजै ॥ त
बही सातिगुण ऊपजै ॥ सातिक ज्यौं ज्यौं

त्यौं त्यौं गुणि त्यौं द्वी त्यौं अन्य ग्रहि रहै
५॥ तब रजतम दोऊ मिटि जांहीं ॥ तातें
तिनके गुण नहिं आंवैं ॥ हरष रु सोक मां
न अपमांनां ॥ निद्रा आलस गर्व गुमांनां
॥ ६॥ राग दोष आदिक हैं जेते ॥ द्वंद सकल
रजतम के तेते ॥ तातें जब रजतम जांहीं
॥ तब तिन के गुण उपजैं नांही ॥ ७ ॥ तातें
सातिक संगति करै ॥ रजतम की संगति
परिहरै ॥ मूल सकल कौ संगति ॥
॥ संगति बोरै संगति तारण ॥ ८ ॥ दे सत
काल पुत्र जल पांन ॥ ग्रंथ रु

ध्यांन॥ गर्भाधानआदिसंस्कार॥ मंत्र
जापदसप्रकार॥ ९॥ दसंज्ञाकोंहोवै
जैसे॥ गुणविस्तारैताकोंतैसेसातिकतें
सातिकउपजांवै॥ राजसतैराजसअधिक
वै॥ १०॥ तामसतैंतांमसविस्तरै॥ जैसेदस
तैसांकरे॥ जादीजामेजोगुणहोई॥ सो
सोउत्तमजांनैसोई॥ ११॥ परिजोउत्तमसा
धुबखांनैं॥ सोवहसातिकउत्तमजांनैं॥
जोअतिनिंद्यतमोगुणसोहै॥ सोराजसक
छुमध्यमजोहै॥ १२॥ तातैंदससातिकसे
वै॥ राजसतांमसनांमनलेवै॥ राजसतां

म सजो हि तहोई॥ तौहूं सब छिटकावै सो
ई॥१३॥ सातिक संगति उपजै सत्व। त्यौं
त्यौं लहै भक्ति कौ तत्व॥ जौ लगि हृदै उपजै
विज्ञांन॥ ऐसै सकल एक भगवांन॥१४॥ अ
रु ज्यौं देहनि प्रेम जांनैं॥ सब विस्तार सु
सम मांनैं॥ तब इहै व्रत मांहि थिर होवै
॥ सातिक हू की औरन जोवै॥१५॥ ज्यौं वं
सनि तैं उपजै अनल॥ अरु होवै मारुत तैं
प्रबल॥ सब बासनि कौं दाहै सोई॥ आपु
हि बहुरि उपसंमित होई॥१६॥ त्यौं साध
न यातन तैं होवै॥ कृपचंद्र...

है ॥ बहुस्यौं आपु उपसमित होई ॥ साधन
लेस रहै नहि कोई ॥१७॥ गुणातीत सो कहि
ये जोगी ॥ तानूं कालव्रस लर सजोगी ॥ मो हि मि
ल्यो मो माहि समावै ॥ सो बहुस्यौं भव मै नहि
आवै ॥१८॥ तातैं सब साधन छिटकावो ए
क निरंजन मो कौं ध्यावो ॥ तब हरि की सुनि
अदभुत बांनी ॥ जन उद्धव इह सब षां
नी ॥१९॥ उद्धव उवाच ॥ हे प्रभु रुद्रात्रै
सो कहिए ॥ ज्ञानादिक तजे सुष लहिए ॥ प
रिजे विषय सुषनि कौं चाहै ॥ तातैं बहु आ १
रंभ संबाहै ॥२०॥ ते बापुरे सदा दुष रहै

कबहुंम्लिनमुषकौंलहै॥परिलतौवि
षयुनिदुषजांनै॥ज्ञानिबूझिकछुउद्यम
गांनै॥२१॥ज्यौंबूकरामारनकौंलीयौ
लैछेरिनुमैगाढौकियौ॥वहनिरलज
कछुनाहिजांनै॥तिनसौंमिलिविषया
दिकगांनै॥अरुजैसैगर्दभअरुकूता
तिरस्कारतैंसहैबहूता॥सुषकैहेतस
बनिआधीनां॥सदारहैंदुर्बलअतिदीं
नां॥२२॥वैतौमूढकछुनाहिजांनै॥तामैं
विषयनिउद्यमठांनैं॥एतौनरज्ञांनैंस
बज्ञाता॥देषैजगतचल्यौसबजाता॥

॥ प्रथमै तौ सुष आवै नांही ॥ औ आवै
तौ थिर न रहां ही ॥ अरु औ दिना चारि नाहि
जांवै ॥ कालहु तै तौ षान न पावै ॥ २४ ॥
काल निरंतर ग्रसतैं जावै ॥ एक दिना ज
म द्वार पठावै ॥ तहां नरक है बहुत प्रका
र ॥ जिन के दुष कौ अंत न पार ॥ २५ ॥
आगै चौरासी मधि भारे ॥ विषियन कौ
बहु दुषा विस्तारे ॥ या भव जल के दुष अपा
र ॥ कहौं कहां लौं वार न पार ॥ २६ ॥ ऐ
सी सब विधि मानव जांनैं ॥ ताहू कौं आ
रंभ निवांनैं ॥ आपु आपु कौं दुष उपजां

व॥आपुआपुजंमद्वारपगावे॥२७॥
इहसकलकृपाकरिकहेो॥मेरेउरको
संसादहो॥योंकहिकैउद्धवजबरहे॥
तवहरिजीप्रस्फुत्तरकहे॥२८॥श्रीभगवा
नउवाच॥उद्धवयहआतमअविनासी॥
सोजबहींयातबमैआवै॥तबस्वाधीनह
बेसुखपावै॥२९॥वहस्योंतिनहितउद्यम
है॥नहिपावैतोदुखकोलहै॥याबिधिसु
खदुखजेबहीजांनें॥तबहीदेहआपकरि
मांनें॥३०॥ऐसेंबटेदेहअहंकारा॥तबही
राजसकोअधिकारा॥राजससहितजब

मनहोई॥ तबएईसुषजांनैसोई॥ ३१
तबसंकल्पबिकल्पनिकरै॥ निसादिनहृ
दैबिषैसुषधरै॥ तबजासुषाहिसुनैअरुदे
षे॥ तबबसकै निजसुषकरिलेषे॥ ३२॥ त
बहृदैमैंबाढैकांम॥ ज्ञानबिचारनराषैनांम
॥ तांतें बहुराजसअधिकारा॥ राजसतेम
नगहैबिकारा॥ ३३॥ तबराजसकौबेगप्र
चंडा॥ ज्ञांनहिमारिकरैसतषंडा॥ तातैं
ज्ञांनसुनैअरुजांनैं॥ अरुऔरनसौंआ
पुबषांनैं॥ ३४॥ परिसोकांमनहीबहुरा १
वै॥ लैकरिपकरिकर्मकरवावै॥ परिज

यापियानरकीबुद्धि॥रजतमरैनहिया
वैसुद्धि॥२५॥तौहूनिसदिनदोषबिचारै
॥उरतैंकलकामनांटारै॥सावधांनआल
सनहिकरै॥क्रमक्रमममचरणनिचित
धरै॥२६॥आसनजीतिकरैवसिप्रांन॥नि
सदिनउररापैममध्यान॥अरुममासिष
चारिसनकादि सकलतत्वज्ञाननुकीआ
दि॥२७॥तिनिविचारिकरिजोगादिभा
ष्यो॥सोतौइहऔरसबनाष्यो॥ज्यौंहि
ज्यौंमनदूजौतजे॥अरुज्यौंज्यौंममचरच
रणनिभजे॥२८॥याहीतेसवमिटै व

रा॥ याहीतैंच्छूटैससारा॥ याहीतैमनचरनि
पावै॥ वहुरयौंजगतजनमनहीआवै॥३९
॥तातेपरमजोगइहराष्यौ॥जातैमेरेसिष्य
भाष्यौ॥जवइहवांनीबोलैकृष्नतवउद्धवै
जनकीन्हीप्रश्न॥४०॥उद्धवउवाच॥हेप्र
भुजौनसमैंजारूप॥तुमभाष्योइहज्ञान
सरूप॥सनकादिकनिकौंनविधिलह्यौ
कंपूछ्यौकैसैतुमकह्यौ॥४१॥ज्ञांनसहि
तसबमोकौंकहौं॥मेरेउरकोसंसारहौ
॥जवइहउद्धवकीन्हीप्रश्न॥तबबोलेक
रुंनामयकृष्न॥४२॥श्रीकृष्नउवाच॥ब्रह्म

पुत्रसनकादिकचारी॥मननेंउपजेब्रह्म
विचारी॥जनमाहितेजिनिगहीनिवृत्ति॥
मनबचक्रमसोंतजीप्रवृत्ति॥४३॥ब्रह्म
करीतिनिब्रह्माआगें॥इसोभेदज्योंसोक
तजागें॥अतिसुक्ष्मजांनीनहींपरे॥उत्तर
कोदोकोंनउच्चरै॥४४॥सनकादिउवा
च॥प्रभुब्रह्ममयदेवा॥याकोहमेंबतावो
भेवा॥विषयबासननिचित्तहिगह्यो॥
चितुप्रीतिकरिकैंमिलिरह्यो॥४५॥दो
उमिलआपुमेंऐसे॥नीर
रजैसे॥मिंनुम

कैसिसैं नहीं हिरदोई॥ ४६॥ इहवां
ब्रह्मांडरथानी॥ उनरदेनकोंबुद्धताबिच
रे॥ पाँहतौ है उन रजनदीआया॥ जातेकं
गोसौपनलाऐ॥ ४७॥ नवब्रह्माइहबुद्धि
बिचारी॥ आहिनकौं इनाहि मुरारी॥ ताते
कैसौं हिनवनमैं॥ हंसरूपमैं प्रगटो
नैं हैं॥ ४८॥ हंसरूपनातेप्रगटाये॥ जाते
दैहिआसयनयसुनाये॥ वैजोहंसहतिकौं
गैहै॥ सोईयाकेनेदहिनदै॥ ४९॥ तबति
निनहि हरषिसुपवाये॥ ब्रह्मासीलिउरि
मयं नातो॥ कारिबीनतीतव

ने ॥ हे प्रभु तुमको हंम न हि जांनें ॥ ५०॥ त
ब तिनि सों मैं जो कछु कह्यो ॥ तिन के उर को
संसा दह्यो ॥ तेई बचनन कहौं अब तो सों ॥
सावधांन ह्वै सुनियो मो सों ॥ ५१॥ तुम को
होयो पूछ्यो जब हीं ॥ ज्ञांन कह्यो उतर मैं त
बहीं ॥ ५२॥ हंसरुवाच ॥ विप्र हू प्रश्न करी
तुम जैसी ॥ करनें नहीं संभवै तैसी ॥ वस्तु वि
चार द्वैत नहीं कोई ॥ तो या कौ उत्तर क्यों
होई ॥ ५३॥ अरु जो देह रूप ऊ कहिये
॥ तो हू कछु द्वैत नं हि लहिए ॥ पंचभूत ता
मि तत न सारे ॥ जे क

॥५४॥ तातें सकल एक है नांही दूजो कोंन बिचारै मांही ॥ पुरुष दृष्टि देषें तें एक प्रकृति दृष्टि है नहीं अनेक ॥५५॥ तातें अ-
म्म करातु मत्रै सी ॥ बहुतनि मांहि करा जैसी ॥ अरु जो दीसै तत बिचारा ॥ तौ नहि प्र
कृति पुरुष बिस्तारा ॥५६॥ जो कछु दीसै सु
नियै कहिए ॥ मन अरु बुद्धि जहां लौं लहिए ॥ सो सब भेद ही दूजौ नांही ॥ ऐसो ज्ञा
न धरौ उर मांही ॥५७॥ नांम रूप तें सकल बिकार आदि अंति मधि मांटी सार ॥ त्यौं ही आदि अंति मधि मांही ॥ भेद ही ए

कद्वैतकछु नांही॥५८॥ द्वैतदृष्टिसाउ
कोकारण॥ब्रह्मदृष्टिनिजसुषबिस्तार
॥लेगंतरंगनिसोंदुषलहै॥तवसुषज
लतजिजलगहै॥५९॥सोंही द्वैतदृष्टि
ष॥एकदृष्टिसोईनिजसुष॥अरु
मधस्मविरंचिदिं करी॥सोमेंहहैआ
नेंघरी॥६०॥विषियनिमांहिचित्तभि
रह्यो॥अरुविषयनिचित्ताहिदृढग
पुत्रदृढह्योंहीसत्य॥परितेआत्म
हिअसत्य॥६१॥विषयचित्तएदोऊ
॥आत्मब्रह्मनिरंजनराया॥विषय

सोंजब चित्त लगावै ॥ तब हि चिंताति नतैं सुष पावे ॥ ६२ ॥ तब बिषयनि के ध्यान दि करे ॥ तिन के हेत कर्म बिस्तरै ॥ तातें स्व र्म कौ मिलि रहै ॥ ऐसे जनम मरन् ॥ ६३ ॥ ता तैं आतम मेरे ऐसा ॥ मेरी सरणि गहे ताि संसा ॥ बाहिर हुतें बिषय परिहरै ॥ अरु चित्त सों चितवन नव करै ॥ ६४ ॥ बिषय चित्त अयाकार जो नैं ॥ तिन तैं परैं आपु कौं मानैं ॥ ब्रह्म सरूप एक अबिनासी ॥ ज्ञान स्रूप चेतनि सुषरासी ॥ ६५ ॥ मन अरु बुद्धि चित्त अहंकारा ॥ इंद्रिय बिषय

दहविस्तारा॥ येअमरूपसकलहै माया
॥मूलिआत्माआपबंधाया॥६६॥जोसेजा
तिसकलछिटकावै॥आपुहिमोहियूक
करिआवै॥जाग्रतसुपनसुषुप्तिबषानौं
तेआवरणबुद्धिकेजानौं॥६७॥तिनतैं
परैआत्मारूपासदाएकरसपरमअनूपा
॥सातिकहुतैंजागनोहोई॥राजससुपन
कहैसबकोई॥६८॥सुषुपतितामसगुण
तेआवै॥मनअरुबुद्धितिहूंकोंपावै॥
एकरूपआत्मातिहूंमांही॥साषीभूतलिप
कहुनांही॥६९॥तौतेंतिहूंगुणनितेंन्या

रो ॥ निजानंदमयरूपहमारो ॥ तामैंवि
र कैंकरैबिचारा ॥ सहजहि छूटै त्रिगुण
पसारा ॥ ७० ॥ देहविषै बांध्यो अभिमानं
॥ तातैंभेदउग्यो इह नांनां ॥ तातैंनिजा
नंद बिसरायो ॥ कालअसंष्यमदादुषप
यो ॥ ७१ ॥ ऐसैजांनितजैअभिमानां ॥ क
दैनकरैसुषनिकोध्यांनां ॥ तिहंगुणनि
तेंकरैबिरक्ति ॥ चौथैपदबांधैआसक्ति
॥ ७२ ॥ तबसहजैमोमाहिसमावै ॥ ब
हुरयोंदेहकबैनाहिपावै ॥ अरुसकल
ग्रंथनिबिस्तरै ॥ बेदधर्मनांनांबिधि

करे॥७३॥प्रवृतिमां दिवद्रुतविधिजागे॥परि
जौजा निद्धेत न दित्यागे॥सोनितसोव्रतजाग
तजांनें॥ताकोभेदृष्टांतवषांनो ॥७४॥जे
सेसयनकरेनरकोई॥सोव्रतसुफलहैपुनि
सोई॥वदुतकजांतिकरैविव्रहारा॥लेनदे
नजलपांनअहारा॥७५॥वदुस्योंरतिमएते
सोवैं॥दिवसिमयेस्योंहीउठिजोवे॥ऐसीवि
धिकैऊदिनवीतैं॥जागतसोव्रतसकलव्य
दीते॥७६॥वदुस्योंवदेऐसीमनआने॥
रातिदुदिनकी निद्राजांने॥कदेनसोवेजा

गतरहै॥ सावधांन आलस नहि गहै॥ ७७॥ औ
से काज आपनो करै॥ चौरादिक धनकौं नहि
हरै॥ परि जब दाजागि करि देषै॥ तब वह
सकल वृथा करि लेषै॥ ७८॥ सो वृत जागन्त स
व बिवहारा॥ जाकै हित जागैं सो सारा॥ आ
पुहि सब मिथ्या करि जांनै॥ कबहूं मलिस
त्य नहि मांनैं॥ ७९॥ यौं हो बेद धर्म आचरण
॥ आरू ते सु पाजिन कै हित करणं॥ ते सब स
रूप बिवहारा॥ पंडित छोडै सकल पसार
८०॥ भ्रमते यस्यौ देह अभिमांनो॥ तालेवर

णाश्रमनांनां॥तातें करुं बहुतविधिक
र्मी॥सुषनिमतिविस्तारे धूर्मी॥८१॥श्रो
पारिसकलवृथाकरिजांनों॥सुन्नजा
रणासमकरिमानों॥जोदृढादिकसक
लपसारा॥चेतनिकरि भी बरना वनिहा
रा॥८२॥सुषदुषभोगकरैं अरुजांने॥
आपुहिसुषीदुषीकरिमांने॥बहुत्यों
जबहिसुन्नकोंपावै॥बहुबिहारनिसों
मनलावै॥८३॥तबहुंजांनेसकलपसा
रा॥आपापरसुषदुषबिहारा॥ब
रा॥आपापरसुषदुषबिहारा॥मन
रिसुषतिमांहिसबजांई॥मन

तऋदंकारनकाई॥८४॥ तबऋांत्मा
निरंतररहै॥जामेंसकलबातजोकरै
॥लियौदियौऋरुआयौगयौ॥जहांलगैं
हैंऋनुभयौ॥८५॥सोऋात्माएकरसरहै
॥तिहूंकालकीबातनिकहै॥यौऋबिना
सीऋात्मएक॥दूजेमायाभेदऋनेक॥८६
॥तीनिऋवस्थातेहैमनके॥मनमैंऋाना
सेहैंतनके॥तानितिनकेतीन्यूंगुणजेहैं
तीन्यूंगुणमायाकेतेहैं॥८७॥ऐसीबिधि
निस्वपसौंजानैं॥निसादिनहृदैबिचा
रदिवांनैं॥सकलउपाध्यनकोऋाधा

रा ज्ञानघ्रुनकोरे अरु का ॥८८॥ है मैं
मांहिमैंताकोंमैं ॥८८॥ बखानंकेऊगत
कोहूद सारोजगग्रह का ॥ जा ॥ को
हेतमिथ्याकरिमांहैं ॥८९॥ और ज्ञानको
उपजतहैवे और दिन नहीं कानको
बेसोईरातिसकलकोंताते कहतमा
नहहैमैमांहैं ॥९०॥ गहि यों जाक
रीहोई बालकी कहि कोई ज्ञारमां
तिहैंदासेअौर (छिपगो) जबतज ज्यो
र ॥९१॥ ज्योंकद (छि) नहि
तिज्ञातिवंचलस कम ज्ञानि हैं ॥ एक

मैं सकल आभास्यौ॥ न गुण पाइ बहु भेद
प्रकास्यौ॥ ए २॥ सुन्नरूप गुण मैं जो जोग
यौ बहु भांति बिचारै जोगी॥ तातें जग तें ह
छुटतारै॥ साचु जानि हृदै नहि धारै॥ ए ३
तम्माच्छो उ निहचल रहै॥ मन बच क्रम व
छुकर मन गहै॥ ई द्वारह तत्व सम रस भोग
॥ निजानंद मय होवै जोगी॥ ए ४॥ ऐसे व
थाज्ञाति सब त्यागैं॥ निश्चल हृदै ब्रह्म अ
रागै॥ सो जोरहै देह हूं माहीं॥ तौहूं फिर
श्रम उपजै नाहीं॥ ए ५॥ जो इह देह जाइ
कहूं आवै॥ वैवै उठै पीवै अरु पावै॥ औ

सें कछु करै विरदास ॥ परिसो सिधन
जांनैंसारि॥९६॥ निश्चल रहै निरंजन
ही देहादिक कछु जानै नाही ॥ जो को
तन वस्त्र निधरै ॥ वहु स्यौं सुरायांन
दु करै॥९७॥ सो ति निवस्त्र निजांनैं नो
॥ प्रथम वंधे तातें नहि जांहि कर्म रहै
तनके जोलों ॥ सहित इंद्रियनि वरते
तोलों ॥९८॥ कर्म ता के तन कों पोषै॥
नपांन सों नित संतोषै ॥ जोगी ब्रह्म मां
स्थिर रहै॥ देहादिक की सुधि नल है॥
९९॥ जैसे सुपनें दिषि कारिजागें ॥ता

नांसों नहि अनुरागै ॥ तैसे मोह निसातें
जाग्यो ॥ कहूं न लियै ब्रह्म अनुराग्यो ॥ १००
॥ देह थकां उसाहि मिलि रह्यो ॥ सब को
सकल बीजाति निदह्यो ॥ सो बहु स्यौं मन
में नहि आवे ॥ ब्रह्म मिल्यो सोउ ह्यसमावै
॥ १०१ ॥ तातें देह आदि विस्तार ॥ भ्रम क
रित ऊौ त्रिगुणमय सारा ॥ त्रिगुण अती
त ब्रह्म कौं सेवो ॥ विषयन कौं कछु ना
वन लेवो ॥ १०२ ॥ विषय चित्त दोऊ भ्रम
जांनो ॥ ब्रह्म मांहि राहि दूनों मांनो ॥ संक
ल अवीत आपकौं देषो ॥ सब घट एक है

तनदिलेखो॥१०३॥ब्रह्मरूआपएकक
रिमांनों॥द्वैतभावकबहूंजिनिआनों
निसदिनब्रह्मबिचारहिकरै॥यारिब
लमेरोउरमैंधरै॥१०४॥ममआधीन
निरंतररहौ॥याबिधिजगतबीजसब
दहौ॥जातैबहुरिनभवमैंआवौ॥ब्रह्म
रूपह्वैब्रह्मसमावौ॥१०५॥इहिमैंतुमसौं
कह्योबिचार॥सांख्यरुजोगसकलकौ
सार॥मेरोगुह्यमतौअतिजांनों॥बहु
तभांतिहृदैमैंआंनों॥१०६॥तुम्हरौहि
तमनमांहिबिचार्‍यौ॥मैंहौंबिस्मैहं

सतनधास्यौ॥ मैं ब्रह्म सकलकौ ईस
बिनऔरै सकल अनीस॥१०७॥ सो
सत्यतेजतपजोग॥ जियसमदमश्रा
रतभोग॥ और ऐ बस्तु जहां लौं सार॥ ते
स्तमेरे आधार॥१०८॥ तातें जो मम
गाहिआवै॥ उत्तमबस्तु सकलसो पा
मो बिनु बहु साधन जग है॥ तौ हूं क
न सुष कौं लहै॥१०९॥ मैं न गुण परि
बगुणा सवैं॥ मैं न पहल सकल चितदे
॥ कछून चहौं करौं उपकारा॥ सबकौ
तसब कौ आधारा॥११०॥ सबउपजा

ऊंसब प्रतिपालों ॥सब पोषों सब सं
कट टालों ॥तातें मो हि तजें कृष्णागै
॥तब ही सुखी सरणि जब आवै ॥१११
॥सरणागत कौ दे निज भागें ॥ आप मि
लाऊं भव भव टारें ॥तातें सब तजि
मो कौं भजो ॥पावो मोहि जगत मव
तजो ॥११२॥उद्धव रूद्ह में ज्ञान सुना
यो ॥सनकादिकन परम सुख पायो
॥हृदै रह्यो संदेह नु काई ॥मोहि मिलन की
विधि सब पाई ॥११३॥ बहुत भांति
म पूजा करी ॥बहुत भांति अस्तुति

स्तर॥मेरोमजनहदैमेधास्यो॥औ
रसकलततकालनिद्गास्यो॥११४॥
आपुकृतार्थकारितानिमान्यो॥द्वैत
भावताजिब्रह्मपिछान्यौं॥तबातिनके
अस्तुतिकरतेही॥ब्रह्माकेदषतआ
गेही॥११५॥सबहीकौंआनंदबधायौ
॥तबमैंअपनैंधामसिधायो॥तातैंउ
द्धवइहतुमजांनौं॥अपनेपरमभाग
करिमांनौ॥११६॥सनकादिकनिसम
तुमाकिये॥तेईबचनतुम्हैमैदिये॥ता
तैंइहज्ञांनतुमधारौ॥ब्रह्मज्ञांनिसब

द्वैतनिवारै ॥११७॥भ्रमआधीनसदा
ईरहो दूजीसकलकामनांदहो ॥औसै
कैनि[illegible]जपदकौंपैहो ॥जातैंजगतब
हुरिनहिंऐहो ॥११८॥दोहा॥इहउद्ध
वतोसोंकह्यौ ॥परमज्ञांननिजसार॥या
कोंगहिनिजपदलहै ॥छुटैसबसंसार
॥११९॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणे
एकादशस्कंधेश्रीभगवदउद्धवसंवादेहं
सगीतायांभाषायांत्रयोदसोध्याय:॥चौ
पई॥९८९॥औसोसुनिहरिजीकोज्ञा
न॥भक्तिउधारकभ्रमसवज्ञांन॥

उद्धरहटकारिउरधरी॥पारिकठूप्रस्मक
स्मसैंकरी॥१॥उद्धवउवाच॥परमदया
लदयानिधिदेवा॥मोकौंबडौबतायौभेवा
॥भक्तिहुतैंपईये॥तुवचरणां॥छूटैजग
तजनमजरामरणां॥२॥परिजवरक
प्रस्मकौंकहैं मेरेयासंदेहदहौ॥ऊ
बहुविधिस्रुतिसुमतिजांनें॥तैतौबहु
साधननिवषांनें॥३॥मुक्तिहेतबहुं
यानिकहै॥अरुतेऊबहुतौमानिगहें
॥तातैतेऊपंथअसेषा.भक्तिसमांकौक
छूविसेषा॥४॥जाजापंथत्रम्हेप्रभुपे

ए॥ वहुस्यो भव सागर नहि औरए॥ सोसो
पंथ कृपा करि कहौ॥ मेरी सकल मूढ ता
दहौ॥ ५॥ तुम बिन इह दूजो नहि कहै॥
ज्ञान लहै सो तुम तें लहै॥ उद्धव औसी
पूछी बांनी॥ तब उत्तर की हरि वषांनी
॥ ६॥ श्री भगवान उवाच॥ उद्धव कल्प स
मय जव भयो॥ तव इह तत्व लीन ह्वै गयो
॥ पुनि मैं सृष्टि समै इह ज्ञांना॥ ब्रह्मा
सौं श्रुति तत्व वषांनां॥ ७॥ सोई श्रुति पुनि
ब्रह्मा पढायो॥ भृग्वादिक स्वायंभू पा
॥ सात महारिषि भृगु मुनि आदि

रूस्वायंम्भूमनुमन्वादि ॥८॥ तिनितें अष्ट
निर्लेद्र दविस्तारा ॥ नानाविधिकेभेद
बिचारा ॥ सुरनरअसुरासिधगंधर्व ॥
विद्याधरजक्षादिकसर्व ॥९॥ सप्तदीप
नरबहुपरकारा ॥ किंनरकिंपुरिषा
दिअपारा ॥ सतरजतमातिनकीउत
पति ॥ तातैंबहुबिधिभईप्रक्रति ॥१०॥
॥ तिनतैंभयेबहुताबिधिभेद ॥ तिनतैं
सेईजांनेबेद ॥ बेदतत्वसोकनहूंरच्यो
॥ आपस्वभावसमातिनिकह्यो ॥११॥
॥ ज्यौंज्यौंतिनकेभएस्वभाव ॥ त्यौंत्यौं

जानैंस्रुतिकौभाव ॥ सोंहीसोंआचर
णनिकरैं ॥ सोंसोंआपुसुमृतिबिस्त
॥१२॥परंपराजोतिनतेहोवें ॥ तेतिनके
कृतसुमृतिजोहैं ॥ तिनतैंआपुकरैंग्र
ग्रंथ ॥ नांनांभांतिचलावैपंथ ॥ १३॥
ऐसाबिधिउपजेयापंडा ॥ ज्ञानरूप
होदिसतषंडा ॥ भ्रमभ्रममायाकारिमोहित
होवै ॥ तातैंतत्वपंथनहिंजोहैं ॥ १४॥ आ
पनीआपनीरुचिअनुमांनां ॥ करैंक
रूभाखेज्ञांनां ॥ नांनांबिधिसाधन
सुनावैं ॥ तिनतिनतैंकल्याणबतावैं ॥

१५॥एकै बहु बिधि धर्म निभाषे॥तिनतैं
भुक्तिमुक्तिकौं आषे॥एकै कहै जस स
बिस्तरिए॥जाते सकल दुषनितें तरिए
॥१६॥जाकौ जस है जग मे जौलौं॥सो
रहै सुरग मे तौलौं॥एक दुहाई का
बषांनै॥आगै सुरगन मैं
१७॥जात हाकरै
ईछोडि तन
लहैन नो
॥१८॥औ
राईकी

मअरुसन्यु॥दूजीसाधनसकलअस
॥१९॥जोगग्रंथबहुभाषिवषांनें॥ति
नतेमूढमुकतिकौंजांनें॥सांमरुदाम
दंडअरुभेद॥इनकौंगहैएकपटिवे
॥२०॥न्यायसहितसबउद्यमकरैं॥उ
मधर्मजांनिउरधरैं॥दांनभोगउत्तम
कारिभाषैं॥इहैमुक्तिसाधनकारिराषैं॥
२१॥एकैंजज्ञदांनतपगहैं॥एकैंजम
यमानिसंग्रहैं॥एकैंतीरथव्रतमन
॥कहौंकहालौंबहुबिधिकरैं॥२२॥
नतैंसुरगादिकसुषपावैं॥ग्रीनर

हां किरि आवैं ॥ बहु स्यौं ना चलो नि बहुल
है ॥ नरकनि मैं केई जुग रहैं ॥ २३ ॥ अरु जब
रहैं स्वरग हूं मांही ॥ तब बहु कछू सुष पावैं
हौ ॥ काम क्रोध निंदा अपमांन ॥ राग दोष
छो अभिमांन ॥ २४ ॥ इत्यादिक निग्रसे नि
तर है तातैं कौं न भ्रांति सुषल है ॥ भक्ति बि
नां बिधि लोक हि जावै ॥ काल तहां ऊंडु
ढहा वै ॥ २५ ॥ तातैं उद्धव भ्रम है सारा ॥ सु
ष मम चरणनि कौ आधारा ॥ जिनि मेरे च
रनि चितधर स्यौ ॥ साधन साध्य सकल प
ह स्यौं ॥ २६ ॥ तिन कौं उद्धव जो सुष होई

॥सोसुषकहूंनपावैकोई॥सोसुषकह्योसु
न्योंनहिआवे॥सोईयेजानैंसोपावै॥२७
॥सोपावैजोमोसोंमांगैं॥औरसकलआ
सयकोत्यागैं॥ममआधीननिरंतररहै
दूजीसकलकामनांदहै॥२८॥सकलब
स्तकौंकीन्हौंत्याग॥अंतःकरणषरोवैरा
ग॥समदरसीनितसीतलचित्त॥ममचि
तवनहदेहदबित्त॥२९॥ताकौंदसोंदि
सासुषरूप॥सोसुषजोअतिपरमअनु
प॥जोजनमेरेसुषकौंजानें॥ताकोमनक
तहूंनहिमानें॥३०॥ताकेसबआधीनैरं

है।पारि सो मो बिन कछु न गहै॥ अलि लोक कौं कादेन लेवे॥ इंद्र लोक पल चित्त न देवै॥ २१॥ सब भूतल जेते न नहिं देषै॥ सप्त पाताल सुपति तृण लेषै॥ जो सिधि अणिमादिक दैं अष्ट॥ जो गोजि नहिं तस साधै कष्ट॥ २२॥ तिनहुं कौं कबहूं नहिं लेई॥ आपुहु तेनित सेवे तेई॥ मुक्ति निकट हार है सदाई॥ पारि मेरौ जन छुवै न काई॥ तौ मैं हौ एक सदा प्रिय ताकौ॥ मम चरणनि मन रातौ जाकौ॥ ता तैं मेरौ प्रिय सोई॥ ता बिन और न हौ प्रिय कोई॥

२४॥त्यौंमेरी सुताबिधिनहिं प्यारी ॥नहीं सं
करजोरूपहमारौ ॥नहिं प्रिय त्यौं संकर्ष
ण भाई॥श्रीअर्धंगी त्यौंनही सोई॥ २५॥यौं
नहीं प्रियमेरे म मदेह॥ जैसो तुमसों परम
सनेह॥तुमसौं भक्तमहा प्रियमेरे॥ ताकेर
हौं निरंतर नेरें॥ २६॥ इच्छारहित रूसीत
लहृदय॥ सबनिरबैर सबनिपरसरदय
॥ब्रह्मदृष्टि देषैसब मांही॥ ब्रह्मबिचारतजे
पलनांही॥२७॥ मैंताकौ प्रथमहियौ कस्यौ
॥त्रिगुणपासबंधनबिस्तस्यौ॥पहिताकै
ऐसो बलनाही॥ काटी माया सक्ति हमारी

॥३८॥ एतेपरसबऔगुणतज्यौ॥उलटि
आइममचरणनिमज्यौ॥अरुसबसुषता
केबसरहै॥सोताजिमोहिकछुनहिगहै
३९॥बहुतानिकेमवबंधनदहै॥नांवअग
टकरिमैरोकहै॥तिनतिनकौंममचरणनि
ल्यावै॥सदासबनितेआपुछिपावै॥४०॥
अहंकारममतानहीआंनै॥मोहिछोडि
दूजौनहिजांनै॥गुणअतीनताजनके
पाछै॥पहतनधरैंफिरैमेआछै॥४१॥सा
तिकगुणधारीयहदेह॥करौंमुद्धताचर

ग्यानिषेह ॥ निःकंचनतनहूंनहिरक्त ॥ मो
हासौंनितही अनुरक्त ॥ ४२ ॥ सीतलहृद
यबिकॅतअभिमांन ॥ कृपावंतसबएक
समांन ॥ केहूंकोंमचलैनहिबुधि ॥ मोहि
सइपाईअतिशुद्धि ॥ ४३ ॥ मुक्तिहूंतेनि
तनिस्पृहारहै ॥ तेजनमेरेसुषकोंलहै ॥
तासुषकौंसुषजांनैतेई ॥ औरसकलसं
मुझैंनहिकोई ॥ ४४ ॥ निस्पृहजननिस्पृ
हसुषपावै ॥ स्पृहावंतकेनिकटिनआवै
॥ बिषयनिकेबसमांनवहोई ॥ इंद्रियजी
तिसकैनहिकोई ॥ ४५ ॥ परिआधीन

होइ ममजबही॥ बिषयकछुनसकैकारित
बहीं॥बिषयसत्रुमैसकलनिवारौं॥आप
मिलौंऊंमवमयटारौं॥ ४६॥पावकत्रग
टकरौंलैत्रस्म॥होईप्रचंडवारैसबमस्म
॥त्यौंममभक्तिप्रगटजोहोइ॥जारैपापर
हैनहीकोई॥४७॥बहुरिपापकोनिकट
नआवै॥भक्तिप्रतापमोहिसोपावै॥सा
धैसिधजोगअष्टंगबहुबिधिजज्ञहोइजे
संग॥ ४८॥सांख्यबिचारसकलजोजांनै
॥बेदपढैदेवैसबदांनैं॥ तपहिकरैइंद्र
यमनबांधै॥

रसकलधरमनिकौंसांधैं॥४९॥
मोहिकृदेनहिपावै॥भक्तिमोहित
कालमिलावै॥एकभक्ति०
करै॥दूजेतेअतिअंतरपरै॥५०॥
सहितकेरैममभक्ति॥तासोंमेरी
आसक्ति॥हौंब्रह्मादिसबनिकौंईस
बिनऔरैसकलअनीस॥५१॥
भक्तनिकेआधीन॥तेमोसोंज्योंजल
सोंमीन॥जोचंडालभक्तिमैंआवै
होतनानिरमलतापावै॥५२॥
मबंदनकरै॥तापदरेरा

रै ॥ तौ न्यूं मरन दास सब संता कै ॥ मेरी भ
क्ति बिराजै जा कैं ॥ ५३ ॥ बिद्या पढै धर्म ब
हु करै ॥ जीव दया बहु बिधि बिस्तरै ॥
सत्यवंत अरु दृढ संतोष ॥ कबहुं कहुं
करै नहि रोष ॥ ५४ ॥ काय सहित पुर
ण तप साधै ॥ मंन इंद्रि देहादि क बांधै
॥ तीरथ व्रत आदि दे जेते ॥ सब आचर
ण करै सब तेते ॥ पर जो मेरी भक्ति न
होई ॥ तौ न सफल नाहि है कोई ॥ बिन
रोम अंग्र दृष्टि बिनु चेतु ॥ आनंद स्थूल
ला बिन नेतु ॥ ५६ ॥ तौ लौं साधु भक्ति

नहिं कहै॥ भक्ति बिनां उर सुधि न लहै॥ इवै प्रेम तेजा को चेत॥ कबहू रोवै मेरे हेत॥५७॥ कबहूं गद्गद बांणी होई॥ कबहूं ऊंचे गावै सोई॥ कबहूं मधुर मधुर सुर गावै॥ कबहूं प्रेम मगन रहि जावै॥५८॥ कबहुन स्य प्रेम बसि कै कबहूं हंसै गुण नहिं बिसरै॥ लोक बेद की लाज न जांनैं॥ ज्यों उनमत सकल यों गंनैं॥५९॥ जो औसो मेरो जन होई॥ त्रिभुवन सुद्ध करत है सोई॥ स के पाप निवारै॥ सकल भुव

नतारै॥ ६०॥ जैसे हेममलिनता होई॥ ब
हूजलमांहिधोइए सोई॥ औ रोजतनब
हुतविधिकीजे॥ हेमहि बहुतकसौटीदी
जे॥ ६१॥ परिकिहूंविधिसुधनहोई॥ कौ
टिजतनकरैंजोकोई॥ सोईहेमऋागिमे
दीजै॥ दैकारिफूकतब ऋातिकीजे॥ ६२
॥ तातैकोईमलनहिरहै॥ ऋपनेसुद्ध
रूपकौंगहै॥ त्योंहजतनकरेबहुकोई
॥ परिऋातमानानिर्मलहोई॥ ६३॥ मेरी
भक्तिमांहिजबऋावै॥ तबसबकर्मम
लिनाछिटकावै॥ नमलहोइलहैनिज

रूप॥पावै मोहि तजै भवकूंप॥६४॥ज्यों
ज्यों मेरी भक्ति हि करै॥मेरे गुणनि हृदै मे
धरै॥श्रवण कीरतन सुमिरन ठांनै॥ज्यों
ज्यों और नाम नां भांनै॥६५॥त्यों त्यों हृदै
प्रकासै ज्ञान॥देषै ब्रह्म मिटै सब आन॥
कैतभाव क्ति हृदनं हिरहै॥निर्भय निज
नंदपद लहै॥६६॥नैननि माहि रोग ज्यों
होई॥तातें कछु न देषै सोई॥पुनि ज्यों ज्यों
औषध हि लगावै॥त्यों त्यों दृष्टि होत नित
आवै॥६७॥त्यों त्यों सकल वस्तु कों देषै॥
आपुहि परम सुषी करि लेषै॥तातें

रूपदृष्टअंजन ॥ जातैं देषै देव निरंजन ॥ ६७ जो संसार सुषनिकौं ध्यावै ॥ सो संसार मांहि बहि जावै ॥ अरु जो ध्यावै मेरे चर्ण ॥ पावै मोहि मिटै भव मर्ण ॥ ६८ ॥ तातें सब साधन भ्रम जानौं ॥ स्वप्न समान द्वैत सब मानौं ॥ मन क्रम बचन सकल कौं त्यागौ ॥ निसदिन मम चरणनि अनुरागौ ॥ ७० ॥ जो यानवहि चहै छुटकायो ॥ अरु चाहै मम चरणनि आयो ॥ तौ तिनकी संगति परिहरैं ॥ ७१ जुवतीसुषनि सुनैं नहि श्रवनां ॥ नैनन देषै करै न गवनां ॥ कबहूं मूलि हदै न

हिआंनि॥मनक्रमबचनानिरंतरआंनै॥
७२॥औसोबंधनकहेनहोई॥कोटिनुसंग
करैजोकोई॥ऊीजोबितअरुजोहितसं
गी॥बंधनकरैं होतपरिसंगी॥७३॥ता
तेंतिनकेसंगहितजे॥साधुआनमम
चरणनिमजे॥निर्नयगौरकरैअस्थ
न॥मोबिनसंगतजेसबआंन॥७४॥
मरोध्यांननिरंतरकरै॥प्रेमसाहितहृ
दैमेधरै॥कृस्नबचनसुनिहृदैराषै॥
उद्धवऔरप्रस्नकेभाषै॥७५॥उ॰ ब
वाच॥॥हेप्रभुतुमै

॥ कौंनरूपमें चितलगावै ॥ मैं तौमुक्तसे
इतुरचरणां ॥ पारिजौचहैमिटायोमः
णां ॥ ७६ ॥ कृपासिंधुतुमकरुणाकरो ॥
ध्यानजोगवांनीविस्तरो ॥ सुनिउद्धव
निजजनकीबांणी ॥ तबश्रीहरिजीअ
पवषांणी ॥ ७७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ उद्धव
तौकौंध्यानस्तुनांऊं ॥ जोगसहितसब
अंगवृतांऊं ॥ जोगसहितजोध्यान
करै ॥ तौमनवेगिरजहिपारिहरै ॥ ७
॥ समआसनमैंआस्थिरहोई ॥ जघं
नियरराषेकरहोई ॥ देहसमांनचलै

नहिडोलै॥नासाद्रिष्टिकछुनहिबोलै
७९॥इडापूरिकुंभकाथिरधारै॥पुनि
रेचकपिंगुलानिसारै॥बहुस्योंपुरि
पिंगुलाद्वार॥इडानिसारैबारंबार
॥८०॥इंद्रियअर्थसकलपरिहरै॥मे
रोहतहदैमेंधरै॥उद्धवद्वैबिधिजो
गकहावै॥ताभेदहिसतगुरतेंपावै
॥८१॥मंत्रसहितसोनामसगर्भ॥ता
म॥सोउतमहैंप्राणायाम॥८२॥पू
रेराखैरेचककरै॥ॐकारमंत्रउरधै
रे॥घंटानादतुल्यउरध्यावै॥तासों

लिकारिवणंचलावै ॥ ८३ ॥ यौंत्रिकालअ
भ्यासेकोई ॥ षांणमासहीमेथिरहोइ ॥ बु
द्धस्यौंहृदैकमलकौंध्यावै ॥ अष्टपाषुरी
सोविगसावै ॥ ८४ ॥ ऊंधेमुषतेउरध
करै ॥ ताकेमध्यसुरिजहिधरै ॥ सूरिज
मेंपूरणससिआनें ॥ ससिमेंअनलतै
जमयमानैं ॥ ८५ ॥ अनलमध्यममस्व
हिध्यावै ॥ परमप्रीतिसौंमनहिलगावै
॥ अंगुसमांनचतुरभुजरूप ॥ अतिसी
तलसुषदांनिअनूंप ॥ ८६ ॥ नूतनसज
लमेघतनस्यांम ॥ तडितनतुल्यअंबर

रुचियां म॥ मंद हास सो मानिधित्रान
न॥ मकराकृति कुंडल सुखकानन ॥ ८८
॥ कंठ कौस्तुभ मनि बन माला ॥ उरभृगु
लता लक्षि बिसाला ॥ संख रुच क्रम
अरुपद्म ॥ हस्त चारि दुं सोजा सम ॥ ८९
॥ हेमसुकट ही रामणि जस्यो ॥ अति सो
भाइ मां नासिर धस्यो ॥ भाल तिलक
बुज बर नैन ॥ प्रसन्न प्रसाद सुधा को ऐ
न ॥ ९० ॥ करकंकण अंगद मुद्रिका प
ग नूपर कटि में क्षुद्रिका ॥ अंकुस वज्र
धजा अरविंद ॥ चिह्नित चरण

डुषदंद ९० ॥ नषमाणि गाणि आतम प्रकास ॥ उर अज्ञान अंधतम नास ॥ औरस कल अंगनि बहुभूषण ॥ जिनके धांन मिटै सब दूषण ॥ ९१ ॥ वैसा किसोर पर मसुकमार ॥ नषसिष ध्यावै बारंबार ॥ चरणनि तैं प्राति अंग हिं ध्यावै ॥ एकै गहिए दिष्टि टकावै ॥ ९२ ॥ यौं लैन षते सब परजंत ॥ निसदिन हृदै ध्यावै संत ॥ औरवासनां सब परिहरै ॥ मेरे रूप अडिगमन धरै ॥ ९३ ॥ याविधि जब मानानि अदचल होई ॥ तब फिरि अंगनि ध्यावै को

ई॥अतिसुंदरमुषमैंमनधारै॥औरस
कलचिततैंनिवारै॥९४॥या
मनअपनेंसहोई॥तबबिराटमैं
रैसोई॥सकलबिराटरूपमनजांनें॥
मोतेंभिंनकछुनांहिमांनें॥९५॥ऐंसौंबि
राटमसरूपहिंजांनि॥निहचलमे
दकौंभांति॥तबताहूंतैंमनहिनिवारै॥
रूनिरंजनब्रह्मबिचारै॥९६॥ब्रह्मवि
रतिनिरंतरकरै॥सबआकारदूरि
हरै॥आत्मब्रह्मएककरिदेषै॥सुतनि
रूपअषंडितलेषै॥९७॥निजानंदनि

द्वल निरधारा॥ सत्यसरूपवारनहिपा
रा॥ एकअजन्मांआपेआप सुषदुषरहि
त पुन्यनहीपाप॥ ९८॥ कालनकर्मजीव
नहीमाया॥ आपेआपनिरंजनराया॥
जैसेअग्निअषंडितहोई॥ तातेउवैपतं
गाकोई॥ ९९॥ बहुरिअग्निहीमांहिसमा
वै॥ तबहिपतंगानांमगंमावें॥ ऐसेआ
त्मब्रह्मविचारै॥ एकजांनिकारिद्वैतनि
वारै॥ १००॥ ऐसीभांतिविरंहिकरतें
॥ निसदिनब्रह्ममांहिमनधरतें॥ त्रिगु
णाकारसकलभ्रमभागेहोइब्रह्मसोव

नसोजागै॥१०१॥ह्वैकारि ब्रह्म ब्रह्म मिलि
जावै॥जहांदुतेबहुरयेनहिआवै॥औ
सोबिधिमरहुषनिदहै॥मेरोनिजानं
दपदलहै॥१०२॥दोहा॥कहूयैडेतासोंओ
घो॥जाकरिहरिपुरिजाइ॥परियामे
बहुबिघनहैं॥तैसाओंसमझाइ॥१०३
॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कं
धेश्रीभगवदुद्धवसंवादेचतरदसोऽध्यायः॥
॥१४॥चौपई॥१०५२॥श्रीभगवानुवाच॥
॥उद्धवजोगग्रंथसमझा
बिघनबताऊं।

धै॥ सावधान ह्वै जोगादि साधै॥१॥मो में
धरै आपनौ चित॥ ताकौं सिधि बिघन दै
न्नित जो तिनतें सिद्धिनकों परिहरै॥ सो
मम चरणनि कौं अनुसरै॥२॥ तिन सौं क
बहीर है तु जाइ॥ तो श्रम सकल वृथा ई
जाइ॥ ऐसे कृष्ण बचन मन धारी॥ उद्ध
व कीन्हों प्रश्न बिचारी॥३॥ उद्धव उवाच
॥ के प्रकार धारणा देव॥ अरु सिधिनु कौ
के बिधि भेव॥ तिनके नाम कृपा करिकै
दहौ॥ जोगनि के बिघननि कौं दहौ॥४॥ तु
व आधीन सिधि हैं सकल॥ तुम्हरी कृपा

होइजन अकल ॥ उद्धव असमहहेमेया
री ॥ तब बोले गोपाल मुरारी ॥ ५ ॥ श्रीभ
गवांनउवाच ॥ उद्धवासिधि अगरह क
हिए ॥ मम धारणा करे ते लहिये ॥ तिनमें
अष्टसिधि परधांन दश मध्यम तेकरौं
बषांन ॥ ६ ॥ जाते देह रूप अणु होई ॥ क
तहूं नहीं आवरण कोई ॥ आणिमां नाम
सिधियह जानों ॥ महा मोहनी माया मां
नों ॥ ७ ॥ जो तन करै महा बिस्तार ॥ जहा त
हां कछु वार न पार ॥ महिमां नाम सिद्धि
सो कहिए ॥ कबहूं मलिन ताकों गहि

॥८॥ जो यादेह ही आतिल घु करै ॥ मुष्टि
न आवै दृष्टि न परै ॥ सो यदेह लघिमा सिधि
कहावै ॥ मम जनया के निकट न आवै
॥९॥ जे जे इंद्रिय भोग निवारे ॥ जहां कहूं वि
षय निविस्तरै ॥ तिन सब भोग निजा के
रि लहिए ॥ प्रापति नाम सिधि सो कहि
ए ॥१०॥ एक गेर हूं वै गेर है ॥ देषै सुनै
सकल की कहै ॥ ताहि अगोचर रहै न
काई ॥ सो प्राकाम्य सिधि कहाई ॥११
॥ इंद्रिय देह बुद्धि मन प्रांण ॥ तिहूं लोक
तिन को अस्थांन ॥ तिन कों त्यों प्रेरै ज्यों

जांनैं॥ताहिईसतासिधिबषांनैं॥१२॥वि
षयसुषनिकोंकदेनगहै॥जातैंआतिआ
नंदितरहै॥नामअवसितासिधिकहा
बै॥मेरौमनकौनिकटिनहिंजावै॥१३॥जो
जोइछामनमैंल्यावै॥सोसोसकलप
लकमैंआवै॥वसितानांमसिधिहैसो
ई॥मेरौजनआदरैनकोई॥१४॥आठ
सिधिएअतिपरधांन॥इनतैंमध्यम
नाषेंआंन॥तनकेगुणव्यापेनहिंको
ई॥नांमअनूर्मिकाहिएसोई॥१५॥दूरआ
श्रवनसुनैंसबबैंन॥दूरदरसदेषैसैंन

नैंन॥ मनकेबेगमनोजबधावै॥ कामस्
पबहुरूपबनावै॥ १६॥ परबैतनमेंकरै
प्रवेस॥ सिधिछुगीपरकायप्रवेस॥ निज
इछातेतजैसरीर॥ सोस्वछंदमृतुदैबी
र॥ १७॥ मिलिअपछरनिबिचरैदेवा॥ देषै
तिन्हैलहैसबमेवा॥ सोसुरक्रीड़ादर्सन
कहिये॥ मिथ्याफलहै कदैनगहिये॥
१८॥ जोसंकल्पकरैसोहोई॥ जथासंक
ल्पकहिएसोई॥ जहांगयोचाहैतहांजा
वै॥ अप्रातिहतगतिसिधिकहावै॥ १६॥
एदसमिलिअष्टादसकहिये॥ औरौं

पंचतुछ नाहि गाहिये॥ वर्त्तमान अरु भू
भवष्य॥ सब कछु जानें लिखि आलिष्य
२०॥ यहदेह सिधि त्रिकाल सुजान॥ आगे
सिधि बषानौं आनसी तउस्म आदिक
जे द्वंद्व तिन्हहि निवारै सो अद्वंद्व॥२१
बिष अरु अग्नि सूर्य जल थंभौ॥ जाते
होवे रसो अचंभा प्रतिष्टं सो सिधि क
हावै॥ हरिजन ताको निकट न आवै॥
वै अष्टादश अरु पंच॥ मिलि तेईस
कलपरपंच॥ ऐसे मुल रूप उचारी॥ सा
बदतन हि बिस्तारी॥२३॥ ममथा

णांकरेतेंश्रावै॥ जोगिनिकौंबहुबिधिबि
चलांवैजौतिनितेबिचलैनहिंकबहीं॥ वे
ममचरननिपांवैंतबहीं॥ २४॥ जायारण
हुतेजोश्रावै॥ जैसेजोगीकौंबिचलांवैं॥ सो
सबउद्धवतोसौंकहौं॥ जोगपंथकेबिघन
निदहौं॥ २५॥ श्रगुणरूपजोकछुबिस्तारा
सोनानांबिधिरूपहंमारा॥ ताहींताहिमं
हिमनलावै॥ तैसीतैसीसिधिहिपावै॥ २६
॥ सब्दसपरसरूपरसगंध॥ पंचभुतकेरू
सबंध॥ तिनमैंजाजामेंमनलावै॥ तात
केरूपहिमिलिजावै॥ २७॥ महातत्वमेंम

नहिं लगावै॥ पंचभूतसाषाकरि ध्यावै
जाजासाषामें मन धारै॥ ताहीतासमिदे
हबधारै॥ ८५॥ पंचभूतकेऊ परमांन॥ ति
नमेजोगी धारै ध्यांन॥ ताता सामिलघुदे
हदिकरै॥ काहूसों कहूंगह्योनपरै॥ ८६॥
सातिकअहंकारमनधारै॥ ताकोंमर्येरू
पबिचारै॥ तबजेइंद्रिमशोमधनिकरै॥
बहुतभांतिबिषियानिबिस्तरै॥ ८७॥ तेसु
षयहुजोगीपावै॥ सोहहसाक्षिसिधिकहा
वै॥ मेरौसुत्ररूयमनआनै॥ तातेंत्रिभुवन
कीगतिजानै॥ ८८॥ ज्योंदीवाले घर

णां करै तें आवै ॥ जोगिनि कौं बहु बिधि वि
चलावै जौ तिनि तें बिचलै नहिं कबहीं ॥ तौ
मम चरननि पावैं तबहीं ॥ २४ ॥ जा धारणा
हु तें जो आवै ॥ जैसे जोगी कौं बिचलावै ॥ सो
सब उद्धव तोसौं कहौं ॥ जोग पंथ के बिघन
निदहौं ॥ २५ ॥ अगुण रूप जो कछु बिस्तार
॥ सो नाना बिधि रूप हंमारा ॥ ताहीं ताहिमैं
हि मन लावै ॥ तैसी तैसी सिधि हि पावै ॥ २६
॥ सब्द सपरस रूप रस गंध ॥ पंचभूत के स
मबंध ॥ तिन मैं जा जा मैं मन लावै ॥ तात ४
वे रूपहि मिलि जावै ॥ २७ ॥ महातत्व मैं म

नदिलगावै॥ [illegible]
जाजासावामैं तब धारै॥ [illegible]
दबधारै॥ [illegible]
नमैजोगीधारै [illegible]
ददिकरै॥ [illegible]
सातिवन्त्रदं [illegible]
पबिचारै॥ [illegible]
बदुतभातिदि [illegible]
षयदुजोगा [illegible]
वे।मेरौ [illegible]
कीगति [illegible]

यौत्रिगुन॥ निआचरणनिषेधै॥ मेरौकाल
रूपमनधारै॥ सबव्यापकसबईसबिचारै
॥ २२॥ तातेंसिधिईसत्तापावै॥ त्रिगुननिजा
नैत्यौउपजावै॥ [illegible]ईजाहीसौजो
ईकरबावै॥ ताकेअंतरत्यौंउपजा॥ २३॥
॥ आदिपुरुषजेमेरौरूप॥ तामेंधारैचित्त
अनूप तातेंसिधिअवासितापावै॥ बिषय
निबिनआनंदबढावै॥ २४॥ नगुणब्रह्म
मांहिमनधारै॥ सबकरतासबईसबिचा
रै॥ तातैबासितासिधिहिलहै॥ सोईसोपा
वैजौचहै॥ २५॥ सुषसत्वमयमोहिबिचा

रे॥तामें जोगी मनकौं धारें॥तातें सुध
आपहूं होई॥षटऊरमीनआवैकोई।
२६॥गगनाधारजांण मनधारै॥सद्ध
पमनमांहिविचारै॥तबजहैंतलेंगेपव
आकास॥सुनैंतहांलोंबचनानिवास
॥२७॥नैंननिमें सूर्यकौंधारै॥अरुसूर्य
नैंनबिचारै॥अपरिछ्नमोहीकौंले
तबसोतिहूंलोककौं देषे॥२८॥पव
नसहितमोंमेंमनधारै॥जहांतहांम
पविचारै॥ऐसैंमनकौंजहांचलावै॥म
केबेगतहांईजावै॥२९॥सारेमेरेस्व

बिचारै॥ तिनहीं तिनमैं मनकौं धारै॥
६ चाहै भयो रूपतब जोई॥ बारनलागे हो
वै सोई॥ ४०॥ कस्यो अब वैसहि चाहै जामै
॥ ध्यांन आपनौं आनै तामैं॥ तब तातन
मैं जावै औसैं॥ भृंग फूल ते फूलहि जैसैं॥ ४१
॥ फूलहार पग बंध चलगा वै॥ प्राण चलाई
सीस मैं ल्यावै॥ ब्रह्मरंध्र कै गौं नहि करै॥ जो
मनु होइ ताहि अनुसरै॥ ४२॥ स्वर्ग देवसुर
बनिता ध्यावै॥ मेरो रूप जांनि मन ल्यावै॥
तब ते सहित बिमांननि आवैं॥ ता जोगी कौं
सुख उपजावैं॥ ४३॥ जो जो बस्तु हृदै मैं धारै

॥ताताकौप्रभुमोहिविचारै॥सोईसो
पावै ततकाल॥जबहीपावैकालअका
ल॥७४॥सकलनियंतासबकोईस॥नित
स्वाधीनसकलकासीसं जोगीअैसोमोकों
ध्यावै॥ताकीआंननकोईमिटावै॥७५॥
ग्यांनरूपसबअंतरजांमी॥ध्यावैमोहिस
कलकोस्वांमी॥अपनीजांनैजनममरण
की॥ग्यांनविकारसबकेमनकी॥७६॥प्र
कतिगुणनितेन्यारोजांनैं॥अरुतिनकोस्वा
मीकारिमांनैं॥ध्यावैमोहिसदाअद्वंद्व।
बकोईनहिमायेद्वंद्व॥७७॥सब

क सकल अतीत॥ लिपे न सूरज अगनि
लसीत ॥ असो मो कौं ध्यावै जोई॥ ऐसे लद
रा पावै सोई॥ ४८॥ जो मेरे अवतार निध्यावै
॥ आपुयच्छ्र चंमर मन ल्यावै॥ ताकों कहूं
न अंतर होई॥ सब दिन मो दिबि राजै सोई
॥ ४९॥ यो धारणा करे मम जोई॥ सिधि
नु पावै जोगी सोई॥ परिए अंतराइ है सा
॥ मेरे भक्ति नि दूरि निवारै॥ ५०॥ मोते ए
उ नतै मै नादी॥ तातै मम जाननि कठिन
जोही॥ मो हि नल है इन्द्र लेवै॥ मो हि
जो तिन कौं एस वै॥ ५१॥ मो दोतै उतपाति ११

सबद्दिंनकौ॥मैंप्रतिपालकरूंति
नकौ॥ममआधीनसिधिअरुजोग॥
सांष्यरुज्ञांनधर्मधनभोग॥परसब
नैंकेसलकौस्वामी॥मैंसबद्दिनकौ
तरजांमी॥सबमैंबाहरिभीतरिए
॥मोमैंबरतैसकलअनेकै॥५३॥सूं
तसबभूतनिमांही॥बाहरिभीतरि
नांही॥स्योंसबमैंहीनांहीआंन॥
नदृष्टिमोईअज्ञान॥५४॥तातैद्वैत
वनहिआंनैं॥मेरोरूपसकलकरि
॥साधनसिधिसकलभ्रमतजे॥मेरे

रणानिरंतरिभजै॥ ५५॥ ममब्रह्मस्वरूप मचरणनिआवै॥ अतिअपारभवदु षमिटावै॥ यहमैतोसौंभाष्योज्ञानयां तेऔरसकलअज्ञांन॥ ५६॥ दोहा॥ ए कब्रह्मसब्रिदेषनौ॥ यहसुनिदुःकरज्ञां न॥ पूछीविद्याबिभूतितब॥ उद्धवपर मसुजांन॥ ५७॥ इतिश्रीभागवतेमहा पुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवदुद्धव संवादेभाषायांपंचदशोध्यायः॥ १५॥ चौपई॥ ११ ध्या०॥ उद्धउवाच॥ तु मह्योपरब्रह्मअविनासी॥ चिदानंदवि

ज्ञानप्रकासी॥आदिनअंतमध्यनहि
को॥कोईनेदलदेनदिताको॥१॥तुम
सकलजगतउपजावो॥तुमप्रतिपालो
सबिनसावो॥तुमसबबाहरअरुसब
हीं॥सदाअलिप्तलिपोकहुंनांही॥२॥
हीतहांतुमहीहोएक॥यहसबभ्रम
दृष्टिअनेक॥हेप्रभुयहजगआतिबि
रा॥ऊंचरनीचबिबधप्रकारा॥३॥अ
रुयाजीवसत्यकरिमान्यो॥बिषयनि
बहुभांतिबधान्यो॥प्रा कैएकदृष्टि
कैसेसकलब्रह्मकरिध्यावै॥

४ ॥ ज्ञांनवंततुवजनहै जेते ॥ ब्रह्मदृष्टि
देषंतहैतेते ॥ तातेंतुमअबकरूंणांक
रे ॥ निजबिभूतिमोसोंबिस्तरो ॥ ५ ॥ तिन
मेंदेषिसकलमेदेषो ॥ तबअद्वैतब्रह्म
कारिलेषो ॥ सुन्हिउद्धवकेउत्तमवैंन ॥ बो
लेहरिजीकरुणाऐन ॥ ६ ॥ श्रीभगवांनु
उवाच ॥ उद्धवप्रश्नभलीतुमकीन्ही ॥
जातेंपरेब्रह्मगतिचीन्ही ॥ इहप्रश्नअर्जु
नतेंकरी ॥ तासोंमैंयाबिधिउचरी ॥ ७ ॥
ताही बिधिअबतोहिसुनांऊं ॥ ऐसेंब्रह्म
दृष्टिउपजाऊं ॥ कौरवअरुपांडवकुरु

षेत॥जबही जु रे भारत कहे त॥ चात न अ
र्जुनको रव [illegible] षे सकल बंध आपनै
करि लषे॥ इन सब दिन कौं ओर मारे॥
अपुरी आपन रकतो उारें॥६॥ श्री सी
घि जान्यो अहि कार॥ आपु दिन क्यों म
रन हार॥ तब मैं ना दिशान क्रम का यौं॥
ताको सब अज्ञा भमि टयौ॥२०॥ [illegible]
करी अर्जुन रन [illegible] सी॥ तुम को यौं को
न्हा है जैसी॥ ताहि उ त्तर कों उ कछौ [illegible]
बिधि ब्रम्ह दृष्टि कौं दे है॥२१॥ [illegible]
मैं सब दिन कौं सां मा॥ अरु सब

कौअंतरजांमी॥आपुहतेसवकौउप
जांऊं॥सबपोषौंसवकौंबरतांऊं॥१२॥
सकलरहेमेरेआधीनां॥मोहीमेहोवेंस
बलीनां॥तातेंसबमैंहुजानांहीं॥यौंबिस
तिजांनौंमनमांही॥१३॥परितौसोबि
सबसौंकहौं॥तेरोहैतदृष्टिकौंरहौं॥स
बरलकनिमांहिमेरकौंके॥तिनमैंका
लसकलजेभक्षक॥१४॥सोमैंप्रकृतित्रि
गुणकीआदि॥पंचभूतनिमेमैंसुतादि
॥सूत्रसकलबंधनमैंजानें॥बडेनुमांहि
जियदेषौ सबदुर्जय मंहतत्वहिमांमैं

॥१५॥सब सूक्षम निमा हि जियदेषो॥सब
दुर्जय निमा हि मन लेषो॥वेद ज्ञानि मे जन
जानौं॥ॐकार मे जाप मे मानौ॥१६॥छं
दनि मे गाइत्री छंद॥मैं आकार अक्षर मैं वे
द॥सब देवनि के मध्य पुरंदर॥सकल व
सुनि मै मे वै संदर॥१७॥नील कंठ रुद्र काद
सहर मैं॥बिस्मनां मह्लाद सहित कार मैं
॥तिन मैं भृगु जे सप्त महारिषि॥तिन मे
मनु जे सब राजरिषि॥१८॥देवऋषि
मैं नारद जानो॥कामधेनु धेनुन मैं मा
नौं॥सिधनि मैं मैं कपिल सरूप॥पवन

मांहि गउ समरूप ॥ १९ ॥ प्रजापति नमें मैं
हौं दक्ष ॥ तिन मैं म करजहां लौं मक्ष ॥ बाद
नि मैं अध्यातम बाद ॥ सब असुरनि मैं प्र
ह्लाद ॥ २० ॥ तम प्रकासक मांहि दिने स
जल रक्ष गणमांहि पवनेस ॥ तिन मैं सो म
सकाल जे उडगन ॥ सब घात नि मैं मैं हूं के
चन ॥ २१ ॥ गजनि मांहि मैं गज ऐरावत ॥ मैं
अमंगजे सिंधु उपावत ॥ तहां बरुण जे
सब जलजंत ॥ नागनि मैं मम रूप अनं
त ॥ २२ ॥ नरनि मांहि मम रूप नरेस ॥ स
र्पनि मैं बासुकि सर्पेस ॥ उच्चैस्रवा हय नि

मैंजानौं॥दंडधरन तिन मैंजमम मानौं॥२३॥
॥सकलउरगनि मैंमृगराजू॥सरितन मैंगं
गासिरताज॥ अबआश्रम मांहिसंन्यास
॥बर्णमांहिविप्रमम बास॥२४॥सकल
रनि मैरूपसमुद्र॥सकलधनुषधारिनु मैं
रूद्र॥मैंहौंधनुषआयुधनमांहि॥ परम
निवास मैरू तें नांहि॥२५॥जे आतिगढ नदि
मालयतिन मैं॥मैंपीपलसबबनसपती मैं
॥मैंपुरोहितमांहिबासिष्ठ॥तहां दृहस्पति
ज्ञलिष्ट॥२६॥सनांपतिनिमांहिसेनांन
मैंप्रवर्त्तकसो ज्ञसाजांनी

ष पितु मैं जव जांनौं ॥ पितरनि मैं अर्जमां नौं ॥ २७ ॥ ब्रह्म जज्ञ सव जज्ञनि मांहि ॥ ब्रत आद्रो दस माकी नांहि बायु अग्नि जल सूर्य बांनी ॥ अरु मन एष ट सो घक जांनी ॥ २८ ॥ चतुर देह आतमा बिचार ब्रह्मचारिन मैं सनंत कुमार ॥ अस्त्रीनि मैं सत रूपा यंनी ॥ पुरुषनि मैं स्वायंभू जांनी ॥ २९ ॥ सावधान तिनि मैं संबतसर ॥ अनय गौ रतिन मै उर अंतर ॥ मे हौं धर्म अनय कौं दांन ॥ गुह्य नहीं त्रियमौ नं समान ॥ ३० ॥ त्रिया पुरुष संजोगी जे ते ॥ ब्रसादु ते

मरेस्व तेते॥ सकल बानर निमें हनमंत
॥ कृति तिमां हि मम स्वरूप बसंत॥ ३१॥ मारग
सिरमां सनि मैं जानों॥ नक्षत्रनि मैं जानि
जितमां नौं॥ देवल ऋसिन रहितजे कुंदर
॥ कमल कोस स बाहिन मैं सुं दस्याय राजुग
निमां हि सतजुग सेनांम॥ वेद निमां हि वेद
मैं सांम॥ व्यास निमां हि व्यास द्वैपायन॥
तिनमैं तुम जो हि सत्यपरायन॥ अक्षर नि
मां हि कविसुक्र हि जानों॥ सकिवंरम
यहतन मां नौं॥ विद्याधरनि निमां हि सु
र्सन॥ पद्मरागा तिनमैं जेम नगि

॥ सबत्रिराजा तिनमैं कुसजानौ होम
बस्तुमै गोघृत मांनौ ॥ तिनमैं धनजे स
बव्यवसाय ॥ जयमारगसब तिनमैं प्रा
यु रूप ॥ अंगसमाधिजोग अंगतिमै ॥ मै
हौं हसमां हमावृंत ॥ तिमै ॥ धीरजमैं जो
धीरजवंत ॥ मैंबलतिनिमै जेबलवंत
॥ रुद्र ॥ छलनिमां द्दिछलमैं हौं जूप ॥ मे
रै हैतव र्मममरूप ॥ बासुदेव संकर्ष
नबीर ॥ प्रद्युम्न रुअनिरुधसरीर ॥
३८ ॥ नारायनौ रुवमहीधर ॥ नरहरिअ
रुजमदग्नि पुत्रवर ॥ व्यूहचैननवरू

जाजां नौं॥वासुदेव तहां मोकौं मांनौं।
॥तिनमैं थिरता जे सब भूधर॥पूरनाचि
त्रनांम मैं अपसर॥ मैं हौं बिस्वाव सुगंध
ध॥धरणी मांहि गंध मैं सर्व॥रुओर सज
लमांहि सष्ट्रआकासा॥रविससि तारनि
मैं परकासा॥तेजस्वानि मैं पावक जांनौं
॥बिप्रनकृनि न मैं बलि मांनौं॥४०।
निमैं अर्जुन बहु सार॥ मैं सब उतप
थितसंहार॥इंद्रिय मन बुध्यादिक जे
॥मेरा साक्षि प्रवर्तैं ते॥४१॥सब बुद्धिनु
सब अर्थनि गहौं॥तेजउ तिन मैं चेत

हौं॥ सब्दसपरसरूपरसगंध॥ तिनते
पंचभूतसबंध॥ ४२ इंद्रियनमहततत्र
हंकार॥ त्रिगुणसहितएप्रकृतिबिका
र॥ प्रकृतिरूपुरूषजहांकछुऊतौ॥ मे
रो रूपसकलहैतेतौ॥ ४३॥ मोबिनुक
हूंकछुहैएनांही॥ मैंहीप्रगटहिरह्यौसब
मांही॥ जौपरमौगुणनौमैंकबही॥ तौति
निपारहिपांऊंतबही॥ ४४॥ परिममनि
र्मितजेब्रह्मंड॥ तिनकौंगनतपरैनाहि
षंड॥ तातैकहौंबिभूतिकहांलौ॥ जौकछु
मेरोरूपतहांलौ॥ ४५॥ अरुअबजु

क्तिबिभूतिदिकहैं॥ द्वैतद्विष्टिऐसी
बिधिदहैं॥ लज्जातेजक्षमाधृतदांन॥
इरताऐश्वर्यरुज्ञांन॥ ४६॥ बलसोजा
रुधीरजजहां॥ ममबिभूतिजांनौलहां
तहां॥ एबिभूतितौसोकछुनांही॥
अपारकहिबेकौंरही॥ ४७॥ मनथिर
रणकाजएजांनौं॥ इहईज्ञानकहैमति
मांनौं॥ इंद्रियदेहमनबुद्धिप्रांण॥ नि
लकरिदेषौभगवान॥ ४८॥ मनतेसब
आकारउतारौं॥ चेतनिमेंरहैसुपवि-
रौ॥ एकअव्यंडितउहांतहांसोई॥

पापरहुजानदिकोई ॥ ४९ ॥ ऐसो
जलकौंपावै ॥ त्रसपाइजगतनहि
रै पुनितनमनइंद्रियअरुप्रांन ॥
करिजिननिधस्योमनध्यांन ॥ ५० ह
बहुतनांतिआचरनां ॥ जपतपदांन
दिककरनां ॥ काचेकेसमस्योजलजै
॥ पलपलछवैजावैसबतैसे ॥ ५१ ॥ ता
बचनकायमनप्रांन ॥ सबकौंबंधि
रैममध्यांन ॥ मोहिध्याइमोमाहिस
वै ॥ तबसंसारमांहिनहिआवै ॥ ५२ ॥
दोहा ॥ ज्यौंउद्धवतोसोंकह्यौ ॥ वदवि

तिकौज्ञांन॥ग्यौंहौ सूक्ष्मथूल[illegible]सब॥
दषौश्रीभगवांत॥५६॥इतिश्रीभागव
तेमहापुरांणे एकादशस्कंधेश्रीभगव
उद्धवसंबादेभाषायांविभूतिकथन
नामषोडसोध्याय:॥१६॥चौपई॥१२०
॥दासनिमेंउद्धवनिजदास॥जाकेंहृदैज्ञा
नप्रकास॥तिनिजीवनिकौहितमनधरी
॥तातैंप्रश्नकृष्णसौंकरी॥१॥उद्धवउव
च॥प्रभुतुमकह्यआदिउच्चाह्यौ॥
निमितिधर्मविस्तार्‍यौ
दिनरजेते॥तिनिधर्मनि

॥२॥ तिनि मैं कोई भक्ति दिपावै ॥ को
ई कर्म सिधु बहि जावै ॥ तातै तुम करु
णा मे देवा ॥ भाषी नर धरम नि कै सेवा
३ ॥ धर्म करत ज्यौं उपजै भक्ति ॥ तुम्हरे च
रन बढै अनुरक्ति ॥ छूटै काल जाल नव
कूप ॥ लहै तुम्हारो ब्रह्मस्वरूप ॥ ४ ॥ जग
पि पुनि बिधि सौं बिसरायौ ॥ जब प्रभु इं
स रूप तुम धार्‌यौ ॥ परि बहु काल कहै
ते नयौ ॥ तातै धर्म लीन ह्वै गयौ ॥ ५ ॥ है
कछु औरे करै कछु और ॥ तातै जीव १५
पावै ठौर ॥ तातै तुम करुणा करि मा

बौ॥ बहेजातजेजो वनिराबो॥६॥ अरु
यहतुमहीजांनोहेला॥ तुमबिनदूजोन
हैनमेवा॥ तुमहीकहौसुनौउरधेरो
॥ तुमहाराषौतुमहीकेरो॥७॥ ब्रह्माद
कीसभामझारी॥ वेदजहांनिजमूरतिधा
री॥ तहऊं यहकोईनहिंजांनै॥ जोवैयै
सोंसबैवषांनै॥८॥ अरुयहवैसेकरि
मनिआवै॥ जारमकरैतेमोहिछिपावै
अबतुमयाहीकौतनधारो॥ जातेनिज
धर्महिबिस्तारौ॥९॥ जोवैकुंठमयाधौं
करिहौ॥ यहांनिजधर्मनहींउचरिहौ

तापाहूकोईनरिकादिहैं॥ यहनिजध
र्मगुपतिहीरहिहैं॥१०॥ तातैंअबतुमकर
णाकरौ॥ यहनिजधर्मबेगविस्तारौ॥ श्री
सासुनिउद्धवकीबांनी॥ आपुनबोलेसार
गपांनी॥११॥ श्रीभगवानुवाच॥ यन्यध
न्यउद्धवजनमेरे॥ तूंजौनहीबराबरितेरे॥ मेरोनिजजनकोहिएसोई॥ हितपराए
बरतैजोई॥१२॥ तातेंतुमयरकारजकी
यौ॥ मोतैंपरमधर्मबिस्तर्यौ॥ उद्धवपर
मधर्ममभक्ति॥ औरसकलतेंवारैबि
रक्ति॥१३॥ भक्तिबिनांजोकोईधर्म॥ सो

सबजांनौंपरमअधर्म॥सबमेमयवि
क्रियोसंसार॥सबनहिंकोअविस्ता
र॥१४॥जेईजेमांनवृतनधरे॥सोहि
सडूतेतेऊधरे॥कैहतहतत्लहै मम
धांम॥तातेंसोकृतजुगसेनाम॥१५॥
वोऊंकारस्रूपतबवेद॥ओसेकछुहुते
नाहिंभेद॥सबइंद्रियमननिहचलक
रै॥मेरोध्यांननिरंतरधरे॥१६॥ओ
सेसबपापनिपरिहरै॥सबमेरेचर
ननिअनुसरै॥त्रेताबिषेंनयेमतिमं
द॥बिबियनितेमानेआंनंद॥१७॥

तापा छूकोई नहिं कादि है ॥ यह निजध
र्म गुप्त ही राख्यो है ॥ १० ॥ ताते श्रब तुम कर
णां करो ॥ यह निजधर्म बेग विस्तारो ॥ श्री
सो सुनि उद्धव की बांनी ॥ श्रापुन बोले सारं
गपांनी ॥ ११ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ धन्य ध
न्य उद्धव जन मेरे ॥ दूजो नहीं बराबरि ते
रे ॥ मेरो निजजन काहि ए सोई ॥ हित पराए
बरतै जोई ॥ १२ ॥ ताते तुम यह कारज क
स्यो ॥ मो तैं परम धर्म बिस्तस्यो उद्धव पर
म धर्म मम भक्ति ॥ श्रौर सकल ते करै बि
रक्ति ॥ १३ ॥ भक्ति बिनां जो कोई धर्म ॥ सो

सबजांनैंपरमअधर्म॥जांनुगेपाय॥
कियोसंसार॥तबनाहिंछुटौंजोमैं...॥
र॥१४॥जेईजेमांनव्रतनधरै॥गोहि
सेइतेतेऊधरै॥कैऊतऊतलदै मम
धांम॥तातेंसोकृतजुगसेंनांम॥१५॥
वोऊंकाररूपतबवेद॥ऐसेकाठ्ठकुर
नाहिंभेद॥सबइंद्रियमननिग्रहचलेक
रै॥मेरोध्यांननिरंतरधरै॥१६॥ऐ
सेसबपापनिपरिहरै॥सबमे
ननित्रनुसरै॥त्रेताबिखैंभयै
द॥विविधयनितेमांनैंआनंद॥१

तापीछुकोईनहिंकोहै॥ यहनिजध
र्मगुपतिहीरहिहै॥१०॥ तातेअबतुमकर
णांकरौ॥ यहनिजधर्मवेगविस्तारौ॥ ऐ
सीसुनिउद्धवकीबांनी॥ आपुनबोलेसार
गपांनी॥११॥ श्रीभगवानुवाच॥ धन्यध
न्यउद्धवजनमेरे॥ दूजोनहीबराबरिते
रे॥ मेरोनिजजनकोहिएसोई॥ हितपरता
बरतैजोई॥१२॥ ताते तुमयरकारजक
स्यौ॥ मोतैंपरमधर्मबिसतस्यौ॥ उद्धवपर
मधर्ममभक्ति॥ औरसकलतेकरैबि
रक्ति॥१३॥ भक्तिबिनांजोकोईधर्म॥ सो

सबजांनौंपरमअधर्म॥जबमेप्रथमि
कियोसंसार॥तबनहिंद्दुलोकमेंबिस्ता
र॥१४॥जेईजेमांनव्रतनधरे॥सोहि
सेइतेतेऊधरे॥द्वैकृतकृतलहैमम
धांम॥तातेंसोकृतजुगसेनांम॥१५॥
वोऊंकाररूपतवबेद॥असेकछुहुते
नहिंभेद॥सबइंद्रियमननिहचलेक
रै॥मेरोध्यांननिरंतरधरै॥१६॥अ
सेसबपापनिपरिहरै॥सबमेरेचर
ननि[illegible]॥तेतबिबेकरहेमतिमं
द॥बि[illegible]॥१७॥

तिनि निमित बहु उद्यम करैं॥ राज
सतैं पापनि बिस्तरैं॥ तब तिनि धर्म के
त बेद विस्तारे॥ बहुत भांति के कर्म नि
वारे॥ १८॥ बर्णाश्रम भेद उपाये॥ न्यारे
न्यारे कर्म बताये॥ अपनो धर्म त्याग जो
करै॥ सो नर जाइ नरक मे परै॥ १९॥ ऐ
से बहु विधि मय दिढ़ाये॥ घोर क
र्मनि मैं ठहराये॥ ना मैं समुझ्यौ आतम
भजन॥ मो बिन सकल कर्म कौ तजन
॥ २०॥ बहु स्यौं बहु आरंभ निषेधे॥ राज
सतें नहि निष्फल रहे॥ तिन के हेत ज

जेउपजायो हिम्मक [illegible]
सुनायो २१ विद्या [illegible]
हो द्वैतहहि आनं [illegible]
ते विश्वउपजायो [illegible]
नायो २२ अर्थ [illegible]
पदनी वेश्रो [illegible]
स्यजेद्यनि [illegible]
वलियो २३ [illegible]
वाय मस [illegible]
सकलविन [illegible]
[illegible]

रैं॥ सोसोसबबंधनबिस्तरै॥ जाजात्रं
गद्दतेजाउपज्यो॥ त्योंत्योंताकोलद्दननि
पज्यो॥२५॥ ऊंचेत्रंगद्दतेंसोऊंचौ॥ नी
चेत्रगद्दतेंसोनीचौ॥ तिनिकेबद्दुबिधि
भयेस्वभाव॥ तातेंउपजैनांनांभाव॥ २६
॥संमर्दमसत्यक्षमासंतोष॥ सदादया
लनउपजैरोष॥ तपत्रुरुसोचनम्रमम
मत्ता॥ इनिलक्षणनिबिप्रत्रनुरक्ता॥ २७
॥क्षमातिजबलउद्यमधीर॥ सूरउदारऊ
चलगंभीर॥ बिप्रभक्तमेरोदृढभाव॥ ये
क्षत्रीकेभयेसुभाव॥ २८॥ बुधित्रासि

वादांनत्मादेम [illegible] [illegible]
वैस्यमयेलीहेलहित [illegible]
विविद्दोरा [illegible] [illegible]
तिनमैं [illegible] [illegible]
परतानांही [illegible] [illegible]
३० मिथ्यावाद [illegible] [illegible]
स्तिकहदै [illegible] [illegible]
कार [illegible] [illegible]
मक्रोधम [illegible] [illegible]
मारथसहित [illegible] [illegible]
धर्म यद [illegible] [illegible]

ब्रह्मचर्य के धर्म हिकहैं ॥ जातें जक्ति उपाईये
है ॥ विप्रक्षत्री अरु वैस्य त्रिवर्ण ॥ इनकौं स
कल वेदविधि कर्ण ॥ २३ ॥ गर्भाधानादिक
संस्कार ॥ तिहूं वर्णकौं यह आचार ॥ जब
ते बटु द्विज नेऊं पावै ॥ तब ते गुरु के निकट
रहावै ॥ २४ ॥ बटु बिधि गुरु की सेवा करै
॥ वेद पढ़ै अर्थहि उर धरै ॥ जनेऊ मेषला
कर जपमाला ॥ दंड कमंडल अरु मृगछा
ला ॥ २५ ॥ दंतवस्त्र तन मलन निवारै ॥ सी
स जटा हस्त नि कुस धारै ॥ आसन चंचलक
दे न करै ॥ लोकबारता हृदै न धरै ॥ २६ ॥

मुत्रपुरीपत्यागश्च [illegible]

जेनजलपांनो इन [illegible]

पकेंसादिकदूरिनद [illegible] ३ [illegible]

रिहहूतयांवे कांवद्व [illegible]

रे जौश्रापदीनेजात्र [illegible]

पछिनावेतवदी ३ [illegible]

गांयांम जापक [illegible]

वेगुरुविप्र [illegible]

कगइ ३ [illegible]

चवनन बोलै हालन चाल॥ गुरकों मेरे रूप
हि जांनें॥ नरकी बुधि करै न हि आंनें॥ ४०
॥सव देव मय गुरकों लेषै॥ तन के कछु
चरणन देषै॥ भिक्षा आदि और कछु जो
ई॥ गुरकों आनि समरपै सोई॥ ४१॥ अ
व गुर ताकों आज्ञा देवै॥ तब प्रसाद आप
हूं लेवै॥ वेठे बैठे आवत जात॥ भोजन स
येन राति पर भात॥ ४२॥

॥नी की भांति गुर सें [illegible]
सों पीछें अनुसरै ॥ औ [illegible]
धारै ॥ मन जैसें नाहिं [illegible]
॥औसें गुरकुल बरतै सोई ॥ [illegible]
मापति होई ॥ पुनि [illegible]
॥तौ गृहस्थ तान दौं [illegible]
देह समर पन कौं ॥ [illegible]
गुर अर्थ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मांनिं अति त्रास ॥ ५६ ॥ सौच आचमन अ
रु अरु अस्नान ॥ संध्योपासन गत आभि
मांन ॥ तीर्थसेव्रा जप तप निद्रा ॥ तजे दर
ससंभाषण इद्रा ॥ ५७ ॥ मन अरु बचन
देह बस करै ॥ मेरौ भजन हदै मैं धरै ॥ अ
रु भभभजन सबनिकौ धर्म ॥ भजन बि
नां सब धर्म अधर्म ॥ ५८ ॥ ऐसो ब्रह्म
चर्य ब्रतधारी ॥ दृढतप निसिदिनु बेदबि
चारी ॥ बिगत पाप ऐसौ बिधि होई ॥ मे
री भक्ति लहै तब सोई ॥ ५९ ॥ ऐसी बिधि
भव सागर तजै ॥ मेरे परमस्वरूप कौं भजै

॥अरुजो कोऊ होइ सकांम॥ तौ सौं करै
जुवती अरु धांम॥५०॥ कै निह कांम ग
है बानबास॥ कै अधिकार पाइ संन्यास
॥अरु जो उपजै मेरी भक्ति॥ तौ नहि कौं
कहूं आसक्ति॥५१॥ यह है ब्रह्मचर्ज कौ
धर्म॥ यातें दूजो सकल अधर्म॥ अब ग्र
हस्थ कौ धर्म सुनांऊं॥ सकल ग्रहस्थ
नि कौं समझांऊं॥५२॥ ब्रह्मचर्ज जौ नहि
वहरावै॥ तौ ग्रहस्थ आसरम
गुर तें बेद पढै सब जबही॥ गु
देइ पुनि तबही॥५३॥ गुर तें

उरधरै तबबिधिसौंअस्नांनादिकरै॥त
बदैकैउत्पमकुललछ्ण॥करैबिवादद्वि
त्रियाबिचछ्ण॥ ५४ ॥ओदेकैअपनौअ
धिकार॥त्यौंहीकरैबिवादबिचार॥बि
प्रबिवादेंवास्यौंबरण॥बिप्रक्षोदिछ
त्रीकोंकरणं॥ ५५ ॥वैस्यबिवादेवैस्यसू
सूद्र॥सूद्रएकईकुंवनसोद्र॥उत्तमसो
औरकैकरै॥बहुतनिकृष्टनादिबिस्त
रै॥ ५६ ॥श्रुतिआचियनजज्ञअरुदांन
तिहूंबर्णकौंएकसमान॥दांनग्रहन
जज्ञकरवावन॥अधिकाबिप्रकौंबद

पर्यावन॥५७॥परिरुत्ती निवृतिहै औ
॥अग्निमधिजलबरिषाजैसे॥इनतेउ
लतेजन हिरदै॥तातें इन कौं बिप्रन
दै॥५८॥करि कै सिलादेह निरबाहै॥ता
अधिको नदी संबाहै॥बिप्रदेहपूर
तपपेए॥सोबि षयानिलगि नदी म वे
ए॥५६॥बहुत सौंत तपक छि हि कारि
॥हरि भजिहरिही कौं अनुसरीए॥
लावृति करिरा बै देह॥नदी ममता जु
नतीसुत गेह॥६०॥अति थिपालनो
जतमनां ही॥मोही कौं देषेसबमांही॥

जीवनमुक्त होइ सो विप्र ॥ मेरे चरणनि
पावै छिप्र ॥ ६१ ॥ जो कोई मम भक्ति हि करै
॥ ताकौं कछु आपदा परै ॥ सो आपदा मि
टावै कोई ॥ सो मेरो हितकारी होई ॥ ६२
॥ ताकौं मैं उधारौं ऐसे ॥ नावनि सौं अं भो
निधि जैसे ॥ परि दुखी निज धर्म बिचारै
सकल पाल नां हिरदै धारै ॥ ६३ ॥ दुखी
सब के दुख निहरै ॥ सकल जीव प्रति
पाल हि करै ॥ सो अनुग्री सुरलोक हि जा
वै ॥ बासव सहित महा सुष पावै ॥ ६४
॥ जो आपदा विप्र कौं परै ॥ तौ सो बनि

जवृतिकोंकरै॥जद्यपिसत्रीवृतिहैऊ
वी॥परिसोअतिहिंसातेनीची॥६५॥जो
सत्रीकोंपरैविपति॥तोसोगहैविनिज
कीवृति॥किंवाविप्रवृतिकोंगहै॥अथ
वामृगयाकरिनिरवहै॥६६॥वैस्यहि
रआपदाकबहूं॥सुद्रवृतिसोंटारैत
दी॥अरुजोविपतिसुद्रकोंपरै॥तोपि
लोमवृतिहियधरै॥६७॥याविधिजब
हिमिटैविपति॥तबहीगहैआपनीवृ
त्ति॥पंचजज्ञप्रतिदिनकरने॥गृह
स्थकोंनांहीपरिहरने॥६८॥कारि

पाहुनि भिक्षुकनकौं जैसैं ॥ करि कछू होम
देवतानिकूं जैसैं ॥ भूतनि बलि करि स्वधासौं
पितर ॥ जलअन्नादि सहितसौं इतर दै
॥ तिनि सब बिधिनिमैं सोकौं जानै ॥ और
सबनि परि करुणा आनैं ॥ जो सहजही
कछूं धन पावै ॥ किंवा न्याययुक्त उपजा
वै ॥ ७० ॥ तासौं लोग आपने पोषै ॥ और
जतन करि मोदि संतोषै ॥ जो तौ लागति घ
रमैं होइ ॥ तौ तौऊं धन राखै सोइ ॥ ७१ ॥
और सकल ममहित लगावै ॥ भूलि न
दूजै मारग जावै ॥ जद्यपि रहै कछू वहूं

मांही॥ तौहूलिये कदे कहूं नांही॥७२॥मि
सदिनु हदै करै बिचार॥ मिथ्या जानैस
बपरिवार॥ अस्त्री पुत्र बंधु सब औसें
जलकेनिकर कूटब [illegible] ऊजेसे॥७३॥ए
सबयों प्रति देह दिखावै ज्यों निद्रा प्रति
सुपिना पावै॥ ज्यों ज्यों जागे वारंबार॥ यौ
त्यों त्यों मिटै सुपिन मौहार॥७४॥ यौ
हार प्रति देह दिखावै॥ देह तजे स
ततितजांवै अरु यौंही स्व
।प्याये देरव गये अति सोक॥७५॥ तातें
बालबासनां देहै॥ अति थि

मैंरहै॥अहंकारममतानहीआंमैं॥सब
मायाबंधनकारिजांनैं॥७६॥सबकर्मनि
मेरहितकरै॥मोबिचित्रंतराइपरहै
॥प्रेमभावदृढउरमैंराषै॥औरसकलहि
रहैतेनाषै॥७७॥[illegible]वनजावै
॥किंबागृहहिमांहिरहावै॥औसोगृहीमु
क्तकरिमांनौं॥औरकछूहिरहैनहिआं
नौं॥७८॥अरुजोहोइनरवनआसक्तजु
वतिसुतादिकनिसौंअनुरक्त॥विषया
लंपटतृस्नाआतुर॥ज्ञानरहितकर्मनि
मेचातुर॥७९॥आपुद्धिपरबसताहि

नजांनें॥औरनिकी चिंताउर आनें॥
माईहृद्ध पितरहैं मेरे॥मो बिनदुःषलहैं
बहुतेरे॥८०॥यह अबलालघुसंपतिजा
की॥ मो बिनुहोइ कहागतिताकी॥ए अ
नाथमो विन सबबाला॥क्यों करिजीवें
अतिबेहाला॥८१॥मोबिनइनहि हिकौं
नुप्रतिपाले॥कौंन विविधि दुःषानि
कौंटाले॥ऐसे निसदिन आंनें चिंता॥क
बहूं नहि होवैनिहचिंता॥८२॥कहेनसु
षपावै या लोका॥अस्योरहै चिंतामय शो
का॥या विधि चिंता करत अपार॥नरक

हिजाहैबारंबार ८३ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म
चर्यगृहस्थयतिकोमैंनाभ्योवृहधर्मी ॥ या
तेउद्धवऔरकछु ॥ सोसबजांनिअध
र्म ॥ ८४ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेएकादशस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसंवा
देस्मायांआश्रमधर्मनिरूपणोना
मसप्तदशोध्यायः ॥ १७ ॥ चौपई ॥ १२
८६ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ अबमैंक
हूंधर्मबनबास ॥ अरुअधिकारस
हितसन्यास ॥ जातेमेरीभक्तिहिपावै
॥ भक्तिपाइममचरणनिआवै ॥ १ ॥

बरषपचासद्रते उपरंत॥तबबनजाइ र
है एकंत॥नारिसुतनिमेरहनेदेई॥जोवि
धिबनेसंगतोलेई॥२॥कंदमुलफलहाति
हिकरै॥बलकलमृगछालातनधरै॥तृण
पूर्णनिकीसेजसंवारै॥इंद्रिनुके॰
थनिवारै॥३॥केसरोमनखदुरिनकरै
दंतमलनहिपरिहरै॥त्रिसय
कालस्नान॥मलनउतारेमुसलस
न॥४॥ग्रीषमरितुपंचाग्निसाधै
छायानहिंबांधै॥सीसष
सहै॥सीतकालजलमाईरहै॥५।

हिजावैवारंबार ८३ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म
चर्यगृहस्थचर्यैकोमेंजान्योधर्म ॥ ना
तेंउद्धवऔरकछु ॥ सोसबजानिअध
र्म ॥ ८४ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे
एकादशस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसंवा
देभाषायांआश्रमधर्मनिरूपणनाम
सप्तदशोध्यायः ॥ १७ ॥ चौपई ॥ १२
८६ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ अबमेंक
हूंधर्मबनबास ॥ अरुअधिकारस
हितसन्यास ॥ जातेमेरीभक्तिहिपावै
॥ भक्तिपाइममचरणनिआवै ॥ १ ॥

॥१३॥ बेद बिहित बिधि कों जनै ॥ स्रुति
ज कों सर्व स देत जे ॥ जब कोई सन्यास दि
करें ॥ तब हो सुर बिघन नि बिस्तरें ॥१४
॥ परियह बिघन गणो कछु नांही ॥ मेरे
रण धरे उर मां [illegible] हीं ॥ औ कब हो कछु
बस्त्रादि राषे ॥ तौ कोपीन और सब नांषे
॥१५॥ दंड कमंडल कर मैं धारे ॥ ज्यों मल
त्यों नहि और बिचारे ॥ दोषि देषि चरणी
पग धरे ॥ बस्त्र छांनि जल पांनादि करै ॥
॥ सत्यवंत बांनी कों बोले हृदै बिचार कें
नहि डोले ॥ मौंन धारि बांणी कों दंडे ॥ औ

ग॥१३॥वेद विहित विधि कौं जु जै॥कृति
ज कौं सर्व सदेत जै॥जब कोई सन्यास हि
करैं॥तब ही सुर बिघन निबिस्तारैं॥१४
॥परियह बिघ न गणे कछु नांही॥मेरे
रण घरै उर मांही॥जौं कब ही कछु
बस्त्रादि राषे॥तौ कोपीन और सब नांषे
॥१५॥दंड कमंडल कर मैं धारे॥ज्यौं मल
सौं नाहिं और बिचारै॥दोषि दे षि चरणी
पग धरै॥बस्त्र छांनि जल पांनाहि करै॥
॥सत्य वंत बांनी कौं बोले हृदै बिचार कौं
नहि डोलै॥मौंन धारि बांणी कौं दंडे॥ओ

रुकायाकेकर्म निबंधै ॥१७॥ प्राणायाम मु
नहिबसकरै ॥ सब इंद्रिय अर्थनि परिहरै
॥ अरु एवि नहीं जामांही ॥ भै बंधेरै जो
तासो नांही ॥१८॥ भिक्षा करै सप्त घर बिप्र
॥ और कछू कहूं गहै न छिप्र सोऊ बिप्रच
तुरबिधि जेते ॥ जांनि रहै भिक्षा कों तेते ॥
१९॥ बिप्र कहीजे दस प्रकार ॥ तिनि कों तु
म सो कहौं बिचार ॥ देव बिप्र रिषि बिप्र द्वि
जांनों ॥ बिप्र बिप्र अरु क्षत्री मांनों ॥२०॥ बै
स्य सुद्र अरु एक बिडाल ॥ पसु रम लेछ
बिप्र चंडाल ॥ भिक्षा नित्य रुपरै पटारै ॥

सकलअर्थतत्वबतावै॥२१॥इंद्रिजित
सीतलसंतोष॥देवविप्रसोनिर्गतभय॥त
पअरुसत्यअहिंसाकरै॥दिनदिनषटक
मैंनिअनुसरै॥२२॥कालतोयकबहूंन
हिहोई॥रिषिब्राह्मणकहियतुहैसोई
॥बिनहिंसाफलमूलनित्यावै॥तिनही
सौंदेहहिबरतावै॥२३॥बरषासीतउष्ण
सबसहैबिषाबिषानितआघहिगहै
॥अस्वादिकानिकरैआरोह रणमेंसुर
तजैतनमोह॥२४॥नीतिसहितवानैंअ
रंभ क्षत्रीविप्रहदैनहिंदंभ॥अरुजो

त मबिनजादिकरे॥ पसुराषेषेती बिस्तरे
॥२५॥सोव दबेस्यत्राह्मणकहिए॥ तातैतैं
जिसा नहि गहिये॥ तिललो नघृतदूधरसल
हा॥ तिलअरुनीलमहीमधुमहा॥२६॥
इनिकौं बिनजकरतुहैजोई॥ सुद्रबिप्रक
हियतुहै सोई॥ सबरसतजिकेहीहहिक
रे॥ सबकोसिद्धजिदेयनाफिरै॥२७॥ ब्रा
ह्मिनहिंसासौं अधिकार॥ बिप्रकहा
मंजार॥ महश्रमस्पर्शें अकारजका।
॥ गम्यअगम्यनलषेअनारज॥२८॥क्रो
धनसकलपसुनिकेलहसा॥ सोय

वोमराकहैविचक्षण॥वापीकूंपतलाव
पुरावै वृक्षवागादिकनासकरावै॥२९॥सं
ध्यारुअस्नाननजांनै॥ऐसौविप्रमले
छुवषानै॥निंदकलोभपरधनहरै॥नदई
क्रूरपिसुनताकरै॥३०॥सोचंडालविप्रक
रिमांनै॥ऐसेदसाविप्रनिजांनै॥तातैउत्त
मभिक्षाकरै॥औरसकलदूरपरिहरै॥३१
॥सातघररनितेभिक्ष्यापावै॥ताहीकारिसं
तोषउपावै॥सोलेजावैनदीतडाग तातें
कोचूएककरैविभाग॥३२॥कोईमांगेता
कोदेई॥कैजलमांहिप्रवाहकरेई॥बिच

रेधरणीकैनिद्रं संग॥ कहेन कछून संग्रारै अंग
॥ ३३॥ तनमनइंद्रियनिग्रह करै॥ मेरोरूपहृ
दैमैधरै॥ निसदिनुरहैआत्मारांम॥ विषयसु
षनिकोसुनैननांम॥ ३४॥ समदरसीअरुधी
रजवंत॥ सदारहैनिर्भयएकंत॥ मेरेभावन
योअतिसुद्ध॥ परमविवेकीजंजलबुद्ध॥ ३५
॥ आपुहिमोहिविचारैएक॥ कहेनहै
तिअनेक॥ आत्मअंसब्रह्मकौंजांनै॥ बंध
मुक्तदोऊभ्रममांनै॥ ३६॥ बंधनजबइंद्रिय
नुबासिहोई॥ मुक्तइंद्रियनुनबसैसोई॥
सेजोनिइंद्रियनिजीतै॥ मोहिसुमिरतें

नाबितीत॥३७॥ दुहूलोकतैंहोइबिरक्तनहूं
नहिंहोवैआसक्त॥ पुरग्रांमाहिंआइजौपरैं
भिक्षाअर्थप्रवेसाहिंकरै॥३८॥ देहपवित्रसेत
बनसरिता॥ बानप्रस्थजहांआचिरिता॥ त
हांतहांनितहीचलिआवैं॥ तिनिआश्रमनिवि
हारपावै॥३९॥ तिनकैंलहैंसिलाकोअंन॥ तातैं
होवैमनपरसन॥ ताहीतेंनमलतालहैं॥ उपजे
ज्ञानसकलमलदहैं॥४०॥ इंद्रियअर्थनिस
त्यनदेषे॥ हणअंगुरसबनस्वरलेषे॥ तातैंस
वतैंगहैबिरक्ति॥ नहिंउपमानिबिषैआसक्ति॥४
॥ यहसबअहंकारकरिजांनैं॥ आत्मबिषैस्व

सुमममाने ॥ कहेन हेदै सिर तु न जाई
मन क्रम बचन दुरि परिहरै ॥ ४१ ॥ ज्ञे
सो बिधि जब उपजै ज्ञान ॥ द्रोही अग्र त न
सब ज्ञान ॥ मेरा जाहि हदै मे ग्याने ॥ न ग्र
बबणी ओछि टकाके ॥ ४३ ॥ त्रिगुण लिया
दोऊ भ्रम मजाने ॥ वेद स्मृति को पंथ न मं
नें ॥ अति उग्र पाप बाल कै पाप दे ॥ मि
थ्यानिपुण के दुष्ट के दे न गहे ॥ ४४ ॥ प्र न
मै परिहरो उनके न [illegible] न न न [illegible]
वृत ॥ पुण्य न [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

ज्यौं कहै सुनैं त्यौं त्यौं हौ ॥ तत्वमतो नहि त्या
गे क्यौं ही ॥ ४६ ॥ काहूतें उदवेग न आंनें ॥
अरु काहूकौं आपुन गांनें ॥ निंद्या आदि
सहै दुरवैंन ॥ अंतर धरै निरंतर चैंन ॥
४७ ॥ काहूकौं अपमांन न करै ॥ मन क्रम
बचन मांन बिसरै ॥ पसु समांन बैरादि
नगानैं सकल बिकार देह के मांनें ॥ ४८ ॥
जो आतम अपने तन मांहीं ॥ सोई सब दू
जौ कौ नांहीं ॥ ज्यौं बहु घटनि मांहि सासि
एक ॥ घटनि संग जानिये अनेक ॥ ४९ ॥
तातें इष्ट अनिष्ट हि करैं ॥ जांनिये अरै

सोसबआउ दिकों बिसारै॥तातें आत्म
बुद्धि दिराबै॥ऐदेदेह कत ते सब नाबै॥
५०॥समय पाय भोजन नाहि आवै॥तो हू
कछु न मन मैं ल्यावै॥कर्म रचित सब
हानि जानै॥तिन हीतें सब सुष दुष मानै॥५१॥
तेसब सुषदुष कर्म सरीर॥यों
आत्म मैं ज्यों मृग नीर॥केवल आहार
हि नाहि नाषै॥उद्यम ऊं कारि ज्ञां णाहि
राबै॥५२॥प्राणानि राषे होइ बिचार त
हें मो हि छूटै संसार॥जो मेरी इछा ते आ
वै॥उत्तम मैं ध्यम सो कछु पावै॥५३॥

सौ असनवस्त्रादिकचहै॥ जैसौ आवैतै
सौगहै॥ प्रिय अप्रिय की बुद्धि न आनै॥
दो ऊ मिथ्याईकरिमानै॥ ५४॥ कोई हेतु
न मन मैं धरै॥ मो बिन और सकल परि
हरै॥ सौच आचमन अरु अस्नाना॥ औ
रौ कछु आचरण नाना॥ ५५॥ ते कछु सं
का ते नहिं करै॥ जो कछु सो इच्छा आचरै
॥ ज्यौं मेरे श्रुति को भय नाहीं॥ दो ऊ भ्रम
जानत है मांही॥ ५६॥ परितया पिकर्म
नि आचरै॥ लोकानि को हित मन मैं धरै
॥ त्यौं ज्ञानी विधि किंकर नाही॥ विधि

मांनवबुद्धिकदेनदिलेषे॥ ६१॥सरधा
साहितअसूयानजै॥मनक्रमबचनानिरं
तरनजै॥जौलगिअसाविचारहिपावे॥
तौलगिगुरताजिकहूंनजावे॥६२॥पांछै
ज्यौंजांनेत्यौंरहै॥परमहंसकेधर्मनिग
है॥पारिजानिषटारिपुजौतेनांही॥इंद्रि
यअर्थविचारतमांही॥६३ चंचलबुद्धि
नज्ञानविराग॥ताकौंसकलवृथाहैत्या
ग॥मैबहिषाहूजीवकाकरै॥ताकौदो
षकहौनाहिपरै॥६४॥देवापितरादि
भूतानिमाबै॥तिनकौरिणासिरऊप

त
रिषै ॥ अंपरि गति मैं सौं हि ह्रि पावै ॥ श्री
पुहिं वै वैं धउ पावै ॥ ६५ ॥ सो सुष कौं न
लहै या लोक ॥ अरु सौं न छूटो इ पर लो
क ॥ ऐसे वर्णाश्रम के धर्म ॥ इन तै मलि
लहै दहि कर्म ॥ ६६ ॥ अब चारयो के धर्म
प्रधान ॥ न्यारे न्यारे कहौं वषांन ॥ ब्रह्म औ
रु आदि सा संन्यासी कौं ॥ श्रुति विचार
तपव नेबासी कौं ॥ ६७ ॥ अरु इन मैं दया उ
त्तम म कर्म ॥ प्रथम जु गुर सेवा धर्म
॥ ब्रह्मचर्ज तप सौच संतोष ॥ सकल
सुहद कतहूं नाहिं रोष ॥ ६८ ॥ मे

नसकलममकारण॥एसबाहिनुकेधर्म
साधारण॥गहीदेड्वानितारितुदंन॥
मूत्लिनगमनकेरोदिनआंन॥दरीयावि
धिअपनेअपनेधर्म॥मेरेहेतकरैसब
कर्म॥सबमेजांनैमेरोभावै॥कादूंपर
नाहिधरैकुभाव॥७०॥सोपावैमेरीदृढ
भक्ति॥औरसकलतेवारेबिरक्ति॥ताते
उपजैमेरोज्ञान॥देवैमोहिमिटैसब
आंनै॥७१॥ऐसौकृपावैममरूप॥ब
हुरिनआवैभवकूंप॥जेहैसकलबर्ण
आश्रम॥तिनकेएमेंभावेधर्म॥७२॥

भक्तिसहितएमो हि मिलावै ॥ भक्ति बिना
भवसिंधुवहावै ॥ श्रै सौनत्वलहै तेति
रै ॥ औरसकलानिनऊनमैंमरै ॥ ७३ ॥
दोहा ॥ यइउद्धवसोसौंकह्यो ॥ वर्णाश्रमके
धर्म ॥ जातेमनभक्तिहिलहै ॥ छूटैबंध
नकर्म ॥ ७४ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेएकादशस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसंवाद
भाषायांवर्णाश्रमनिरूपणंनामअष्टाद
समोध्याय: ॥ १८ ॥ चौपई ॥ १३६० ॥ श्री
भगवानउवाच ॥ उद्धवएवर्णरुआश्रमा
तिनकेमैंसबभाषेधर्मा ॥ १ ॥

भाति उपाहै ॥ ताते मेरे ज्ञान दिपावै ॥ १ ॥ ज्ञा
नादि पाइ सकल भ्रम जानै ॥ वर्णाश्रम मि
थ्या करि मानै ॥ सब साधन तजि मो कौं
ध्यावै ॥ और कछू हृदै नहि ल्यावै ॥ २ ॥ ज्ञा
नी कै मेही हौं साधन ॥ अरु मेरोई नित अ
राधन ॥ मोही करि मो कौं आराधै ॥ तन म
न इंद्रिय मो सौं बांधै ॥ ३ ॥ मो बिन स्वरग
दिक नहि लेई ॥ मेरे ईश्वरण नित चित दे
॥ मो बिनु मुक्ति कदे नहि गहै ॥ मो बिन
सकल बासना दहै ॥ ४ ॥ मैं ही हित मेरो
ताके प्रिय ॥ मो बिन और सकल लख्यो तिय

त्रियजे है साहि नज्ञांन बिज्ञांन॥ तेईजांनै
मो हिसुजांन॥५॥ ज्ञांनीते मेरे प्रियनां
ही॥सदा बसे मेरे मनमांही॥ मेताको
रो है सो ईहूं ज्ञानही पर सपर कोई॥हि
जपतपतीरथ ब्रत अरु दांनां॥ कहीक
लोजो बिधिनांनां॥ तेसबकरैं नहिफ
ल ऐसो॥ ज्ञांनकलाते हो वैजैसो॥७॥
ताते ज्ञांनहृदै मे धारो॥ औरे साधनस
वारो॥सबमें रूप आप नो जांनो॥ मोहि
जांनि प्रभु सेवा मानो॥८॥ कैकारि
नाबिज्ञान॥ देखेसकलए के

हुतै मम निजरूपसमाए॥जहांजाइ
कोई नाहिं आए॥९॥जबही प्राणीज्ञांनहि
पावै॥तबही मम निजरूपसमावै॥ज्ञांन
बिनां नाहिं पावै मोहि॥यह निजमत तो क
हत हूं तोहि॥१०॥उद्धव तो मैं बिबधि बि
कार॥जनम मरण सुष दुष परकार॥
ते समस्त या तन के जांनौं॥सो तन मा
या भ्रम करि मांनौं॥११॥आपुहीं सुद्ध नि
रंजन देषौ॥द्वैत अतीत एक करि लेषौ
॥जे जैं सकल जगट देहादि है आतम मैं दु
तिन आदि॥१२॥अरु और तहूं र है कछू नां

द्दुतै मम निजरूपसमाए॥ जहां जाइ
कोई नाहि आए॥६॥ जब ही प्राणी ज्ञांन हि
पावै॥ तब ही मम निजरूपसमावै ज्ञांन
बिनां नाहि पावै मोहि॥ यह निजमत तो क
हतहूं तोहि॥१०॥ उद्धव तो मै बिबिधि बि
कार॥ जनममरण सुषदुषपुरकार॥
तै समस्त या तन के जांनौ॥ सो तन मा
या भ्रम करि मांनौ॥११॥ आपुही सुध
रंजन देषौ॥ द्वैत अतीत एककरि लेषौ
॥ जे जे सकल जगत देहादि ते आतम मैं दु
तेन आदि॥१२॥ अरु अंत हूं रहै कछू नां

ही॥अबअज्ञानद्वैतबरतांही॥ज्ञानदृष्टि
करिदेषैजबही॥त्रिगुणरहितआपुद्वै
तबही॥१३॥जैसेरज्जुमांहिआहिक
हौंआदितैंद्वैतभ्रांतनहिरहै॥भ्रमते
भयमंदमतिमानैं॥हैनाहीपारिहैसोजा
नें॥सोदेहादिसर्वंभ्रमदेषौ॥आपहि
सदाब्रह्ममयलिषौ॥ऐसोसुनिहरिजी
सोज्ञानहि॥उद्धवजनपूछ्यौभगवांन
हि॥१४॥उद्धवउवाच॥हेप्रभुज्ञानकृपा
करिकहौ॥मेरेनांनांभ्रमकौंदहौ॥ज्ञान
सौंहीभाषौविज्ञान॥भक्तिआपनीपर

रसकनांही॥मैंबिचारिदेष्योउरमांही
२०॥तुम्हरैचरणछत्रसिरधारै॥सोसम
स्तसंतापनिवारै॥ताकौंदसदिसिश्रम
तहिबरषै॥ताकेदरसश्रोरसबहरषै
॥२१॥ज्योंकाहूकंगालहिलीजै॥ताके
सीससछत्रलेदीजै॥सोह्वैनृपजहांसुष
पावै॥अरुश्रौरनिकेदुःषमिटावै
२२॥त्यौंतुवचरणछत्रसिरिधारै॥सो
अपनेसबदुषनिवारै॥सोमैंतीन्योंलो
कनिमांही॥तासमिश्रोरकहूंकौंनां
ही॥२३॥अरुजेताकीसरणहित्रा

वै ॥ ते ते सकल परम सुष पावै ॥ या नरकूं
धूप स्यो बेहाल ॥ तापरि डस्यो महा अ
हि काल ॥ २४ ॥ तातें बिषय बिषयादि
सुष जानें ॥ तिनि निमि बहु उद्यम ठानै
॥ तातें सदा अमित दुष पावै ॥ जा कौ
कबहूं अंत न आवै ॥ २५ ॥ ता कौं कृप
पियुष पियावौ ॥ कार टकूं पते मत का
जिवावौ ॥ बचनामृत कीवर्षा करौ ॥
अपने गुनि बाधि उद्धरौ ॥ २६ ॥ तुम
जगत पिता जगस्वामी ॥ जगपाल
जग अंतरजांमी ॥ ऐसे बचन सुनेम

गज्ञांन। तबउद्धवसौंभाष्यौज्ञांन ॥२७॥
श्रीभगवांनउवाच ॥ उद्धवब्रह्मकीरीत
भसोई ॥ धर्मपुत्रकौगीतासोई ॥ सरसेजौ
मैभीष्मपरे ॥ हूं भक्तौंसुनतनवचनउद्धव
॥२८॥ तेईअबमैताहिसुनाऊं ॥ जातिसौं
नबिज्ञानजनाऊं। प्रकृतिपुरषमहत
तअहंकार ॥ शब्दादिकौपंचप्रकार
॥२९॥ त्रियगुणअरुइंद्रियदसएक ॥
पंचभूतमिलिभयेअनेक ॥ थावरजं
गमबिबिधिप्रकार ॥ इनिआगईसबकौ
बिस्तार ॥३०॥ इतिबिज्ञानऔरकहूंकोकहू

नांही॥ एक दृष्टि है पेसब मांही॥ जाकी
सकल एक करि जांनें॥ ताकौं साधू ज्ञांन
बषांनें॥ ३१॥ अरु जब एअगई सतत्व
॥ माया जांनें सकल असत्व आतम ब्रह्म
एक करि जांनें॥ देहादिक सब मिथ्या
मांनें॥ ३२॥ रजु जांनि ज्यौं सर्प निवारे॥
त्यौं समस्त मग रूप बिचारे॥ जैसें दिस
मोह मिटि जावे॥ आगैं दिसि कौ पब
रि है पावे॥ ३३॥ करत निरंतर ज्ञांन
बिचार॥ देषे ब्रह्म मिटै बिस्तार॥ ताके
कहियत है बिज्ञांन॥ ताते लहै मोहि

तजित्र्ंत ॥ [illegible]
अंत ॥ सोई है अ [illegible]
प्रगट है जैसे ॥ आदि [illegible]
॥ ३५ ॥ तातें अ [illegible]
मोहीकों ले बे ॥ [illegible]
॥ घट नामा दि [illegible]
तिकौ मतौ [illegible]
तिसदा बणा जै ॥ [illegible]
बे ॥ ब्रह्मसत्य [illegible]
लघटनिमें [illegible]
भेदमिटाया ॥ [illegible]

जांनै मोहिमिटावै भेद ॥ ३८ ॥ अरु त्यों हि
सब अगटले षे सब घातके सब तन देषे
॥ अरु देषे उपजत बिनसंत ॥ यो ष्रत दृ
बिचारै संत ॥ ३९ ॥ अरु सतपुरुष भये है
जेते ॥ तिन कै बचन बिचारे तेते ॥ एकै
मतौ सबनि कौ देषे ॥ जांमें मोहि भेद न
मले षे ॥ ४० ॥ अरु त्यौं अनुभव है दे बिचा
रे ॥ चेतन रा षि अचेतन डारै ॥ सब दे
षे चेतन आधार ॥ इंद्रिय देह बिबिधि
बिस्तार ॥ ४१ ॥ चेतन तें जउ अर्थ निगदै
॥ चेतन बिन कोई नाहि रहै ॥ यौं बे दांत

रीकथासुनैंअरुकहै॥ प्रीतिसहितउरअं
तरगहै॥ ४६॥ पुजामेंअतिनिष्टाधरै॥
बहुतभांतिअस्तुतिबिस्तरै॥ बंदनक
रैप्रदक्षणादेई॥ अरुअष्टांगप्रणामक
रई॥ ४७॥ सबभूतनिमैंमोकौंजानै॥ प
रिमभजनमेरोतनमांनैं॥ ममभक्तनि
कौंजानै॥ परिमभजनमरोतनमानैं
॥ ममभक्तनिकौबहुबिधिसेवै॥ तनम
नधनतिनहीकौंदेवै॥ ४८॥ मेरहेतक
रैजोकरै॥ मोबिनऔरसकलपरिहरै॥
॥ मेरेगुणनिकहैउरधारै॥ दूजीसबकौं

मनां निवारै ॥४९॥ मेरै अर्थ अर्थ सब
ग ॥ सुष अरु भोग मिति है राग ॥ जप तप
जोग व्रत दांन ॥ सयनासन भोजन ज
पांन ॥५०॥ इत्यादिक सब मम हित क
॥ जातें अंतर सो परिहरै ॥ सदा आप
मांहि निवहै ॥ प्रेम सत्र उर ग्रंथि दहि
है ॥५१॥ ऐसे जब मम भक्ति हित है ॥
वत्रु सेष कछु नहि रहै ॥ साधन सा
ल है सो सकल ॥ काल कर्म ते होवै अ
ल ॥५२॥ जब मो बिषै चित्त कों धारै ॥
तब ह्वै सांति करजत मटारै ॥ धर्म

रीकथासुनैंअरुकहै॥ प्रीतिसहितउरआ
तरंगहै॥४६॥पुजामैंअतिनिष्टाधरै॥
बहुतभांतिअस्तुतिबिस्तरै॥बंदनक
रैप्रदछणादेई॥अरुअष्टांगप्रणामक
रई॥४७॥सबभूतनिमैंमोकौंजानै॥प
रिमभजनमेरोतनमांनैं॥ममअङ्गनि
कौंजांनै॥परिमभजनमरोतनमांनैं
॥ममअङ्गनिकौबहुबिधिसेवै॥तनम
नधनतिनहीकौंदेवै॥४८॥मेरहेतक
रैजोकरै॥मोबिनऔरसकलपरिह
॥मेरेगुणनिकहैउरधारै॥दूजौसबब

मनां निवारै ॥४९॥ मेरे अर्थ अर्थ प...
ग ॥ सुष अरु भोग निति बैराग ॥ ज्ञप ...
ज्ञ जोग व्रत दान ॥ सयुना सन जो ...
पांन ॥५०॥ इत्यादिक सब मम ...
॥ जातें अंतर सो परिहरै ॥ सदा ...
मोहि निबिदै ॥ प्रेम सत्र उर ...
है ॥५१॥ अैसे जब मम भक्ति ...
बत्र व सब कछु नहि रहै ॥ सा...
ल है सो सकल ॥ काल कर्म ते ...
ल ॥५२॥ जब मो बिषै चित्त को ...
तब है सा ति कर जत मटारै ॥ ...

रीकथासुनैंअरुकहै॥ प्रीतिसहितउरअ
तरगहै॥४६॥पुजामैंअतिनिष्टाधरै॥
बहुतभांतिअस्तुतिबिस्तरै॥बंदनक
रैप्रदक्षणादेई॥अरुअष्टांगप्रणामक
रई॥४७॥सबभूतानिमैंमोकौंजानै॥प
रिमभजनमेरोतनमांनैं॥ममभक्तनि
कौंजांनै॥परिमभजनमेरोतनमांनैं
॥ममभक्तानिकौबहुबिधिसेवै॥तनम
नधनतिनहीकौंदेवै॥४८॥मेरहेतक
रैजोकरै॥मोबिनऔरसकलपरिहरै
॥मेरेगुणनिकहैउरधारै॥दूजासबक

मनोनिवारे ॥४९॥ मेरे अर्थ अर्थ सब त्या
ग ॥ सुष अरु भोग निति बैराग ॥ जप तप ज
ज्ञ जोग व्रत दान ॥ स्युना सन भोजन जल
पान ॥ ५० ॥ इत्यादिक सब मम हित करै
॥ जातें अंतर सो परि हरै ॥ सदा आप कैं
मो हि निवेदै ॥ प्रेम सस्त्र उर ग्रंथि हि भे
दै ॥ ५१ ॥ ऐसें जब मम भक्ति हित है ॥ त
ब ऐ वसे घ कछु ना हि रहै ॥ साधन सा फ
ल है सो सकल ॥ काल कर्म ते हो वे अक
ल ॥ ५२ ॥ जब मो वि षें चित्त को थारे ॥
तब है सा तिक रजतम टारे ॥ धर्म एंश्वै

र्यज्ञानबैराग॥इनकौंसदजलहैबडभा
ग॥५३॥अरुजोमेरीभुक्तिनपावै॥द्द
भेदसौंचितलगावै॥तबहोवैरजतम
अधिकार॥बढैअधर्मपरैसंसार॥५४
॥वंद्धमुक्तिकौंचितैकारण॥बोरैचित्त
तईतारण॥मोमैधारैमोकौलहै॥नव
मैंधारैनवमेबहै॥५५॥तातैधर्मज्ञान
बैराग॥ईस्वरताआदिकजेभाग॥तेस
मस्तमेरेआधीन॥तातैहोवैममलौ
लीन॥५६॥सेवतमोहिसकलएपावै
॥मोबिनकोईनिकटिनआवै॥मेरी

भक्ति कहावै धर्म॥ उद्धव दूजो सकल अ
धर्म॥ ५७॥ एक ब्रह्म दरसन सो ज्ञान॥ या
बिन और सकल अज्ञान॥ अरु उद्धव सो
है बैराग॥ जो समस्त बिषयनि को त्या
ग॥ ५८॥ अरु ऐश्वर्ज सिद्धि अणिमादि
॥ मम सेवक की सेवक आदि॥ तातें ऊ
मम सरणहि आवै॥ सई भक्ति मुक्ति सु
ष पावै॥ ५९॥ दोहा॥ ऐसे अद्भुत बै
न जब॥ कहे कृपा करि कृष्ण॥ उ
द्धव जन हरि कीकरि॥ कीन्हे
प्रश्न॥ ६०॥ उद्धव उवाच॥

रा करुणां करै ॥ ज्यौं है त्यो सब बिधि ब
स्त रै ॥ ज्यौं तु मधर्म भक्ति कृत नाष्यो ॥ त्र
ह हरि कौं ज्ञां नहि राष्यो ॥ ६१ ॥ अस
बि रागादिक समुझाये ॥ मेरे सब संदेह मि
टाये ॥ त्यौं ही सकल तत्व सौं नाषौ ॥ हो इ अ
तनु हूरि करि नाषौ ॥ ६२ ॥ जमक हिए स
वे प्रकार ॥ अरु त्यौं कहौ नियमा बिस्तार
॥ अरु समकौं तु कौं तु दम देवा ॥ कौं नाहि
मां अरु घृति कौं भेव ॥ ६३ ॥ कौं न सूरता
अरु तप दान ॥ कौं न सत्य कौं रूव बर्षां
न ॥ कौं न त्याग कौं धन है ॥ ६४ ॥ कौं न ज

जेदक्षिणाबारि ॥६४॥बलअरुदया
लाभअरुसुष॥बिद्यालज्जासोभादुःष
॥पंडितमूर्षगृदस्यपंथ॥स्वर्गनरकऔ
रुबंधुकुपंथ॥६५॥कौंनदरिद्रकौंन
धनवंत॥कौंनकृपणकोईस्वरवंत॥
अरुइनतेउलटीहैजेती॥असमंअद
मआदिकसबतेती॥६६॥मोसौंदेवह
पाकरिकहौ॥पाषौनत्वअतत्वहिदहौ॥
यौंसुनिवद्धुउद्धवकीप्रश्न तबबोले
हपाकरिकृष्ण॥६७॥श्रीभगवानउवा
च॥ हिंसारहितसत्यअसतेयं॥संगनि

वर्जितसबकौहेयं॥ लजामौनआस्तिक
थी॥ ब्रह्मचर्यअरुक्षमाअमीरदे
रषादसजमगहै निवृती॥ अरुसौंषाद
सानिवृमप्रवृती॥ सौचरकपटराहितध
र्मादर॥ जपतपअरुममपूजासादरदे
॥ तीरथअटनआतिथिकौपोष॥ गुरुसे
वाअरुदृढसंतोष॥ परउपकारहोमवि
स्तारै॥ मुक्तिमुक्तिचाहैसौधारै॥ ७०॥ स
मजोमोमैंनिष्टाबुद्धि॥ दमइंद्रियनिग्रह
मनसुद्धि॥ जौदु:षनिउपजावैकोई॥ ति
नितेजाकेदु:षनहोई॥ ७१॥ सकलस

दैकछु मनन दिस्त्रां नैं॥ताकौंसमजनहूस
बषांनैं॥जिह्वा इंद्रियवंचलहोई॥तिमिडू
म्यौंकौं धारै सोई॥७२॥रसनारुणंबला
कौंनदिमदे॥तौकौंमरोजनश्चतिकहै॥
मृतडोदत्यागसोदांन॥ओगतजानसी
पनदिस्त्रांन॥७३॥सोईसुरजोजीतैस्व
भाव॥सोईसत्यसकालममभाव॥मोव
लीयेबचनसोसत्य॥मोतिनबोलेस
लअसत्य॥७४॥कामिसिमेजोदोषत्या
ग॥सोवदपरमसोहदैभ्राग॥सो
गतदजेफलकर्म॥सोधनरूप

धर्म॥७५॥जजरूपमेंहोंनांहिंआंन।सोव
हंणादेइममज्ञांन॥प्राणायामपरमबल
हिये॥जाकरिबडोसत्रुमनगाहिये॥७६॥
मग्गजोममरेस्वजेंहिपावें॥चेतानिनिजं
नंदकैंआवें॥मेरीज्ञक्तिएकयहलाम क्लि
कि बिना सोसकलअलाम॥७७॥जाते
दमिटैसोबिद्या॥उद्धवदूजीसकलअबि
द्या॥लज्जामांनिअकर्मनगहें॥ ममजन
ताकोंलज्जाकहें॥७८॥निदकंचननिरपे
क्षतिरलोमा॥इत्यादिकजेगुणतेसोभा
सोसुषजोसुषदुषअतीत॥पुण्यनपाप

उष्मनादि सीत ॥७६॥ विषयनिकी इछाकुं
जांनैं ॥ गुणलंपन आदि सो मांनैं ॥ बंध
त्तिकीजु त्कादि जांनैं ॥ मभज्ञनपंडितता
बषानैं ॥८०॥ अहंकार जाकै जग आदि ॥
पनेकहै दृढ़गेहादि ॥ सोसमस्त मूरिषई
नैं ॥ याते और भांति मांनैं ॥८१॥ जा
करि मोदिल है सो पंथ ॥ जोप्रवृत्ति सो स
लकुपंथ ॥ नितसंतोषी सीतलहृदय ॥ सा
ति वृत्ति सवानि पर सदय ॥८२॥ दृढ़ है
गसुषकौ मंडार ॥ नरकानिमैं तामस
विकार ॥ सतगुरएकबंधु करि जांनैं ॥

औरसकलईबैरीमानौं॥८३॥सतगुरु
मेरोरूपजॉनैजीवतजैगरदरूप॥सतगु
बिनांबंधुनहिकोई॥सतगुरुबिनुजोकै
सोई॥८४॥मानवतनसोईगरहकाहिए
केग्रहैग्रहीकैराहिए॥सोदारद्रजोत
वंत॥रूपणइंद्रियानिबसबरतंत॥
॥बिषयनित्रनासक्तसोईस॥बिषय
बसतेसकलअनीस॥इतनीब्रह्मके
मैतोसौं॥जाजाविधितुमपूछीमासै
कहि॥विधिनिषेधकेलक्षणजेसैं॥वि
निषेधकौजोलौजानै॥ऊंचनीचक

भेदनिमांनैं॥८७॥सोयहसकलनषेजां
नौं॥भेदद्रष्टिमैंविधिमतिमांनौं॥विधि
रुनिषेधद्वैदेषो॥द्वंद्वतैंपरैंताहिविधिले
षो॥८८॥विधिनिषेधपसुमांनवमांनैं॥
पंडितकदेहद्वैनाहिंआंनैं॥तातैंविधिनि
षेधभ्रमजांनौं॥ऐसोरूपसकलकरिमां
नौं॥८९॥दोहा॥विधिनिषेधभ्रमजांनत्यौं
॥ज्ञानकह्योउद्धवप्रस्न॥वेदवचनतत्वसु
मिरिकरि॥उद्धवकीन्हप्रस्न॥९०॥इ
तिश्रीभागवतेमहापुराणेएकाद
शेश्रीभगवदुद्धवसंवादेभाषायांए

नाविंशोध्याय:॥१९॥चौपई॥ १४५०॥उद्धवउवाच॥हे प्रभुजी तुम वारूणांकरौ॥ मैरौ एह संसय परिहरौ॥तुम्हरी आज्ञा करिए वेद॥ ताही मैं दीसत है भेद॥१॥बिधि निषेध सो वेद वषांनैं॥ ताही तैं सब कोई मांनै॥तुम्हरी आज्ञा कैयों भ्रम लेषै॥ जातै बिधि निषेध नहि देषै॥२॥ आरूतै प्रगट दीसै है॥ बिधि निषेध के बहु बिधि भेद॥ प्रगट बिधि वर्ण आश्रम॥ तिनि के बिबिधि भांति के धर्म॥३॥ तिनि वै प्रगट फल सुरगादि॥ अब कौं न हिये दंपथ अनादि

अ

॥अरु निषेध अगट प्रतिलोम॥ अंबष्ठादि
कजे अनुलोम॥४॥ वर्णनि में संकर है जो
॥अरु तिनि के कर्मों पुनि ते ते॥ तिनि को फ
ल प्रगट नरकादि॥ कहै हुते फल जाइ नं
वादि॥५॥ जाके फलादि वेदज्यों कहै॥ ता
कों करि नरत्यों दील है॥ अरु तौं द्रव्य द
सव्य काल॥ प्रगट विधि निषेध गोपा
ल॥६॥ अरु जो विधि निषेध नहि सत्य॥
सौं सुष अरु दुष फलौं असत्य॥ कोई स्व
र्ग नरक नहि जावे॥ तौ वहु भ्रम कार वि
धि न करावै॥७॥ अरु जा कादि यै

र॥तुम्हरेबचननआंनप्रकार॥यह्तौकहि
तुम्हरौबेद॥जातेबिधीनिषेधकेभेद॥ज
॥देवपितरमुनिमानवजेते॥बेदनयनक
रिदेषेतेते॥बिधिनषेधातिनकेफलजां
॥अरुस्यौंहीत्यौंतेऊगंने॥ए॥सकलतु
म्हारीआज्ञामांही॥ज्यौंज्यौंथापेत्यौंबरत
हीं॥सोमिथ्याक्यौंकहिएबेद॥याकौंमो
हिबतावौभेद॥१०॥बिधिबचनबेदैसं
ह॥वैहैसत्यकिंधौंप्रनुएह॥यहपूरणसं
देहमिटावौ॥एकभांतिकेबचनसुनावौ
॥११॥याबिधिपरमज्ञांनाबिस्तारै॥अ

१ नेरचेजीवतिस्ता ॥ मु जी
बांनी ॥ तवबोलेप्रास पां
हौं ॥ तेरेसबसंदेह प
उपाइ ॥ कमे मो
ज्योंजाको दे ो
कियोंबिचार ॥ औ बो कौ
॥ तौ तेविषे
कै मसबकाल
दराऊं ॥ ता तेब ल
धीनिबंध ॥ १४ सो

कलज्ञांनकेकारण॥ज्ञांनलईतेसकल
कारण॥एतुमासिद्धब्रह्मकीजांनों॥तातेव
संदेहनआंनों॥१६॥जिनिमवस्तुपज्योंदे
जांनें॥ब्रह्मलोकलोंदु:षकरिमांनें॥तातें
नकेउद्यमदहे॥औरसकलताजिथिरहे
है॥१७॥तिनकोंज्ञांनजोगअधिकार॥थि
हैकरणोंब्रह्मबिचार॥अरुजिनिबिषय
दु:षनाहिजांनें॥अरुतिनकेउद्यमना
मांनें॥१८॥परिमगुणसुनिकारिसवम
नें॥मेरोमजननलौकारिजांनें॥ताकोंम
क्तिजोगअधिकारी॥ऐसेंजांनेतत्वबि

चारी॥१९॥अरु जो विषयन के आधीन ति
के उद्यम सों लैलीन॥कथा सुनन कौं न हि
प्रकास॥अरु मम प्रीति नहीं अभ्यास॥२
॥तिनि कौं कर्मजोग अधिकारी॥इन तैं औ
रन श्रेय उपाई॥एती न्यूं जानत हौ तो सौं॥
र्द्ध चल चित के सुनियो मो सौं॥२१॥अथ
कर्मजोग विस्तारैं॥विषई जानि कौं नि
सैं॥मेरे बहु विधि गुण विस्तारा॥कथा
संग विविधि प्रकारा॥२२॥तिन में जी
न उपजै जौ लौं॥कर्मजोग न दितजिये
लौं अरु जौ लौं न बढै वैराग॥विषयनि

नमिटैअनुराग॥२३॥तौलौंकर्मजोगनहित
जै॥कर्मलिहीकारिमोकौंभजै॥अपनेधर्म
हिथिरहै॥कबहूंमूलिनिषेधनगहै॥२
॥अज्ञमहोछोबहुविधिकरै॥सकलकर्म
महितविस्तरै॥मनतेंइछासकलमिटावै॥
सोजनस्वर्गनरकनहिजावै॥२५॥अैसेंजो
नभक्तिकौंलहै॥तातेंकर्मकालिमादहै॥ उ
द्धवयहमांनवतनअैसो॥सकसृष्टिमेंन
हीतेंसौ॥२६॥स्वर्गनरककेबंछैयाकौं॥प
रिकौंहीनहीपावैताकौं॥ज्ञांननभक्तियात
नकरिलहै॥औरसबनिकारैनवजलब

दे॥२७॥जो अै सो मानव तन पावै॥सो समस्त कामनां मिटावै॥ तजै निषेध सकल ई कर्म॥अरु कांमनां है तजै धर्म॥२८॥अरु किदि नाहि वंछै नर देहा॥परमर तन नाहि षोवै य हा॥जद्यपि बहुत्यों नर तन पावै॥पहि क छु त्यां नाहि कन रहावै॥२९॥मात पिता भो ई कुल लोग॥जो न मिटावै करि संजोग॥ षान पान आदि बहु साधै॥बालापन ते ता कों बांधै॥३०॥ता तें जो लगि नांही मरै॥तो लगि जतन न प्रथम ई करै॥यातन कों॥ कारि मांनें॥अरु पुनि अ सदांनि

३१॥ तातै जतन निरंतर करै॥ सा तुचा न ता हि
दै धरै॥ या तन मैं आसक्त न होई॥ करै उपाइ
मुक्ति कौ सोई॥ ३२॥ ज्यौं पंछी तरु बासा करै
ता मैं प्रीति मां नि मन धरै॥ अरु ता वृक्ष हि
काटै कोई॥ जिनि कै हृदै दया नहि होई॥ ३३
॥ वृक्ष संग जौ पंछी परै॥ तौ तिन कै बस है कौ
मरै॥ परि जौ प्रथम हि वृक्ष हि त्यागै॥ काटत
दषि आप उठि भागै॥ ३४॥ आपु हि औसी
भांति बचावै॥ पीछें तरु हार दैज हां भावै॥ त्यौं
ही नर तन तरु आधार॥ आतम पंषि कियो
आगार॥ ३५॥ ता कौं निस दिन करै प्रहार

सदा निरंतर बार॥ ऐसो देषि धरै मन त्रास॥ प्रथम हि त्यागे तरु कौ वास॥२६॥ मो मे आइ बसेरा करै॥ ताते बहुरि न जन मै मरै॥ मानव तन भव सागर नावा॥ मेरी कृपा हु तें यह पावा॥२७॥ जामें गुरु षेवट सुषदाई॥ सानुकूल मैं पवन सहाई॥ सोहं आपु हि जो नहिं तारै॥ नाव छोडि भव सागर डारै॥२८॥ ताकौं आतमघाती जांनौ॥ दूजो आतमघातन मानौं॥ अरु जो भव ते होइ विरक्त॥ उपसम युक्त जित इंद्री रक्त॥२९॥ सो समस्त इंद्रिय वस करै॥ मन निश्चल करि मो मैं धरै॥ जो नन

रत अचल न होई ॥ तौ हूं आतुर होइ न सोई ॥
४० ॥ ए वा हि बोरन सकल निवारै ॥ क्रम क्रम
सकल उपाधि हि टारै ॥ कछुइक आसा पू
मन की हृदै धारै मूलवननै वो ॥ ४१ ॥ दे
सीता जिब कहैत ॥ सावधांन नितर है सच
त ॥ आगे फल की अवधि बतावै ॥ दु:षदि
इ बिरक्ति उपावै ॥ ४२ ॥ औसैं क्रम ही क्रम
मन थारै ॥ क्रम क्रम सकल बिकार निवा
॥ इंद्रिय गुण हृदै न ही आनैं ॥ स्वास जाति म
न की गति आनैं ॥ ४३ ॥ मन जात न कौप
उपाई ॥ या तें मन गति जानी जाई ॥ जैसें

बसतुरंगमहोई॥असवारबसुहोइनसोई
॥४४॥तबतापरचटिकैअसवार॥दरनदि
करैएकहीबार॥कछूदयकौंरुषसहितचलै
वै॥पाछैदेचाबुकहोरादै॥४५॥असीबिधि
दयकौंबसकरै॥त्यौंजोगीक्रमक्रममनधरै
॥सांष्यबिचारनिरंतरकरै॥जाबिधियह
जगउपजैमरै॥४६॥तत्वनिकीउत्पतिबि
चारै॥ज्यौंज्यौंबिनसेत्यौंमनधारै॥सकल
उपाधिवरकीदेषै॥आपुहिपरैसकलते
वै॥४७॥याबिधिजौलगिमनबस
गिकरैबिचारहिसोई॥असीबिधिज

य बिचारै ॥ गुर के बचन हृदै मै धारि ॥ ४८ ॥ तब
सब द्दां ते होइ बिरक्त ॥ मन घर मैं ह्दो वै अनुरक्त
॥ योग पंथ जे अष्ट प्रकार ॥ अरु यद् आत्म देह
चार ॥ ४९ ॥ अरु मम श्रवण कीरतन ध्यान ॥
नजीतन को पंथ न आंन ॥ जोग रु सांख्य भक्ति
ती निं सब पंथ नि मैं लानै बानि ॥ ५० ॥ इनि तैं
थौ नहीं उपाई ॥ जा ते मन मो मैं ठहराइ ॥ ताते
थौ कछू न करै स्तौ इन पंथनि मो कौं अनुस
॥ ५१ ॥ अरु जौ कदे पाप कै आवै सावधा
ता उर न रहावै ॥ तौ हूं और न करै उपाइ ॥ स
सो पाप दहै ते जो ॥ पर ॥ और करै नांना बिधि

जोई॥ सो सो अधिक अधिक मल होई॥ बिधि
निषेध सब ही मल जांनौं॥ कैहूं कछु उत्तम मति म
नौं॥५३॥ बिधि निषेध ए कीन्है दोई॥ जातें बंधे
रहैं सब कोई॥ भय तें बहु आरंभ न करैं॥ आप
आपने बिधि आचरैं॥५४॥ ता पीछें सब बंध
जनाऊं॥ करौं अबंध सकल छोडाऊं॥ सकल
न त्यागे एकहि बार॥ तातें कीन्हे बहु परकार
५५॥ तातें बिधि निषेध न हि करणां॥ सकल
त्यागि मो मैं मन धरणां॥ बिधि निषेध सब मि
थ्या जांनैं॥ अरु भव सुष सब दुष करि मांनैं॥
५६॥ परि समर्थ तजि बे कौं नांही॥ अब

न अगयौ नहिं मांही ॥ ताकौं भक्तिजोग अधिक
र ॥ सहजे छूटै सकल बिकार ५७ ॥ मेरी कथा
रंतर सुनै ॥ हृदै मांहि मेरे गुन गुनै ॥ दृढ बिस्वा
स हृदै मैं राषै ॥ मेरे गुन नांम नित भाषै ॥ ५८
यौं जद्यपि बिषयनि मैं रंहै ॥ पर मन बच क्र
म त्यागे चहै ॥ सो नित भक्तिजोग सौं भजै ॥ मो
चित्र्रै तराइ सब तजै ॥ ५९ ॥ तंत्र पंथ पूजा बि
रे ॥ मम हित जो कछु सो सब करै ॥ या बिधि स
कल बासनां नासै ॥ मेरौ रूप हृदै प्रकासै ॥ ६
॥ तातै ब्रह्म रूप मम जांनै ॥ द्वैत भाव मिथ्या क
मांनैं संसय कर्म न मर्म न यु भागे ॥ अहंकार

जिसो व्रतजागै॥६१॥जहां तहां मोही कौं देषै।मो
बिन और कछू नहि लेषै॥ असो कै ममरूपसम
वै॥ याही जन्म और नहि पावै॥६२॥ तातें जाकै
मेरी भक्ति॥ निसदिनु ममचरणनि अनुरक्ति
॥जाकै जद्यपि नांही ज्ञान॥ अरु नांही बैराग नि
दांन।६३॥ तौहू सो मोकौं अनुसरै॥ अतिदुस्त
रभवसागर तरै॥ बर्णाश्रमकेधर्म निकरै॥ नि
हृतभांतितपकौं अनुसरै॥६४॥ निसदिन
सांष्यज्ञान बिचारै॥ गहिबैराग सकल गहि
डारै।साधे योग अष्टपरकार दांनव्रतादिक
बहुपरकार।६...

वैं॥ममजनकेआधीनरहांवैं॥मेरीभक्तिस
कलसिरताजा॥जैसैसकलनरानिमेराजा॥
६६॥भुक्तिमुक्तिफलनाहिपरिहरैं॥ममजन
कीनितसेवाकरैं॥अरुजद्यपिमेंबहुबिधि
कहूं॥भुक्तिमुक्तिकछुदीन्हीचहूं॥६७॥परिमे
रेनिजजननहिलेवैं॥सकलत्यागिममचर
णनिसेवैं॥निरपेक्षतापरमहैश्रेय॥मोबिन
सकलबस्तुकौहेय॥६८॥निस्पृहतायहसुष
अपार॥जहांनकालकर्मअधिकार॥मैंनि
स्पृहनिस्पृहजोहोई॥मेरोभक्तकहीजैसोई॥
६९॥मेरेसामिलहरणहैजामैं॥मेरोरूपजांनि

तातैं निस्पृहता सुष औसो ॥ सकल बिषै नाहीं जो स
युं तामैं ॥ सब तैं निस्पृहा नित मम भक्त ॥ गै ॥ निस्पृ
हता सौं अनुरक्त ॥ ७० ॥ तातैं निस्पृह जन ॥ गै ॥ सु
षपावै ॥ स्पृहावंत के निकट न आवै ॥ ७१ ॥ ऊँ ॥ सु
कृत भक्त हैं मेरे ॥ तिनि के पुण्य पाप नहिं गेरे ॥
राग दोष बिबर्जै समदरसै ॥ त्रिगुणातीत तत्त
कौं परसै ॥ ७२ ॥ जोग भगति अरु सांख्य तीनि ॥
तीन्यौं एकै कहैं प्रबीनी ॥ इन कौं पायै गॉयौं पा
यै बिन पायै मोहि न आवै ॥ ७३ ॥ एमा भनहै
न्यौं नीके ॥ इन बिनु और न तारक जी कै ॥ गग
घन हैं मेरो रूप ॥ इन तैं तत्त न और अनूप ॥
७४ ॥ मेरो गोपि रह सिद्ध जोग ॥ जी न नयमै

द्विप्रसंजोग॥छूटैसकलत्रबिधाभोग॥व
लजालनदिसंसौरोग॥७५॥एमैंतीनिपंथ
स्तारै॥ह्नूनिकैबदुतजीवानिस्तारै॥जेइजे
इनमेंआवै॥तेइूतेमरोपदपावै॥७६॥
॥जेइनपंथानिकौतजैंकरैंकमंत्रधिका
तिनिपसुजीवानिकौकहे॥बिधिनिषेध
स्तार॥७७॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणे
दशस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसंवादे भाषायां
पाइत्रयनिरूपणंनामविंशोध्याय:॥२
सकश्लोक ८८५॥चौपई॥१५२७॥श्री
गवांनउवाच॥ज्ञांनभक्तित्ररुकमंउप

इ॥आपु मिलन कौं दिश्रव ताई॥ परिजे आतिवं
पसु अज्ञांन॥ इन कौं छोडि करै कछु आंन॥१॥
बहुत का मनां हृदै धारैं॥ तिनि हित बहु कर्म वि
बिस्तारैं॥ ते पसु दु:ख भि रंतर पावै॥ ...
दमांही बहि जांवै॥२॥ तिनि हित विधि निषे
धउचारे॥ तिनि के बहु आरंभनि गारे॥ आप
मो आपनौं जो अधिकार॥ तामैं बरतै तजि वि
॥३॥ ऊंचौ नीचौ सब परिहरै॥ आपने
...नुसरै॥ सोसो ति नतिन कौं(
धजांनौं॥ ता...
मतिदबो

बंधनलेषो ॥ उपजीवस्तुसमस्तअसुद्ध ॥ प
रिकद्दिम्राषेसुधअसुद्ध ॥ ५ ॥ क्रमक्रमसव
लछोडोवनकारण ॥ मैयहकीयोभेदउद्ध
रण ॥ पापछोडायधर्मग्रहवाऊं ॥ याबिधि
दुआरंभछोडोऊं ॥ ६ ॥ यहसमस्तजगकै
मोहार ॥ यातेजगकौवारनपार ॥ छिति
जलतेजपवनआकास ॥ सबजगपंच
तपरकास ॥ ७ ॥ ब्रह्मादिकथावरपरजं
॥ पंचभूतकारिसबवरतंत ॥ अरुए
वैआतमसबमांही ॥ तातेभेदएकहूकछुनं
ही ॥ ८ ॥ परितषापिमैभाष्योवेद ॥ तावे

रिकीन्हं नां नां भेद॥ तिनिके स्वारथ सुखके
त॥ बिधि उवारे फलनिसमेत॥ ज्यों इन्द्र सक
लगुणाइअसुभाव॥ इनके भाषे नां नां भाव
एकनि पथ एक बिधिभाषे॥ ज्यों सकोच
हिसबराषे॥१०॥ ज्यों ते दे सहास मृगनां
अरु जहं दिज सेवान करां हीं॥ अरु जो
स्मम गोबं दुरदे [illegible] परिअलेहु तहं
गहे॥११॥ अरु जद्यापि तुरकी तहं
॥परि भगद्र आदिकनु के मांहीं॥
रुजौ म गध्यादिके परिहरे॥ परिकादर
तादूरि नकरे॥१२॥ अरु कदर जतामे

होई परिजोहोवैऊसरसोई सोसोदस
निषेधकहीजे तिनमैंबासादिकनहिं
जे तिनितैऔरदेससुचिजांनै तिन
मांहीबासादिकगंनै अरुजोकालध
कौनांहीं सूतकआदिमयज्ञामांहीं १४
सोसोकालनिषेधकहीजे उत्तमसो
जा मैविधिकीजे वस्त्रादिकजलादि
कनिसुध मृत्रादिकनितैहोवैहिअसु
ध १५ सुद्धअसुद्धवचनतैत्योंही सुध
तैंपुष्पादिकयोंही तबहीपाककरयोस
सुधे बहुतकालेकोहोइअसुध १६

कहियेभूमिमसानअरुथ॥बहुतकालतें
होवैंसुथ॥भूमेजोबहुरकालतें [illegible]
तकालतेसाधैसोई॥१७॥जैसी [illegible]
ऊंजांनें॥सुद्धअसुद्धमेरपाई [illegible]
ष्मानसुद्धबालादिक॥ [illegible]
बादिक॥१८ जीरण [illegible]
द्वा॥द्रव्यवृंतकौपर [illegible]
लसक्तिअनुमांन॥ [illegible]
बषान॥१९॥सोसबहै [illegible]
विधिनिषेधकोकहै [illegible]
[illegible]गजदंत॥ [illegible]

॥२०॥ कालाग्निजलमादीबाई ॥ जथ्याजोगहै
पुद्धकराई ॥ अरुजोकछूलग्योदुर्गंध ॥ जौल
गियोयै मिटैनगंध ॥२१॥ तौलगिजांनिअसु
द्धनगाहियै ॥ गंधगयैतेंनिर्मलकहिए ॥ सत्ति
अवस्यातपअस्नांन ॥ संसकारसुभकर्म
दांन ॥२२॥ ममसुमिरणतैंह्वैसुद्धि ॥ करें
न्यथाहोइअसुद्धि ॥ मेरोमंत्रलीयेबिधिज
नें ॥ मंत्रबिहीनानिषेधदिमांनें ॥२३॥ अपै
मोहिसुद्धसबकर्मकरैबिपर्जयह्वैदिअ
धर्म ॥ देसरुकालकर्मअरुकर्त्ता ॥ द्रव्यमं
त्रएषटआचर्त्ता ॥२४॥ एजोसुधतौहोइ

सुघ॥कहूं होवै सुद्धि अ सुद्धि॥कहूं असुद्धि होवै सुद्धि॥२५॥सुद्धि असुद्धि भेद है जो कहुं
राजदंड को देता ताकै॥जो कादि ए ऊंचे को धर्म
में नीचे को है उदै अधर्म॥२६॥ अरु जो कधर्म नीचे को॥सो ई है अधर्म ऊंचे को॥ता
हीतें दो ऊ भ्रम जानें मेरो भक्त कदे न हि
ये॥२७॥जो कबहूं विषअमृत ली जै॥ले
चे नीचे को दी जै॥तो तिन मैं तौ भेद न होई
मरणों अमर एक समि होई॥२८॥यों ए
धिनिषध कर्म होवें ऊंच नीच की ओर
जोवै॥परि ए हो ऊं हे कछू नांही।

॥२०॥ कालाग्निजलमाटीबाई ॥ जघ्याजोगै
सुद्धकराई ॥ अरुजोकछूलग्योदुर्गंध ॥ जोत
गियोयेमिटैनगंध ॥ २१ ॥ तौलगिजांनिअसु
द्धनगाहियै ॥ गंधगयेतेनिर्मलकहिए ॥ सदि
अवस्थातपअस्नांन ॥ संसकारसुभकर्म
दांन ॥ २२ ॥ ममसुमिरण
न्यथाहोइअसुद्धि ॥ मे
नें ॥ मंत्रबिहानानिव
मोहिसुद्धसबकर्मक
धर्म ॥ देसरुकालक
वएघटआचर्नी ॥ २४ ॥

सुध॥कहुं होवै सुद्धि असुद्धि॥कहुं असुद्धि
होवै सुद्धि॥२५॥सुद्धि असुद्धि भेद है जो कें
राज दह्न कों देता ताके॥जो कदि एऊचे को
में नीचे को है उदै अधर्म॥२६॥अरु जो क
धर्म नीचे को॥सो ईहै अधर्म ऊंचे को॥ता
हीतें दोऊ भ्रम जांमें मेरो मरू करें न हि
मे॥२७॥जो कबहुं बिषअमृत लीजे॥के
चे नीचे कों दीजे॥तो तिन में तो भेद न
मरणों अमरण कसमि होई॥२
धि निषध कर्म होवे ऊंच नी
जो रे॥परि एदो ऊंदेंक

चारे अंतर मांही॥२९॥नीचै नीच कर्म आच
रे॥ मदिरापानादिक ऊ करै॥ तौह ऊन कौं दूष
न नांही॥ नित ही है दूषण ही मांही॥३०॥ अरु
औरही करतु है संग॥ रितु के समय जुवती
प्रसंग॥ तौ ताकौं कछु दूषण नांही॥ सौ नि
त है दूषण ही मांही॥३१॥ जैसे पस्यो घर
मै कोई॥ ता दिन पर नै कौ भय होई॥ परि
कछु चवटै है अंचै॥ संग करै ढहि आव दिन
वै॥३२॥ तातै तिनकौ संग न करणौ॥ मन
म बचन संग परिहरणौ॥ ज्यौं ज्यौं प्राणी छू
डै॥ कर्म स्यौं स्यौं छूटै पावै सर्म॥३३॥ है म

धर्मसवदिनकौ छंद॥ मेटै सोक मोह संदे
ह॥ यनि मितिमैनेह सुनाये॥ थोरे थोरे मे
द राये॥ २४ पीछे भ्रमकहिस कालनिवा
रे॥ ऐसी भांतिजीवनिस्तारे॥ जब न रवि
षय निउत्तमजांनै॥ तब तिनि मैं आसक्ति
हि वांनै॥ २५॥ तातै हृदै उपजै कांम॥ तातैं
तहांकलह कौ धाम॥ ताही दुतैं क्रोध उप
जावै॥ तब अविवेक क्रोधु है आवै॥ २६
सो अविवेक दहै सब ज्ञान॥ ...
मृतक समान॥ तातै ...

। निसदिन बहु बिधि चिंता गहै ॥ ३७ ॥ सब
हू पार्थो हो वै हीन ॥ निसदिन रहै दुषित अति
हीन ॥ ताते समुझे आपुन आंन ॥ मिथ्या जी वै
स मांन ॥ ३८ ॥ ज्यौं होवै लो हार के पाल ॥ स्व
सले तयौं षोवै काल ॥ अरु पुनि कै कर्मफल हि
त ॥ स्वर्गादिक नांनां बिधि केत ॥ ३९ ॥ तेते का
करि रुचि उपजाए ॥ मेटनि बेधा निबिधि को
वाए ॥ जैसे औषध कुटका पिवै ए ॥ बालक कै
लाडू दे बराए ॥ ४० ॥ औषध को फल लाडू नां
ही ॥ औषध हु ते रोग सब जांही ॥ स्वर्ग हेत

जो कर्म निकारै॥ पुनि सुनि तत्व कहिलं परि
हरै॥ ४१॥ तब अनर्थ तजि अर्थ हि पावै॥ मे
मेके निज कर्म समावै॥ अरु रज बतें जन म
हि पावै॥ तब तें आपु हि बिषय कमावै॥ ४२
पुत्र कलित्र कुटंब रु धोनां॥ इनके हेत च
हे सुष नांनां॥ आपु आपु कों करै अनर्थ॥
तिन कों म्रि षजांनें अर्थ॥ ४३॥ जे सयान व
मे नित नमें॥ कहन जांनें सुष के मर्मे॥ अरु
तिन कों जो भ्रम तदेषे॥ सदा निरं
तर लेषै॥ ४४॥ सो तिन कों कबहूं न बटा
अर्थ रु कांम न कहे दुटावै॥ तातें मैं नो

वाद्विधिजांनैं॥कौसैंकर्मरुकांमवषांनैं॥४५
॥परिजेकहुंस्रुतिमांहिसुनाए॥अर्थधर्मअ
रुकांमवताए॥तेतेसकलछोडावनंकार
॥हिताविचारिकीन्हेंऊचारए॥४६॥औसे
वेदतत्वनहिंजांनैं॥मूरिषपुष्पतवैनवषं
नैं॥फलनहेंतआरंभेकर्म॥तिनकौंकहैं
छूटैंमर्म॥४७॥कांमीकृपणलोभअधिका
री॥तस्माअकुलसदाविकारी॥फूलहिम
हिफलाहिकारमांनैं॥कांमनिलागितत्वन
हिंजांनैं॥४८॥मैंतिनकेनितहृदैमांही॥प
रितोहृंतत्वजांनैंनांहि॥जातेयहसवजग

गतपसारा॥ अरुसमस्तजाकी आधारा॥
भई॥ जाकीसक्तिपाइसवबरतैं॥ चंद्रुकसं
गलोकज्यौंनरतैं॥ जाकीआज्ञासबहीमांनैं
॥ कोईमरजादानहिमांनैं॥ ५०॥ औसोमैं
प्रगटसबैईस॥ जैसैंसकलदेहमैंसीस॥
परितैंकांमक्रमैंतमअंध॥ नांमौंहिदैअ
रुनहिबंध॥ ५१॥ जैसैंनयनरोगमयहोवैं
॥ आगैंहोतीवस्तुनजोवैं॥ यौंअज्ञानअं
धकर्मिष्ट॥ देवैंनहीनिकटमैंइष्ट॥ ५२॥
तैमोबिनुममतौनजांनैं॥ हरिजीवनि
जज्ञादिकगांनैं॥ ताकिरितिन्हहनैंथर

क॥जनमजनमपावैनय़सोक॥५२॥ज
ग़ाकेबहुदिसादेषी॥हानिदानिजीवजी
कापेषी॥तीनिकेहेतकरीयहबानी॥
साजज्ञादिमांहिबषांनी॥५४॥पसबध
कजज्ञमैमाष्यौ॥औरसमस्तदूरिकरि
ष्यौ॥जबप्राणीतामैंवहरावै॥तबपुनि
वैदेसकलमिटावै॥५५॥यांनिमातिप
हिसाभाषी॥सोमूरिषनितत्वकारिरा
॥तातैबहुबिधिकर्मनिकरै॥बहुकां
नांहदेमैंधरै॥५६॥पसुहिंसाकारिव
बिहारा॥जेजेपावैबहुपरकार॥देवा

[illegible]

कऊ या [illegible] जो कोई [illegible]

जावै ॥ येन दितग [illegible] को [illegible]

॥ पीछै परै बि घन जे कोई ॥ [illegible]

वै सोई ॥ सो जे ब द्दा [illegible] को [illegible]

प सुदहै लोक तेजो वै ॥ ६० ॥ [illegible]

स्वानि मेजे ॥ जहा दि क [illegible]

स्मृतश्रेत बहु सेवें ॥ तन मन धन नातिमा
न कौं देवें ॥ ६१ ॥ इहां जज्ञ बहुतु बिधिवि
जें ॥ विप्रनि बहुता दक्षिणा दीजें ॥ ताते
स्वर्गादिक पेए ॥ तहां बहुता बिधि भोग भै
गेए ॥ ६२ ॥ पुनि जब हो वैं तिन कौ अंत ॥ त
बहु जैम नु वमें धन वंत ॥ ऐसी भांति कौ म
नां केरें ॥ तिनिनिमित्ति कर्मनि बिस्तरे
॥ ६३ ॥ तिन कौं मेरी बात न भावें ॥ मर्मी
कहां ते हृदें आवें ॥ जद्यपि बेद कर्म उच्च
रें ॥ धर्म रूअर्थ काम बिस्तरे ॥ ६४ ॥ प
रितपा पित्र समई बतावें ॥ क्रम क्रम सु

जे सकल छोडां रें॥ परिस्रुतिको आसय
नहिंजांनें॥ ते कछु और और बषांनें॥ ६
॥ सक्षम महा दुर्वोध॥ जाको कोई ल
है नसोध॥ सूक्षमथूलरूप है जाके॥ मो
बिन भेद लहै कौ ताके॥ ६६॥ प्राणस्वरू
परासे नांम॥ पसंती को मन में धांम॥
जीके वमध्यमामूल॥ चौथी प्रगट वेष
थूल॥ ६७॥ भेद तीनि को कोई न जांनें।
ता ते और रे और बषांनें॥ अंत पार कोई
हि पावें॥ ज्यों सायर थाह हो नहिं जावें॥
६८॥ अतिगंभीर अर्थ है या को॥ कोई

भेदनजानैजाकौ॥मैंसबहिनमैंअंतरजां
मी॥साक्षिअनंतसकलकौस्वांमी॥६९॥
सर्वव्यापकब्रह्मस्वरूप॥लिखनकाहि
परमअनूप॥सोईव्यापकसबहिनुमांहि
॥सहरूपदूजाकोनांहि॥७०॥कमलनाल
लमैंतांतजैसैं॥सहरूपसबमैंमैंसै
॥सोईव्रगट्यौबहुविस्तार॥मनकरिह
दयहुतेसुपहार॥७१॥ज्योंमकरीतंतुनि
बिस्तारै॥करिबिस्तारबहुरिसंहारै॥ब्र
हूरूपत्यौंममविस्तार॥ज्योंऊंकारमूलऊं
कार॥७२॥तातेअक्षरबहुतप्रकार॥लि

नतेंछंदवारनदिपार॥चारिचारिअक्षर
धिकोंही॥छंदहोतऐसीविधिजांही॥७
॥एकहुतेंदोंदोंदिअनेक॥बढ़स्योंसक
एककेएक॥गाइत्रीअक्षरचौबीस॥उष्णि
कछंदअठअरुबीस॥७४॥जोबतीसअ
नुष्टपसोहै॥वृहतीनांमतीसषटकोहै॥
क्तिनांमअक्षरचालीस॥त्योंहीत्रिष्टपचौ
लीस॥७५॥जंमतीछंदअठचालीस॥क
तपारनदिकोटिबुरीस॥याविधिप्रगट
वेदबिस्तर॥जाकोंकछुवारनदिपार
॥७६॥कहोंहृदयमेंकहोंबतावे॥से

रिसकलअंतगहरावे॥ औसोमतौनजानै
कोई॥ मो बिनु मावे बिधि किनिहोई॥ ७७
जजरूपकाहिमोकौंराषै॥ सकलदेह मू
यमोकौंमाषै॥ मेरेहेतकर्मकरनावे॥ म
तेंउपज्यौसकलबतावे॥ ७८॥ अंतसक
लकौभाषैनास॥ मोकौं कहैं नित्यपरक
स॥ नांनांरूपनिवृथाजनावे॥ एकब्रह्म
दिसकँसुनावे॥ ७९॥ ऐसेसांपजेवरी
हीथीसबजगतबतावेनांही॥ मोकौंनि
जनभाषै॥ अंजनसकलदूरिकरिनांषै
॥ ८०॥ तातेंस्तुतिनितमोहिवतावे॥ परिय

तत्वन कोई पावै ॥ सो पावै जो मम आधीन
कै निदं काम दोइ लै लीन ॥ ८१ ॥ यों सुनिकु
रिस्तुति तत्व कौं ॥ उद्धव लह्यौ अनंद ब्रह्म
केरी पुनि हृष्म सौं ॥ जानै हूं टै दंद ॥ ८२ ॥
इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे
श्री भगवदुद्धव संवादे भाषायां वेद स्वरू
स पर तत्वानुति स्तुपण नाम एकाविंशोऽध्या
य ॥ २१ ॥ चौपई ॥ १६ १० ॥ उद्धव उवाच ॥
है दैवेस तत्व हैं कैते ॥ कहौ कृपा करि मो सौं
तैते ॥ जिनि कौ रचित सकल संसारा ॥ जो जै
से नाना बिस्तारा ॥ १ ॥ तुम तो अष्टा विंशति

कहै ॥ तेमैं हट करि मनमैं गहै ॥ परिबृ
मैं रिषिवृंद विधि कहैं ॥ अरु तीनितैं सुमैं
त्यौं ही गहैं ॥ २ ॥ कोई कहै तत्व छबीस अ
रु त्यौं कोई कहै पचीस ॥ केई षट अरु के
ई चारि ॥ केई भाषै सप्त बिचारि ॥ ३ ॥ केई
नव कौ करैं बिबेक ॥ केई भाषैं दस अरु
एक ॥ केई तत्व बतावै षोडस ॥ अरु त्यौं
ऐकै कहैं त्रियोदस ॥ ४ ॥ केई भाषैं दस अ
रु सात ॥ यांहि मत स्मृति बिष्यात ॥
कौन प्रयोजन लैले भाषैं ॥ अपनें अप
नैं मत हि राषैं ॥ ५ ॥ कृपा करौ निज बैन

ना है। [illegible]
नि उद्धव के [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
ले गो पाल [illegible]
वृन्दौं ज्यौं सब साधै [illegible]
राखै ॥ तैते सब तु रंजा नौ [illegible]
सबै अ सत्य ॥ ७ ॥ [illegible]
ते ॥ माया मांहि सदा ईं नैत ॥ [illegible]
तिन कौं दैये ॥ [illegible]
॥ माया मां है जु [illegible] ॥ [illegible]
नौ मनौ उच्चारै ॥ [illegible]
दा ॥ [illegible]

यह यौंहा हैं ज्यौ मैं भाषौं ॥ तेरा कही सतिन
हिं राषौं ॥ या बिधि मममाया नरमाये ॥ ति
निति निनां नां बिधि पंथ चलाये ॥ १० ॥ मम
माया की सक्ति अनंत ॥ तिन के पंथन कौ न
हि अंत ॥ जब सम दमउर अंतरि आवै ॥ त
ब एभेद सकल मिटि जांवै ॥ ११ ॥ जेते तत्व
कल माया के ॥ जित ने मत ए मते ता ताके
क्रम क्रम तत्व उपजते गए ॥ त्यौं त्यौं भेद ब
हुता बिधि भए ॥ १२ ॥ जैसे एक वृक्ष बिस्ता
॥ ताकी संपति बहु प्रकार ॥ कछु साषा ब
ते परसाषा ॥ श्रुति न के बहु बिधि उप

षा ॥१३॥ तिनकौ बहुत भांति बिस्तार ॥ पांन
फूल फल बिबिधि प्रकार ॥ अरु ताहूकौ
बरणै कोई ॥ ज्यौं ज्यौं कहै सत्य त्यौं होई ॥१
॥ थोरे ह्वौं हि कहै जो साषा ॥ बहुत हौं हि मि
थे प्रसाषा ॥ उपसाषा मिलि बहु बिधि हों
ते सब पंथ सति सब जो है ॥१५॥ यौं संसार
को बिस्तार ॥ माया मूल बहुत प्रकार ॥ तत्व
कल साषा परसाषा ॥ अरु तिनके बहु
उपसाषा ॥१६॥ तातें ज्यौं बरणैं त्यौं सत्य ॥ प
रि सब माया सकल असत्य ॥ ज्यौं ही ज्यौं जि
के मन आयौ ॥ त्यौं ही त्यौं तिन बरनि सुना

॥१७॥ माया करि बंध्यो सो आत्म ॥ तातें न्यारो
सो पर आत्म ॥ एहैं अरु जउ ते चौबीस ॥ तिन
मिलैं सकल छबीस ॥१८॥ अरु जो बंध मुक्त
है दोई ते भ्रम माया सति न कोई ॥ तातें जीव
ब्रह्म है नांही यौं पचीस ज्ञांनो मन मांही ॥१
॥ सत रज तम ए गुण है जे ते ॥ जउ रूप माय
तेते ॥ रज उतपति सातिक प्रतिपाल ॥ तांम
रूप य सत है काल ॥२०॥ रज दुते कर्म अधि
कार ॥ तंम ते अबिबेक अपार ॥ सातिक गु
ते उपजै ज्ञांनां ॥ ए हैं माया के गुण नांनां
२१ ॥ इन तें परे आत्मा मांनों ॥ तातें ब्रह्म रूप

रिज्ञांनें ॥ पंचवीसतादीतें कहें ॥ अरु सोंहीं
निओरीगहें ॥ २२ ॥ सोही कालगुणनिविस्ता
॥ स्वत्रस्वभाव [illegible] दिंयसारें ॥ तातें काल
रूपहरिज्ञांनों ॥ अरु स्वभाव महतत्व हिंमा
॥ २३ ॥ तातें तत्व अधिक नहिं गाहिए ॥ पंचवी
छवीसें कहियें ॥ प्रकृति पुरुष महतत्व अहं
र ॥ तनमात्रा तेपंचप्रकार ॥ २४ ॥ कारण रु
चा नयन रसघ्रांन एपचों इंद्रियहैं ज्ञांन ॥
पुउपस्थचरणकरबानी ॥ पंचकर्मइंद्रिय
ज्ञानी ॥ २५ ॥ मनदसहूं इंद्रियकोराजा ॥ जा
कीसक्तिकरेंसबकाजा ॥ क्षितिजलते

नञ्चाकास॥ अगईसती निगुणपास॥२६॥ग
उत्सर्गकर्म अरुवचनं॥ एपंचौंइंद्रियफल
चनं॥ तातें अष्टाविंसतितत्व॥ अविकनम
वैंज्ञानीसत्व॥२७॥सृष्टिआदितामायएक
रूपसक्तितेनयअनेक॥ तनमात्रारुमहत
अहंकार॥ एहैंकारणसप्तप्रकार॥२८॥पं
भूतअरुमनइंद्रियदस॥ कारजरूपप्रकृ
षोडस॥ सतरजतमगुणतीनिप्रकार॥ ति
तेंरचौसकलबिस्तार॥२९॥कारणकर
प्रकृतिएजोनौं॥ पुरुषनिमित्तरुसाषीमांनैं
इछासक्तिपुरुषतेंपावैं॥ मिलिसमस्तसब

ष्टिउपावै॥ ३०॥सप्तधातको सब बिस्तार॥आ
त्मदृष्टाकी आधार॥सकलतत्व सप्त दिमों आ
ए॥ तातें एकनि सप्त बताए॥ ३१॥ पंचभूत आप
ही उपजाए॥ तिनिकै बहु बिधि देह बनाए॥ आ
पुष वेस कीयो हरि तिनमें॥ चेतनि दीसत हैं जिन
जिनमें॥ ३२॥ ऐसी बिधि षट को बिस्तार॥ आ
पुमांहि बहु करे बिचार॥ पृथ्वी आप तेज त्रय
तत्व॥ अरु आत्मन मत सब सत्व॥ ३३॥ या बि
धि चारि तत्व बिस्तार॥ ऊंचो नीचो सब संसार
॥ पंचभूत तन मात्रा पंच॥ पंचें इंद्रिय मिलि प
पंच॥ ३४॥ मन आत्मा मिले दस सात॥ तत्व

सब्द सर्जा नौं तात ॥ मन आत्मा एक करि जां
तेज न षोड सत तत्व बषांनै ॥ ३५ ॥ पंच भूत अरु
न्द्रिय पंच ॥ अस जीव मन कौ परपंच ॥ ऐसी
धिकारि पंथ चलावै ॥ तेरह कौ सब जगत ब
वै ॥ ३६ ॥ इंद्रिय पंच पंच ई भूत ॥ आत्मा मिलि
सब जग उदभूत ॥ ऐसी बिधि एकादस कहै
॥ त्यौं ही त्यौं सुनि हृदै गहै ॥ ३७ ॥ पंच भूत मन
बुद्धि अहंकार ॥ आत्मा मिलि नव कौ विस्त
र ॥ ऐसी बिधि बहु मारग कहै ॥ जुक्ति बिचा
रि हृदै मैं गहै ॥ ३८ ॥ प्रकृति पुरुष कौ लहै
बेक ॥ इन कौं जांनि एक कौ एक ॥ ऐसो सु

नितत्वनिकोज्ञान॥ उद्धवपुछ्यौपरमसुज्ञा
न॥ ३९॥ उद्धव उवाच॥ हे प्रभूजीयहज्ञान
सुनाञो॥ मेरे उरकौतरमहिमिटावो॥ चेतन
ज्ञानरूपअविनासी॥ सुद्धानंदपर्मपरका
सी॥ ४०॥ ऐसोआत्मतुम्हारोरूप॥ परेगुन
नितेंपरमअनुप॥ जडविनासमयपरमअ
सुद्ध॥ दुःषरूपपं॥ लहसुषनसुद्ध॥ ४१॥ ऐ
सीप्रकृतिपुरुषतेंन्यारी॥ तौहूंभईपरसपर
प्यारी॥ प्रकृतिमांहिआत्ममिलिरह्यो॥ अ
रुआत्मांप्रकृतिकारिगह्यो॥ ४२॥ दुनभेभे
दनजांन्योंपरे॥ एकमेकह्वैसबअनुसरे

इनमैंप्रकृतिकहांलौंकहिये॥कौंनआत्मा
हिकारिगहिए॥४३॥कारिकरुणांबाणीबि
स्तरौ॥बचनबोनसंसयपरिहरौ॥तुवमाया
यौसंसार॥तुमहीहुतेहोइउधार॥४४॥तुमह
मायाकीगतिजांनौं॥कृपाकरौतबतुम्हहीं
नौं॥बांनीसुंनीभक्तअपनेकी॥तबबोलेश्रीह
स्नविवेकी॥४५॥श्रीभगवानउबाच॥
हेउद्धवयहज्ञांनअगाध॥कोईएकलहैम
मसाध॥सोयहज्ञानसुनांऊंतोहि॥तुहैस
अनव्रतमोहि॥४६॥उद्धवप्रकृतिरचेसंस
र॥सूक्षमथूलनबिबिधिप्रकार॥उपजेब

तेहोइबिनास॥ तामैं आनमानि तपरकास॥ ४७
॥ उद्धव यह है मेरी माया॥ तिनि सेंरज तम गुण उप
जाया॥ तिनि कौ त्रिबिधि सकल बिस्तारा॥ जा
कछु वार नहि पार॥ ४८॥ त्रिबिध कहन कौ पारि
बहु भेद॥ जिन तें जीव लहै नित षेद॥ अध्यात्म
आधिदेव अधिभूत॥ त्रिबिधि रूप सब जगउ
दभूत॥ ४९॥ दग अध्यात्म रूप आधिभूत॥ र
बि आधिदेवत मिलि अदभूत॥ तीन्यौं मिलें प
रस परजवही॥ तिन कौं कारिज सीझैं तबही
॥ ५०॥ तीन्यौं बिनां कछु नहि होई॥ तीन्यौं मिलि
वरतै सब कोई॥ त्वचा सपरस पवन सौं जानैं

करणरूसद्दिसायोंमांनौं ॥ ५१ ॥ नासांगधु
स्विनीसुता ॥ जिह्वारसरूवरूणजलसुता ॥ स्वि
चेतनांअंतरजांमी ॥ बुद्धिबोधनांब्रह्मास्वांम
॥ पर ॥ अहंकारअहंकरतारुद्र ॥ मनमांविधु
देवताचंद्र ॥ याबिधित्रिबिधिप्रपंचपसमा
॥ सकलपरैंआत्मनिजसारा ॥ ५३ ॥ इनतीमैं
नजगतनहोई ॥ तेआत्मबिनरहैनकोई ॥ स
दिसकलकीआत्मएक ॥ जातैंचेतनहोंदि
नेक ॥ ५४ ॥ सुप्रकाशआत्मअबिनासी ॥ चे
नरूपसकलपरकासी ॥ एसबआत्मकेअ
र ॥ अरुआत्मासकलकेपार ॥ ५५ ॥ बिनां

त्मां कहुं न हो होई ॥ अरु आत्मां न जांनै कोई ॥ मह
तत्त ते उपज्यौ अहंकार ॥ तिहूं गुणनि कौ त्रिविधि
प्रकार ॥ ५६ ॥ सो अज्ञान मूल करि मांन्यौ ॥ ताको की
यौ जगत मय जांन्यौ ॥ सो आत्मां आपण हि लियौ ॥
भव मय आपु आपु कौं कियौ ॥ ५७ ॥ आत्म सद
एकई रूप ॥ अहंकार ते परे अनूप ॥ सो जब
रूप आपनौ जांनौं ॥ तब ही सकल उपाधि
हि मांनै ॥ ५८ ॥ सो कछु है एनहीं उपाधि ॥ प
रि आत्मां लई करि व्याधि ॥ समुझै जब
पनौ रूप ॥ तब आत्मां तजै भव कूप ॥ ५९ ॥
अरु तब रूप आपनौ जांनैं ॥ जब भमच

ह है मैं आनैं ॥ जद्यपि मिथ्या सब संसार ॥
केछु दासै विविधि प्रकार ॥ ६० ॥ परि जौ तै
नहीं मोकौं भजै ॥ तौ लौं निज आज्ञान न तजै
जब दासे रसरणादि आवै ॥ तब ही आत
ज्ञान ही पावै ॥ ६१ ॥ ॥ औसै सैसामुध
सुनि ॥ प्रकृति पुरुष कौ ज्ञान ॥ उद्धव कौ
ही ब्रह्म तब ॥ हरि जन परम सुज्ञान ॥
॥ उद्धव उवाच ॥ तुम करि रहित
छहैं जिनकी ॥ कहि रहे व कौन गति
नकी ॥ सकल बियापी आतम एक ॥ कैसे
करि पावै देह अनेक ॥ ६३ ॥ आरुसुम

सुभकर्म हैं जेते॥ त्रिगुणरचित कहैं सब तेते॥
तिनि कर्म हीं तिनि ह्कर मबंधावे॥ क्यों कहि
जोनि अजोनी पावे॥ ६४॥ अमर मरै कैसे क
देवा॥ या कौ मो हि बतावौ भवा॥ यह तुम बि
नान कोई जानें॥ जद्यपि बिद्या बेद बषाने
॥ ६५॥ जो कछु पढ़ै बंध सो होई॥ तातें तत न
में कोई॥ या बिधि उद्धव पुछ्यौ ज्ञान॥ तब द
बोले श्री भगवान॥ ६६॥ श्री भगवानुवाच
॥ उद्धव यह मन परम बिकारी सब इंद्रिय
नि मांहि अधिकारी॥ इंद्रियन कै मन ई सब
करै॥ सुष दित बहु उद्यम बिस्तरै॥ ६७॥

॥तनजावै॥तहांइतहांग्रात्माग्रावै॥जिनजि
[illegible]जैनसुषनसुनैग्ररुदेषै॥तिन
नकौंउतिमकरिलेषै॥६८॥तिनकोंसोमनकि
हिनुध्यावै॥यहतनहीनमयेतहांजावै॥वह
पाइबिसारैयाकौं॥जनममरणकहियतु
कौं॥६९॥जातनमेंबाधैग्रभिमान॥छोडै
वतनजोग्रान॥जनममरसाग्रात्मकौंसो
हूजोजनममरणनहिकोई॥७०॥जैसेंस्व
मनोरथजावै॥यहतनछोडिग्रौरईपावै
तबयातनकीसुधिनरहै॥वाहीतनकौंग्र
पुहिकहै॥७१॥जनममरसुमृतिकौं
ई॥ग्रात्मजनममरणहैसोई॥ग्रौरकौ

आत्म नहि मरै॥ अरु कबहूं नांही अवतरै ॥७२॥ योंन नेमें मनको आनि मांनी॥ तातें तन उपजत है नांनां॥ तेसब आत्म के आधारा॥ तन मन बुद्धि चित्त अहंकारा॥७३॥ तिन संगति आत्मको दुष॥ तिन्ह हित जे बिनपल नहि सुष॥ उद्धव सकल देह हैं जेते॥ सदा सकला बिनसत हैं तेते॥७४॥ काल नदी बग्ग देह बंड॥ ताकरि पलक परतन हि षंड॥ जैसें नदी निरंतर बहै॥ परि देषन कों हीर है॥७५॥ अर ज्यों अग्नि निरंतर जावै॥ परि दीपादिकतिमें रहावै॥ अरु जैसें सब

हसालिकेफल॥दासैंसोपरिथिरनांहीपल
॥७६॥ सौंहीसबदेहनिकौंजांनौ॥कालय
स्तानिरंतरमांनौं॥जद्यपिअवस्थाजाती
षे॥बालकुमारजुवादिकदेषे॥७७॥पा
तौहूंसुरिषनहिजांनैं॥मैंवहईहौंयोंका
मांनै॥यहआत्मसोसदाअजन्मो॥देहसं
तेपावैजन्मो॥७८॥अरुसोंअमंतरजां
॥देहसंगमरतोसौमांनौं॥जैसैंअग्निदारु
संगा॥सदालहैउतपतिअरुभंगा॥७९॥जे
लगितनकीसंगतिरहै॥तौलगिआत्मअ
ढुषसहै॥गर्भप्रवेसरुद्धिअवतार॥बा

अवस्थानथाकुमार ॥ ८० ॥ जोबनमध्यजर अरुमरण ॥ नव्रअवस्थादेदत्राचरण आतमएकरूपसबहिनमें ॥ कबेदनदीलि पेतिनतिनमें ॥ ८१ ॥ असेजोनिमुक्तनवेहोई ॥ मेरोसरणागतजोकोई ॥ अपनोंदादोपि ता बिचारे ॥ तिनकोमरणोंउरमेंधारे ॥ ८२ ॥ भाईऔंअबमेंअनुरक्त ॥ तोंदीतेऊते आसक्त ॥ तेतोअगरकालबसनये ॥ परब सपरछोडिसबगये ॥ ८३ ॥ मेरीयोंदेहेगति ऐसी ॥ भईबापदादेकीजेसी ॥ अरुमरेअब बालकजैसे ॥ दमदकेतपिताकेतेस ॥ ८ ॥

सकलत्र्यवस्यासबममगई॥यद्भौत्रगट
औरईमई॥याहीबिधिजैहैसबदेह॥सब
वहैपुत्रधनऐहै॥८५॥यौउरमैबहुमांहि
विचारै॥अपनेबंधनसकलनिवारै॥देह
दिकसबसंगतितजै॥सदानिरंतरिमोकौ
भजै॥८६॥बीजजनमफाकैतेअंत॥षेतीप
मांहिबरतंत॥षेतीकरनहारसोन्यार॥
तनन्यारोकरैविचारा॥८७॥कर्मबीजबिस
रैनांही॥दग्धकरैजेहैंतनमांही॥तनतेंऔ
पुहिन्यारोजानै॥संगकरैतेसुषदुषमानै॥
८८॥तातेतनकौसंगनिवारै॥याबिधिआ

आपुकौंनारै जौतनम्रासेआपुनजानें नं
सुषहेतकर्मबहुठांनें ८६ तिनतेंनांनादेदनि
पावै तिनदीजनामिजनाममारिजावें ...तिक
तैंसुरकैरिषिहोई राजसनरकैदानकोई
॥९०॥ तामसपष्याहि कौकैहेत यालिबांधगि
गुणजगतउदहेत ओहापिआत्मसदाओनी
हे॥ कैबहुंकछुनकैसमीहै ९१ यहितनें
करताहोई संउदोसलेथहुहेसोई ओसेनो
वैगावैकोई तिनकौंहेजौहष्टहोई ९२
पोत्योंआपुहिवेवेकैं ताननालरागादि
रषैत्योंमायागुणकैमंनिवेंनें आस

करै आपुकों मांनैं ॥ ९१ ॥ तिनही कर्म निबंधे
पु ॥ जो कछु करै होइ सब पापु ॥ तिनकों जां
तऊ नही जौ लौं ॥ जनममरणदुष मिटैन तौ
॥ ९४ ॥ जलप्रवाह दिगदा टौ कोई ॥ तट हूस
देषै चलसो ई ॥ नयनभ्रमत ज्यों कोई देषै ॥
सब धरणी भ्रमती लेषै ॥ ९५ ॥ जैसे यह भ्र
थिर जांनौं ॥ और सकल चंचलकरि मांनै
निश्चलमन करि देषै जब ही ॥ निश्चलब्र
रूप सब लषबही ॥ ९६ ॥ जैसे स्वप्नमनोरथ
षायो सब जगत असा बिषया सषा ॥ परि
घापि जगसत्यन कोई ॥ तौ हूं कहै न वर्तै

३ ९७ जैसे स्वप्न समस्त कछु नांही फरि जौ
लौ है निद्रा मांही तौ लगि सकल सत्य ई जो
मैं सुख दुख पावे उस मगो [illegible] सौ [illegible] जो
नैनी देखसजौ लौं जन मम [illegible] स्वप्न फिरै
तौलौं तातै उद्धव सकल प्रपंच जानो महा अनर्थ
रूप काहि मांनो ॥९८॥ हिरदै यानकौ उदय
छिटकावौ ॥ और जे है तेस [illegible] मिटै सो
लगि आपु हि समुझे नांही तो [illegible] दे नां [illegible]
यमांही ॥१००॥ औरऊ पुहै नहि [illegible] समुझै
समत्र आधीन नहीं जो तो [illegible] आधीन
तर रहै जगत्र पहा समी [illegible] सब सहै

॥ केईएककारेंअपमांन॥केईगाढ़िबांधेअजं
न॥केईमूतेंथूकैतनमें॥डारेंथूरिमीषकोअन
में॥१०२॥केईडडकैंमूठाडिगावें॥एकैनिंदैं
टलगावें॥एसेबहुविधिदुषउपजावें॥बहु
बिधिनयकेबैनसुनावें॥१०३॥परिजोअप
नौंथेयबिचारें॥सोएकोमननमेंनहीधारें॥
दुकष्टनितेमननडिगावें॥सोमवतजिम
चरणनिआवें॥१०४॥मेरोपंथषडगकोध
र॥जोनडिगेसोउतरेपार॥हरिकेबैननिउ
करजांनि॥उद्धवप्रश्नकरीनयमांनि॥१
॥उद्धव उवाच॥हेप्रभुएतुमबैनसुनाय

॥तिमेरे उरदु: करआए॥जो अ्रसाधवेकाजध
कोवें॥तोतेसद्देकौं नबिधिजावें॥१०६॥मेरेह
दरसनवहरावौ॥स्रद्धनउपाईमोहिसमकावौ
जेसद्दनौंउत्तमकरिजानें॥असैंऔरनृप
सवधांनें॥१०७॥परितेआइपरेनहिसद्दें॥
ऐतप्रकृतिकेबसह्वैरहें॥केवलजेतुवचर
णआधार॥तिनकेकोंईनहीबिकार॥१०८॥
तेनितनिश्चलसीतलरूप॥निर्मअनंदितप
रमअनूप॥तिनकोंकहेलिपेकछुनांही॥स
दाबसैंतुवचरणनिमांही॥१०९॥औरेसक
लप्रकृतिआधीन॥सदाबिकारनिआगेंदी

॥ तातैंतुमहीकरुणांकरौ॥ ज्ञांनादिकमम
देघरौ॥११०॥ दोहा॥ ऐसीकीन्हप्रस्नज
॥ उद्धवपरमसुजांन॥ नाथ्योसहनउपा
तब॥ भवभंजनभगवांन॥१११॥ इतिश्री
तेमहापुरांणेएकादसस्कंधेश्रीभगवदु
संवादेभाषायांद्वाविंशोध्याय: २२ चौप
१९२१॥ श्री भगवान उवाच॥ हेउद्धवऐसे
हिकोई॥ दुर्जनबचनन्हभिंतनहीहोई॥
नबचनबांनजोसहै॥ मनक्रमबचनसो
हिलहै॥१॥ जोऐसोसोधकहावै॥ यौंबि
साधुपदहिनहिपावै॥ बैचिकसीसहैनेग

बहुअपमांना॥तरसकारगम्योबिधिनां मो
हि बांन॥अरुतैमेदेमरमस्यांन॥२॥तो
ति न तें दुषदाईनऐसो॥दुष्ट वचन बो
ननितैंजैसो॥परिमैं तौ हिउ पाइसुनांऊं
॥सहन सील ताउर वहरांऊं॥३॥मोसोंसु
नौंएकईतहास॥जातेहोइहृदैपरकास
॥भिक्षुकएकज्ञानमयभाषी॥ताकीतो
हिसुनांऊंसाषी॥४॥कियौंअसाधुनि
तबाति निभिक्षुकगाथा कही॥ऊमातिअ
पनीसबईदही॥५॥सोअबसुनौंसुचि
तह्वैमोसों॥निजजननांनिकहत हूं

तो सो ॥ मालव देस रहै घर जाको षेती
बिनजीव काला को ॥ ६ ॥ क्रोधवंत
लोभी अरु कांमी ॥ बिप्र निकै अपज
स को नांमी ॥ जाकै होइ द्रव्य अधिक
ई ॥ अरु जो नहि देई नहि षाई ॥ ७ ॥ अ
पन कौं पीडा उपजावै ॥ पुत्रादिक षां
न हीं पावै ॥ देवा पितर अतिथ नहि पै
षै ॥ बैन हु कौं नहि कदे संतोषै ॥ ८ ॥ सो
दर्जजा ऐसो होई ॥ तातै नीचौ और न
ई ॥ तातै सो कदर्ज दिज भयो ॥ सब ज

में जिनि आपजस लयो ॥९॥ ज्ञाति अति
थि बंधव निजतन कों ॥ हूं न हूं है तन ध
वै धन कों ॥ पुत्रादिक कल पै दुख लहै ॥
ज्ञाति मृत्यु दुर बैनानि कहै ॥१०॥ पुत्र क
त्र रु कन्यां माई ॥ जहां लगें सबं धु सगाई
तेस बज्रो हानिरंतर करै ॥ ताकों अप्रिय
सब आचरै ॥११॥ औसो देखि पाप अति
को ॥ जहं समं नाबिन है जाको ॥ धर्म
मदू मौं कारि हीन ॥ दुहूं लोक के सुष तें ही
न ॥१२॥ जिन हित पंच जोजानिकं तव करैं ॥

ाँय इलोकनद्दि त्रलोककेवलबैठेडुष
सोक ॥२०॥ बहुतकष्टसहि इहांउपा
पुनित्रलोकनरकमैंजावै ॥प्रेमजेसा
कौजससुद्ध ॥अरुजेपंडितज्ञानप्रबुद्ध
२१॥सकलगुणनिकेहैगुणजेते ॥लोमतें
तेनासैंतेते ॥जैसेरूपवंतअतिकोई ॥
अंगनलछनहोई ॥२२॥सतकुछकौछि
टकारक ॥मेटैगुणअरुरूपअनेक ॥यों
ऊंहोवैलोभ ॥मेटैसकलरूपगुणसोभ
२३॥जबलैधनकौसाधनकरै ॥छिद्रै

तउ घमाविस्तरे॥ तबतेत्रासमसोकमयु
लहें॥ चिंताअग्निनिरंतरदहै॥२४॥रि
रूमयेंअरुरज्ञतभोगनासतलगेंनहिसु
षसंजोग॥ चोरीहिंसामिथ्यादंभकाम
कोधाबिस्मरणाथेंन॥२५॥बैररूगर्बस
पर्दीभेद॥अप्रतीतिचिंतामयषेद॥ये
इहजबहोंहिअनर्थ॥तबनिनहुंतेहो
तहैअर्थ॥२६॥तातेंपरमअनर्थकहा
वे॥मलौचहैसोदूरिबहावे॥अर्थनांम
सुनिभुलेलोक॥बिनाबिचारपांवेदुषसो

॥२७॥ पुत्र कलित्र बंधु अरु भाई ॥ मा
लपिता हित सज्जन सहाई ॥ इन्ह हित स
करैं बिरुध ॥ अरु पुत्रों मैं गनैं जुध ॥ २
॥ इन्ह काज अति क्रोध हि करैं ॥ तिन कौं
मारैं अरु पुन मरैं ॥ धन हित त्रिय प्राण
हि छुटकावै ॥ अरु पुहि मूढ नरक मैं जा
वै ॥ २८ ॥ जा कौं देव बहुत बिधि ध्यावै
॥ परिवा नर देह हि नहि पावै ॥ सो नर त
न ता मैं दिज देह ॥ ... रुणा मय हरि जी
कौ गेह ॥ ३० ॥ ता कौं पाइ अर्थ नहि स

धै॥सबताजिहरिकौंनहिआराधै॥भव
अनर्थअर्थकौंगहै॥सोभवसिंधुआपु
तैंबहै॥२१॥तातेंदूजौनहिमतिमंद॥परै
दुषमैंतजिआनंद॥देवपितररिषिभूत
सहाई॥पुत्रकलित्रआपुहितभाई॥२२
॥धननहिपाइजोइन्हिंहिंनपोषै॥औरनि
कौंनहिसंतोषै॥सौंसबत्यागिनरकमैंजा
वै॥तहांमूढनांनांदुषपावै॥२३॥सोतन
धनमैंवृथागंवायौ॥भवदुषतैनहिआपु
बंचायौ॥जाहिपाइबुधऐसीकरै॥जातैं

बदुरिनजनमैंमरै॥२४॥सोनरतनमै
हृथागंवायो॥छोड्यौअर्थअनर्थउप
यो॥बयुबलआयुसकलममगए॥नष
सबवृद्धअंगसबभए॥२५॥अबमैंअ
र्थकौनाविधिसाधौं॥डुसराधहरिके
आराधौं॥भाईजेअनर्थसबजानैं॥ते
कैयोआरंभानिगामैं॥२६॥छोडेंअर्थअ
नर्थउपावै॥क्योंसबआपुआपुदुष
पावैं॥पारिएकोईनहोस्वतंत्र॥सकल
षिवतहैपरतंत्र॥२७॥तेजाकीमाया

रिमोहे॥नटबाजीकेसमिसबसोहे॥
माईसोप्रभुबडोबलिछा॥ब्रह्मादि
सकलकोईसा॥३८॥जेधनअरुजेध
नकेदाता॥जेकामदअरुकामदिध्या
ता॥अरुबहुधर्मकर्महैंजेतेमातपित
सुखदाईकेते॥३९॥कहौकहांतेहितआ
वरैं॥मृत्युग्रस्तजेनहिपारहरैं॥कालस्व
रूपसत्रुहैजाकौं॥कहौकहांकौंसुखहै
ताकौं॥४०॥परिजेदीनबंधभगवान॥
रुणोसागरपरमनिधांनतिनही

करुणाकरी॥जातैं मम उर औमीघ
४१॥भवसागरतेतारैजाकौं॥दैदिना
वैरागादिताकौं॥तातैमोहिदियोबै
॥मेरे प्रगटे पुरणभाग॥४२॥अबजो
पुहोइकछुमेरो॥ताकरिभजनकरै
रिकैरो॥यातेनकेगुणसकलनिवा
॥मनतेसकलकामनांटारौं॥४३॥स
लसाधुअनुमोदनुवारैं॥तथाअस्तु
कहिउचरैं॥जद्यपिआपुथ्योरोहैमै
तौहूंहरिकौपदआतिनेरौ॥४४॥नु

टांगजबहीहरिध्यायो॥एकाम ह्वैरतमैं
प्रभुपायो॥तातैप्रभुसमकोईनांही॥जा
नकौप्रगटहोतपलमांही॥६५॥मनबु
क्रमअबताकौंभजौदूजीसकलकांम
नातजौ।ऐसोनिश्चयमनमेंधस्यो॥ति
हुकामयोसकलपरिहस्यो॥६६॥सीतल
हृदयत्रिषासबत्यागी॥निश्चलभयोनि
बडभागी॥अहंकारममताकछुनांही॥स
काकीविचरैभूमांही॥६७॥इंद्रियप्राण
वचनमनगहौअंतरनादरसमाहिदहौ

॥ आपुहि आहूकौं न लषावे ॥ सदा हे
ग्रहनि मैं जावे ॥ ४८ ॥ ससकार नाहित न
कौ जाके ॥ आरगादु कवस्त्र तन नता कै ॥
दक कुह यविग्र कौं जोवे ॥ तव बहुदु
ल कौ होवे ॥ ४९ ॥ केई ला कौं दंड छोडा
॥ केई पात्र कौ षो सिले जावे ॥ केई ले
कमडलु करते ॥ केई निकसन देहि न
रते ॥ ५० ॥ केई धुलि भीष मैं डारें ॥ केई
क्रोध करि मारें ॥ केई आ सन कौं ले
मैं ॥ उर्ध कारि केई पगला मैं ॥ ५१ ॥ कें

कथाकौंपरिहरैं॥मारुमारु नी उच्चरैं॥के
ईषोसिलोहिजपमाला॥केईबस्त्रजांहि
बाला॥५२॥केई अंत्रिअंनिकारदेवे॥के
ईषोसिषोसिपुनिलेवे॥केईभीषअंनले
जांहीं॥भोजनकरणोंपावैजांहीं॥५३॥के
तनमैंथूकैंमूतें॥केईनिंदाकरैंबहुतें॥के
ईकांनानिलागिपुकारैं॥केईसीसधूलिज
लडारैं॥५४॥केईमोंनछोडाईबोलेवें॥के
ईबोलतमोंनमझांवें॥केईतादिवांनिके
रिराषे॥केईजांननपावेंमाषे॥५५॥

करै बहु लछ प्रमान॥ नितै बहु बिधि म
च्छ्यान॥ यह है चोर जान नहि पावै॥ वि
न देषो निसि चोरी आवै॥ ५६॥ याको दी
सयो है बित्त॥ तातैं हैयह मा कुल चित्त
स कलकटूं बयाहि परद्द स्यो॥ जीवन क
न भेष यह धरस्यो॥ ५७॥ दिषो यह कैसो है
ते॥ महाप्रबल अंतर को षोटो॥ देषो हं म
चि दार कैते॥ परिया के ऊर जिदैन तेते॥
धीर जवंत अडगि यह ऐसो॥ पवन प्रच
न राग गिर जैसो॥ याकै जान नहम कछू कह

॥ नकज्यौंध्यांनमानगाहिरह्यौ॥ पढी योन
रिक्रोधबदिलैडारें॥काव्मांहिहैउपरिमा
रें॥हासीसहितबीनतीकरें॥हितसोबिष
नतिउच्चरें॥ ६०॥ एऔतिकदुषआवेजेसें॥
वत्रातामिकापावेंतैसें॥सीतउस्नबर्षादि
देबिक॥जरारोगआदिकतेदेहिक॥ ६१॥
सबदुबिधिपावेंदु:ष॥केदेनआवेतिनको
सुष॥ पारिसोकछुनममैंआनें॥आपने
करेकर्मसबजांनें॥ ६२॥ तबतिनमाषीगा
पाएक॥हदैधास्योपरमबिबेक॥ स्रि

केकहैबचनतबजोई॥मैंतौसोंभाषतहै

ई॥६३॥सिष्यउवाच॥सुषदुषदाइक

ानएतें॥अरुनाहिंदेहनहीसुरजेते॥ना

नहींकर्मनहीकाल॥एसमस्तहैमनकौ

ल॥६४॥जगतचक्रमेंमनैफिरावै॥जीव

हादुषमनतेंपावै॥मनकरैबिषयनकौ

ग॥तातेंहोइकर्मसंजोग॥६५॥होवैसत

मबिस्तार॥तातैंजोनिबिबिधिप्रकार

तैंदुःषनिरंतरलहै॥देहजोगतेंनिसदिन

है॥६६॥तातेंदुषदायकमनएक॥संतकहै

दपरमविवेक॥आप आत्मासदा अनीह॥प
रिसोमनकरिकरैसमीह॥६७॥मनसोबंध्यौ
अविद्यामांही॥तातैंबंधनजांमैंनांही॥विष
समांनविषयनिकोंपावै॥ताकेसंगजीवदुख
पावै॥६८॥यह है जीवब्रह्मकोंअंग॥याकोंसं
सृतिमनकेसंग॥मनकरिरहितब्रह्मसुखरास
॥सदायेकरसप्रमप्रकासी॥६९॥तातैंबंधन
मनईकरैं॥संगआत्माजनमैंमरैं॥जबमनरहि
तजीवयहहोई॥तबसिवजीवभेदनहिकोई॥
७०॥तातैंजिनआपनोंमनगह्यौ॥सो

हिर हो ॥ अरु जो मन बासि कीन्हो नांही ति
मस कलहूषणा ईजो नांही ॥ ७१ ॥ स्वर्णा दि
वै बूड़दां नांम एकादसी आदि ब्रत नांनें ॥ अ
नें अपने कर्म नि करै ॥ सोई मन मानिय मा
विस्तरै ॥ ७२ ॥ बिद्या बेद पढ़ै उच्चारै ॥ औरीं
कलधर्म बिस्तरै ॥ पारजो बसि नांही मन एव
तौ मिथ्या आचरण अनेक ॥ ७३ ॥ मन बस
काज कहै सब तेतै ॥ बिधि आचार न बेद में
॥ मन निग्रह सो उत्तम ज्ञान ॥ मन निग्रह बिन स
ल अज्ञानं ॥ ७४ ॥ तातैं जो मन निग्रह करै ॥

सा। बांधे कादे कौं बिस्तरै॥ ताकौं बिधिनढु
ते कछू नाहीं॥ सब बिधिहै मन निग्रह मांही॥
७५॥ अरु जो बासि नांही मन एक॥ सो बिधिक
रे त्यातज्ञ नेक॥ सब दिनकौ फल मन बसि क
रणों॥ मनबस काज सकल आचरणों॥७६
मन कौं बसि करै जो कोई॥ इंद्रिय गुण आपु
बसि होई॥ मन बसि बिन इंद्रिय बसि नांही॥ क
रि करि जतन बहुत मरि जांहीं॥७७॥ मन बसि
ये सकल बसि देवा॥ तीन्यों भुवन करें नित सेवा
॥ सकल बलिनु तें मन बलिवंत॥ मारी करें स

ाहिर रह्यो ॥ अरु जौ मन बास कीन्हौ नांही ॥
मसकल तृष्णा ईजांही ॥ ७१ ॥ स्वर्ग आदि
वै बहुदा नां ॥ एकादसी आदि ब्रत नांनां ॥
ने अपने कर्म निकरे ॥ संदम जम मानि य मा
बिस्तरै ॥ ७२ ॥ बिद्या बेद पढै उच्चारै ॥ औरौ
कल धर्म बिस्तरै ॥ पार जो बसि नांही मन ए
तो मिथ्या आचरण अनेक ॥ ७३ ॥ मन ब
काज कहे सब तेते ॥ बिधि आचार न बंद मैं
॥ मन निग्रह सो उत्तम ज्ञान ॥ मन निग्रह बिन
ल अज्ञानं ॥ ७४ ॥ ता तैं जो मन निग्रह करै ॥

ो॥बिधि काहे कौं बिस्तरै॥ ताकौं बिधि न दु
कछू नाही॥ सब बिधि है मन निग्रह मांही॥
५॥ अरु जौ बासि नांही मन एक॥ सौ बिधि क
हृथा अनेक॥ सब हिन कौ फल मन बसि क
रौं॥ मन बस का जस केल आचरणौं॥७६
न कौं बसि करै जो कोई॥ इंद्रिय गुण आपु हि
सि होई॥ मन बासि बिन इंद्रिय बसि नांही॥ क
करि जतन बहुत मरि जांही॥७७॥ मन बसि
सकल बसि देवा॥ तीनौं भुवन करैं नित सेवा
सकल बलि नुतैं मन बालिवंत॥ मारा करैं सब

द्रिनुकौंश्रत॥ ७८॥ मनकौंकोईजीतिन
मकैं॥ बहुतउपाइन्निकारिकरियकैं॥ ऐसे
मनकौंजीतेकोई॥ सबद्दिनुमांद्दिप्रबलदै
सोई॥ ७९॥ सोदुर्जयारिपुबसिनद्दिकरैं॥ ब
द्दरजुध्यादिकाबिस्तरैं॥ बैरी मित्रबहुताबा
गंमें॥ अनाद्दिततश्ररुद्दिततिनतेजांनें॥ ८०
सिश्रातिमुटसुपीनद्दिहोवें॥ मनजीतेबिनजु
गजुगरोवें॥ दुषरूपजउमिथ्यातनकौं॥ श्रापु
गांनिकारिबांध्योमनकौं॥ ८१॥ तबबहुकि
भेदसंबंधी॥ तिनसौंमूरिषममताबंधीयद

मैंयसमस्तहैमेरैं॥ मित्रसत्रुगनैबहुतेरे॥८
॥तातेंमूढमहादुषपावैं॥उपाजिउपाजिपुनि
रिमरिजावै॥तातेंदुषकौमनईकारण॥आ
मकौंभवजलमेंडारण॥८३॥अरुजोसुषदु
षदातारते॥मोकौंदुषदेतहैंजेते॥तेसबंसुषदु
षमोकौंनांही॥देहएकसबआपुनमांही॥८
॥तेसुषदु:षदेहईपावें॥आतमकैंकहुंनिकटि
नआवै॥अरुजघापितनकेसंजोग॥करैजी
ईसुषदुषभोगे॥८५॥तोहूमैंदुषदेवौंकाकौं
॥रूपसकलममदेषौंजाकौं॥आपुआपुकैं
दुषदीजे॥आपुनौंअहितआपुक्यौं

८६॥यातनमैंमैंहीदुषपांऊं॥अरुतिनद्रुंमैंव
ऽपजांऊं॥दंतनिमूलिजीभकाटीजै॥तौकि
हातिन्हैंदुषदीजै॥८७॥दंतनिअरुजीभहि
दई॥सोतौसकलआपुकरिलेई॥इंद्रियअ
धिपतिदेवताजेते॥जोदुषदांनिहांहिसबते
॥८८॥तौहूआपुकौंपक्यौंकीजै॥परउपाधि
कौंसिरकोंरिलीजै॥करदीजैमुषमांहिअस
सौं॥सोमुषकाटैकारिहिदसनसौं॥८९॥तौप
वकअरुबासवजांनैं॥रागदोषनावैसौंगनै
॥योसबइंद्रिनुकेसबदेवा॥करैआपमैंदोष
अरुसेवा॥९०॥तेतेसबजांनैंसौंकरैं॥ज्ञांनं

आपनैं मन नहि धरें ॥ अरु जो सुष दुःष दाता आ
पु दूजे कौं कहु नांही पापु ॥ ८१ ॥ तो यह सब आ
पनौं स्वभाव ॥ कौंनैं कौं आंनिये अभाव ॥ अ
ातम मै सुष दुष नांही ॥ उपजें ज्ञांन सकल मि
टि जांही ॥ ८२ ॥ आपु ल्हालि सुष दुष करि लीन्हें
॥ सब मिटि जांहि आपु के चीन्हें ॥ तातें दोष कौं
न कौ धारिये ॥ जो आपनौं मन बसि न हि कारिये
॥ ८३ ॥ अरु जो ग्रह सुष दुःष के दाता ॥ लोक वेद
कहियत बिष्याता ॥ तो आपुन क्यौं क्रोध हि
जे पर कौ दुष आपु क्यौं लीजे ॥ ८४ ॥ यह आ
समां हि हे जेते ॥ द्वादस रासि बसें सब तेते ॥ रा

दोषआपनमैंकरैं॥तिनकौंसुषदुषानित
परैं॥६५॥तातासिजनमजेपावैं॥तिनक
गतिसुषदुषआवैं॥तैंआतमासदाअजन
बारबारदेहनिकौंजनमां॥६६॥तातैंसुष
षतनईपावैं॥निकटआतमांकेनहिआवै
अरुजद्यपिसंगतिदुषपरैं॥आपकोघत
कासौकरैं॥६७॥करनिहारतेयहईजांनैं
गदोषभावैंत्यौंगानै॥अरुदुषदांनिहौंहि
कर्म॥तौतौसकलआपुहीमरम॥६८॥यह
उदेहकर्मतामांहीं॥आतमनिकटदेहनां
॥आतमचेतनज्ञानसरूपपरेसकलतेंपर

मअनूप॥९९॥ तातैंआपकौंनसींकरैं॥ अ
कौदोषहदैमेंधरैं॥अरुजोदुषकालतेकाहिये
॥तौआपुनमेंकदेनलहिये॥१००॥तनईकौल
हुतेदुतेदुषपावें॥तेआतमांकेभिकाटिनआवे
॥कालआतमांब्रह्मस्वरूप देहबिलक्षणसकल
अनूप॥१०१॥तातैंकालहूतेंदुषनांही॥काल
मयांनकदेहनिमांही॥ज्योंलेआगिआगि
डारै॥सोबहुआगिअगिहीजारै॥१०२॥अ
रुज्योंपालाकौकणलीजै॥लैबहुलैंपालामें
दीजै॥तौपालाकौंनयकछुनांही॥जद्यापिर

है सदा ता मांहीं ॥१० ऐसौ ही एक आत्मां व
॥ सुष दुषादि देहानि के ष्याल ॥ आत्म सब तें
अतीत ॥ इछा रहित अनीह आप्त ॥१०४॥
आत्मां पर तें परैं ॥ द्वंद्व जहां लौं ते सब वरैं ॥
ई आत्म कौं न ही जांनैं ॥ सुष दुःष कौं न कौं न
वांनैं ॥१०५॥ सुष अरु दुष जहां लौं जेते ॥ ए
क्रांतिही के सब तेते ॥ सो प्रकृति एआ पुज
॥ चेतानि आत्म ब्रह्म सरूप ॥१०६॥ केवल
स्त्रा कार
नीलियो संसार ॥ सुष दुष तन मन [illegible] त आ
॥ मोह निसा तें जागे जेते ॥ न भव भये तत्व

तेते ॥१०७॥ तातें अबमें मयन हिआं नौं ॥ आ
पुहिपरें सकल तेजानौं ॥ हरिचरणनिकी से
वा करौं ॥ ऐसी बिधिभवसागर तिरौं ॥१०८
॥ जेई जे आये हरिसरणां ॥ तिनहीतिन पाये ह
रिचरणां ॥ तातें मैं हरिचरणनि मजौं ॥ मन
क्रमबचन औरसबतजौं ॥१०९॥ उद्धवयों
दिजमयोबिरक्त ॥ तनहूमें नरह्यौ अनुरक्त
॥ बहुतअसाधनि बहुत डिगायो ॥ परिसो
कछुनमनमैंल्यायो ॥११०॥ एमाषेदसअ
सिलौक । करिबिचारमेटौभयसोक

उद्धव सुषदुषदायक॥ आतमकौं कोए ते
यक॥ १११॥ सुषदुषदाता नांहि कोई॥ जो तो क
द्वैत कछु होई॥ सुषदुषभ्रम तें जांने सकल
मए क अज्ञान्यांज्ञ कल॥ ११२॥ भ्रम छूटे दूजा
जांहीं॥ मेरो रूप मिलै मो मांहीं॥ जब सुषदुष
थ्या कार जांनै॥ मांनांपमांन द्वंदै नांहि आनै॥
धीरज धारि मम चरंणानि भजै॥ देहादिक
आसा तजै॥ तब भव सागर कौं तरि आवै॥ मे
तेज आनंद पद पावै॥ ११४॥ तातैं उद्धव मन ब
मसकल द्वैत कौं जांनौं भ्रम॥ सब ते मन कौ

यहकरौ॥निश्चलकारिममचरणनिधरौ॥
११५॥याहीकौंकहियतुहैजोग॥जाकरिहै
वैंममसंजोग॥अरुजेयागाथाकौंधारैं॥सु
नैंसुनावैंसदाविचारैं॥११६॥तिनकैनिक
टद्वंद्वनहिआवैं॥अंतकालममचरणनि
पावैं॥तातैंयाकौंसदाविचारौ॥मेरौबलअं
तरगतिधारौ॥११७॥दोहा॥ यहउद्धवतासौं
कह्यौ॥मनसंजमदृढज्ञान॥अवलापतहौं
सांष्यकौं॥सुनतमिटैज्यौंआन॥११८॥इति
श्रीभागवतेमहापुराणे ःग ८२ एका-
गवतअसंवादेभाषायांसिद्धोऽग

नत्रियोविंसोऽध्याय:॥२३॥चौपई॥१०३६॥
भगवांनउवाच॥उद्धवतोसौंसांख्यादिकहौं॥
तभ्रमश्रमादिबिनदहौं॥आदिसुनतहीछू
द्वैत॥देषेएरूबसत्रअद्वैत॥२॥प्रथमआदिमदो
रूपतेमये॥तेपेसांख्यप्रगटकरिगये॥मुक्त
ष्यजांनतहीहोइ॥सांख्याबिनांनहीछूटैकोइ
२॥सोईसांख्यकहौंमैतोसौं॥निश्चलमनह्वै
नियौंमोसौं॥उद्धवप्रथमहुतोमैएक॥मो
नकछूनहुतेअनेक॥३॥तबमैप्रकृतिआ
तकरी॥जडचेतनिद्वैबिधिबिस्तरी॥तिनदू
तउपज्यौपुत्र॥महातत्वजोकहियेसुत्र॥

॥एकब्रह्मातितेत्रिगुणकीन्हे॥लक्षणभिन्नभिन्नि
हूंकौंदीन्हे॥सत्वगुतेंत्रिविधिअहंकार॥म
रमोवनकौंबडेविकारप॥ पंचभूतजे
पृथ्वीआदि॥[illegible]सूक्षमसब्दादि॥ताम
सअहंकारतेंएते॥राजसतेंइंद्रियसबजेते
॥द्वि॥सातिकतेंमनअरुसबदेवा॥जिनकौं
पाइभएबहुभेवा॥तबसबहिनमैंवौरिमि
लायौ॥तिनसबहिंनमिलिअंडउपायौ ७
अंडसलिलमांहीथिरकरयौ

...त्रियो विंसोऽध्यायः॥२३॥ चौपई॥१०३६॥...
...गवांन उवाच॥ उद्धव तो सों सांष्यादिक कहौं॥...
...मध्यम आदि विन दहौं॥ जाहि सुनत ही छूटै...
...द्वैत॥ देषै एक ब्रह्म सम अद्वैत॥१॥ प्रथम आदि महौ...
...रूप ते भये॥ ते ये सांष्य प्रगट करि गये॥ मुक्त...
...यु जांनत ही होइ॥ सांष्य विनांन ही छूटै कोइ॥...
...र॥ सोई सांष्य कहौं मै तोसों॥ निश्चल मन ह्वै...
...नियों मोसों॥ उद्धव प्रथम हुतो मै एक॥ मो...
...न कछू न हुते अनेक॥२॥ तब मैं प्रकृति आपु...
...तिकरी॥ जड चेतन ह्वै विधि विस्तरी॥ तिन हूनं...
...ते उपज्यो पुत्र॥ महातत्व जो कहिये सुत्र॥...

॥ एकप्रकृति तें त्रिगुण कीन्हे ॥ [illegible]
हूं कौं दीन्हें ॥ सत रज तम त्रि [illegible]
रमां ब्रन कौं [illegible] विकार [illegible]
पृथ्वी आदि [illegible]
सत्र [illegible]
॥ ६ [illegible]
पा [illegible]
त [illegible]
ऊँ [illegible]

सब्ब मरम तर है॥ जन मैं मरैं बहु तडु पस है
॥१५॥ उत्तम मध्य मनी चे जेते॥ छोटे बडे पूत
रा के ते॥ जे कछु जहां लग आकार॥ ते स
प्रकृति पुरुष विस्तार॥१६॥ प्र
कृति पुरुष बिन और न कोई॥ इंद्रिय मन ग
वर है जोई॥ प्रथमादि निराकार में एक॥ त
तें ए आकार अनेक॥१७॥ अरु पुनि में हीरा
हीं अंत॥ तातें अंबहू मैं बरतंत॥ जाकी आ
अंति है जोई॥ ताके मध्य हु मैं पुनि सोई॥१८
ज्यौं माटी ते बहु घट भए॥ अंत फुटि माटी मि

लिगये॥ मांटी आदि मांटी अंत॥ तो माटी
मध्यहू बरतंत ॥१९॥ ज्यों कंचन के बहु आ
भरणां॥ आदि रु अंत एक ही स्वर्णं॥ तो मधि
हू और कछू नांही॥ नांम रूप मिथ्या है जांही
॥२०॥ त्यों जब देखै तजि आकार॥ तब मेंटा हौ
सब बिस्तार॥ आदि रु अंत मध्य मैं एक॥ मि
थ्या नांम रूप अनेक ॥२१॥ माया तें महतत्त
अहंकार॥ तिन तें होइ सकल बिस्तार॥ बहु
त्यों नास सकल को होई॥ महादादि कौ रहै
न कोई॥२२॥ प्रकृति मूल अरु पुरुष अ

श्रु जो काल सदा करतार॥ मेरी साच्छि तौ नि
हौ जानौं॥ मोतैं कैतक देमतिमानौं॥ २३॥ यु
अवधि चल्यौ जाइ बिस्तार॥ नदी प्रवाह तुल्य
आर॥ परमात्म की इंछ्या जौ लौं॥ बर्तै सकल नि
त रतौ लौं॥ २४॥ बहुर्यौं प्रलय सकल को
॥ सूक्षम थूल रहै न हि कोई॥ महा बल छि
कैमम काल॥ ताकौं सकल जगत यह ख्याल
२५॥ काल बिना सै सब ब्रह्मंड॥ कतहूं कछु न
खंड॥ अनावृष्टि होवे सत बर्ष॥ तातैं दहानि
आकर्षी॥ २६॥ छोटे बडे देह हैं जेते॥ लीन अ

मैं होवै ते ते॥ अभं भूमि मैं होवै लीन॥ भूमि
गंधं मिलि होवै लीन॥२७॥ गंध लीन होवै जल
ही॥ जल सूक्षम रस मांहि रस मांहि॥ रस तब तेज
मांहि मिलि जाई॥ तेज जोति मैं जाइ समाई॥२
॥जोति पवन मांही मिलि रहै॥ पवनहि तब सप
रसगुण गहै॥ सपरस लीन होइ तब गगन॥ गगन
सब्द मैं होवै मगन॥२८॥ सब्द मिलै तामस अहंका
र॥ सो अरु इंद्रिय दस प्रकार॥ ते सब मिलि राज
स अहंकार हि॥ मिलि करि सकल देवहिं संहार
हि॥३०॥ देव रु मन साति क अहंकार॥

अरु जो काल सदा करतार॥ मेरी साक्षितौ
ौ जानौ॥ मोतें कृत कदे मति मानौ॥ २३॥
विधि चल्यो जाइ बिस्तार॥ नदी प्रवाह तुल्य
ार॥ परमातम की इछा जौलौं॥ बर्तें सकल
ुत रतौलौं॥ २४॥ बहुरयौ प्रलय सकल कौ
ू॥ सूक्षम थूल रहै न हि कोई॥ महाबल छि
लै मम काल॥ ता कौ सकल जगत्य दयाल
२५॥ काल बिना से सब ब्रह्मंड॥ कतहूं कछु न
खंड॥ अनावृष्टि होवै सत बर्ष॥ ताते देह न
ाकर्ष॥ २६॥ छोटे बडे देह है जेते॥ लीन अ

मैं होवै तेते॥ अंश भूमि मैं होवै लीन॥ भूमि
गंधमिलि होवै हीन॥२७॥ गंध लीन होवै जलमां
ही॥ जल सूक्षम रसमांहि समांहि॥ रस तब तेज
मांहि मिलि जाई॥ तेज जोति मैं जाइ समाई॥२८
जोति पवन मांही मिलि रहै॥ पवनहि तब सप
र्स गुण गहै॥ सपरस लीन होइ तब गगन॥ गगन
शब्द मैं होवै मगन॥२९॥ शब्द मिलै तामस अहंका
॥ सो अरु इंद्रिय दस प्रकार॥ ते सब मिलि राज
स अहंकार हि॥ मिलि कारिसकल दौंहिं संहार
हि॥३०॥ देव रु मन सातिक अहंकार॥ मिलि क

रि सकल होंहि संहार॥ अहंकार महतत्व हि
लै॥ प्रकृति तिन बै महतत्व हि मिलैं॥ ३१॥ प्रकृति
ल में होवै लीन॥ काल पुरुष मिलि होवै ही
पुरुष मिले पुरु मिले पुरुषोतम मांहि॥ पुरु
म कहु जावै नांहि॥ ३२॥ भेदाभेद रहित तत
॥ नित्यानंद द्वैता बितरेक॥ चेतनि निर्मल ज्ञा
सरूप॥ पूरण अक्षय परम अनुप॥ ३३॥ त
उद्भवा मिथ्या द्वैत आदि अंति मध्य हुं अद्वैत
ल बुद बुद सम सब आकार॥ उत में मध्य म
बिधि प्रकार॥ ३४॥ ऐसे सदा बिचारै जो ई

कैकौनभांतिभ्रमहोई॥रबिउदोतरहैतमकै
सैं॥नदीमध्यदावानलजैसैं॥२५॥यहमैंभाष्यो
सांष्यप्रकार॥सकलद्वैतउतपातिसंहार॥याकै
ज्ञांननसंसयरहै॥अहंकारदृढग्रंथिहिदहै॥
२६ छोडैरूपअरूपसमावै॥जातैंबूढ़रिनदु
षकौंपावै॥तातैंयाकौंसदाबिचारै॥मोकौंआं
निआपुकौंतारै॥२७॥दोहा॥उद्धवयहतोंसौं
कह्यौ॥सांष्यज्ञानबिचार॥अबगुणवृत्तिनकौं
कहौं॥भिंनभिंनप्रकार॥२८॥इतिश्रीभागवते
महापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसंबादे

भाग्य गुसां आनि स्वपरणनां मचतुर विशेष
॥२४॥ चौपई॥१८॥७७॥ श्रीमग गांहु अव
द्धव श्रव भाषे गुण वृत्ति॥ जिनकों जानें
वृत्ति॥ जा गुण तैं जो लक्षण होई॥ भिन
सो सोई॥१॥ समदम क्षमा बिबेक स्व
निनकरे बिक्रम॥
नम मारग मैं थिर
धी ऊंत॥ पर उपका
स्ति कानि तानि हृं संग॥
गा॥ कोमल बिनय

॥अमअरुकलहसोकअरुमोह॥ निद्राआल
समयप्रद्रोह॥ ८ ॥ निसदिनुचिंताउद्यमहीन
हदैआसासाहसहीन॥ ऐसीबहुतामसकीवृ
त्ति॥ जिनतेंकहैनलहैनिवृत्ति ॥ ९ ॥ उपजैममता
अरुअहंकार॥ तातेंकरैंबिबिधबिवहार॥
तेसबमिलतगुणनिकीवृति॥ तिनतेंबाढैब
हुतप्रवृत्ति ॥ १० ॥ धर्मअरुअर्थकांमअनुरक्ति
श्रद्धालोभतथाआसक्ति॥ धर्मप्रवृतिपराय
राजैते ॥ बहुतभांतिबिस्तारैंतेते॥ ११ ॥ बरतैंअ
पनेअपनेधर्म॥ प्रियअरुगहसुषगहकर्म

॥एसब मिलित गुणनि की रति ॥ जानि तेबहु
बिधि होइ प्रवर्तति ॥१२॥सम दम आदि युते
नर जोई॥ सातिक लक्षण कहिये सोई॥ राज
स कांमादिक अधिकार॥ तांमस जहां क्रोध
दि बिकार॥१३॥जब स्वधर्म सों मो कों भजै
दृढ़ी सकल कांमना तजै॥ त्रिया पुरुष भावे
सो होई॥ सातिक प्रवृति कहीजे सोई॥१४॥ज
ब कांम नांह्यदै धारि लेवै॥ आप ने कर्म नि मो की
सेवै॥ यह स्वभाव राजस कों कहिये॥ मुक्ति
हेत कबहू नहि गहिये॥१५॥जब हिंसा ह्यदै

मैं आनैं ॥ निजकर्म निमम सेवागानैं ॥ सो वदत्तौ
मसवृति कदावै ॥ तातैं मम सुषकदेन पावै ॥ १६
॥ सतरजतम तीन्यौं गुण जेहैं ॥ जीवादिकौं बंधन
सब ते हैं ॥ ते गुण मेरी आज्ञा करें ॥ तातैं मो हि मजे
ते तिरैं ॥ १७ ॥ चित्त हुतें उपजे ए सकल ॥ इनकौं
लजैं आत्मा अकल ॥ इनकौं छोडि रहै मोमांहि
॥ बहु स्यौं उपजै बिन सैनां ही ॥ १८ ॥ कारैं साधन
रजतम परिहरैं ॥ सातिक गुण कौं वृद्धि हि करैं
सातिक सूरिजज्यौं प्रकास ॥ अति सीतल ज्यूं
चंद बिगास ॥ १९ ॥ सकल कल्यान मूल सुषकारी

॥निश्चलकरणसकलदुषहारी॥तातेंघ
ज्ञानसुषलहै॥चिंतासोकमोहभयदहै॥२०
जबसातिकतांमसनहिरहै॥राजसश्राइ
सेरागहै॥राजसरूपसंगबलभेद॥तातेमां
कर्मभयबेद॥२१॥जबसतश्ररुरजछूटैदो
॥केवलएकतमोगुणहोई॥तमबिबेकनास
कश्रावरण॥उद्यमदूरताजडताकरण॥२
॥तातेसोकमोहकोबासा॥निद्राश्रालसनि
निसदिनुश्रासा॥जबछूटैदूंजिनुकीहाति॥
रैनहीईहाउतपाति॥२३॥चित्तप्रसनम

निर्द्वंसंग॥ सोसातिकममग्रदहै अंग॥ जबतन
मनइंद्रियमनबुद्धि॥ थिरनांहिंहोंहिलहैंनहि
सुद्धि॥२४ तांमैंबिबिधिकर्मबिस्तार॥ जोजानैं
राजसअधिकार॥ जबबिकारबहुबिधिमनग
हे॥ आसाबंधनिरंतररहै॥२५॥ सोकाबिषाद
चैतनांहीन॥ सोतांमसउद्यमबलछीन॥ जब
उपजैसातिककौभाव॥ तबसबहोवेदेवस्वभा
व॥२६॥ राजसतैंअसुरनिकीवृत्ति॥ भूतगुण
निकीतमउतपाति॥ सातिकतेंजागरणौंहोई॥ २
॥राजसपावैसुपिनांसोई॥२७॥ तांमसद्वतेसु

ोकादिजोवै॥राजसमैंमरिनरतनपावै॥तामसमें

पातिलहै॥ब्रह्मतुरीयनिरंतररहै॥सातिकअरु

ोकानिजावै॥राजसनरआदिकतनपावै॥२८॥

ामसनीचेथावरआदि॥याबिधिमरमेंजीवअ

ादि॥सातिकबर्द्धमानजोहोई॥तांमेंमरणलहै

ोकोई॥२९॥सोदेवनिकैरिनरकानिलहै॥ती

ोगुणतजिमोमेरहै॥३०॥मेरहेतकर्मजोकरैं

ामेंजोफलनहिचरै॥सोवहसातिककर्मकहि

॥तातेजीवमहासुषपावै॥३१॥फलनिमित्ति

मकर्मनिगनैं॥ताकोराजसकर्मबषानैं॥हिं

ाहेतकरैममकर्म॥सोतांमसहैबडो

२२॥ भेदरहितसो सातिकज्ञांन॥ देहभेदसोरा
जसज्ञांन॥ बालकमूकतुल्यजो होई॥ तांमसज्ञा
नकहीजै सो॥२४॥ आत्मदेहरहितजोएका॥ स
हेमैरौज्ञानबिबेका॥ कैबिरक्तबासियेएकंत॥
सातिकबासकहैंसोसंत॥२५॥गृहमैंकाहिये
राजसबास तांमसजूपसुराआवास थावर
चेतममम्मरतिजहां॥ नगुणबासकहीजेत
हां॥२६॥सातिककर्त्ताजोनिहसंगी॥सोराज
सफलकर्मप्रसंगी॥बिधिकारहितताम सी
कर्त्ता॥आसलागिकर्मनिबिसतरतां॥२७॥

आपुहिमेटिरहैममसरणं॥ताकौसबनगुर
आचरणं॥सोजननिरगुणकरताकहिये
॥ताकेसंगपरमपदलहिये॥३८॥जोनिकम
आत्माजानैं॥सकलजनकीश्रद्धावानैं॥स
नत्यागिजोनिहचलहोई॥सातिकश्रद्धाक
हियेसोई॥३९॥राजसश्रद्धावानैंकर्म॥तामस
श्रद्धाकरैबिकर्म॥निर्गुणश्रद्धामेरीमांहि
॥जातेमिटैसकलआसक्ति॥४०॥पथ्यमाहि
बिनाश्रमआवै॥जामैआपनोंधर्मनजावै
जातेंउपजैनहीबिकार॥सोकहियेसातिक
हार॥४१॥षाटामीगतीषाषारा॥दुषदाय

केराजसआहारा॥जोअसुद्धहिंसातैंआवै
सोतामसआहारकहावै॥४२॥ममजनअसु
मेरौउचिष्ट॥सोनिर्गुणभोजनआतिइष्ट॥इं
द्रियसुषतल्मादिकदहै॥ताजिआरंभाविथिरहै
रहै॥४३॥आत्मतेउपजैसुषजोई॥सातिकसु
कहियतुहैसोई॥इंद्रियसुषराजसनहिगावि
ये॥निद्रआलसतामसकहिये॥४४॥मरेव
मनलिसुषजोई॥निर्गुणसुषकहियतुहैसो
॥द्रव्यदेसफलकालसजांन॥कर्त्ताकर्मआ
वस्यादांन॥४५॥श्रद्धानिष्ठाअरुआकार॥ति

रगुणनिमैंतसबबिस्तार॥जोकछुकहूंसुन्यों
रुदेषै॥मनअरुबुद्धिजहांलोलेषै॥५६॥सोस
बप्रकृतिपुरुषबिस्तार॥तिरगुणनिमितसक
लपसार॥इंनतेंजीवलहैंसंसार॥त्रिगुणकमें
युबारंबार॥५७॥जोइनितीन्योंगुणनिनिवारे
॥चित्तआपनोमोमेंधारे॥सोमरोतिरगुणपव
पावै॥बहुस्योंयाभवमेंनहिआवै॥५८॥तातें
ऐसीनरदेह॥जाकरिमिटैसकलसंदेह॥होवै
प्रगटज्ञानबिज्ञान॥पावैमोहिमिटैसबआन॥
५९॥तातैंपंडितसकलनिवारे॥मोकोंसेईआप
कोतारे॥योबिनसकलअपंडितजांनों॥जेतेअ

त्म घाती मांनौं ॥ ५० ॥ सकल इते दोवै निह संग ॥
सावधान पल पवै न भंग ॥ इंद्रिय प्राण देह मन ज
तै ॥ मम वर्चा दिन रैनि भिनती तै ॥ ५१ ॥ सकल स
कौ संगति करै ॥ राज सत्रु रू तां मस परिहरै ॥ द
दिकतैं निस्पृह होई ॥ आगैं इच्छा करै न कोई ॥ ५
॥ मो मैं धारै निहचल बुद्धि ॥ न ब पावै अंतर ग
॥ प्राविधि सातिकु ऊद्धिर कावै ॥ तातैं लि
सरीर मिटावै ॥ ५३ ॥ लिंग सरीर मिटैं भव तजै
निर्मल रूप आपनौं भजै ॥ ऐसो है मोहि कौं जा
॥ बाहरि अंतर द्वैत न मांनै ॥ ५४ ॥ मो मैं मिलि मो
मे रहै ॥ बहुत्यौं काल आगि न दहै ॥ रहै निरंत

रिमेरसंग॥तातें कहे न हो वैमंग॥५५॥दोहा
उद्धव ये तोसों कही॥तीन्यों गुणकी वृति अबजे
रों ज्ञान हिकहों॥तातें हो इनिवृति॥५६॥इतिश्र
भागवते महापुराणे एकादसस्कंधे श्रीभगवदुध
संवादे भाषा यां गुणवृत्ति निरूपणं नाम पंचवीसो ध्या
यः॥२५॥चौपई॥॥१८३३॥श्रीभगवानउवाच॥
॥उद्धव दुर्लभ नरतन है जैसो सकल सृष्टि में नांहि
जैसो॥यातन कारि ममज्ञान हि पावै॥जाते मन
तजि मोमें आवै॥१॥तातें असे तन कों पाई॥मो
मिलने को करै उपाई॥अंतर मांही मोहि
रै॥औरै सकल बासना टारै॥२॥मम

लक्ष्मणजीनें ॥ सौत्यौं आपु आपुमें गनैं ॥ अ
नीयसतबमोकौंपावै ॥ कालव्यालबहुस्यौं
नदिखावै ॥ ३ ॥ मायागुणजबामिथ्याजीनें ॥ म
रोज्ञानयाउकारिजानै ॥ पौक्कररहेदेहहूंमांहीं
॥ तौहूंफेरलियेकहूंनांहीं ॥ ४ ॥ परिजप्यपिद्दे
वैत्रैसोऊकरैअसाधसंगतिदिसोऊं ॥ सि
स्नउदरपरायणजेते ॥ मनक्रमबचनत्यागि
एतेते ॥ ५ ॥ करैअसाधुएककौसंग ॥ तौहूं
नध्यानकौसंग ॥ असतसंगनरजबहीकरै
॥ ताकेसंगनरकमेपरै ॥ ६ ॥ जैसैअंधकेसंग
॥ कूपपरैहौवैसुषसंग ॥ याकीगाथ्याभाषौं

क॥जातैंउपजैपरमबिबेक॥७॥जबउरबसी
रहतनदह्यौ॥सोकमोहसागरमैंबह्यौ॥जबपु
रुरवाभाषीजोई॥तौसौंगाथाभाषौसोई॥८॥राउ
पुरूरवाचक्रवर्ती॥ताकीआंनजहांलौंधर्ती॥
गापहुतेउतरीउरबसी॥सोमिलिकैंनृपकेउर
सी॥९॥बहुस्यौंआपमुक्तिजबभई॥तबता
पहिउरबसीगई॥नृपतिबिलापकरैंवेपारि
नृपकीओरनजावै॥१०॥राजानन्दंदेहसुधि
हीं॥बांनीबिकलदीनतामांहीं॥लज्जारहित
मदजैसे॥चल्योउरबसीपीछैतसैं ११ अ

लक्षणजांनैं॥ सोंत्यों आपुआपुमें गनैं॥ अ
नीयसतबमोकौंपावै॥ कालब्यालबहुस्यों
नहिंषावै॥ ३॥ मायागुणजबमिथ्याजांनैं॥ मै
रोज्ञांनयाइकारिजांनैं॥ ग्रोंकैरहैदेहहूंमांहीं
॥ तौहूं फेरिलियैकहूंनांहीं॥ ४॥ परिजघुपिहो
वै ऐसो ऊकरै असाधसंगतिहिंसोऊं॥ सि
स्न उदरपरायणजेते॥ मनक्रमबचनत्यागि
एतेते॥ ५॥ करै असाधुएककोसंग॥ तौहूंज्ञां
नध्यांनकोभंग॥ असतसंगनरजबहीकरै
॥ ताकेसंगनरकमेपरै॥ ६॥ जैसें अयकेसंग
॥ कूंपपरैहावैसुषभंग॥ याकीगाथ्याभाषोंए

क॥जातैं उपजै परम बिबेक॥७॥जब उरबसी
रतन दयौ॥सो कमोद सागर मैं बह्यौ॥जब पु
त्रभाषी जोई॥तो सौं गाथा भाषौ सोई॥८॥रा
रुरवा चक्रवर्ती॥ताकी आनंद जहां लौं धर्ती॥
ापदु तेउ तरी उरबसी॥सो मिलिकै नृपके उर
सी॥९॥बहु स्यौं आप मुक्तिजब भई॥तब ता
पदि उरबसी गई॥नृपति बिलाप करै वे परि
नृपकी ओर न जावे॥१०॥राजा नम्रदेरु सुधि
दी॥बांनी बिकल दीनता मांही॥लज्जा रहित
मद जैसे॥चल्यो उरबसी पीछे तसैं ११ अ

हो प्रिया तुम गाढी होवो ॥ मेरी ओर कृपा करि
वो ॥ मोकौं मारे का है जावो ॥ कृपा करौ मेरे गृह
वो ॥ १२ ॥ मिलि उरबसी संग सुख पायो ॥ सो सो
कल हूं षेकै आयो ॥ तृप्त न भयो भोग वत भोग ॥
इ उरबसी कौ संजोग ॥ १३ ॥ ता उरबसी ज्ञान अ
ष्यौ ॥ तातैं भला मानि करि दष्यौ ॥ तन मय हृदय
छू नहीं आनैं ॥ निसदिनु मास वर्ष नहि जानैं ॥
॥ तब तें नृप के पूरण भाग ॥ जातें प्रगट भयो बे
ग ॥ तब नृप बचन बषाने जेई ॥ तो सों मैं भाषत
तेई ॥ १५ ॥ पुरूरवा उर्वसी ॥ अहो एक देषो मम
मोह ॥ आपु हि कियो आपनौं द्रोह ॥ गाढ़ियो कं

देवकी माया॥ जिनि मेरो सब आयु गंवाया॥ १६
इन मो कौं दुःख्यौ बहुतेरो॥ सर्ब सु आयु लियें
रि मेरो॥ मैं दिन राति न जानो जात॥ अमृत व
रि मांन्यौं बिष षात॥ १७॥ वर्ष समूह गये मम ब
ति॥ सकल बिकार निलीन्हौं जीति॥ दुःख में के
ौ दुःख पायौं॥ अस्त्री के कर आपु बिकायो॥ १८
जो मैं राज राज चक्रवर्ती॥ जीति समस्त कारी ब
धर्ती॥ सकल नृप मम चरण नि सेवें॥ तन मन
न सब मो कौं देवें॥ १९॥ सो मैं बिकान्यौं अस्त्री
थ॥ ज्यौं बानर बाजीगर साथ॥ ज्यौं ज्यौं अस्त्री
दिन चायो॥ त्यौं त्यौं मैं भूरि असुष पायौं॥ २०

तापरि राज साहि तताजि मो दि॥ तणा समान कु
रिचली बिछोहि॥ नगन नयौ मै पीछैं धायौ॥ जै
उ नमन आपुबि सरायौ॥ २१॥ कौंनभांति ता
बल होई॥ तेजप्रताप रहै नहि कोई॥ जो होवै
स्त्री आधीन॥ जैसें परी संग खरदीन॥ २२॥ बिद्या
मोनतपस्यात्याग॥ बनमैं बासिबो दृढबैराग॥ ए
समस्तकी न्हैं कछु नांही॥ जोलगि त्रिया बसै मन
मांही॥ २३॥ यह उर बसी जबही ते पाई॥ कांमअ
ग्नि बहु भांति गंवाई॥ परियह अग्नि न सीतल भ
ई॥ आधिक अधिक बाधत आति गई॥ २४॥ जै
सें अग्नि प्रज्वलित होई॥ तामैं ईंधन डारै कोई

सो त्यौं अधिक अधिक परजरै॥ पल कौं न हीस
ल ताकरै॥ २५॥ मैं अपनौं न जान्यौं अर्थ॥ आप
आपु कौं कियौ अनर्थ॥ मूरिष आपु हि पंडित
न्यौं॥ पस्यौ मनु मूरष अमृत जान्यौं॥ २६॥ जो
ई सकल मूं केरौ॥ सो कैर ह्यौ त्रिया कौ चेरौ
मैं मूरिष ताकौं धिक्कार॥ जिन न कियौ कछु
न बिचार॥ २७॥ अस्त्री कारिजा कौं चित
ौ॥ ज्ञान बिचार सकल परिहस्यौ॥ ताकौं
बिनु कौं न छुडावै॥ दूजौ आपु न छूटन पावै
॥ तातैं हरिचरणनि कौं गहौं॥ सं कौं नै रहौं
हरि कौं कैर है॥ जद्यपि देवी मो हि तु मा श्री॥

तापरि राजसाहि तताजिमो दि॥ तणसमान कु
रि चली बिछो दि॥ नगनज्यौं मैं पीछैं धायो॥ जु
उनमनअ आपु बिसरायो॥ २१॥ कौंनभांति ता
बल होई॥ तेजप्रताप रहै नहि कोई॥ जो होवे अ
स्त्री आधीन॥ जैसें परीसंग षरदीन॥ २२॥ बिषै
मोन तपस्या त्याग॥ बन मैं बासिबौ दृढ बैराग॥ ए
मस्त कीन्हैं कछु नांही॥ जौ लगि त्रिया बसै मन
ही॥ २३॥ यह उरबसी जब ही तें पाई॥ कांम अ
ग्नि बहु भांति जगाई॥ परि यह अग्नि सात लम
ई॥ अधिक अधिक बाधत आति गई॥ २४॥ जै
से अग्नि प्रज्वलित होई॥ तामैं ईंधन डारै कोई॥

सो सो अधिक अधिक पर जरै॥ पल कोन हो स
लता करै॥२५॥ मैं अपनौं न जान्यौं अर्थ॥ आ
आपु कौं कियो अनर्थ॥ मूरिष आपु हि पंडित
न्यौं॥ पस्यो मृत्यु मूष अमृत ज्ञान्यौं॥२६॥ जो
ई सस कल भू केरा॥ सो कूकर वौ त्रिया को चेरो
मूरिष ता कौं धिक्कार॥ जिन न कियो कछु
न बिचार॥२७॥ अस्त्री कारिजा को चित्त
॥ ज्ञान बिचार सकल परिहस्यो॥ ता कौं
बिनु कोन छुडावै॥ दूजो आपु न छूटन पावै
॥ तातें हरि चरननि कौं गहौं॥ सकल
हरि कौ कूकर है॥ जय विदेवी मोहिवु

यात्रीति दुःषकादि समस्या यो ॥ २८ ॥ तौ हूं मैं भूरि
षनादि जांन्यौं ॥ कांम अ घु सुष ई कारि मांन्यौं ॥ ता
ताकौ नहीं अपराध यह मेरो मन बडो असाध ॥
३० ॥ जो मैं स्वर्गन के मद देष्यौ दुषही मांहि सुष का
लेष्यौ ॥ गुन मैं सांपजां निदुष पावै ॥ आगि पतंग
परै मरि जावै ॥ ३१ ॥ तौ तिन कौ अपराध न कोई
आपु दुःष करि लेवै सोई ॥ तातैं इनकौ इहै सुभ
व ॥ मैं मन मैं क्यौं धरौं अभाव ॥ ३२ ॥ जो मैं आपु
आग्नि मैं परौं ॥ तौ उर दोष कवन कौ धरौं ॥ देह म
लीन महा दुर्गंध ॥ सो करि जांनी बिमल सुगंध
॥ ३३ ॥ सो आपुन अबिद्या करयौ ॥ निजानंद

आत्म बीसस्यौ॥ यह तन तौ बहु तनिकौ
हिए॥ तामैं ममता ग हि क्यौं रहिए॥२४॥ म
पिता अपनौं करि कहैं॥ अस्त्री एकमेक मि
रहैं॥ कै यह तन कहिये राजा कौ॥ कै पावक कौ
सए है जाकौ॥२५॥ कै मृ कौ कै स्वान सृगाल
कै आपनौं मित्र कै काल॥ यह तन यौं कहि
किन किन कौ॥ प्रगट दीसत है तिनतिनकौ
२६॥ महा असुद्ध देह यह ऐसी॥ परगट न
षांनि है जैसी॥ तहां कौंन बांधे मतिमंद॥ अ
नाम काल कौ फंद॥२७॥ त्वचा रुधिर अरु
स अरु अंत॥ मज्जा मेद रोम नष दंत॥ बि

तरे टंकामिराउ ॥ अस्त्रीपरगटनरककोबाउ
३८ ॥ तातें अस्त्रीअरुतासंगी ॥ तिनकेनहोहू
जैसे संगी ॥ तिनकेदरसहूमतमनहोई ॥ देषे
बिनाबिकारनकोई ॥ ३९ ॥ तातेतिनकोदरस
नकरिये ॥ आपुहिअपुनरकनहिंपरिये ॥ जो
यहइंद्रियअर्थनिवारे ॥ मनवचकेमउदसंग
तिटारे ॥ ४० ॥ तबमनयहदसहजेथिरहोई ॥ कुदे
विकारनपरसैकोई ॥ तातेंजेअस्त्रीनुकोंनजे
अरुअस्त्रीतिनकोंबुघतजै ॥ ४१ ॥ दरसपरअ
रुश्रवणनिवास ॥ सेवमांतिनितेमानेत्रास
इंद्रियनुकोबिस्वासनकरे ॥ ज्ञानवंतनितरे

पारि हरै॥ ४२॥ महापुरुष जे जीवन मुक्त॥ ति
हैं कौ सब संग त्रयुक्त॥ तौ जे जग सौं छुटै चहैं ते
हम से क्यौं संग गहिग हैं॥ ४३॥ ताते मैं त्रौ बसंग
ारौं श्रीपति चरण के वल उर धारौं॥ दीन बं
करुणामय स्वामी॥ कृपा करी यह अंतरजामी
४४॥ श्री भगवानुवाच॥ या बिधि बचन क
नरराज॥ तजि उर बसी लोक सुष साज॥ जं
ल ह्यो सब संसय टास्यो॥ मन निश्चल हरि मै
धास्यौ॥ ४५॥ ताथें उद्धव यह पुरुषार थ
रतन पायौ तब ही सार थ॥ जब समस्त की
गति तजे॥ संत संगति गहि मो कौ भजे

संतबतावैहितउपदेस॥जीनितेसंसयरहैनते
स॥मनकीसबआसक्तिनिवारै॥संतमहाभ
वसागरतारै॥४७॥निस्पृहनिरारंभसमदृर
सी॥संयहरहितद्वंद्वनाहिपरसे॥अहंकारममं
तानहींआनैं॥मोहिमजैदूजौनहिजानैं॥४८॥
तेजग्येपिउपदेसनदेवै॥तौहूंमोहिचदेतेसेवै॥
तहांकथामेरीनितहोवै॥तेईआपसंदेहनिषे
वै॥४९॥मेरीकथाश्रवणजेकरैं॥तेसबपापप
तेनिसतरैं॥सुनैंकहैंअंतरगतिध्यावैं॥आति
आदरसौंप्रीतिबढावैं॥५०॥तेसहजहीलहैंम
मभक्ति॥सहजैंहीहोवैसकलाविरक्ति॥मेरीभ

किलदैनरजवद्दी॥पूरणकांमभयोसोतबद
॥५१॥ताकौंकछुनकरणेरदै॥ज्ञांनानंदरूप
मलदै॥सीतनिसोकहूंदोवैकोई॥तहांआग
परजालेसोई॥५२॥तमेतुषारभयसदजदि
जांवै॥त्योंसाधुसबदुषमिटांवैं॥यहअपार
गरसंसार॥जामेंबूडेंजीवअपार॥५३॥ज्योंप
लोकधर्मधनजांनौं॥त्योंभवतारकसाधू
मानौं॥जिनकेहृदैप्रगटभभचरण॥तिनबि
नुयाभवओरनसरण॥५४॥ज्योंबादरदैसू
तएक ज्योंउरनयनउघारैअनेक॥संतैमात
पेताहितकारी संतेदेवबंधुदुषहारी॥५५॥

तातैं संत संग नित करयौं ॥ और उपाइ न हृदै
धरयौं ॥ तिन तैं अनाया सम वृति रै ॥ अनाया
समो कौं अनुसरै ॥ ५६ ॥ तब पुरूरवा ऐसो क
र्‍यौ ॥ त्यौं उरबसी लोक परिहर्‍यौ ॥ तब ताजि
नयौ आत्माराम ॥ विचर्‍यौ मुवै मैं है निहकां
म ॥ ५७ ॥ तातैं असत संग परिहरिये ॥ साधूसं
ग निरंतर करिये ॥ साधूजन सुषदी न वृतारैं
॥ सुषदी मम चरणा नित धारैं ॥ ५८ ॥ दोहा ॥
ऐसो सो साधु असाधु कौ ॥ सुनि हरि जी सौं संग
तब उद्धव जन पूछियौ ॥ कर्मयोग पर संग ॥ ५९
॥ इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे श्री

गतउद्धवसंबादनाभाषायांऐलगीतोपाख्यानेष
डविंशोध्याय॥२६॥चौपई॥१९॥९॥२॥उद्धव
॥देवगुरुकृपाकरौअबऐसी॥नाथोक्रियाउ
विधिजैसी॥जाकेकरतहोइसतसंग॥पावे
नहोइनिहसंग॥१॥यहजोतुवप्रतिमांकीपू
॥तातेंश्रेयकहैनाहिदूजा॥याकौंकहेंव्यास
नारद॥गुरुबृहस्पतिपरमबिसारद॥२॥औ
सकलमुनीस्वरजेते॥परमश्रेययहैमाथेंते
॥कल्पआदिबिधिसौंतुमकह्यो॥सोदृढकरि
धिहृदैगह्यो॥३॥तिनिन्हग्वादिकसुतनिसु
यो॥सोनवदुतेंमबांनीपायो॥जेतेसकलब

र्ग आश्रमा ॥ अस्त्री अंत्यंज कोलहैं सबकौ घ
र्मो ॥ ४ ॥ या बिनु और धर्म है जेते ॥ यादी काज
हैं तेते ॥ या बिनु और धर्म जे करै ॥ तौ तिनते क
रि बंधन परै ॥ ५ ॥ यह ई सब धर्मनि कौ धर्मा ॥ य
ही दुलै करै सब कर्मा ॥ तातें पूजा बिधि बिस्ता
॥ कृपा करौ जी ग्रनि निस्तारौ ॥ ६ ॥ तुम दयाल स
ब कौ हित कारी ॥ सुमिरत सकल दुष अघ दा
॥ सुनि यै पर उपकारी बैंन ॥ बोले हरि बिकमल
दल नैंन ॥ ७ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ उद्धव या कौ
अंत न पार ॥ मम पूजा बिधि है तबिस्तार पा
तौ कौं संक्षेप सुनाऊं ॥ तामैं तत्व सकल कौ ल्यों

ॐ॥८॥पूजाबिधिहैतीनिप्रकार॥बैदिकतंत्रि
कमिश्रितसार॥बेदमंत्रअरुबेदिकअंग॥सो
हियेबैदिकपरसंग॥७॥यौंहीतंत्रिकमिश्रितउ
॥भावैतासोंपूजागांनैं॥बिप्ररुक्षत्रीबैस्यत्रि
णी॥इनकौंजाबिधिपूजाकणी॥१०॥सोसमस्त
बिधितुमदिसुनांऊं॥जीवनिकौंकल्यांणउपां
॥प्रतिमामेंभिअग्निजलबाइ दिजअरुआ
अरकअरुगाइ॥११॥अरुसबदिनमैंमोकौं
नौं॥जथाजोगसबपूजागांनैं॥गुरुअरुमोमै
दनराखे॥मानुषबुद्धिदूरिकरिनाखै॥१२॥सु
होइजलमाटीसंग॥अस्नानादिसकलइअंग

तिकाकौंलैकीन्हौ॥एकरतनमणिकीकार
॥एममप्रतिमाअष्टप्रकार॥जांनैममंदि
जसार॥१८॥तिनिमैंहोवैंमिथ्यलजेती॥स
दिकनिकरावैतेती॥सालिगरांमआदिदैजे
॥मेरोतनजांनैंनिततेती॥१९॥औरसबनि
पूजाकाल॥किबाजांनैंनितगोपाल॥लेपीति
मारजनकरै॥औरनअस्नांनादिबिस्तरै॥२०
त्तमसांमग्रीसोंसेवै॥तनमनधनसबमोकौं
॥जोनिहकांमनिहकपटहोई॥करैभावबा
कौंसोई॥२१॥उत्तमबस्तुनिमनकरिल्यावै
ममहितसबमोहिचढावै॥उत्तमबिधिअ

नवाराव़ै॥वस्त्राभरणादिकपहिरावै॥२२॥अ
ग्नि घृतादिकहोमादिकरै॥चरणीरबिअस्तु
बिस्तरै॥जलकोंपूजैजलफलफूल॥जांनैमो
सकलमैंमूल॥२३॥माफिसादितजौअरपेतो
ई॥ताहूंतैंमोकोंसुषहोई॥तोजोधूपदीपनैबेद
॥मोकौंबहुबिधिकरैनिबेद॥२४॥ताकीमहिम
कहाबषांनौं॥ज्यौंहैत्यौंपैमैंहीजांनौं॥तातैंमे
नितप्रतिआधान॥तोषनमानौंप्रतिबिहि
॥२५॥अबभाषौंपूजाविधितोसौं॥सावधानह्वै
सुनियौंमोसौं॥होइपवित्रकरैअस्नांन॥मनमैं
राषैमेरौध्यांन॥२६॥पूजासाजप्रथमसबलेई

फिरि उठिबे कौं रहन न देई। बैठै उत्तर कै पूरब मुष॥ निश्चल प्रतिमा कैं वृल सनमुष॥२७॥ दर्भनि सौं निज आसन करै॥ अंगनि के न्यासादि बिस्तरै॥न्यास करै मममूरति अंग॥ तब गंनै अस्नान प्रसंग॥२८॥ उत्तम कलस तोइ सौं भरै। दूजे जल के पात्र दि धरै॥ जल मैं बहुत सुगंध मिलावै॥ तासौं मोहि सनांन करावै॥२९॥ अर्घ पाद्य अरु विष्टर करै॥ लौ निपात्र तातैं जल भरै। गंध पुष्प [illegible] मैं बहु धरै॥ गाइत्री अभिमंत्रनि करै॥३०॥ तब आपनों करै तन सुद्ध। के हू ह्वार न होइ असुद्ध। हृदै मांहि मम रूप दिप्यावै वो ऊंकार जहां तै आवै॥३१॥ जैसे गृह मैं

दीपत्रकास॥ योंध्यावे तनमांहिउजास॥ पूजिवे
म सोंतनयहोई॥ सुनिमूरतिमेंपावेसोई॥ ३२॥
तोगोपांगकरेतनपूजा॥ कोईभावनउपजेदूजा
॥ दवेअर्घपादआचवन॥ रचेअष्टदलपंकजमं
वन॥ ३३॥ तापरअस्थापेधर्मादि॥ सकलसक्ति
रविसिसिअम्मादि॥ संषरुचक्रगदाअसिअस्त्र
॥ धनुषरुबांणमुसलहलसस्त्र॥ ३४॥ एआवउअ
गदिसिआंनें॥ मणिमालालछाउरजांनें॥ नंदसुनं
दमहाबलचंड॥ कुमुदेछणबलकुमुदषचंड॥ ३
अष्टदिसापारषदसमय॥ गाढोगरुड जोरिकर अ
य॥ विष्वक्सेनव्यासगुरदेव॥ गणपतिदुर्गाअरुस

बदेवु॥३६॥करजोरेंदरिसनमुषगाढे॥दरिषतब
दनप्रेमअतिबाढे॥सबदिनकौंपूजाअर्घादि॥बिन
नम्रतावंदनआदि॥३७॥चंदनअरुकर्पूरउसीर॥कु
कुमअगरसुगंधितनीर॥प्रथममाहिकछूमधुपर्कच
ढावे॥निर्मलजलआचमनकरावे॥३८॥पुनिसुगं
धजलदेइस्नांन॥मंत्रबंदनमनकेमनहिआंन॥पु
उरीकेलोचनमनभावन॥आदिपुरुषसबकेअ
पजावन॥३९॥जयजयब्रह्मसकलआधार॥नमो
नमस्तेवारनपार॥ऐसेंतंत्रमंत्रउचारें॥सहस्रसी
र्षाश्रुतिबिस्तारे॥४०॥बस्त्रजनेऊअरुआभरण
॥अंगअंगतिलकादिककरण॥

दीपत्रकास ॥ योध्यावैतनमांहिउजास ॥ पूजिदे
मसोतनयहोई ॥ पुनिमूरतिमैंथापैसोई ॥ ३र
सोगोपांगकरैतनपूजा ॥ कोईभावनउपजैदूज
॥ देवैअर्घपादआचवन ॥ रचैअष्टदलपंकज
वन ॥ ३३ ॥ तापरअस्थापैधर्मीहि ॥ सकलसहि
रविसिसिअस्थादि ॥ संषरुचक्रगदाआसिअसु
॥ धनुषरुबांणमुसलहलसस्त्र ॥ ३४ ॥ राआवउंअ
गदसिआनैं ॥ मणिमालालत्राउरजानैं ॥ नंदसुनं
दमहाबलचंड ॥ कुमुदेक्षणबलकुमुदप्रचंड ॥ ३
॥ अष्टदिसापारषदसमय ॥ गटोगरुड·जोरिकर
य ॥ विषुक्सेनव्यासगुरदेव ॥ गणपतिदुर्गाअरूस

बदेवु [illegible]
दनवि [illegible]
नम्रता [illegible]
तुमन्त्र [illegible]
दावे॥नि [illegible]
धजलदे [illegible]
उरीके [illegible]
पजाव्रन [illegible]
नमस्तेवार [illegible]
र्षाश्रुतिविद्ध [illegible]
॥त्र्यंगत्र्यं [illegible]
[illegible]

सुगंध ॥ ते मसहित मो सौं मन बंध ॥ ४१ ॥ बा
लभोग आचार्य करावै ॥ कुसमसुगंध रूचू पव
नावै ॥ बहुत भांति आरती उतारै ॥ नानां विधि
नैवेद्य संवारे ॥ ४२ ॥ षीर षांड घृत दधि लाय
सी ॥ लाडू पुवा सो दहा रसुरसी ॥ भोजन करे और
बहुतेरे ॥ बिन वलगावे बूहाहित मेरे ॥ ४३ ॥ नित
दांतणों नित उबटनों तेल ॥ अन्हवावे पंचामृत मे
ल ॥ अलंकार दर्सन आदर स ॥ गीत नृत्य बादित्र स
र्स ॥ ४४ ॥ बहुत भांति नैवेद्य संवारे ॥ नित नां दांत
र्बन टारे ॥ बेहार करे पावक में पूजा ॥ मो बिन त
हिनजा नै दूजा ॥ ४५ ॥ अग्निकुंड में अग्नि हि धरे ॥

समिधघृतादिकहोमहिकरै॥होमकरैपाठपाठि
ममंत्र॥जिनकौंकहैंवेदअरुतंत्र॥४६॥करिहो
महिंआचमनकरावै॥ताकौंमेरौरूपहिध्यावै॥
लतस्ववर्णतुल्यछबिअंग॥चारुचतुरभुजआ
युधसंग॥४७॥पीतबसनकुंडलमणिमाला॥
सीसमुकुटकटिसुत्रबिसाला॥भृगुलताअरु
लक्ष्मीआदि॥बहुबिधिध्यावैरूपअनादि॥४८
पुनिनंदाघपारषदजेते॥बलिबिधानसौंपूजै
तेते॥जपैमूलमंत्रहिबहुबारा॥जाबिधिवर्धैप्रे
मअधिकार॥४९॥पीछैंतापरसादहिलै
कोरिसबजनकिनिकौंदेवै॥आज्ञापा

सुगंध॥ प्रेमसहितमोसौंमनबंध॥४१॥बा
लनोगआचार्यकरावै॥कुसमसुगंधधूपप
नावै॥बहुतभांतिआरतीउतारै॥नानाविधि
नैवेद्यसंवारै॥४२॥षीरषांड घृतदधिलाप
सी॥लाडूपुवासोहारसुरसी॥अस्नानकरैऔर
बहुतेरे॥बिजनलगावैबहुहितमेरे॥४३॥नित
दांत्यौंनितिलउबटनौतेल॥अन्हवावैपंचामृतमे
ल॥अलंकारदर्सनआदरस॥गीतनृत्यबादित्रस
रस॥४४॥बहुतभांतिनैवेद्यसंवारै॥नितनांदीतै
निर्बनटारै॥बेहारिकरैपावककमेंपूजा॥मोबिनत
दिनजानैदूजा॥४५॥अग्निकुंडमेंअग्निदिधरै॥

समिधघृतादिकहोमहि करै॥ होमकरैपढिपाढि ममभंत्र॥ जिनकौंकहैं वेद अरुतंत्र॥ ४६॥ करिहोमहि आचमन करावै॥ ताकोंमेरौरूपहि ध्यावै॥ तप्तस्वर्णतुल्यछबिअंग॥ चारुचतुरभुजआयुध संग॥ ४७॥ पीतबसनकुंडलमणिमाला॥ सीसमुकुटकटिसुत्रबिसाला॥ मृगुलताअरुलक्ष्मीआदि॥ बहुबिधिध्यावैरूपअनादि॥ ४८॥ पुनिनंदाघपारषदजेते॥ बलिबि‧ तेते॥ जपैमूलमंत्रहिबहुबारा॥ जाबिधि मअधिकार॥ ४६॥ पीछैतापरसादहिले करिसबजनिनिकोंदेवै॥ आज्ञापाइ

सुगंध ॥ प्रेम सहित मो सों मन बंध ॥ ४१ ॥ बा
ल भोग आचार्य करावै ॥ कुसम सुगंध धूप धू
ना रे ॥ बहुत भांति आरती उतारै ॥ नांनां बिधि
नैवेद्य संवारै ॥ ४२ ॥ षीर षांड घृत दधि लाय
सी ॥ लाडू पुवा सो हार सुरसी ॥ अचमन करै और
बहुतेरै ॥ बिमल लगावै बहु हित मेरे ॥ ४३ ॥ नित
दांत्यों निनि उबटनो तेल ॥ अन्हवावै पंचामृत मे
ल ॥ अलंकार दर्सन आदरस ॥ गीत नृत्य बादित्र सु
रस ॥ ४४ ॥ बहुत भांति नैवेद्य संवारै ॥ नित नांदोत
र्ब नटारै ॥ बैहार करै पावक में पूजा ॥ मो बिन न
हि न जानै दूजा ॥ ४५ ॥ अग्नि कुंड में अग्नि दिषै ॥

समिधघृतादिकहोमहि करै। होमकरै पदिपदि ममंमंत्र॥ जिनकोंकहै वेदअरुतंत्र। ४६ करिहो महिंआचमनकरावै। ताकोंमेरौरूपदृढ़ध्यावै। तप्तस्वर्णतुल्यछबिअंग। चारुचतुरभुजआयुधसंग॥ ४७॥ पीतबसनकुंडलमणिमाला। सीसमुकुटकटिसूत्रबिसाला। मृगुलताअरु लक्ष्मीआदि। बहुबिधिध्यावैरूपअनादि। ४८ ॥पुनिनंदाघपारषदजेते। बलिबिधानसोंपूजै तेते॥ जपैमूलमंत्रहिबहुबारा। जाबिधिबंधेजै मंत्राधिकार॥ ४६॥ पीछैतापरसादहिलेवै। ले करिसबनक्तिनिकोंदेवै। आज्ञापाइआपतव

सुगंध ॥ त्रेमसहित मोसों मन बंध ॥ ४१ ॥ ब
ल भोग आचार्य करावे ॥ कुसम सुगंध रूप धूप
नावे ॥ बहुत भांति आरती उतारे ॥ नांनां बिधि
नैवेद्य संवारै ॥ ४२ ॥ षीर षांड घृत दधि लाप
सी ॥ लाड्डू पुवा सो हार सुरसी ॥ भजन करे और
बहुतेरे ॥ बिभव लगावे बहु हित मेरे ॥ ४३ ॥ नित
दांतौं नि नि लउबटनौं तेल ॥ अन्हवावे पंचामृत
ल ॥ अलंकार दर्सन आदर सं ॥ गीत नृत्य बादित्र
र्स ॥ ४४ ॥ बहुत भांति नैवेद्य संवारै ॥ नितनां हित
र्बन टारे ॥ बैहारि करै पाव कमें पूजा ॥ मो बिन
हि नजां नैं दूजा ॥ ४५ ॥ अग्निकुंड में अग्नि हि धरै ॥

समिधघृतादिकहोमहि करै ॥ होमकरै पढिपाठि ममसंत्र ॥ जिनकोंकहैं वेदअरु तंत्र ॥ ४६ ॥ करिहोमहि आचमन करावै ॥ ताकोंमेरौ रूपहि ध्यावै ॥ ततस्व वर्णतुल्य छबिअंग ॥ चारुचतुरभुज आयुध संग ॥ ४७ ॥ पीतबसनकुंडलमणिमाला ॥ सीसमुकुटकटिसुत्रबिसाला ॥ मृगुलता अरु लक्ष्मी आदि ॥ बहुबिधिध्यावै रूपअनादि ॥ ४८ ॥ पुनि नंदा घपारषदजेते ॥ बलिबिधांनसौं पूजै तेते ॥ जपैमूलमंत्रहिबहुबारा ॥ जाबिधिबधैप्रेम अधिकार ॥ ४९ ॥ पीछैं तापरसादहिलेवै ॥ लैकरिसबनक्तिनिकोंदेवै ॥ आज्ञापाइ

पावै॥ प्रीतिसहितजेतीजीवनावैं॥ ५०॥ पुनि
पैसुगंधतमूल॥ उत्तममालाउत्तमफूल॥ मेरेगुण
वेसुरगावै॥ नामनिमापैप्रेमबधावै॥ ५१॥ मेरेगु
णअरुकर्मसराहै॥ पूरणप्रेमसिंधुअवगाहै॥ व
थानित्यममसुनैसुनावै॥ मोबिनकछूनपलक
हरावै॥ ५२॥ चरणपलोटैसयनकराई॥ सुखतै
नींमभूलिन॥ द्विजाई॥ प्राकृतअरुसंस्कृतबे
॥ जेईजेअस्तुतिकेभेद॥ ५३॥ तिनातिनसोमम
अस्तुतिकरै॥ बारबारचरणनिमैंपरै॥ पीछेंधा
रिजोरिकरदोई॥ करैदानकैबीनतीसोई॥ ५४॥
देप्रभुभवसागरतैतारो॥ कालमृत्युभयसोक

निवारौ॥ तुमबिन मेरे और न कोई॥ पाऊं च
रणनि की जैसो ई॥ ५५॥ हृदै जोति जो ति मैं धारै
॥ मूरति को सजल विस्तारै॥ यों आकार जहा लो
देषै॥ ते समस्त मम मूरति लेषै॥ ५६॥ करै जथा वि
धि सब मे पूजा॥ मो कौं छोडि न जानै दूजा॥ या वि
धि क्रिया जोग मन लावै॥ सो नर भक्ति मुक्ति फ
ल पावै॥ ५७॥ मो कौं उत्तम गृह संवरावै॥ ता मैं म
म प्रतिमा पधरावै॥ मो कौं करै बाग फुलवा
॥ जात महोछव की अधिकाई॥ ५८॥ मम माहित
सदा व्रतादिक देवै॥ बहुत भांति मम भक्ति नि
सेवै॥ मम पूजा परवाह के हेत॥ देइ गाव पुर

रसषेत ॥ ५९ ॥ सोममसं[...] सुरतापावै ॥ तिहूंलो
कौईसकदावै ॥ जोमम अतिमाथापनकरै ॥ सो
बन्नूपतिकै अवतरै ॥ ६० ॥ जोमेरोमंदिरसंवरावै
॥ तिहूंलोककीप्रभुतापावै ॥ पूजादिकानित्रसवै
लोक जहांनहीनांनं बिधिसोक ॥ ६१ ॥ तीन्योंवि
येलहैबैकूंठ ॥ कालांदिकसबहुतेंअकूंठ ॥ जोयो
सेवैकैनिंदकांमीनावेत्योंसेवै ॥ तनमनधनसो
मोकोंदेवै ॥ सोपावै मेरोनिजज्ञान ॥ लहैमोदिछ
टैसबआंन ॥ ६२ ॥ ब्रातिसुरानिअरुबिप्रानिकेरा
॥ अरुजोकराहोइकछुमेरा ॥ दईऔरकीकिबा
पु ताकेहरेकस्योंसबपाप ॥ ६४ ॥ सोहोवैकू मि

सबदिनकौफलदोइसमान॥ भावे उत्तम भावे ग्यान॥
बिष्टामांही॥ बरषकोटिहू॥ निकसैनांही॥ कर
ताडेरकतथासदाई॥ अनेमोदकाजिनिकछिउप
जाई॥६५॥ तातेममादितकर्मनिकरै॥ सोबहुत
निलेनरजलतिरै॥६६   याबिधिग्याकों
करै॥ ताकोंउपजेज्ञांन॥ जातेमेरोपदलहै॥ ताकों
करौंबषांन॥६७

॥२०५दी॥   उउबरतोकौनाथोंज्ञा
न॥ जातेंलहैमोदिताजिग्यांन॥ उत्तममध्यमकर्मस्व
भाव॥ जेसबजगमैंनांनांभाव॥ १ निनादिन

नादिकरै॥ अरुनादिककूअस्तुतिबिस्तरै॥ ब्रह्मति
रूपनिर्मितसबुजांनैं॥ एकजांनिसबभेदादिमांनैं
॥२॥ ब्रह्माआदिकीटपर्जंत॥ एकरूपदेषैममसंत
जेजेबहुबिधिकर्मस्वभाव॥ तिनकौआनैंभाव
अभाव॥३॥ तौसोहोइअर्थतेभ्रष्ट॥ मायामोहदि
तआकृष्ट मिथ्यामोहिंचित्तकौधरै॥ तातेमूरिष
जांमैंमरै॥४॥ लीनहोइजबइंद्रियदेह॥ स्वप्नल
है सबआत्मरूप॥ जहंमनलयहोतहंतहंजावै॥
बहुतभांतिकौसुषदुषपावै॥५॥ पुनिसुषपातेमै
होवैलीन॥ मरणौकहिएअहंममहीन॥ यौंसुष
पतिअरुदेषतसुपिनां॥ जन्ममरणबहुसुषदुष

उपनां॥६॥जौंलगिसोवैतौंलगिपावै जागतदीकछु
वैनरहावै॥त्योंयहसुषदुषपापरपुंन्य जन्ममरण
सबजांनेंसुन्य॥७॥जोयेयहसबहैतऋमत्य मोबि
नऔरकछुनहिसत्य॥देषनसुननकहनमेंआवै
मेंअरुबुद्धिजेहांलोंजावै॥८ तेसमस्तजोकछुवै
नांही॥तोसुमऋसुनेंकांमांही जद्यपिहैमिथ्यासं
सार॥तोहूंदुषकोवारनपार ९ जौलगिदेहबुद्धि
नहिछूटै॥तौलागिमवभयपलकनटूटै जैसेंआप
नीधुनिकीझांई॥अरुप्रतिबिंबसिंघकीनांई॥१
॥सीपरूपज्यें रीमेंसांप॥अरुमृगतृस्नामांहेंआ
प॥है नांहीपरहैसोजांनै॥तिनतेंसुषदुषबहु

षिमांनैं॥११॥जौलगि मिथ्याजांनैंनांही॥तौलगि
कुलअनर्थनजांही॥ब्रह्मरूपयहसबसंसार॥ज
लगेकछुदेआकार॥१२॥ब्रह्मरूपब्रह्म दिठप
वे॥ब्रह्मब्रह्मआधाररहावै॥ब्रह्मैकरैब्रह्मआ
पाल॥ब्रह्मैंरूपब्रह्मकौकाल॥१३॥जैसैंजल
दबदजलमांही॥जलकौंछोडिद्वैतकछूनांही
॥त्यौंहीब्रह्मरूपसबएक॥देषेब्रह्मैजीवअनेक
॥१४॥परियहसबजांनौंनिरमूल॥ज्यौंमृगबा
गगनमैंफूल॥त्रिगुणरचितयहसबजगजांनौं॥
तेगुणईमायाकेमांनौं॥१५॥जौंबिषिसबहांमि
थ्याजांनैं॥ब्रह्मभावनाहृदैआंनैं॥पारलयाति

जगमेंरहै॥तौरविज्यौंगुणदोषनगहै॥१६॥याज
मेंसुभअसुभनदेषै॥मिथ्याजांनिब्रह्मकरिलेषै॥
ज्यौंप्रत्यक्षघटादिकदेषै॥उपजतबिनसतमिथ्य
लेषै॥१७॥घटरलीआदिकालत्रियसत्य॥नांमरूपहै
सकलअरूत्य॥त्यौंहीब्रह्मसत्यतिहूंकाल॥नांमरू
पमिथ्याजंजाल॥१८॥अरुत्यौंकरिदेषेअनुमान॥
माईएक जडतनमनप्रांण॥साक्षिकोनकीचेतनि
रहै॥अपनेअपनेंअर्थनिगहै॥१६॥निराकारतेचे
तनिहोई॥सबुआकारजहांलगकोई॥तातेंसब
मिथ्याआकारचेतनिब्रह्मसकलआधर॥२०॥
अरुश्रुतिकोपरिणांमबिचारै॥नेतिनेतिक

सब्द प्रकारै ॥ अरु तौ देषे अनुभव मांही ॥ नाम रूप
कछु है ए नांही ॥ २१ ॥ अंत न रहित हेतु तेन आदि ॥ आ
निश्चल ब्रह्म अनादि ॥ ओसे बहु बिधि कौ बिस्तार ॥
मिथ्या जांनि सकल आकार ॥ २२ ॥ मन बच क्रम
रूनि हंसंग ॥ ब्रह्म विचार करै अभंग ॥ ओसे वचन
हे भगवांन ॥ तब उद्धव पूछ्यो दै ध्यांन ॥ २३ ॥
हे प्रभु परम आत्म अबिनासी ॥ चेतनि रूप स्व
प्रकासी ॥ निर्गुण निराकार नित सुद्ध ॥ सदा अन
वृत सदा प्रबुद्ध ॥ २४ ॥ ईहा रहत सदा आनंद ॥
काम कालि पेन द्वंद्व ॥ अरु पद देह सक्ति कारिहां
जउ अशुद्ध है जावै लीन ॥ २५ ॥ तातें तिन को सं

यह संसार लहै सो कौंन॥आत्म सुद्ध सदा सुष भौन २
न होई॥महा विसेष परस पर दोई॥कछूइ ग्यान ही
आत्म मांही॥अरु तन सौं कछू होवै नां॥
ही॥२६॥आत्म कौं बंधन नहि कोई॥अरु आत्म
आवरण न होई॥यह करि कृपा मोहि समुझावो
मेरौ भ्रम संदेह मिटावो॥ऐसो उद्धव पुछ्यौ ज्ञान
तब बोले भव पति भगवांन॥२८॥श्री भगवांन उवा
च॥आत्म कौं नांही संसार॥अरु तिन कौं नांही आका
र॥तिन दून्यौं तै जो अविवेक॥ताही कौं भव दुख अने
क॥२९॥इंद्रिय देह प्रांण मन बंध॥इन सौं जो आत्म
संबंध॥तातैं आत्मा से संसार॥महा दुःख

र॥३०॥ जौलगिलौंइनसौंसंबंध॥ तौलगिआस्रव
जैंबंध॥ सोअज्ञानकह्यौसबजानौं॥ नांहीकछु
सबालकरिमांनौं॥३१॥ जद्यपिमिथ्याहैसंसार
परितौहूंकहूंबारनपार॥ सदाजीवदुषदीमेरहै
॥बारबारतनछोडेंग्रहै॥३२॥ ज्योंसुपिनांकछुहै
नांही॥ परिसबसाचौनिद्रामांही॥ जोजोसुषदुष
मनमैंध्यावे॥ सोसोसबकालस्वप्नमैंआवे॥३३॥
हैनांहीपरिहैसोजांनैं॥ नांनांबिधकैंसुषदुषमांनैं
॥जागतहीकछुहैरनांही॥ सबबिवहारहृथाहै
जांही॥३४॥ दर्वसोकमनयमोहरूलोभ॥ इछ्याक्रो
धअसोभासोभ॥ जनमरुमरणबिकारजहांलौं

॥२५॥आत्म सदा एकारस रहै॥अहंकार संगति दु
ष सहै॥इंद्रिय देह बुद्धि मन प्रांण॥सूत्र अरु मह
तत्व अभिमांन॥२६॥इन सौं मिलि कारि आत्म ए
क॥माया के सुबंग हैं अनेक॥तिन तिन के हित क
र्मनि करै॥कर्मन के बस जन्मै मरै॥२७॥लिंग बुध्यो
देहनि मैं जावै॥तिन के संग महा दुष पावै॥बुद्धि व
चन मन प्रांण समीर॥महत्तत्व इंद्रिय कर्म सरीर
॥२८॥सुष अरु दुष ममता अहंकार॥तिन कौं नां
नां बिधि संसार॥सो न्रमूल सकल ई जांनै॥ज्यौं जे
वरी साप त्यौं मांनै॥२९॥ज्ञान षड्ग माजि मो दि
उपावै॥गुर सेवा सौं सांन धरावै॥

इनि दृसंग॥ बिचुरै सब दे षत मम अंग॥ ५०॥
गु रुके बचन हृदै मै धारै॥ आदि अंत लोंसु वि
बिचारै॥ जनम मरण देषै भ्रम सात जि अज्ञा
होवे दस॥ ५१॥ साधन धर्म मादि थिर होई॥
आत्म देह बिचारै दोइ॥ जो या जग की आदि
रु अंत॥ सोई मध्य बिचारै संत॥ ५२॥ आदि
अंति मध्य मै एक॥ नाम रूप भ्रम रूप अनेक
॥ हेम एक ज्यों आदि रु अंत॥ मध्य कियो आभू
रण अनंत॥ ५३॥ लोक हू देम छोडि नाहि अं
न जो बिचार कारि देषै ज्ञाने॥ मिथ्या सकल
मध्य आकार॥ हेम काल त्रय करै बिचार॥ ५४॥

॥ सोजगआदिमध्यअरुअंत॥ मोहिअरूप
विचारैसंत॥ आदिअंतमेएकअरूप॥सोहम
ध्यदृष्यास्वरूप॥ ४५॥जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिअ
वस्था॥ आदिरुअंतमध्यमास्वस्था इनकेन
समयेजोरहै॥सकलहोइताकोवृद्धगहै॥४६
॥इंद्रियअरुइंद्रिनकेदेव॥इंद्रियाविषयानिके
बहुभेव॥ तेसबजएकहिबिननांही॥सत्यब्रह्म
सोषोजैमांही॥ ४७॥जाहिप्रकासतसकलप्र
कासे॥ जाकीसक्तिसत्यसेभासे॥मुषकोमुषक
रणनिकेकरण॥करकेकरचरणकेचरण॥४८
॥नासानासनैनकेनैन॥ जिह्वाजीभबैनकेबै

॥ याविधिसकलप्रकासकरक ॥ ताबिना
ध्यासकलअनेक ॥ ४९ ॥ एजैनामसरूपाबिस्त
र ॥ जिनसोपूरणसबसंसार तेसबआदिदु
तेकछुनांही ॥ अरुनादिरादिहैअंतहुमांही ॥
५० ॥ तातैअबहुमिथ्यामानै ॥ कारणअसनि
रंतरिजांनै ॥ नांमधर्योसोसकलबिकार ॥ ति
हुंकालमैमाटीसार ॥ ५१ ॥ यदजोकछुसोब्रह्म
मस्त ॥ आदिमध्यअरुसबकेअस्त ॥ ऐसेबहु
बिधिबेदवषांनै ॥ ब्रह्मसबताईद्वैतसबमांनै
५२ ॥ आदिसमस्तदुतोकछूनांही ॥ अबआमा
हुहैमोमांही ॥ यातैपरैब्रह्मसमसरूप ॥ सकलप्र

मकआपआरूप॥५३॥यहबिचित्रतामैंआभ
से॥ताकीसाक्षिसाक्षिपरकासे॥तातैंसकलअ
लईलेषोतजिकाररूपाहिदेषो॥५४॥इनतेंप
रैरूपनिजजांनो॥अरुएसबभमरूपहिमांनो
॥द्वैतहोइनिश्चलद्रैरहो॥जांनिब्रह्मलोब्रह्म
हिलहो॥५५॥ऐसेंजोनितकरैबिचार॥मिथ्या
जानैसबआकार॥गुरुसेंआकारज्ञानबषानै
॥वेतानिमोहिअषंडितधानै॥५६॥यहजोतन
सोआतमनांही॥तनघटरूपबिचारैमांही॥
अरुइंद्रियतेदीपसमान॥इन्हहि
मआलमआंन॥५७॥अरु

द्धि॥ आत्मकौंनहिंजांनेसुद्धि॥ छितिजलतेज
वनआकास॥ अहंकारगुणचितप्रकास॥ प
॥ सामप्रकृतितनमात्रापंच॥ इंन्द्रीकौसब
तप्रपंच॥ तेजउआत्मकौंनहिंजांनै॥ आत्मस
किइहांसबगांनै॥ ५८ सकलप्रकासकआ
एक॥ तेजउजांनिनसकैंअनेक॥ याबिधिज
ममस्वरूपबिचारै॥ सकलउपाधिदूरकौटारै॥
६०॥ सोबनरहैइंद्रियनिथेंमें॥ किबापुरबि
षयनिआरंभें॥ तोहूंताकौंनहिंगुणदोष॥ जी
तहांनिपायोमोष॥ ६१॥ जैसेंघनरबिआउआ
ये॥ तोतिनसौंकछूनहिंरबिछाये॥ अरुजोमध

दूरि ह्वैगये ॥ तो कछू रबिन प्रकासित नये ॥ ६२ ॥
है परे वरे घनवृंद ॥ जो नै लिखत लोक मतिमंद ॥ जै
गर पवन घन तोई ॥ धूम धूलि अरु दामिनि होई ॥
६३ ॥ रत्नकी गुण सीत उष्मोदि उपजत विनसत
है अनादि ॥ पारि नहि लिखत अलिखत अकास ॥ सो
तो परम परकास ॥ ६४ ॥ पारितो हूं संगति नहि कुरै
माया गुणनि दूरि पारि हरै ॥ जो लोक रिमेरी दृढ भक्ति
कूरी न हीरजत मग्ना सक्ति ॥ ६५ ॥ है है नेदन मूले
लो ॥ ममजन संग करे नहीं तो लो ॥ जैसें रोग होउ
नमांही ॥ दृढ करि मूल उखास्यो नांही ॥ ६६ ॥
ताजि औ गद अपथ्य हि करे ॥ तो सो

र॥ तो अरु कारे राग न वमूल॥ सो जौ लौ मन
निर्मूल॥ ६७॥ तौ लगि संग अपथ्यादि करै॥ तौ
हु स्यों जगमैं अवतरै॥ बंधु कुटंब सिषि बहु ते
वै सकल सुरनि के ओरे॥ ६८॥ तेते अंतराइ
कु करैं॥ जोगी कौं कर्मनि बिस्तरैं॥ सो तिन तैं पा
अवतार॥ बहु स्यों करै भक्ति बिस्तार॥ ६९॥ कर्म
थमैं भूलैं नांहीं॥ मैं प्रेरक ताके उर मांहीं॥ या बि
ये पाइ ज्ञान बिज्ञान॥ देषै मो विन मिटावै आन॥
०॥ तब ता कौं तन कर्मनि करै॥ लेन देन भोज
बिस्तरै॥ पूरब संसकार करवावै॥ बिधि कौं
षो ना मिथ्या जावै॥ ७१॥ सो मुनि मगन व

लसुषमांही॥तातैंकूरतें जांनैनांही॥जोबेवे
अरुगदेहोई॥आवैजाइकहूंजेसोई॥७२॥अ
नषाइजलयीवैसोवै॥ज्योंमोहारदेहकोहोवै
॥सोसोकछुनजांनैजोगी॥निश्चलरहैब्रह्मरस
भोगी॥७३॥जोकछुकहूंदेषैसंसार॥इंद्रियगो
चरबिबिधिप्रकार॥तैतैकछुसत्यनहिजांनैं॥
स्वप्नबस्तज्योंजागेमांनैं॥७४॥प्रथमआत्मादु
तौअबंध॥आपुहिनयौप्रकृतिसौबंध॥बहुरि
मोसौंबिद्यापावै॥तबदुषजांनिप्रकृतिछिटका
वै॥७५॥तबबहुरयौंताकौंनहिगहै॥मोहिजां
निमोहीमेरहै॥प्रथमहिजबमोकौंनहिजांनै

तबमायासुषउत्तममांन्यों॥७६॥बहुस्योंजब
मसरणादिआवै॥ममप्रसादिअज्ञांनामियंवै
तबमायाकोदुषमयजांनै॥परमांनंदरूपमो
मांनैं॥७७॥तातेंआपुबुद्धिगहीउपाधि॥ताकोंन
औज्ञांनिकारिब्याधि॥सदानिरंतरमोमेंरहै॥बहु
स्योभवसागनदिबहै॥७८॥औरबिअससका
लईअह॥परिराबिबिनुनलषैप्रतक्ष॥रबिसंज
गबहुरिजबहोई॥तबसमस्तदेषैसोसोई॥७
रबिबिनअंधकारआतिहोवै॥तातैकोई
ननजोवै॥रबिसंजोगप्रकासहिपावै॥तबस
बदेषैतमहिमिटावै॥८०॥परितैनैंनात्रिकाल

अलेप॥ अंधकारसौंनयेनलेपतेज्यौंकेत्यौंत
महंमांही॥ परिरविबिनकछुदेखैनांही॥८१॥
रवितेतमउपाधिपरिहरैं॥ पाईप्रकासप्रका
सहिहिकरैं॥ त्यौंयहआत्मभेरारूप॥ स्वयंप्रक
सकपरैअरूप॥८२॥जन्ममरणमरजादार
हित॥ काहूकरिकबहूंनाहिगहित॥ दूजेराहि
तआपुहिएक॥ ताहीकारियहदेहअनेक॥८३
॥महानुभावसकलअनुभाव॥ जामैकहेन
कर्मस्वभाव॥ नित्यानंदसदाअतिसुद्ध॥ सदा
निरीहसदापरबुद्ध॥८४॥जाकारिइंद्रियन
नमनप्रांना॥ चेतानेहैंबरसैंविधिनां

कौलौंमन अरुबचननजारै ॥ और हैनबिधि
माकौंपावै ॥ ८५ ॥ परिजबमोतेरहितो भयौ ॥ त
बताकौंसबबलमिटिगयौ ॥ अंधकार आयै
अज्ञानु ॥ जातैंदूरिभयौमैमांनु ॥ ८६ ॥ जबब
दुखो मममसरणाहिआवै ॥ तबसोज्ञानप्रव
सहिपावै ॥ तातैंछोडिसकलउपाधि ॥ जोमो
बिनिकारिलीन्हीब्याधि ॥ ८७ ॥ ताकौं अबह
परसेनांहि ॥ परिमोबिनांतजीनाहिंजांही ॥
मोकौंपाइसकलपरिहरै ॥ मेरेचरणनिवे
अनुसरै ॥ ८८ ॥ रबिप्रकासामिटैतमजैसे
॥ ममप्रकासहैतत्रमअसैं ॥ सोपुनिमोवे

नहिबिसरावै॥ मोहिसेइमोमांहिसमावै॥ ८९
॥मोमेंदुतेनमायाल्यावै॥अरुसोमायामेंनहिं
आवै॥ तातेंनितहींमोमेंरहै॥ मोमिलिपरमें
नंदहिलहै॥९०॥उद्भवइतनौंईअज्ञांनां॥जो
केवलमेंजांनैंनांनां॥ ब्रह्मबिनांकछुदूजोनां
हीं॥जैसेंसापजेवरीमांहीं॥९१॥द्वैतदेखिजुमि
थ्याजांनैं॥चेतनएकब्रह्मथिरमांनैं॥अरुप
रपंचवर्णबिस्तार॥उपजैबिनसैबारंबार
॥९२॥जाकौंमिथ्यावेदबषांनैं॥अरुत्यौंहीं
गुरुसाधूमांनैं॥अरुअनुभवतेंत्यौंहींदेखै
॥जागेस्वप्नजगतत्यौंलेखैं॥९३॥औसोज

गादिकरै विघननिवारि भक्ति बिस्तरै ॥ ताकौं न नजो निश्चलहोई ॥ तोहूं आदर करै न कोई ॥१०७॥ छोडै जो सब समाधि समेत ॥ गादि मम सरणा बदवैहेत ॥ जोग दिबाटै अहंकार ॥ तातें नहि छूटै संसार ॥१०८॥ तातें सब तजि मोकों भजै ॥ मम आधीन है आपा तजै ॥ मम परसादते मोकौं पावै ॥ बहुर्‌यो भव दुष में नहि आवै ॥ १०९॥ जे होवें मेरे आधीन ॥ आपु दिमाने सब बलहीन ॥ मैं आधीन होउ ताजनके ॥ ज्यौं आधी- हे हयामनके ॥ ११०॥ केवल जो मम सर आवै ॥ ताही की सब इछा जावै ॥ तातें वि

त आवे कोई॥ बिघन तहां ईछ्या जहां होई॥ १
॥ मम आनंद दर है आनंदित॥ सब देवनि के
विंदत॥ तातें उद्धव पद ईकरणौं॥ मेरो म
दे मैं धरणौं॥ ११२॥ जग आरु आपु ब्रह्म म
जांनैं॥ द्वैत भाव कबहुं नहि आंनैं॥ ब्रह्म मा
त ब्रह्म हि पावै॥ जन्म जन्म के दुष हि बिसरावै
॥ ११३॥ दोहा॥ ऐसो सुनि श्री कृष्ण सौं॥ आति
डु:कर ज्ञान॥ पुछ्यौ सुगम उपाइ तब॥ उद्धव
र म सुजांन॥ ११४॥ इति श्री भागवत महापुरां
एकादश स्कंधे श्री भगवद उद्धव संवादे भाषा
यां परमार्थ नि रूपणो नाम अष्टा विंशो ध्या

देत्रसुयदतुमज्ञांनबषांन्यों॥सोतोमेंआति
वरजांन्यौ॥वसनांहीइंद्रियसनक्रिनको॥कै
सेंकाजहोइप्रसुतिनकों॥१॥जेहैंपरमहंसदृ
ढचित्त॥तिनकेउरसदाष्टिहैनित्त॥औरेजेवह
ज्ञांनविचारें॥षेचिषेंचियामनकोंधारें॥२॥ति
कोमनवसिहोइनज्योंज्यों॥महाकलेसलहैते
स्योंत्यों॥तिनकोमनवसिहोइनक्योंही॥अम
कारिजन्मगंवावेंहीं॥३॥तुवपदपरमांनंदस
मुद्र॥ताकोभेदनजांनेक्षुद्र॥करेजोगआदि
ककर्म॥तिनतेंकदेनछूटेभर्म॥४॥तातेंगवैवि
धैजोकरें॥जातेंजुगजुगजन्मेमरें॥केव

तुम्हारे जेते ॥ परमानंद लहे सब ते ते ॥ ५ ॥ जब ही
तुव चरणनि आवै ॥ तब ही ते पूरण सुख पावै ॥
आनि करन आवै तिन के ॥ तुम्हरे चरण हदै मैं
न के ॥ ६ ॥ ता ते सद जड़ जगत मिटावै ॥ तुव चर
नि मैं सद ज समावै ॥ तुम ब्रह्मादि सकल के नाथ
क ॥ सब दिन कौं प्रभुता के दायक ॥ ७ ॥ तिन के च
रण गहे कै दीन तुम ता के होवो आधीन ॥ अस
यह कहा अचंभा स्वामी ॥ तुम सब प्रभु सब अं
र जामी ॥ ८ ॥ तिन कौं सब त जि से वै जोई ॥ व रै
आपु बस तुम कौं सोई ॥ सीस मुकुट धारी है जे त
॥ तुव पद मुकुट निजा रे ते ते ॥ ९ ॥ रांम सरूप तुम

भये मुरारी॥ तिनकी न्हिबां नर अधिकारी बां
रसकलसघालुमकरे॥ सबहिनके सबहित अ
चरे॥ १०॥ तातें जो तुव हत न हि बिचारे॥ सो कौं तु
व पद भजन निवारे॥ तुम ही नेष सब दुःख संवारी॥
चेतनि सक्ति तुम्ह पुनि धारी॥ ११॥ सदा रहे तुम्ह
आधार॥ तुम्ह ही नित प्रति पालन हार॥ ता पवि
जीव तुम्हे नहि जानें॥ कर्त्ता भर्त्ता और हि मानें॥
१२॥ तोहू तुम औगुरा नहि मानों॥ बहु बिधि
जहां तहां रष्या गनों॥ पुनि जब हो तुव सरणा हि
आवे॥ तब तुम्ह सों चाह्यो फल पावे॥ १३॥ प
रितथापि सो अति अज्ञान॥ तुम कों इले इजे

श्रान॥ चारिपदारथ्यसेवककेलाके॥ तुम्हरीभक्ति
राजैंजाकें॥ १४ ॥ एकजहांनाहीतुवभजनैं॥ न
कजांनिसोईसोतजनैं॥ तातेंजोहोवेसबैज
तुम्हरेउपकारनिकौतज॥ १५ ॥ अरुबिधिस
आयुरबलपावे॥ बहुविधिवस्तुपकारबन
॥ तोहूंतुम्है हि अनृणनाहिहोई॥ ब्रह्माआदि
हांलौंजोई॥ १६ ॥ जेतुमबादरसनगुरस्प॥
तरिचेतनिसाक्षिअनूप॥ येजीवनिकेपापा
आरे॥ आपुहिदेमनवसंकटटारे॥ १७ ॥ तातें
यौमजनानंद॥ सहजमिलौतुमछूटैफंद॥
निप्रियउद्धवकेबैन॥ तबबोलेंकृपाकेऐ

॥१८॥श्रीभगवानुवाच॥ऊध्यौ ऊध्यौ उद्धव मम
भक्त॥सब जीवनि को हित अनुरक्त॥तोसों क
हौं आपने धर्म॥जातें मिटै सहज सब कर्म॥१९
॥करतें सुख आगें सुख पावे॥छोडें मरन भय मो
मैं आवे॥उद्धव कर्म करैं नर जेते॥मेरे हेत क
रै सब तेते॥२०॥कर्मनि मैं राखै मम नाम॥मेरे
कारि राखै धन धाम॥मो मैं अर्थे मन की वृत्ति
॥ताकू सब आचरननि वृत्ति॥२१॥मेरी प्रीति
करै जो कारै॥मेरी प्रीति रहित परिहरै॥जानि
देसनि मै मेरे भक्त॥तिनि करि बास होई अनु
रक्त॥२२॥सुर अरु असुर नरनि मै जेते॥मेरे

नकैंमरहैं केते ॥ तिन तिन के आचरणनि जो
नै ॥ सौ ही सौं आपुन हूं गनैं ॥ २३ ॥ मेरे जड़मदो
ह्व करै ॥ परवानि मैं मिलापा बिस्तरै ॥ मेरी जड़
जातरा होई ॥ तहां तहां चालि जाव सोई ॥ २४ ॥
नीतन्यति बादि करावै ॥ देवचवर आदिक
आधिकावै ॥ अति उदारता करि सब गनैं ॥ म
महि तल गैमलौ सो जांनैं ॥ २५ सबभूतनि मैंमो
कौ देषै ॥ अंतरबाहर एकै लेषै ॥ आपु आदि ज
गमो मैं जांनैं ॥ ज्यौं आकास अनाहत मांनैं ॥ २६
॥ वौ सब मैं जांनैं ममभाव ॥ त्यागै सकल पवृत्ति
स्वभाव ॥ सब हिन के सनतकार हि करै ॥ ज्ञान

दृष्टि भेद दृढ़ परि हरै ॥२७॥ एकैं विप्र वेद अधि
कारी ॥ एकैं अंत्यज मंद विकारी ॥ एकैं विज्ञानि
कै धन हर्त्ता ॥ अरु एकैं धन के बिस्तर्त्ता ॥२८॥ ए
कैं तेज हीन बहु देषै ॥ तेजवंत बहु एकैं पेषै ॥ एकैं
क्रूर सकल दुषदाई ॥ एकैं सातिक सकल सदाई
॥२९॥ इत्यादिक नांनां बिधि देषै ॥ परि जो भेद कौ
हूं नहीं लेषै ॥ मेरी दृष्टि सबनि मैं आंनैं ॥ मम ज्ञा
न पंडितनादि बषांनैं ॥३०॥ या बिधि सब मे मोकौं
जांनैं ॥ देह भेद कछु वै नहिं आंनैं ॥ थोरे काल मांहि
ताजन के ॥ सब बिकार मिटि जावै मन के ॥३१॥ स्प
र्धा तिस्कार अहंकार ॥ सकल मिटै कछु लगे.

र॥ ताते देहदृष्टि नाहि धरैं॥ लोककुटंव लाज परि
हैं॥ १२॥ हांसी करैं सवा लई लोग॥ पारिसो आनें दु
र्षन सोग॥ तिनकी कछु मन मैं नहि आनें॥ सब
जीवनि मै मोकौं जांनैं॥ १३॥ परषब्र रचंडालनि
आंति॥ जहां लौं मेरी सृष्टि अनंत॥ नमस्कार तिन
तिनकौं करै॥ दंडसमांने धरणि मैं परै॥ १४॥ जौ ल
गि थावर जंगम माही॥ मरौं नावहोइ थिर नांही
तौ लगि मन वच काय समेत॥ यौं सव मैं गांनै मम
हेत॥ १५॥ या विधि करत रहै नर जोई॥ ताकौं सव
लत्रसमव होई॥ मिटै आविद्या विद्या आवै॥ ता
तैं बंधन सकल मिटावै॥ १६॥ उद्धव सकल मत

है जते॥बेद मध्य मैं भाषते ते॥ तिन मे इह मतो
म सार॥जा ते बेगि मिटै संसार॥३७॥मन क्रम
बचन जहां लौं जेते॥ मम रूप दिखाने सब तेते
उद्धव ईसौ धर्म है मेरो॥कहा प्रभाव कहूं तिहि
केरो॥३८॥ग्रणु रूप उभग ट जो होई॥ क्यों ही
दुरि मिटै नाहि सोई॥जहां लगें गुण निर्मित ब
॥तहां लगें सब दो है अस्तु॥३९॥मै निर्गुण स
गुण प्रकासी॥ ता ते मम धर्मों अविनासी॥मेरो
सक दे नाहि क्यों ही॥मम धर्मो थोरा ऊ त्यों ही॥४
॥अरु उद्धव यह कहा कही जै॥मेरो धर्म कदे नाहि
छीजै॥उद्धव जे लौकिक ब्यौहार

बिधिप्रकार॥४१॥ जिनतैंकेवलहोंहिअनं
॥अवृत्तिहूंकोंसबमेटैंअर्थ॥ नरकनिमांही
रनहार॥कोंमक्रोधदोषादिबिकार॥४२॥जे
तेऊतेमोमैंवारैं॥तोहूमोहिलहैंसवतिरैं॥जेसैं
कंसमरणभयकस्यौ॥मेरौधर्मनहीआचरयौ
॥४३॥पारिसोभयऊकारिमोमांहि॥ममपदप
हुच्योसबमैंनांहि॥अरुगोपिकानिकिपैबि
चार॥लंघेवेदतजेभरतार॥४४॥पारिबिसवा
सोमोमैकस्यौ॥तोहूतिनिभवजलपरिहस्यौ
अरुज्यौंदूषकियौसिसुपाल॥जातेजीवनि
सैकाल॥४५॥पारिसोऊमोमैंकरिदोष भवज

लतरि कारि पद चौमोष ॥ जौं बिषरूप बिकार
जेते ॥ मोमैं आये अमृत तेते ॥ ४६ ॥ तासे यह बि
बेकचतुराई ॥ इहैं वुद्धि इहीं नहीं काई ॥ जो रूपै
सो साच हिलीजे ॥ पूरन को जु आप नों कीजै
॥ ४७ ॥ यह रूपी दरपण गुरदेह सकल बिका
र नहीं को गेह ॥ ताकरि पेषे हरि अबिनासी ॥
निरबिकार पूरन सुषरासी ॥ ४८ ॥ यह सब ब्रह्म
ज्ञान कौ सार ॥ जातें मिटै सहज संसार ॥ मैं संछे
पमांहि सबकह्यौ ॥ याते सारन कहि बरह्यौ ॥ ४९
॥ यह नरतन आरूपह मम ज्ञान ॥ दिवनूं कों
लैम ज्ञान ॥ जयपविजीवन्न हैन १

नपावै रहा॥५०॥ तातें मैं भाष्यौ निजज्ञान ज्ञा
मोहि लदै तजि आन॥ उद्धव सकारी तुम जे
॥उत्तर साहित कही मैं तेती॥५१॥ ते सब तत्व बे
कौ जांनौं॥ मेरौ परम स्वरूप करि मांनौं॥ यह तुम
रौ मेरौ संबाद॥ आत्मपरमात्मबाद॥ ५
॥ ताकौ सुनि हृदै मैं धारै॥ पावै मोहि आपकौ
तारै॥ जो यह मेरौ पूरण ज्ञांन॥ मेरे भक्तनि
कै दांन॥५३॥ सो काहिय तु दै मेरौ दाता॥ जहां
होवै बिष्याता॥ जो औ दद्रूल है सो सोई॥ लो
बेद आषत है सोई॥५४॥ तातें दांन दहूं जो मेरौ
॥ मैं आ जी न ने ... ॥ मो ...

म कौं नित हीयपटै ॥ ता जनसौं मो सौं हित बढै ॥ जे
जन मेरो अति प्रिय होई ॥ ताके सम दूजा नहि
कोई ॥ ५६ ॥ जो यह सुनै नित्यकरि आदर ॥ औ
रसकल कौं करै अनादर ॥ सो कर्म नि सों लि
प्त न होई ॥ मेरी भक्ति लहै दृढ सोई ॥ ५७ ॥ मैं यह
परम ज्ञान उच्चास्यौ ॥ उद्धव तुम कछु हिरदै
धास्यौ ॥ सो कमोह भयौ निवर्त ॥ निर्मल मन
हृदै आवर्त ॥ ५८ ॥ उद्धव यह जो मेरो ज्ञान ॥ सो
सो मति जानों मो तैं आन ॥ तातैं जन सहित है
सोई ॥ अरु नास्ति कउ हकु जा होई ॥ ५
तिन जानैं नाहि मम भक्त ॥ दुवि

आसक्त ॥ तिनकौं ज्ञान न देनौं एह ॥ ज्यौं काल
र महं बीज रु मेह ॥ ६० ॥ इनि दोष निकार होइ बु
न ॥ मेरे मन क्रत प्रीति हढ दीन ॥ अस्त्री सूद्र जे सो
होई ॥ ताहूं सौं अंतर नहि कोई ॥ ६१ ॥ अैसें नु सो
यह ज्ञान नाहि कहिये ॥ तौ तिन सहित परम पद
लहिये ॥ जो यह मेरो जानै ज्ञान ॥ ताहि जानि वै
र है न आंन ॥ ६२ ॥ ज्यौं कोई पीवै जु पीयुष
रहै न कछु जी मूष ॥ ज्ञान कर्म जोग अष्टांग ॥
वांछि उपनीति सब अंग ॥ ६३ ॥ अर्थ धर्म मो
अरु कांम ॥ इन सब हिन को मो मै धांम ॥ ता तै
मो मै आवै जोई ॥ इन सब हिन कौं पावै सोई ॥

६४॥परिमेरोजनकछूनलेहै॥सकलत्यागिव
रिमोकोंसेवै॥तातैंसाधिरुसाधनजेते॥ममअ
दवैमोसोंतेते॥६५॥सबताजिजबममचरण
सेवै॥आपुनिबेदेकछूनहिलेहै॥ताकेसामि
जोप्रियनांही॥सोनितमोमेंमेंमांही॥६६॥तथस
निहारिकेऐसेबैन॥उद्धवआंसुकुलाकुलनैं
॥आगैंगहेअंजलिबांधें॥प्रेममगनतनहटस
धे॥६७॥बैनहुतेबोल्योनहिजावै॥कंवद
तेगदगदस्वरआवै॥तातेंउद्धवचुपकरिरहे
॥केछूबेरकछूबैननकहे॥६८॥बहुस्योंचित्त
थंभिकोरिधीरज॥पूरणप्रेममग्नयोंअव . ॥

॥ निस्चल आपु कला यें मांन्यौं ॥ सब संदेह
तैं मांन्यौं ॥ ६६ हरि के चरणां माथौ धार्‍यौ ॥ उ
व मख बचन उचार्‍यौ ॥ जिन ते हरि सौं बादै
॥ जिन कौं कहियै सुनि वेदे म ॥ ७० ॥ उद्धव उ
वाच ॥ नाथ अजन्मा अरु अविनासी ॥ परमानं
द परम परकासी ॥ तिन के संनिधान जब आयै
॥ तब ही सब अज्ञान मिटायौ ॥ ७१ ॥ संनिधांन
पावक कै जावै ॥ सहज हि त[illegible] मैं यै सीत गवावै
॥ अरु ता पर तुम परम दयालु ॥ मो निज जनु
पारि भयै कृपालु ॥ ७२ ॥ यह बिज्ञान दीप मोहि दी
न्हौं ॥ जा तैं सकल सुनासु नची न्हौं ॥ तुम्हरे चर

णसरणमवमांही॥दुजेगोरकहूंसुषनाही॥७
॥जेकोईतुवकृतकोजानें॥अरुतापरमवकों
दुषमांनें॥सोतुवचरणसरणनहिआवै॥तौदु
जेकातेसुषपावै॥७४॥प्रभुजीतुमअतिकरु
करी॥ममभायासीपरिहरी॥सकलजादवनिमें
अस्नेह॥अरुजुवतीसुतबितगृहदेह॥७५॥ए
सबमेरेमनतेंटारै॥अपनेचर्णकंवलउरधारे
॥तुमबिस्तारीअपनीमाया॥जानियहसकल
जगतभरमाया॥७६॥सोतुमज्ञानषडगसो
॥केकृपालनिजदासीतिनिवेदी॥मोमनसेजा
कासी॥योगेश्वरईश्वरअविना

हि एक बरदेवा॥ निश्चल हृदै निरंतर सेवा॥ तु
म्ह हि छोडि दूजो न हि जांनौं परि सेवक कै सेव
गं नौं॥ ७८॥ मो हि प्रसाद दीजिए एह॥ तुम सौं
निश्चल बढै सनेह॥ करा बीनती उद्धव भक्त॥
बोले हरि जी कैं अनुरक्त॥ ७९॥ श्री भगवांन उ
वा॥ तथा अस्तु उद्धव मम भक्त॥ मम चरणनि
निश्चल आसक्त॥ अब तुम उद्धव ऐसी करौ
लोक निकों सिसा बिस्तरौ॥ ८०॥ बदरी षंड आ
श्रम मेरौ॥ अति पुनीत दरसन जि हि केरौ॥ त
हां तीरथ मम चरण निकौ जल॥ [illegible]
दरस परस अस्नान द हैं मल॥ ८१॥ नांम अलक

ंदासौ गंगा॥ निर्मल वारे दर्स सव अंगा॥ जहांजा
तुम बासा करौ॥ फल मज्जण तन बल कलधरौ
८२॥ हैं दसी तउन्मादि कसदौ॥ विन याद कसु
मज्जण गदौ॥ इंद्रियन के अर्थनि परिहरौ॥ यह
विज्ञान कौ मउर धरौ॥ ८३॥ मोतें सी ध्यो ज्ञानते
मजोई॥ वेठि एकंत विचारो सोई॥ वचन चित स
मो में धरौ॥ मेरो धर्म सदा विस्तरौ॥ ८४॥ तब त
यौं गुण कौ परिहरिहौ॥ ममन गुण पद कौं अनु
सरिहौ॥ यह उद्धव परतंज्ञा मेरी॥ फिर उतपति
है है तेरी॥ ८५॥ या बिधि कृष्ण बचन उच्चार॥ तउ
द्धव लेम स्त गिधार॥ चरणनि परि परदक्षणा दीन्हीं

॥तबचालिबेकीश्रंइछाकीन्हीं॥८६॥जद्यपिहुंदुल
देनाहिश्राछे॥तौहूहरिजीतजेनजाछे॥श्रांसू
वश्रतिश्रातुरबुद्धि॥तनमयपायौनतनकीसु
॥८७॥कृष्णबियोगनकौदीसदें॥बारबारचलि
फिरिफिरिरदें॥तबश्रतरजांमीगोपाल॥ज
कौजांनिप्रेमबेहाल॥८८॥निकटबुलाइमिलें
श्रंग॥ज्ञानरूपकीन्हौंसरबंग॥तबश्रपनीप
करीदीन्हीं॥तेउद्धवजनमाथेलीन्हीं॥८९॥तौहू
पथमाहिकृष्णपधारे॥जादवलेपजाससंहारे
॥तबहीतहांउद्धवचलिश्राये॥कृष्णएकईबेदे
पांवे ॥९०॥ पुनिमेत्रेयपधारेतहां॥कृष्णदेवबे

जैसै अंधकार कौं भांनु ॥ ९० ॥ मैत्रे कौं दीन्हौं आदेस
गंदेजहां ॥ दढ़ कियौ हरि कौं पर नांम ॥ दरसन प
सौ अति अभिराम ॥ ९१ ॥ गए मैत्रेय जौ रिकार दौ
॥ प्रेम मगन कछु कहैन कोई ॥ तब तिन कौं हरि
भाष्यौ ज्ञांनु ॥ बिदुर दिकाहि सौं यह उपदेस ॥ अ
ज्ञा दीन्ही उद्धव जन कौं ॥ अपनी साक्षि कियौ थि
मन कौ ॥ ९३ ॥ तब उद्धव हरि चरननि परे ॥ हरि ह
दैनि अचल करि धरे ॥ पुनि उद्धव जन पहुंचे तहां ॥ न
र नारायन प्रगट जहां ॥ ९४ ॥ तहां जाइ कीन्हे आ
चरन ॥ जे जे हरि जी भाषे करन ॥ बलकल अंबर
फल आहार ॥ प्रेम मगन नित ब्रह्म बिचार ॥ ९५ ॥
तब त्रिगुन बिस्तार मिटायौ ॥ उद्धव

पायो॥ यह हरि उद्धव कौ संबाद॥ हरिजी कौ है प
म परसाद॥ ९६॥ जा कौं कृपा करै सो पावै॥ तजि
व सिंधु ब्रह्म मै जावै॥ जब तै या कौं नापै सुनै॥ प
सहित हृदै मैं गुनै॥ ९७॥ तब तै पावै परमानंद
अमहा बिना मिटै दुष दुंद॥ यह स्वयं मेव आप
रि कह्यौ॥ जा मै कछू संदेह न रह्यौ॥ ९८॥ या मे
सो हृत्म अत्म भाव॥ मिटै जगत उपजै हरि भाव॥
नि हरि षगट अंमृत दै करै॥ मन्त्र मिप्पाय सकु
दुष हरै॥ ९९॥ एक जल धृतं अंमृत उपायौ॥ नि
चीन देवनि कौ पायो॥ जरा रोग आदिक दुष हरे॥
ल उपाइ बिनासन या करै॥ १००॥ अरु दूजौ यह अंम

एक॥बेदसिधुतेब्रह्मबिबेक॥सोआपनेजननिकौं
प्यायो॥जनममरणनयुद्धिमिटायो॥१०१॥ऐसे
आदिपुरिषअबिनासी॥सुमिरतजिन्हहिमिटैं
वपासी॥कृष्णनामलीन्हौंअवतार॥तिनकौंबंद
नबारंबार॥१०२॥दोहा॥ऐसोमुनिसुषदेवसों
॥परमतत्वउपदेस॥कृष्णकथाकैमिसें॥कीन्हीप
स्ननरेस॥१०३॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएका
दशस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसंवादेभाषायांउद्धवमुक्ति
निरूपणनामएकोणतीसोध्यायः॥२९॥चौपई॥
२२७६॥राजोवाच॥हेप्रभुहरिकीकथासुनाओ॥
करणपुर

हि दीन्हौं॥ पीछें आपक हौ कहा कीन्हौं॥ १॥ आद वूकु
न कौं पैंग यौ आप॥ हरिजी कहा कस्यौ तब आप॥
स्वरुकौं बाधा नहि कोई॥ अरु हिज आप न मिथ्य
होई॥ २॥ सब के तन मन मो हन देह॥ प्रमां नं सुधा
कौ गेह॥ जे नारी हरि दरसन पावै॥ तिन सौं नैं न
वैं चे जावै॥ ३॥ अरु जहरि के रूप हि गावै॥ बांणी स
हित मांन जे पावै॥ अरु जे सुनि करि हृदै धारै॥ ते
पल कौ नहि छोडै पारै॥ ४॥ मारग मैं अर्जुन रथ मैं
ही॥ बेगे दरसन हे सो जां ही॥ तिन तिन हरि की सां
ता पाई॥ सब संस्त तत काल गंवाई॥ ५॥ औसो
तन हरि त्याग्यौ कैसैं॥ कोई हरै नाग मणि जैसै

॥ऐसे बचन कहे नरदेव॥ उतर दीन्हौं श्री सुषदेव॥
६॥ श्री सुक उवाच॥ द्वारावती उठे उतपात। तिनके
दषि कही हरि बात॥ उठे सेन आदिक सब लोग
सभा सुधर्मा दरषन सोक॥७॥ तिन सौं कृष्ण
बेन उच्चारे॥ हरि कौं मतौं न लषे विचारे॥ निज म
या सौं मो हित करे॥ ज्ञांन बवेक सब न के हरे॥ च
॥श्री भगवांन उवाच॥ हे जादव हु सुनौ मम बात
॥द्वारा ती बहु तउतपाता॥ ए उतपात म्रसुनी सं
न॥ तातें तजि ये यह अस्थांन॥ए॥ जुवती बाल वृ
द्ध संब जे ते॥ संषोधार पठै ए ते ते॥ औ रैस कल्प
भास हिजे ए॥ तहां पश्चम सुरस्वती अन्हे॥

कारि मनोंनतन निर्मल कारिए। सुऋहदे तीर थ
व्रत धरिए। जे जे बहु तापित रु असुदेवा। तिनकी
कीजै पूजा सेवा॥११॥ अरु बिप्रन की सेवा कीजे। भ
रि सनमांन दांन बहु दीजे। गाइ भू मिसों नैं वस्त्रा
दि य हाथी रथ अंन गृहादि॥१२॥ आसीरबाद दि
जन के लीजे। जातें बिघन सकल ई छीजे। देव रु पि
तर गाइ की पूजा। पापहरना बिधि और न दूजा॥
१३॥ ऐसी सुनि हरिजी की बांनी। सब जादवनि
भली करि मांनी। नांवनि बैठि सिंधु ऊतरे। च
करि रथन पयां गो करे॥१४॥ ज्यौं हरि तिन कौं
आज्ञां दीन्ही। त्यौं त्यौं सबनि सबै बिधि कीन्ही

॥करिअस्नानधर्मबहुगंनैं॥मध्यप्रमासमआपुब
हुमांनैं॥१५॥तबतिनकियोकसंभापांन॥जातेभू
लिगयेंसबज्ञांन॥तिनतेमनसकलईभये॥हरिम
याबिबेकहरिलये॥१६॥तिनमेंकालहमयोउत
नसबमेंबैरकहरिपरद्धंन॥तबतिनकीतासम
मंकारी॥सातिकयबीरगिमउच्चारी॥१७॥हतन
मीकोकरिअपमांन॥सातिकछोडैबांणीवांन
॥भाईजीहत्रीयतनधारी॥अरुबहुमेंकाहिए
धिकारी॥१८॥सोऐसोऔसीकाकरै॥सोवत
बालकनिकेसिरहरै॥यहमहामनिबचनसक
कास्यो॥हतबमीकोंअतिधि

। कारि मनोंनतन निर्मल करिए ॥ सुऊहदै तीर थ
व्रत धारिए ॥ जे जे बहु तापित र अरु देवा ॥ तिनकी
कीजे पूजा सेवा ॥ ११ ॥ अरु बिप्रन की सेवा कीजे ॥ व
रि सनमान दान बहु दीजे ॥ गाइन्ह मिसोनैं बस्त्रा
॥ हय हाथी रथ अंन गृहादि ॥ १२ ॥ आसीर बाद द
जल केलीजै ॥ जाते बिघन सकल ईछीजे ॥ देव रु पि
तरगाइ की पूजा ॥ पापहरन ना बिधि और न दूजा ॥
१३ ॥ ऐसी सुनि हरिजी की बानी ॥ सब जादव नि
भली कारि मानी ॥ नांवनि बैठि सिंधु उतरे ॥ च
कारि रथन प्रयाण करे ॥ १४ ॥ ज्यौं हरि तिनकौं
आज्ञा दीन्ही ॥ त्यौं त्यौं सबनि सबै बिधि कीन्ही

॥करिअस्नानधर्मबहुगंनैं॥मध्यपक्षमासअापु
दमांनैं॥१५॥तबतिनकियोकसूमापांन॥जातेम्ह
लिगयेसबज्ञान॥तिनतेमत्तसकलईनये॥हरिम
याबिबेकहरिलये॥१६॥तिनमेंकलहमयोउत
नसबमेंअरकहरिपरछुन॥तबतिनकीतासम
मॅकारी॥सातिकयबीरगिरउच्चारी॥१७॥कृतब
मीकोकरिअपमान॥सातिकछोडबांणीवांन
॥माईजीहत्रीयतनधारी॥अरुबहुमेंकाहिएअ
धिकारी॥१८॥सोअैसोअैसीकाकरै॥सोवत
बालकनिकोसिरहरै॥यहप्रहमनिबचनसह
कास्यो॥कृतबमीकोंअतिधिकास्यो॥१९॥

वर्मा तबकीन्हौ क्रुध ॥ बांणी बांण प्रकास्यो जु
ओर कृतस्त्री कौ ऐसी ॥ ब्याघ्र क्रुरतु कीन्हौ जे
सी ॥ २० ॥ सूरी अस्त्रानि रायुधम यो ॥ जाकौ बाढ्यु जु
ल कटि गयौ ॥ ताकौ बधतें कीनौं ऐसैं ॥ ब्याघ म
सई करैनऊ से ॥ २१ ॥ तब साति क उठि बोले बानी
॥ सुनौ सुनौ हो सारंगपांनी ॥ इन कौ जस अरु श्री
यु सिरायौ ॥ तातें इसो मतौ है आयौ ॥ २२ ॥ एक कटि
बचन छडु गति दि काढ्यौ ॥ कृतबर्मा कौ मस्तक
बाढ्यौ ॥ जद्यपि सब मिलि बदुतानि वार्‍यौ ॥ तौ
हूं साति क कोपन [illegible] टार्‍यौ ॥ २३ ॥ तातें सकल म
येतब क्रुध ॥ साति क दीसौं मांड्यौं जुद्ध ॥ तब तेस

कलमएडुदुश्रोर॥जुद्धरचौसौंडुर.तटघोर.॥
२४॥केईधनुषभालसौलरैं॥केईषडुगगद्द.सं
हरैं॥केईफरसागदाकुगर॥केईजेसेंदथावद
र॥२५॥केईगुरजगोंफणाकेई॥ह्सादिकोनितें
रैतेतेई॥दर्पितसबैकरैंसंग्राम॥वैठदेपेहल्म
करेंम॥२६॥दुयसौंदुयदाथ्यासौंदाया॥रथसौंर
थसारथ्यासौंसाथी॥षरसौंषर.ऊंटऊटनिसौं
माहिषरुमद्दवैलवैलनिसौं॥२७॥अश्वसौं
अश्वरमिलितलरैं॥नरसौंनरमिलियुद्धादिकरैं
महामत्तकज्जलपेनऐसें॥जुद्धकरैंवनमैंगज
जैसें॥२८॥सौवृत्त॥ वाप्यार

सो जन अति क्रुध ॥ तद्दासे याम जीतरु सुम
है जुद्ध बीर निकों मद्द ॥ २६ ॥ गद सेनाम
को आला ॥ नाम सुचारु पुत्र बिष्याता ॥
क सौं मिलि अनुरुद्ध ॥ सुरथ सु मित्र करे
जुद्ध ॥ ३० ॥ उल्मुक निसब सद सुजित सो
॥ भान आदि दै जोध अपरि मित ॥ आपु
पु मैं जुद्ध द्विगं नै ॥ हारि कारि मो हित कछु
नै ॥ ३१ ॥ शाल्वि बंस दासा रद्दि बंस ॥ साल्व
धक भोज बसंत ॥ अर्बुद सुरसेन मधु माथ
देसा बिर्सजन कुंति रु कुक्कुर ॥ ३२ ॥ आपु
मिलि जुद्धद्वि गंन्यो ॥ सब मिलि परस पर

दमांन्मो॥पुत्रपिताभाईअरुभाई॥मांमांअरु
नेजलराई॥२३॥ककामतीनांतीनांतो॥मित्रमि
त्रमिलिजुधहिंगनां॥सुहृदसुहृदज्ञातिनिसो
ती॥सबमिलिमेएपरसपरघाती॥२४॥तबस
रषीणनयेसबहिनके॥टटेतथाधनुषति
नके॥अयुधसबलक्षीणतबभये॥तबति
केरानिएरकालये॥२५॥भयेमुसलचूरण
जेते॥वज्रसमानसिंधुनटोतेते॥तेतेसकल
रनिकरिलीन्हे॥हरिसौंजुधहिक्रोधहिकीन्हे
२६॥रामकृष्णबहुभांतिनिवारे॥पारितैमू
कछूनाविचारे॥रामकृष्णकोरिपु

जु घबुधि अंतरमति आनैं ॥ ३७ ॥ तब आपुहू कि
ओ ति निकोप ॥ कस्यो चहै सब दिन कौ लोप ॥ तब
हर का करानि ति निलियो ॥ थोर मांहि अलय सब
यो ॥ ३८ ॥ विश्राप आछादित करे ॥ दरिमाया
या रसबदुरे ॥ पावक कौ घग्र गटत ह्नां नयो ॥ बं
बिपन कुल जार मारि गयो ॥ ३९ ॥ तब कुल सक
न श्रहरि देख्यो ॥ मृ कौ मारउ तास्यौ लेख्यो ॥ जा
श्राली न्हौं अवतार ॥ सो परि ह स्यो घराण मा
र ॥ ४० ॥ तब संमद तट मैं बलि भद्र ॥ कीन्हौं ब्रह्म
ध्यांन अति भद्र ॥ आपु हि अलम हि लेराख्यो ॥ भ
न बदेह दूरि कार नाख्यो ॥ ४१ ॥ रांम कृया ण ल

हरिजबदौ॥लघुपिंपलतलबैठेतबदौ॥निर्म
लरूपचतुर्भुजधास्यो॥दसहूंदिसकोतिमरनि
वास्यो॥४२॥ज्यौंविधूंमपावकपरकासा॥औ
सोप्रगटभयोउजासा॥पीतबसनहैतनघनसा
म॥तमस्वबर्णसोभाअभिराम॥४३॥सुंदर
हाससहितमुषपद्म॥कंवलनयनसोभाकेसद्म
कर्णनिकुंडलमकराकार॥सीसमुकटसो
भाअधिकार॥४४॥रुचिरनीलसिरकेसबि
साल॥उरभृगुलताअरुबनमाल॥कंवसूत्र
टिसूताबिराजै॥छौद्रघंटिकानूपरराजै॥४
बहुआभूषणभूषितअंग॥देषतमोहे

अंनंग॥आयुधमूरतिमंतसमस्त॥सुमि
रतिजिन्हिहोइलयअस्त॥४६॥उत्तमचर्ण
केवलआरक्त॥जिनकौंउरध्यावैनितभक्त
॥दहिणजंघानीचेकस्यो॥बांमचरणताउप
रधस्यो॥४७॥पोनिस्थूलकैबेठेकुसम॥सुमि
रताजिन्हहिमिटैभयतस्म॥आतिलघुमुसल
पउजोरह्यो॥जलमेंडास्योमछगह्यो॥४८
॥सोवहमछजालमहिआयो॥ताकेउदरलो
हसोपायो॥जराव्याधमलकासोकीन्हौ॥लै
करिसरकैआगेंदीन्हौ॥४९॥सोवहव्याधउ
तोबनमांही॥हरिकौंपदतिनजान्योनांही॥ह

रिकौचरणहृदिजबपर्‍यो॥ [illegible]
तातिनिकस्यो॥५०॥सोईबा [illegible]
॥बिप्रबचननहींमिथ्याहोइ॥ [illegible]
निकटचलिआयो॥ [illegible]
पायो॥५१॥चरणलग्यो [illegible] पारबोलिने
मयोतबमृतकसमान। [illegible]
मीत॥कंपतअंगलग्योअंसोसीती ५२ [illegible]
मैंकीन्हौअपराध॥तुम्हहिनजान्योमरि [illegible]
च॥यहमैंकीन्होसकलअजाने। बांनचला
योमृगकेजाने॥५३॥याअपराधहितम
टारो॥जेतुमनांमलीयतैतारे। तुम

सबपापबिनासै॥मेरिअज्ञानज्ञानप्रकासै॥
५४॥ब्रह्माआदिकरैंआराध॥तिनकोंमैंकी
न्हौंअपराध॥तातेंप्रभुजीबिलंबनकरौ॥मो
पापीकेप्राणनिहरौ॥५५॥जातेंबहुस्योंकरैं
नऐसो॥यहअपराधकस्यौमैंजैसो॥जिनकी
मायाकौबिस्तार॥ब्रह्मासिवसनकादिकुमार॥
५६॥औरौश्रुतिदृष्टाव्हेजेते॥कयूंहीजांनिस
कैंनाहितेते॥मोहितसकलतुम्हारीमाया॥तातें
किनहूंपारनपाया॥५७॥तिनकौपापजोनिंद
मजेते॥कौनभांतिकरिजांनैंतेते॥तातेंअब
दूजीनबिचारौ॥बेगेमोपापीकौंमारौ॥५८॥औ

सीजराबधिककीबांणी॥सुनीनि:कपटसारंग
पांनी॥तबप्रभुआपबचनउचारे॥तावेसकल
सोवामयटारे॥५९॥श्रीभगवांनउवाच॥उहुउहु
जराभयहिमतिमांनै॥अपनोंकस्योपाप
जानै॥यहसमस्तलीलाहैमेरी॥यामेंकहा
हैतेरी॥६०॥मेरीकृपाजाहितुस्वर्गा॥जहांम
सुषनहीउपसर्गा॥असेबचनकहहरिजब
धस्योबिमांनस्वर्गतेतबहीं॥६१॥तीनिपरि
क्रमअरूपरनांम॥करिकैबाधिकगयोस्व
धांम॥चढिबिमांनसुरलोकहिगयो॥जय
सब्दजहांतहांभयो॥६२॥तबरथली

देषै॥ परिहरि जी कौं कहूं न पेषै॥ तुलसी गंधप
व नज बपा यौ॥ ताके षोज कहून पे आयौ॥ ६३॥
पीपल मूल कीये हैं आसन॥ प्रनाम मनौं सासि सूर
दु तासन॥ आयुध आगैं मूरतवंतं॥ यौं निज प
ति देषै भगवंत॥ ६४॥ तब दास कबीर जन हि कि
स्यौ॥ रथ ताजि विहबल चरनानि परस्यौ॥ उमग्यौ
हृदय नयन जल छायौ॥ प्रेम मगन मुष बैंन न
आयौ॥ ६५॥ तब कबीर जन आंसू निवारे॥ क
रुणां सहित तब बचन उचारे॥ हे प्रभु मैं तुव चरणन
देषे॥ ते पल कलप कलप कारि लेषे॥ ६६॥ तब ते
नष्ट दृष्टि मैं नयौ॥ सब दुष एक बार अनुमयौ॥

न ली दिसा न कहूं सुष पायो॥ ज्यों उडपति निसि
मां हि छिपायो॥ ६७॥ तुम बिन मैं ज्यों लन बिन
ए। जैसे अंध नयन बिना मीन॥ ऐसे बचन कहू
तही सूत दैष्यो एक चरित रितऽदभूत॥ ६८॥ ग
गन हु ते उत्तम रथ आयो॥ दयन सहेत अरुग
उ सु हायो॥ मूरति मय हरि आयुध जेते॥ रथ
जाई चढे सब तेते॥ ६९॥ यह चरित्र दारुक जब दे
ष्यो॥ बिस्मित भयो अचंभा लेष्यो॥ तब हरि सूत
हि बैन सुनाये॥ करि सन मान दुःष बिसराये॥ ७०
॥ श्री भगवान उवाच॥ सूत द्वारिका कों तुम जा
वौ॥ समाचार सब जाइ सुनावौ॥ सब का

मानिजौन॥ अरुमोकों अबकरतपयांन॥७१
ह्वारावतीरहैमातिकोई॥ तनकौंघरेजहांलौंजो
॥ यहनरलोकतज्यौमैजबहीं॥ सिंधुद्वारिकाब
रेतबही॥७२॥ हंमरेमाततपितादिकजेई॥ लेअ
नेलोगानितेतेई॥ दिलाजैयो अर्जुनसंग॥ रहैद्व
रिकाह्कैहैसंग॥७३॥ तिनकोंयहसंदेहसुनावो
अरुतुममममधर्मनिमनलावौं॥ नांमरूपसब
थ्यामांनौं॥७४॥ह्वणमेंगुरसबनांनारूप॥ निश्च
जांनौमोहि अरूप॥ जहांतहांव्यापकमोकोंजां
नौं॥ नांमरूपममममायामांनौं॥७५॥ मेरेचरणनि
रंतरिनजौ॥ दूजीसकलवासनातजौ॥ ऐसेकै

आवेमोमांही॥जातेंफिरिदुःषपावैं॥[illegible]॥७६॥
यहसुनिसूतह्सोंज्ञांन धौंधौं[illegible]
आंन॥न्मसकारकरिबारंबार॥परिदक्षिणादे[illegible]
विधिप्रकार॥७७॥ओंह्र बिवोगतें आति[illegible]
॥ज्ञांनबिचारिचितवहरायौ॥हरि[illegible]
उरधारे॥लवदारुकद्वारिकापधारे॥७८॥[illegible]
यहनृपमैंतुमसौंकहौ॥उद्धव[illegible]
बमापोंहरिकौगवन॥[illegible]॥७९॥
॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणे[illegible]
परीक्षितसंबादेभाषा[illegible]
॥२०॥चौपई २३ ५५ श्री[illegible]

सनकादिकनुलिए॥भृग्वादिकनितथासंगिकि
ए॥सहितभवांनीसंकरदेव॥इंद्रादिकसुरअरुउ
देव॥१॥बिद्याधरकिंनरगंधरब॥पितरमहोरगग
रणसरब॥गरुडलोकपंछीअरुसिद्ध॥हरिकादरस
कोंमनांबिद्ध॥२॥सबमिलिहरिदरसनकोंआए
सबादिनहरिकेदरसनपाये॥हरिकेजन्मकर्मगुए
गावै॥सबमिलिजयजयसब्दसुनावै॥३॥सकल
बिमांननिछायोगगन॥बर्षैपुष्पप्रेमकरिमगन
॥बारंबारकरैपरिनांम॥मुषतैंभाषैहरिकोनांम
॥४॥ब्रह्मादिकसबकह्मबिभूति॥कह्मसहितत्ति
नकीउदभूति॥तेसमस्तदेषेभगवांन॥नैंनमूदि

[illegible]॥ध्यांनधारणांमंगलधाम॥[illegible]
तवगंन्यौं ध्यांन॥५॥व्रमरूआपए[illegible]
हुतभावसवदूरिवहायौ॥निजतन[illegible]
ग्रधारणांधरी॥आपिउपाइजसम[illegible]
रिजीवेकूंगसिधारे॥याविधिसत[illegible]
॥७॥तवढुंदुभिवाजेसुरलोक॥[illegible]
रैमयसोक॥सत्परूकीरतिधीर[illegible]
रूजोउत्तमकर्म॥८॥तेसवगए[illegible]
तेहरिसवहिनकेईस॥तातें[illegible]
॥पूजाध्यांनधारणांनीकी॥९॥[illegible]
तेईते॥सत्यादिकविधिसव[illegible]
सकलसुरजेते॥हरिकीगति[illegible]

॥ हरि बैकूंठ पठयां लोंक स्यौ ॥ सौ किन हूं कौं जांनि
न पर्यौ ॥ कहूं न ही तिन हरि कौं देष्यौ ॥ बडौ अचं
भ बढि निलेष्यौ ॥ ११ ॥ जैसैं मेघ होहि आकास ॥ अ
रु दांमिनि प्रगटै घन पास ॥ है कारि प्रगट गुप्त है जा
वै ॥ ताकौ षोजन कोई पावै ॥ १२ ॥ सो हरि कियौ पर
लौ जब ही ॥ काहूं तिन्ह हि न देष्यौ तब ही ॥ भूमैं प्र
गटु ते तब देषे ॥ गुप्त भये किन हूं नहि पेषे ॥ १३ ॥ दे
षयद अचंभ मांनौ ही ॥ सक्ति अनेत सदा हरि मांही
॥ जदुकुल मैं हरि कौ अवतार ॥ अरु कारिबौ नांन
विवहार ॥ १४ ॥ सो समस्त माया कारि जांनौ ॥ हरि
की सक्ति होत सब मांनौ ॥ हरि जी सदा एक रास

रहै॥कर्मन करै जन्म नाहि गहै॥१५॥और कर्म कर
सब जानै॥जन्म लियो हरि जी कौं मानै॥एसब
हनि के विवहार॥हरि जी इन सब हिन कै पार॥१
॥जैसें नट बाजी विस्तारै॥बहु स्यों आपु हि सक
नि न्यारै॥बाजीगर सब हि न तें न्यारा॥यौं हरि के
मैं रु अवतारा॥१७॥जानि हरि रु औ त्रिगुण सं
र॥नां नां भांति प्रगट आकार॥आप प्रवेस कि
तिन तिन मैं॥सब बरताइ विनासै छिन मैं॥१८॥
अंत आपु के आपु हि रहै॥त्यौं ही इन अवतार
गहै॥गुर कौं मत्त कपुत्र जिनि आन्यो॥काल म
के गर बहि मांन्यौ॥१९॥ब्रह्म सत्र तें तु

॥ हरि वै कूं वत्रयां गौं कस्यौ ॥ सौ किनहूं कौ जां नि
नपस्यौ ॥ कहूं न हौ तिन हरि कौं दर्ष्यो ॥ बड़ौ अचं
सब दिन लेष्यौ ॥ ११ ॥ जैसें मेघ होंहि आकास ॥ अ
रू हैं मानि प्रगटै घन पास ॥ कै कारि प्रगट रुष कै
वै ॥ ताको षोजन कोई पावै ॥ १२ ॥ त्यों हरि कियौ पव
गौ जब ही ॥ काहूं तिन्ह हि न दर्ष्यो तब ही ॥ भूमें प्र
टहु ते तब देषे ॥ गुप्त भयें किनहूं न हि पेषे ॥ १३ ॥ हे
पयट अचं भा नां ही ॥ साक्षि अनेंत सदा हरि मांही
॥ जदुकुल में हरि कौ अवतार ॥ अरु कारिबौ नांनु
बिवहार ॥ १४ ॥ सो समस्त माया कारि जानौं ॥ हरि
की साक्षि होत सब मानौं ॥ हरिजी सदा एक रस

रहै॥कर्मन करैं जन्मन हि गहैं॥१५॥औरै कर्मक
तसब जानैं॥जन्मालियौ हरिजी कौं मानैं॥एसब
हनिके विवहार॥हरिजी इनसब हिनकै पार॥
॥जैसैं नट बाजी विस्तारे॥बहु स्यौं आपु हि सब
निवारे॥बाजीगर सब हिन तें न्यारा॥यौं हरि क
र्म रु अवतारा॥१७॥जानि हरि रु औ त्रिगुण सं
र॥नांनां भांति प्रगट आकार॥आप प्रवेस कि
तिन तिन मैं॥सब बरताई बिना सैं छिन मैं॥१८
अंत आपु के आपु हि रहैं॥त्यौं ही इन अवतार
गहैं॥गुरकौ मृतक पुत्र जिनि आन्यौ॥कालमृ
के गर बहि मांन्यौं॥१९॥ब्रह्मसस्त्र तें तु मह हिं बं

यो॥ बधिकदि स्वर्गसदेह पगयो॥ तेजो अप
रक्षा करते॥ तौ तन कौं कादे परदरते॥ २०॥ स
जगकौ उच्चपति प्रतिपाल॥ नास करै जिन
बलकाल॥ ऐसे सकल सक्तिमय देव॥ असा
दि करैं जासेव॥ २१॥ हरि बे कौं धरणी कौ भा
धर्यो हुतौ मानुष आकार॥ तासौं भू कौ भा
तास्यौ पीछे ले उदूरि करि डास्यौ॥ २२॥ ज्यौं
टौ भागो पग मांही॥ सो कांटे बिन निकसै नांही
॥ कांटै कांटौ काढ्यौ जबही॥ उदूर डारि दियौ
नित बही॥ २३॥ त्यौं हरि मृतवत देह क्यौं रापै
निजानंदपद सौ क्यौ नाषै॥ अरु एके अति

स्थान॥ तिनकौं प्रगट दिषायौ जानौ॥ जोग मा
करि राषै देह॥ पुरुषारथ करि मानै राषै॥ सक
विकारनि कौ अगार॥ ताकौं राषि तजै सुष सा
॥रयौ॥ तातैं तिनकौ मोह मिटायौ॥ देह तजे ते ब्र
बतायौ॥ ऐसे सतनकौ कौ यौं अनादर॥ यातै व
ई करैं न आदर॥ २६॥ तातैं हरि बैकुंठ पधार
॥ बाजो जो देह दिन चार बृक्ष रूढ़ ऽड्र टिक
जेते॥ टै मिपयो गो हरिकौ तेते॥ २७॥ विस्मय म
कृष्न मुराग वैश्नपने अपने लोकनि जानै॥
जो यह चरित पढ़ै उठि प्रात॥ कृष्नदेव कौन मेल
जाति॥ २८॥ सोरठा॥ कृष्नकी या पै जातैं कृष्

तो कर्मै जावै ॥ हरिदा कद्ध रिकापचायौ ॥ सो बसुं
पुपैत्राये ॥ २९ ॥ कृष्ण बियोग बिकल अति चित
ति कृपा गाग यते बित ॥ तिन ऽहत्यौ केचर गानिय
त वसुदेव बचन उचे ॥ ३० ॥ त्रासु प्रवाह चवनै
नतै ॥ अति व्याकुल झटपट बैनन तै ॥ सब कु ३१
न कौ नाम सुनायौ ॥ रुरुवे कौ निजो नून नायौ ॥ ३
यो मुनि सो कतपत सब भयौ ॥ करत बिलाप प्रभ
महि गये तहां जाऽहरि जो नहिं ऽदेखे ॥ ३२ ॥ तब दे
रोहिणि सुदेव गृह सेन राजान रदेव हरि बि
मातें उपज्यौ सो क ॥ ताते वहि होत उज्यौ नर लोक ॥ ३
राम कृष्ण कौ ऽसौ बियोग ॥ जातें मिटै नौ देह संजो

ग॥ बल जुवती सब नै बलदेह॥ श्रगनि प्रवेस
यौ श्रति निहा॥२४॥ बसुदेव हि लै मोंड सनारि॥ वे
यौ सह गमन चिता संचारि॥ प्रद्युम्न जौ दिज ला
जे तो॥ तिनि को त्रयनि हिर सकृत तो॥२५॥ सहहि
न के श्रति कृष्ण बियो॥ तातें कस्यो श्रर्जुन यो म
हरि को बिध जहां लौ जेतो॥ [illegible] गो॥ श्री हस क
ल मिलि तेतो॥२६॥ हरि को रूप कृष्ण मेघस्या॥
म प्रवेस सबन मिलि कै स्या॥ अर्जुन अप सम सा
जो को॥ कृष्ण बियो॥ प्रहार कनो वो॥३१॥
तें श्रर्जुन श्रति ड सपायो॥ [illegible] नन बहैं प्रायो

॥ सोक सब टास्यौ ॥ आपु आपु मैं मारे जे ते ॥ अ
बंधना निप्रियतेते ॥ २५ ॥ तिन कै च्यौ पिंडा दि
हूंनो ॥ मृतक क्रिया जतौ विधि नाना ॥ सोई सो
जुनि सब कारी ॥ कृष्णप्रीति तिनहि परिहरी ॥
तब भूरि का कृष्णहि नमई ॥ सो इरवार पल
मैं ल ६ ॥ कपूल हरि जी के गृह जे ते ॥ त्यौ हीर
करत ते ते ॥ ध र ॥ नित्य बिहार त हा हरि जी के
सुमिरत सुनत उधारक जी को ॥ मंगल सक
गलनि केरी ॥ त्रिभुवन सुख हावै नित वेरी ॥ ५
अस्वी वालवृध सब जे ते ॥ भरत परतज बरे ते
ते ॥ ते अर्जुन दिल्ली लै आय ॥ समाचार पांडवन सु
सै ॥ ५७ ॥ तुम्हारे सकल पिता मह जे ते ॥ कृष्णप

गा हि सुनि करि ते ते हु ॥ तुम सिसु सुधर राजा हि
मथुरा तिलक बज कहियो ॥ ७४ ॥ ते सब त नि
तर दिसि गए ॥ क छ्यो है सु इह कछ म य म ग ॥ जो
हरि जी कौ अवतारा ॥ जामें करमें न ग ताबि ह
॥ ७५ ॥ तिन को कहे सु नैन र जोई ॥ सु ब आपनि
ब हैसोई ॥ या बिधि हरि के जे अवतारा ॥ बा
नै तेक मै अपार ॥ ७६ ॥ लो क हे स्मे परहे जे
गावे सुनै बिचारे ते ते ॥ तब ते लहे पर मज्ञानंद ॥
ले कहत छूटे उग्रह द्वंद ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ यह हरि को अ
तार मै ॥ तुम सौं कह्यौ सुनाय ॥ याको कहि सुनि सुभ
उरा ॥ नारायण पै जाय ॥

न स्वामी ॥ सकल लोक के अंतरजामी ॥ न क्
हि तधरै अवतार ॥ नाना भांति करै अधिकार ॥ ध
तिन मै कृष्ण सु ये भगवान ॥ ज्ञान क्रिया सब स
ध्यान ॥ जिन के गुननि कह्यो सुषदेव ॥ सुन तत
परी क्षत नर देव ॥ ५० ॥ जिन कौं ना चलिय भवनाहि
लै करि राष निज पद मांहि ॥ इसे कृष्ण संतनि कौं
॥ नमस्कार तिन प्रभु कौं नित्त ॥ ५१ ॥ ते अब संत
स सेनाम ॥ देह धरे जा वन के काम ॥ कृपा निधा
किंकर वा वै ॥ अपनी भक्ति जादै मै ल्यावै ॥ पर
विधि अवडं ब मिटावै ॥ अपने परम पद हियफु
कृष्ण रूप तिनि ज्ञान सुनायौ ॥ उद्धव जननि ग

दयकुं चायौ ॥ ५३ ॥ सौं तैं का [illegible]
तातें होइ नन्नर रथ षकास ॥ [illegible]
इजो कदेनजां नैकोर्ड ॥ ५ [illegible]
रां कीन्हौ ॥ मो से च्व कका [illegible]
नकीं हितमन धारी ॥ मम [illegible]
री ॥ ५५ ॥ जा को च्वांचे सुन म [illegible]
उर गावै ॥ तें तव हद [illegible]
अनुराग ॥ ५ हो ॥ प्रभ [illegible]
सावाति [illegible]
तजिम्मत [illegible]
मनां कोड [illegible]

कांम क्रसनै जडम॥ मोति हि कांम॥ पट॥ तिन
बहिन कौ नाथ राह॥ भक्ति रु मुक्ति मुक्ति को गेह
तै ऐसौं कीजै प्रीति॥ यह स कल संतनि की रीति
बतसौं लासैवो गावा॥ जेव सु कल सष्टी कु जरि
॥ संतदास गुरु स्वाम्यां दीन्ही॥ चतुर दास यह नाव
कीन्ही॥ ॥ ६॥ दोहो॥ प्रमग्यांनप्रगटकहै॥ म
घट ह्वै निज देव॥ ते मेरै नित उर बसौ संतदा
ठुर देव॥ ६॥ इति श्री भागवतेमहापुराणे
का दस स्कंधे श्री सुक परी क्षत संवादे भाषा
यो हंस मेले कं उपयां गोनाभेय का त्रिसौ ध्याय:॥